

प्रस्तावना.

श्रा जगत्मां श्रात्महितसाधक कोइ मार्ग होय तो ते परम पिवत्र वीतराग सर्वक्षे उपदेशेख धर्म हे. ए मार्ग स्याद्वाद हे. श्रविरोधी हे, एनी खात्री ए मार्गने श्रवुक्त सरनार पूर्वे यह गएखा एवा महान श्राचार्योनां वचनो हे. ए पूर्व पुरुषोए जेंजे श्रपूर्व ग्रंथोनी रचना करीहे, ते ते पिवत्र दर्शनना महिमानी श्रवे तेमनां ज्ञाननी साक्षी पुरे हे. श्रावा सत्पुरुषोए रचेख श्रपूर्व, श्रमृतमय ज्ञान पुस्तकोने देखी, वांची, विचारी क्यो श्रात्मानंदी जीव उद्घास निहं पामे?

एवो आनंद आत्मार्थी । प्राप्त करे, तत्व पामे, पूर्व महापुरुषोना पगक्षे चाली तेना जेवा थाय, अने ए महापुरुषोनी कृति । अविक्वित्र जलवाइ रहे, ए आदि हेतुथी, स्वपर हितबुद्धिथी, निर्जरानां कारण्यी अमे एवा महापुरुषोए रचेल प्रकरण प्रंथो प्रसिद्ध करवानो प्रयास कर्यो है. एना छंगे आमारा तरफथी श्री प्रकरण रलाकरादि अनेक प्रंथो बहार पड़ी चूक्या है. ए बधानी खपती, अने एथी जाएत थएली जैन जाइयोनी ज्ञानरुचि ए प्रंथो तथा तेना कर्जापुरूषोनुं महात्म्य प्रगट करे है; तथा एवा बहु बहु प्रंथो प्रसिद्धिमां आववानी आवश्यकता सूचवे हे.

श्रा प्रकरण रत्नाकरनो प्रथम जाग एकवार छपाइ गयो हतो; ए खपी जवाथी फरी श्रावृत्ति सुधारा—वधारा साथे छपाइ हे, ए श्रागां निवेदन कर्युं हे. श्रा ग्रंथना चार जाग करवामां श्राव्या हे; तेमां श्रा चोथो जाग हे. प्रकरण रत्नाकरना प्रथम जागनी प्रथम श्रावृत्तिमां "श्री उपिमतिजव प्रपंच " ग्रंथ हतो; पण ते श्री जावनगरनी जैनधमे प्रसारक सजाए हुटक छपावेल होवाथी श्रा श्रावृत्तिमां एना वदले प्रकरण रत्नाकरना बीजा जाग मांहेलो "श्री समयसार"नो ग्रंथ दाखल करेल हे

श्रा जागमां एकलो "समयसार"ज दाखल करेल हे. एना कर्ता किव बनारसी दास हे. ए पुरुषनो सिवगत इतिहास श्रापणने महयो नथी; तथापि श्रा यंथमांथी एउना विषे श्रापणने घणुं जाणवानुं मली श्रावे हे. एनी पंकिताइ, विद्वता श्राने श्रात्मिनिष्ठानी श्रा यंथ श्रापणने प्रतीति करावे हे.

श्रा यंथ हिंदीजाषानां पदमां है; साथे गुजराती टीका है. प्रधान पणे एमां ड्रव्यानु-योगनो श्रिधकार है. नाम प्रमाणेज ए यंथ "समय"ना,—"सिद्धात"ना,—"श्राग-म"ना साररूप, तत्त्वरूप है. स्याद्वादशैक्षिना जाण पुरुषोए निश्चय श्रने व्यवहार ए बेरूपे धर्मनुं निरूपण कर्युं है; तेमां श्रा यंथ प्रधानपणे निश्चयधर्म प्ररूपतो हो- वाथी एकांत वादिने रोगीने अपथ्यनी जेम अहित रूप थाय. एकांतवादीने तो बधुं अहित रूप थवा योग्य है; पण व्यवहार खक्तमां राखी, तेनी जाणे—अजाणे छपेका कर्याविना अपेका पूर्वक वांचनार, विचारनारा आत्मार्थी होने आ प्रंथ बहु उपकार हुं कारण है. निश्चय खक्तमां राखी व्यवहारे विचर हुं ए आत्मार्थी हुं कर्तव्य है; ए निश्चय हुं हे,—ए जाणीने खक्तमां राखवानुं आ प्रंथ उत्तम साधन है. वस्तुनुं सापेक पणुं विचारनारने आ अने आवा प्रंथो बहु खानरूप है. इव्यनां स्वरूपना जिज्ञासुने आ प्रंथ परमाणंद हुं कारण है होय, होय, तत्त्व, इव्य, ग्रण्थेणि—ए वगेरेनुं वस्तुना मृख धर्मने अवखंबीने कर्त्ता पुरुषे एवं मनहर अने असरकारक निरूपण कर्युं है, के तत्त्वरुचिजीवो आनंदमां गरकाव थइ रहे हे. हंद पण शूरातन उपजावे, आत्माने जाएत राखे एवा मोटे जागे सवैया एकतीसा अने तेइसा राख्या है. ए प्रंथ केवी पद्धतिए योजायखो है, तेनुं कंदक सूचवन अनुक्रमणिकाथी थइ शकरो. आ नामनो मृख प्रंथ प्राकृत जाषामां श्री छुंद छुंदाचार्थे रच्यो हे; ते पर्यी संस्कृतमां श्री अमृतचं इाचार्थे योज्योहे; अने ते पर्यी संस्कृत—प्राकृतना अजाण एवा आ काखना जीवोना उपकार अर्थे श्री बनारसी दासे हिंदी जाषामां योज्यो है.

श्रा चोथा जाग साथे श्री प्रकरण रत्नाकरनो प्रथम जाग पण संपूर्ण थाय हे. जैनजाइयोमां तत्त्वजिङ्गासा वृद्धिपामे, तेर्नुनुं श्रात्महित थाय, एवी प्रजु पासे प्रार्थना करी, श्रा यंथ बहु विनयपूर्वक वांचवा विचारवाने श्रमे एमने विनविये हिये. इति शं.

मुंबइ-संवत् १ए६० कार्त्तिकी पूर्णिमा. ला० प्रसिद्धकर्त्ता.

ञ्रनुक्रमणिका.

नंबर	त. विषय.	पदसंख्या.	पृष्टांक.
3	उपोद्घात्-श्रीपार्श्वजिन, सिद्ध जगवान, साधु	१- ५४	પ્રકુ–પૂત્ય
	श्रने सम्यग्दृष्टिनी स्तुति; मिथ्या दृष्टि, श्रातम-		
	ड्रव्य, यंत्र गौरव तथा महीमा, कविसामर्थ्य,		
	श्रनुत्रव लक्तण तथा महीमा, षट्डव्य तथा		
	नवतत्त्व,-एनुं वर्णनः नाम मालाः प्रंथमां कहे-		
	वानांबार द्वारनां नामः मंगलाचरण नमस्कारः		
त्रगवाननी वाणीने नमस्कार, श्रादिपद्ध			
হ	बार द्वार छिथिकार वर्णन-पद ५७५	५५–५ ७०	ય્ણ્ય–વૃદ્ધ
	१ जीव द्वार पद ३१	પ પ	थ्र्थ
	१ श्रजीव द्वार पद १४	5 9	६०ए
	३ कर्त्ताक्रियाकर्म द्वार पद ३५	१७१	६१४
	४ पुष्य-पाप एकत्व कथन द्वार पद १६	१३६	६१ए
	५ अध्यात्म अधिकार साथे आश्रवद्वार पद १६	१ ५ १	६३६
	६ संवर द्वार पद ११	१६७	६४१
	७ निर्जराद्वार पद ६०	१७ए	·
	ए बंध द्वार पद ५ ए	श्रहण	६६५
	ए मोक्त हार पद ५३	१ ए९	६७७
	१० सर्व विद्युद्धिद्वार पद १२०	३५०	808
११ स्याद्वाद द्वार पद ४१ (श्रंतर्गत ग्रंथमहीमाः			
	नवरस, नयइ०)	EEK	घ३६
	१२ साध्य साधक वस्तु स्वरूप द्वार पद ५१	५ १७	340
३ श्री श्रमृतचंद्राचार्यनी श्राबोचना; श्री बनारसी			
दासनी जिनेंद्र प्रतिमानी स्तुति तथा स्वकथनी			
. (ाद ए	૫૩ १–૫૭ૡ	9६ । तजस
४ चतुर्दश ग्रणस्थानकस्वरूप; काथिक सम्यकत्वादि			
तथा श्रावकनी एकादश प्रतिमानां खद्मणादि			
•	१द १०७	५ ७०–६७९	ं मार्गने देखा
ય	प्रंथ तथा प्रंथकत्ती प्रशस्ति वगेरे पद ४१	६००–७१०	🖟 करी श्रमित

www.jainelibrary.org

उँ श्रीजिनायनमः

ख्यथ श्रीसमयसार नाटक बनारसीदास कृत गुजराती जाषामां खर्थ सहित प्रारंजः

उपोद्घात.

श्रा ग्रंथनी दिगंबरी बनारसीदासे ग्रुद्ध हिंडुस्थानी जाषामां पद्यात्मक ग्रंथरूप रचना करीहे ए ग्रंथकर्ता पोते महापंक्ति तथा कवीश्वर होवाथी विविध प्रकारनी हंदरचना करीने तेणे पोतानी श्रेष्ठ कृति देखाडी श्रापीहे पदलालित्यता तथा श्रर्थ गौरवतादिक जे काव्यना सारा ग्रुण वर्णन कस्चाहे, ते श्रा ग्रंथनी कवितामां सारी रीते दीहामां श्रावेहे श्रवंकारवंडे कविता सारीरीते जूषित करीहे. श्रा ग्रंथ श्राध्यात्मिक विषयवालो होवाथी श्रामां मात्र शांत रसज मुख्य हे पण प्रसंगानुसारे बाकीना रस पण किचित् दीहामां श्रावेहे जोके श्रा ग्रंथ हपर कहा। प्रमाणे निन्ह वादिकमां गणायला दिगंबरीनो रचेलोहे, तोपण एनो विषय श्राध्यात्मिक होवाथी ते सर्वने उपयोगीहे; माटे श्रापुस्तकमां श्रमे नाख्योहे. ए ग्रंथनी व्याख्या कोई रूपचं दजी नामना पंडिते करीहे, ते पण हिंडुस्थानी जाषामां होवाथी सर्व जनने सम ज्यामां श्रावे नही, माटे तेनो श्राश्रय लईने श्रमे गुजराती जाषामां व्याख्या करी है. व्याख्या करतां श्रादिमां मंगलाचरणनो दोहरो कस्चोहे ते श्राप्रमाणे:—

॥दोहाः॥–श्रीजिन बचन समुद्रको, कौंखिंग होइ बखान; रूपचंद तौहू खिखै,

श्रपनी मति श्रनुमान.॥ १॥

अर्थः-व्याख्याकर्ता रूपचंदजी कहेवे के, श्री जिनवचनरूप समुद्रनो क्यांसुधी व्याख्यान थाय, तोपण हुं मारी मतिने अनुमाने खुखी जणावुंबुं. ॥ १ ॥

हवे यंथकर्ता आरंजमां मंगलाचरणरूप श्रीपाश्वनाथ स्वामीनी स्तुति करें वे ।।कवित्त,इकतीसा सर्वे हृस्वाक्तरः॥—करम जरम जग तिमिर हरन खग, जरग लखन पग शिव मग दरसि; निरखत नयन जविक जल बरखत, हरखत श्रमितजविक जन सरिस; मदन कदन जित परम धरम हित, सुमिरत जगत जगतसब डरिस; सजल जलद तन मुकुट सपत फन, कमठ दलन जिन नमत बनरिस ॥ १॥

श्रर्थः—जगमां जे श्राठ कर्मरूप तिमिर एटसे श्रंधकारठे तेनुं हरण करवाने खग एटसे सूर्यरूप ठे. जेना चरणनेविषे सर्पनुं चिन्ह ठे. जे मोक्तना मार्गने देखा डनारा ठे. जेनेनेत्रे करी निरखतां कस्याणरूप जल वर्षेठे, तेणे करी श्रमित केण्प्रमाणविना जव्यलोकरूप सरोवर महा हर्षने पामेले जे कामदेवना क्य करनार ले, श्रमे जेनुं लिक्कृष्ट सहज सुखरूप धर्मने श्रभें जक्तजन स्मरण करी रह्याले. तेथी तेनुं सब डरिसकेण सात जयरूप जे शीत ले, ते नाशी जायले जेनुं शरीर जलसिहत मेघना जेनुं नीलवर्ण ले. जेना मुकुटनेविषे सात फण ले जेणे कमल नामे श्रमुरनुं मान जंजन कस्तुंले एवा जिन केण श्रीपार्श्वनाथ जगवान, तेने बनारसीदास नमस्कार करेले॥ १॥

फरीथी विशेषे श्री पार्श्वनाथ खामीनी स्तुति करेबे.

॥ सर्वे खघु खरांत श्रक्तर युक्त उप्पय उंदः ॥ एने चित्रकाव्य पण कहे वेः-सकख करम खख दखन, कमठ सठ पवन कनक नगः धवख परम पद रमन, जगत जन श्रमख कमख खगः पर मत जलधर पवन, सजल घन सम तन समकरः पर श्रघ रज हर जलदः, सकल जन नत जव जय हरः यम दलन नरक पद उय करन, श्रगम श्रतट जव जल तरनः वर सबल मदन वन हर दहन, जय जय परम श्रजय करनः ॥ १॥

श्रर्थः—सर्व कर्मरूप खलके जुष्ट वैरीने दलवा वाला हो. कमह नामना महा मूर्ख श्रमुर तेरूप पवन श्रागल मेरु पर्वतनी परे श्रमग हो धवलके निर्मल सिद्ध स्थानकने विषे रमनारा हो जगत्ना लोकोरूपी उज्वल कमलने विकस्वर करवाने श्रिश्चें खगके सूर्य जेवा हो. एकांत नयवादी जे पर मत, तेरूप मेघने मटामवाने श्रिश्चें पवनना जेवा हो जल सिहत मेघ घटाना जेवुं श्याम जेवुं शरीर हे. समक रके जपशमना करनार हो. परके शत्रुरूप श्रम्वक पाप रजने हरण करवाने मेघ जेवा हो जेने सकल लोक नमे हे, श्र्मात् त्रिज्जवन पूज्य हो. जन्म मरणरूप जे जब जय तेने हरण करनार हो. लोकोना मृत्युने दलवावाला हो जन्म मरणरूप जे जब जय तेने हरण करनार हो. श्राम एटले श्रयाग श्रमे श्रतटके श्रपार एवो जे संसाररूप समुद्ध तेने तरवावाला हो. सर्व दोषोमां वरके प्रधान श्रमे बलवान जे कंदर्पवन, तेने बालवाने हरके रुद्धना नेत्रनी श्रिप्त जेवा है ! जगवान तमे जयवंता शाश्रो ! वली तमे परम श्रजय पदना करनार हो, एटले जय जंजन हो. ॥ २ ॥ श्रा हप्पय हंद वहे परमेश्वरना महीमानुं वर्णन कर्खुं श्रमे पोतानुं काह्य चातुर्य दर्शांह्युं हे.

श्रा ग्रंथना कर्ता बनारसीदास कहे वे के जेना प्रसादथी परगसेन पिताने घेर मारो जन्म थयो एवो हुं श्री पार्श्वनाथ जगवाननी स्तुति करंतुं

॥सवैया इकतीसाः॥-जिन्हके बचन उर धारत जुगल नाग, जये धरनिंदप दुमा

वित पत्नकमें; जाके नाम महीमासें कुधातु कनक करें, पारस पाषान नामी जयो है खलकमें; जिनकी जनमपुरी नामके प्रजाव हम, श्रपनो खरूप लख्यो जानसो जलकमें; तेई प्रजु पारस महारसके दाता श्रब, दीजे मोहि साता हग लीलाके ललकमें. ॥३॥

श्रर्थः—ज्यारे श्री पार्श्वनाय जगवाननी कुमारावस्थाह्ती त्यारे कोई एक समये श्री बनारसी नगरीविषे एक तापसनी साथे श्रज्ञानतपश्चर्यानी निर्जर्सना पूर्वक वाद थयो, ते प्रसंगे ते तापसनी धूणीमांनां लाकडांमां नाग वे एवी रीते श्री पार्श्वनाय जगवाने कह्युं, ते वातने पेला तापसए गणकारी नहीं, तेथी ते लाकमां फोनीने ते नागने बाहर कहाळ्यों; पण ते श्रधबख्यों थयो हतो तेथी तडफनवा लाग्यों, तेना श्रंतना समयमां श्री पार्श्वनाय जगवाने तेने " उ श्रिसञ्चानसाय नमः ए मंत्र संजलाव्यों ते वचन तेणे सारी रीते हृदयमां धारी लीधुं. एटलामां तेना श्रारिनी शांति थई गई. तेना श्रंतना सारा परिणामोने लीधे ते धरणेंद्र थयों; तेनी स्त्री पद्मावती थई; ए कथा श्री पार्श्वनाय चरित्रमां प्रसिद्ध वेः ते श्रद्रज्ञत म हीमाने दर्शावतां वतां प्रंथकर्जा जपमालंकारवडे पारसमणि श्रने श्री पार्श्वनायना ए ग्रुणनी साहर्यता देखाडेवेः—

जेनां वचन हृदयनेविषे धारण करीने नाग अने नागणी ए बन्ने पलकमां धरणें अ अने पद्मावतीरूपे थयां. आहीं नाग अने नागणी कहेवाथी दिगंबरोनुं मत जा णवुं. श्वेतांबरी तो एक नागनेज कहें हे बली पार्श्वपाषान, खलक एटले जिन्या मां, प्रसिद्ध हे, एटले पारश मणि नामना पाषाणनो स्पर्श थतांज लोखंक नामनी कु धातु सोनुं थायहे तो ए पाषाणमां एवो महीमा किहांथी छत्पन्न थयो ? तेनो छ त्तर कहें हे:— पार्श्व एवुं नाम श्री पार्श्वनाथने तुल्य हे तेना महीमा थकी एटले मात्र पार्श्व एवुं नाम श्री पार्श्वनाथने तुल्य हे तेना महीमा थकी एटले मात्र पार्श्व एवुं नाम हे ते नामनाज महीमाथकी ते पार्श्वरूप पाषाणमां एवो गुण थयो हे विले जेनी जन्म पुरीनुं नाम बनारसी नगरी हे, अने ग्रंथकर्ता कहे हे के, मारं नाम पण बनारसी हुं पाम्यो ते मात्र नामना प्रजावथी में मारं आत्मस्वरूप जाणी लीधुं ते केवी रीते जेम प्रजात समयमां सूर्य पोताना रूपने जलकमां स्वष्ठ प्रकाशे हे, तेनीपरे मारं रूप पण प्रकाशी रह्युं हे ए पण श्री पार्श्वनाथ जगवानना महीमानो प्रतापहे तेज श्री पार्श्वनाथ जगवान महा शांत रसने देवावाला हे, ते हवे हग लीलाकी ललकमें के व्यांख मीचीने उघाडीए श्वर्थात् एक पलक मात्रनी सत्तामां मुजने श्रारमसमाधिरूप शाता श्रापो एथी निवृत्ति सुलनी सूचना करी हे ॥ ३ ॥

सिक्ष जगवाननी स्तुति करेंढे:-

॥ श्रिडिल्ल ढंदः॥- श्रविनाशी श्रविकार,परम रसधाम है; समाधान सरवंग,सहज

श्रजिरामहै; ग्रुद्ध बुद्ध श्रविरुद्ध श्रनादि श्रनंत है; जगत शिरोमनि सिद्ध सदा ज यवंत है ॥ ४ ॥

श्रर्थः— जेनोविनाश नथी, श्रने जेने कोई विकार लागे नही, एवो परम रस ए टले कोई केवलीगम्य जे सहजानंद उत्कृष्ट शांतरस, तेना जे धाम एटले घर है; माटे सर्वांगने विषे सहजनी जे श्रनंत सुखरूप समाधि तेणेकरी जे श्रजिराम एटले श्रित मनोक्ति चौदराजलोकनी उपर विराजमान होवाथी सर्व दोषथी रहित शुक्तिः सर्वकृता पाम्याथी बुक्त हे श्रने सर्वना ईश्वर माटे श्रविरोधहे, एवी श्रव स्थाए करी ते श्रनादि श्रनंत हे श्रने चडद राजलोकना उपर विराजमान हे तेथी जगत्ना शिरोमणि हे एवा जे श्रीसिक्त जगवान ते सदासर्वदा जयवंत थाश्रो ॥४॥

साधुरूप जगवाननी स्तुति करेवेः-

॥ संवैया इकतिसाः॥–इानके छजागर सहज सुख सागर सुगुण रतनागर वैराग रस जस्चो है; सरनकी रीत हरे मरनको जे न करे करनसों पीठ दे चरण श्रवुसस्चो है; धरमको मंडन जरमको विहंमन जु, परम नरम व्है के करमसो खस्चो है; ऐसो मु निराज जुश्र खोकमें विराजमान, निरिख बनारसी नमस्कार कस्चो है॥ ॥॥

श्रर्थः— जे ज्ञाननो उद्योत करनार हे श्रात्मद्रव्यनुं जे सहजसुख तेना जे समुद्र हे. श्रने सुगुनजे ज्ञान, दर्शन श्रने चारित्ररूप रत्नत्रयीनी श्राकर एटखे जे खाण हे. पांच इंडियोना विषयनेविषे जे वैराग्य ते रूप रसेकरी जे परिपूर्ण श्रयाहे. कोई परिषद श्रावीने प्राप्तथाश्री एहस्थनीपरे जे शरणनी रीति राखे नहीं। श्रात्माने शाश्यतद्रव्य जाणीने जेणे मरणनो जयमुकी दीधो हे. पांच इंडियोने पूर्व श्रापी तेना विषयोशी विमुख श्रयाश्रकी जे चारित्रने श्रनुसस्था हे; वली जेनो श्राश्रय खेवाशी धर्मपदार्थ विराजमान श्राय माटे धर्मना मंमन करनाराहे. मिथ्या मतिरूप जे जरम तेनुं विशेषेकरीने जे खंडन करनारा हे; जे परम द्यावान श्रईने कर्मोनीसाथे युद्ध करेहे. (दयावानने युद्धकरत्रुं संजवे नहीं तेम हतां कह्युं ते माटे विरोधालंकार जाणी खेवोः) एवी विशेषताने लीधे जे मुनिराज एटखे क्रविश्वर जुश्र खोकमां पिस्तालीश लाख मनुष्य केत्रविषे विराजमान हे तेने हृदय कमलश्री जो ईने बनारसीदास नमस्कार करेहे. ॥ ए॥

हवे पांच अनुव्रत खीधा वे जेमणे एवा समकितीनी स्तुति करेवे.

॥ सवैया तेईसाः॥— जेद विज्ञान जग्यो जिनके घट, शीतख चित्त जयो जिम चंदन; केखि करै शिव मारगमे जगमांहि जिनेश्वरके खघु नंदन; सत्य स्वरूप सदा जिन्ह

कें प्रगट्यो श्रवदात मिथ्यात निकंदन; संत दशा तिन्हके पहिचान करे कर जोरि

श्रर्थः— जे मंद्बुिक वे ते जीव श्रने श्रीरने एक करी जाणेवे; जेद जाणता नथी. पण जे समिकत पाम्यों वे, तेना हृदयमां जड श्रने चेतननुं जिन्न जिन्न ज्ञान थयुं वे; एवं जेदिवज्ञान जागृत थवाथी जेनुं चित्त चंदननी पेवे शी तब थयुं वे; जे मुक्ति मार्गमां केबि करे एटबे खेब करी रह्या वे; श्रा जगत्मां श्री जिनेश्वरना जे न्हाना पुत्र वे. श्रने साधु जे वे ते सर्वज्ञपुत्र कहेवायवे, माटे ते मोटा पुत्र वे. वही श्रात्मा सदा निश्चयेकरी सत्यरूपमांज वे, पण मिध्यात्ववंडे मिं व थई रह्यों वे. ते फरी सत्यरूप जेनुं निर्में प्रगटताने पाम्युं वे, श्रने मिध्यात्व नुं निकं दन थयुं वे, एटबे मिध्यात्व रह्यं नथी, चार श्रनंतानुवंधीनी जड तुटी गईवे. एवी तेमनी शुक्ददशा जेखखीने बनारसीदास बन्ने हाथजोडी वंदना करेवे. ए संवैयामां सम्यक्त्वनी हढता बतावी वे. ॥६॥

पूर्ण सम्यक्त दर्शाववाने ऋर्थे फरी तेनीज स्तुति करेबे.

॥ सवैया इकतीसाः॥-स्वारथके साचे परमारथके साचे चित्त, साचे साचे बैन कहे सा चे जैनमतीहै; काहुके विरोधी नांहि परजायबुद्धि नांहि, श्रातम गवेषी न यहस्यहै न यती हैं; सिद्धि रिद्धि वृद्धि दीसे घटमें प्रगट सदा, श्रंतरकी खक्तसों श्रजाची खक्कपती हैं; दास जगवंतके जदास रहें जगतसों, सुखिया सदीव ऐसे जीव समकिती हैं. ॥९॥ श्चर्यः जेनी स्वार्थ एटसे श्चारमा पदार्थने विषे साची प्रतीति हे तथा परमार्थ ते मोक्त पदार्थने विषे साची प्रतीति हे. जेतुं चित्त निर्मेख हे. जे सत्यवचनना बोख नारा हे. जे साचा जिनमतने ग्रहणकरी रह्याहे. जेनुं मन कल्पना करतुं नथी. केम के, ते साते नयनुं शुद्धस्वरूप जाणे हे तेथी कोईना दर्शनना विरोधी नथी. जेम बौध-मतानुसारी पर्याय बुद्धिवाला हे पण इब्य बुद्धिवाला नथी, तेथी जीवने क्रणजंगुर मानेहे, तेम समिकतीपर्याय बुद्धिवंत नथी. पण आत्मद्भव्यनी गवेषणा करनार हे, तेथी तेने पर वस्तुमां मोह नथी; माटे गृहस्य पण नथी, श्रने महा व्रत खीधा नथी तेथी यति पण नथी. पोताना घटनेविषे शुद्ध श्रात्म द्रव्यने सिद्धसमानज जुएहे. तेथी घटमांज प्रगट सिक्षि देखेंहे. अने ज्ञानदर्शन चारित्ररूप रिक्षिनी वृद्धि जेना घटमां सदा प्रगट देखायहे. जे छंतर परमात्मा देव हे तेनुं जेने लक्ष थयुं हे तेथी श्रयाची एटसे कोईनी पासे कांई मागे नही, एवा सक्तपति हे. वसीजे ए पूर्वोक्त प्रकारना प्रगट स्वरूपने पामेला श्री वीतराग जगवंतने पामीने तेना दास थयाहे; श्चने जत्गथी जदास रहेते. जे श्चार्त श्चने रौड़ ए वे ध्यानथी विमुख थयाते, तेथी सदैव सुखनी सन्मुख थयाते, एवा समिकती जीव महा सुखमयी ते. ॥ ७ ॥ फरी पोताना जल्लासथी समिकतीनी स्तुति करेतेः—

॥ संवैया इकतीसाः॥—जाके घट प्रगट विवेक गनधरकोसो, हिरदे हरख महा मो हकों हरतु है; साचो सुख माने निज महीमा श्रमोल जाने, श्रपुहीमें श्रापनो सुजावले धरतुहै; जैसे जल कर्दम कतक फल जिन्न करें, तैसे जीव श्रजीव विल्लान करतु है; श्रातम सगति साथे ज्ञानको छदौ श्राराथे, सोई समकिती जवसागर तरतु है ॥ ७॥

श्रवां — जेवी रीते " उप्पनेवा, विगमेवा, धूवेवा, " ए त्रण पद सांजितीने गण धरना हृदयमां प्रगट विवेक उत्पन्न थायठे; श्रने श्रवं निवेष कोई संदेह रहें नहीं. तेवी रीतेज समिकतीना घटमां विवेक प्रगट थयोठे, तेणेकरी स्वस्थ थई पोताना हृदयमां श्रानंदने पामी महा मोहने हरण करेठे. पोतानुं मिण्यात्व प्रूर करीने सम्यक्त्व करेठे. हवे सम्यक्त्वनी व्यवस्था कहेठे: —जे विषयमुख ठे ते तो श्रवित्य ठे; माटे फूठा ठे, श्रवे सहज समाधि सुख जे ठे ते शाश्वता ठे तेथी ते सुखनेज साचुं मानेठे. श्रवे पोतानो ज्ञातारूप महीमा श्रदोख जाणेठे. तथा ज्ञान दर्शन श्रवे चारित्र जे ठे ते पोतानो खजाव ठे, तेने पोतामांज धारेठे. पहेलां जीव मिण्यात्व दशामां जीव श्रवे शारीरने एक करी जाणतो हतो, श्रवे हमणा जीव श्रवे श्रजी वने जिन्नजिन्न लक्षणे करी जाणेठे. जेम पाणी श्रवे चीकल एकठां श्रवंगयां होय, तेने कतकफलनिर्मेलीनुं चूर्ण नाखवाशी पाणी तथा कादवने ते रेणु जिन्नजिन्न करी नाखेठे, तेम जीव श्रवे श्रजीवने जुदो जुदो लखेठे चारित्रमां श्रात्मानी शक्तिने साधे, श्रवे मितिज्ञान तथा श्रुतङ्गाननो उदय थवानी इहा करेठे मिति श्रज्ञान तथा श्रुतश्रज्ञानने गमावी दियेठे. ते समिकती जीव जवसमुद्रनो तर नार कहेवायठे; ए रहस्य ठे॥ ७॥

हवे समकीत पाम्यावतां मिथ्यात्वदृष्टिमांज रहेवे, तेनुं वर्णन करेवे.

शसवैया इकनीसाः॥—धरम न जानत बखानत जरमरूप, ठोर ठोर ठानत खराई पष्ठ पातकी, जूख्यो श्रिजमानमें न पाउं धरे धरनीमें, हिरदेमें करनी बिचारे उतपातकी, फिरेडावाडोलसें करमके कलोलनमें, वैरही श्रवस्थासों बघूलाकेसे पातकी, जाकी ठाती ताती कारी कुटिल कुबाती जारी, ऐसो ब्रह्मघाती है मिथ्याती महापातकी॥ए॥

श्रर्थः—जे वस्तुना स्वजावरूप धर्मने जाणे नही, श्रने जर्मरूप मिथ्यावाणीने वखाणे; तथा ठेकाणे ठेकाणे, पोतानुं मत स्थापवाने पक्तपातनी खमाई करे श्रने पोताना श्रजिमाने जूख्यो थको धरती उपर पग राखे नही, पोतानेज तत्ववेत्ता

जाणे; (एमां अधर पगवमेकरी उत्प्रेक्तालंकार जाणवो.) अने हृझ्यामां जेथी उत्पात उपजे एवीज करणीनो विचार करे. अने आ संसाररूप समुद्रविषे कर्मरूप, कहलो-लोना धकाये करी चारे गितमां मामामोल करतो फरेंग्रें; जेम वंटोलिया वायुमां आवीगएलुं पानडुं आकाशमां कमीने जम्यां करेंग्रें, पण कोई ठेकाणे स्थिरथई र हें तुं नथी; तेवीज एनी अवस्था थई रहींग्रें जेनी ग्राती रागद्रेषवडे तप्त थई रहेंग्रें; ते तापे करी काली एटले माया तेने राखवाथी क्रिटल थइ रहेंग्रें. अने कुबाती एटले जे माग्री वातोनुंज चिंतवनकरी रहेंग्रें, तथा पापेकरी जरेलीग्रें माटे जारी जा णवी एवी जेनी ग्राती हें, एवो ब्रह्मघाती एटले आत्मघातनो करनार मिथ्यात्वी जीव महापातकयुक्त हे ॥ ए॥

॥दोहराः॥-वंदो शिव श्रवगाहना, श्रह वंदों शिवपंथ, जसु प्रसाद जाषा करो, नाटक नामे गरंथ.॥ १०॥

श्रर्थः-जिहां सिद्धनो श्रवगाह यई रह्यों हे, ते केत्रने हुं वंदन करुं हुं, श्रने ज्ञान दर्शन चारित्र ए मोक्तनो पंथके मार्ग हे, तेने हुं वंदन करुं हुं. ए मंगलाचरण करी हवे पोतानुं प्रयोजन कहे हे:-जेना प्रसाद थकी समयसार नाटक ग्रंथ संस्कृतमां हतो ते प्राकृत जाषारूप करुं हुं. ए प्रयोजन कहां. ॥ १०॥

हवे आ यंथना अधिकारी बनारसीदास पोतेज हे; अने एमां कहेवा खायक पो तानुं आत्मद्भव्य हे तेनुं वर्णन करेहेः-कविवर्णनं.

॥सवैया तेईसाः॥—चेतनरूप श्ररूप श्रमूरित सिद्ध समान सदा पद मेरो; मोह म हातम श्रातम श्रंग कियो परसंग महातम घेरो; ज्ञानकला उपजी श्रव मोहि कहों गुननाटक श्रागम केरो, जासु प्रसाद सधै शिवमारग वेग मिटे घटवास वसेरो॥११॥

श्रर्थः—बाह्यात्मामां श्रंतरात्माने श्रने श्रंतरात्मामां परमात्माना खरूपने जोईये, ए मारो निश्चयरूप पद कहेवा योग्य थायहे. ते चेतनरूपी श्रनुपम श्रमूर्त्तिक सिद्ध समान हे. जो ते निश्चयरूप पद एवं हे तो पहि। ते प्रगट केम जाणातुं नथी ? तेनो हत्तर एम हे के, मोहकर्मनुं कोई एहवं महात्म्य हे, ते प्रसंगधी श्रात्मश्रंगके श्रात्म प्रदेशनेविषे महाश्रंधकारनो घरोहे तथी प्रगट खखातुंनथी. हमणा कोई ज्ञान कला मुफने हपनी हे ते कलानो श्रंश प्रगट थयोहे. तथी नाटक सिद्धांत गुणनुं व्याख्यान करंहुं, जे श्रागमना प्रसादवडे मोक्सार्ग सिद्ध थाय श्रने जलदीथी शरीरमां वास वसवानुं मटी जाय, एटलेश्रशरीरपणुं सिद्धथाय. ॥ ११ ॥

हवे या यंथनुं गौरवपणुं बतावीने कविराज पोतानी बुद्धिनुं मंदपणुं देखाडी ख-घुता जणावे हेः— लघुता वर्णनंः— ॥संवैया इकतीसाः॥—जेसे को उमूरख महासमुद्र तिरविको, जुजानिसों उद्यत जयो है तिज नावरो; जेसे गिरिजपिर विरषफल तोरिवेकों बामन पुरुष को उमंग उता वरो; जैसे जल कुंममें निरखी शिश प्रतिविंच ताके गिह विकों कर नीचो करे मावरो; तैसें में श्रावपबुद्ध नाटिक श्रारंजकीनो, ग्रनीमोहि हसेंगे कहेंगे को उ बावरो ॥११॥ श्राथ—जेम कोई मूरख मनुष्य महासागरने तरवा चाहे श्राने वाहाणने ग्रेडी हायवडे तरवानो उद्यम करे, तो कार्य केमबने; जेम कोई वामन पुरुष होय श्रामे पहाड उपर वृक्त होय तेनां फल तोडवाने उतावलो यको उमंग करे, ते कार्य केवी रीते बनी शके? वली एक त्रीजो हष्टांत कहेंगे के, जेम पाणीना कुंममां चं द्रनुं प्रतिविंच पडेलुं जोईने कोई नादान तेने साचो चंद्र समजी हाथ नीचो करे तो तेना हाथमां चंद्रमा केवी रीते श्रावे ? तेमज हुं श्रव्यव्यद्धि हुं, श्राने श्रावा ना टक प्रयानो श्रारंज में कीथो हे, ते मारोश्रारंज सफल नही थहो तेवारे बीजा ग्रण वान पुरुषो कहेंशके, जुर्ज श्रा प्रंथनो श्रारंज करेंगे एवं कहीने ग्रणीजनो मने वावरो जाणी हशी काढहो ॥ ११॥

वली ए कार्य करवाने साहस करें वे पुनः

॥सवैया इकतीसाः॥—जैसे कोछ रतनसों वींध्यो है रतन कोछ, तामें सूत रेशमकी दोरी पोइ गई है, तैसे बुद्धीटीका करीनाटिक सुगम कीनो तापरि अलप बुद्धि सुद्धि परिनई है; जैसे काहु देसके पुरुष जैसी जापा कहे, तैसी तिनहुके बालकनी सिखलई है, तैसे ज्यों गरंथको अरथ कह्यो गुरु त्यों हमारी मित कि बिबेकों सावधान जई है॥१३॥ अर्थः—जेम कोई हीरानी कणीवमें कोई कठण रतनने आगलथी वींधी राख्युं होय, ने ते पठी तेमां पदुवो रेशिमनी दोरी परोवे ते सुगम चालीजाय तो तेम आ कार्य पण थरोः केमके मुनि अमृतचंद अने पांमेराजमल जेवा पंडितो थया तेमणे आ अंथनी टीका बालबोधमां करीने आ नाटकअंथने सुगम कस्त्रोठे, तो तेजपर मा हरी अहप बुद्धि हे तोपण आ अंथमां सुधी रीते परणमी गई हे, तेथी आ कार्य नेविषे महारी समर्थाइनो दृष्टांत देखांतुं हुं:— जेम कोई देशनो वसनारो पुरुष पो तानी देशजाषामां बोसे अने तेनो बालक होय तेपण तेनीपासे रहेतोथको ते जाषा शीखी के हे तेमज आ कार्य पण हे. केमके मारा गुरुए आ अंथनो अर्थ मने क होहे, तेज प्रमाणे आ अंथनो अर्थ केहेवाने मारि बुद्धि सावधान थईहे. एटले आगल कहेलो पश्चाताप मठ्यो॥ १३॥

हवे पोताना सामर्थ्यनुं कारण बतावेहे.

॥सवैया इकतीसाः॥-कबहों सुमति व्हे कुमतिको बिनाश करे, कबहों विमल ज्यो

तिश्रंतर जगित है; कबहों दया व्हें चित्त करत दयालरूप, कबहों सुलालसा व्हें लोच न लगित है; कबहों कि श्रारती व्हें प्रज सन्मुख श्रावे, कबहों सु जारती व्हें बाहरि बगित है;धरें दसा जैसी तब करें रीतितसी एसी, हिरदे हमारे जगवंतकी जगित है॥१४॥

श्रर्थः—श्रमारा हृदयमां जगवंतनी जिक्त रही हो, ते क्यारेकतो सुमितरूप थईने कुमितनो नाश करें हो, क्यारेक श्रंतर्विषे ते जिक्त विमल ज्योतिरूप थईने जाएत थाय हो, श्र्यांत् सम्यक्त्व-चेतना तेज जगवंतनी जिक्त हो; क्यारेक तेज जिक्त दयारूप थईने चित्तने दयारूप करे हो, श्रमे क्यारेक ते जिक्त पोताना श्रात्मईश्वरने जो वानी लालसा के लगन थकी, एटले लयलागवामां, लोचनोने स्थिर करे हे श्रमे क्यारेक तो ते जिक्त श्रारति के श्रमे क्यारेक तो ते जिक्त श्रारती के जिल्ली श्रम् सन्मुख श्रद्ध रहे हे (बीजे श्रम् प्रज सन्मुख श्रारती के जिल्ली वाणीरूप थईने वाहार बगित के शब्द करी रहे हे जिवी जिवी दशा धारे हे ते वारे तेवी तेवी रीतनी करनारी हो, ते एवी जगवंतनी जिक्त श्रमारा हृदयमां वसी रही हे तेथी श्रा नाटकशंश रचनारूप कार्यमां पण एक जगवंतनी जिक्त कारण हे. एतात्पर्यार्थ हे. ॥ १४॥

इवे या यंथनो महीमा वर्णवेहे यथ नाटक वर्णनः-

॥सर्वेया इकतीसाः॥—मोख चलवेकों सोन करमको करें बोन, जाको रस जीन बुध लीन ज्यों घुलति है; ग्रनको गरंथ निरग्रनको सुगम पंथ, जाको जस कहत सुरेश श्र कुलित है; याहीके जु पठी सो उडत ज्ञान गगनमें, याहीके विपन्नी जन जालमें रुखत है; हाटकसो विमल विराटकसो विसतार, नाटक सुनत हीय फाटक खुलत हैं॥१५॥

श्रयं-जेम जला सुकनवमे कार्य सिद्धि यायहे, तेम श्रा ग्रंथपण मोक्तमार्गे चाल नारने कार्यसिद्धिनो करनार हे; तथा श्रा ग्रंथ कर्मरूप केफनी जाल काढवाने वमन करवानुं श्रोषध हे; श्रने जैन ग्रंथनो रस हे ते रस जौन के पामिने तेमां पंकित लोक लोननीपरे गर्क थईरह्या हे. वली जेमां ग्रणजे क्वान दर्शन चारित्र तेनी ग्रंथ के रचनाहे; परमितनी श्रपेक्वाये निर्गुण जे मोक्तपद तेनो सुगम पंथ हे. ते निर्गुण कहेवो हे, जेनो यश श्रक्तय सुल हे; जेने कहेवाने इंद्र पण श्रकलायहे श्रने श्रा ग्रंथ यनो जेणे पक्त लीधो हे, ते तो श्रा ग्रंथरूप पांलना प्रजावश्री क्वानरूप श्राकाशमां पक्तीनी परे हिं। रह्याहे श्रने जे श्रा ग्रंथना विपक्ति हे हे ते पांलरहित पक्तीनी परे जगत्रूप पाराधिनी जालमां रही रह्याहे; तेमाटे श्रा नाटकनाम ग्रंथ ते हाटक ए टले सुवर्णसमान हे; श्रने जेम गीता ग्रंथमां श्रीकृष्णे वैराटरूप महोटा विस्तारे करी

देखाड्युं तेवो आ यंथ पण विस्तारवंत हे, एवा आ नाटक यंथने श्रवण करतामां है यानां कमाम ते फाटक के॰ खुढ़ी जायहे॥ १५॥

॥दोहराः॥–कहों ग्रुक्त निहचें कथा, कहों ग्रुक्त विवहारः मुक्ति पंथ कारन कहों, अनुजोको अधिकार ॥ १६॥

श्रर्थः—जे शुक्त निश्चयरूप कथावे ते कहीश. श्रने शुक्त व्यवहार जे वे ते पण कहीश श्रने मुक्ति पंथनुं कारण जे वे ते पण कहीश श्रने श्रनुजवनो जे श्रिधकार वे ते पण हुं कहीश ॥१६॥

श्रमुत्रव पदार्थमुं लक्तणः कहेतेः - श्रमुत्रव वर्णनं

॥ दोहराः ॥ वस्तुविचारत ध्यावतै, मन पावै विश्रामः रस खादन सुख ऊपजे, श्र नुजो याको नाम ॥ १९॥

श्रर्थः—श्रजाणीवस्तु जाणवाने मनमां विचार कस्त्राश्री तथा तेतुं चिंतन कस्त्राश्री एम खोजतां खोजतां ज्यारे मनमां ठीक ठरे, त्यारे सत्य समज्याना रसनो खाद प्राप्त थाय ने तेश्री सुख उपजे तेतुं नाम श्रनुजव हे ॥ १९॥

॥दोहराः॥-श्रनुत्रौ रतन चिंतामनि, श्रनुत्रौ है रसकूपः श्रनुत्रौ मारगमोखको, श्रनुत्रौ मोख सरूप॥ १०॥

श्रर्थ ॥ श्रनुनव जेवे तेज चिंतामणि रत्न वे, श्रने तेज श्रनुजव रसायननी कृपी वे; श्रनुजव तेज मोक्तनो मारग वे श्रने श्रनुजवज मोक्त सरूप वे ॥ १० ॥

श्रनुत्रव महीमाः

॥सवैया इकतीसाः॥—श्रनुजोके रसकों रसायन कहत जग, श्रनुजो श्रज्यास यहैं तीरथकी ठोर हैं; श्रनुजोकी जो रसा कहावें सोई पोरसा सु, श्रनुजो श्रधोरसा सु जरधकी दौर है; श्रनुजोकी केही यहै कामधेनु चित्रावेही, श्रनुजोको स्वाद पंच श्रमृतकों कोर है; श्रनुजो करम तोरे, परमसों प्रीति जोरे, श्रनुजो समान व धरम कोन श्रोर है ॥ १ए ॥

श्रर्थः—जगत्वासी लोक श्रनुजवना रसने रसायन केहें हे, केमके जेम रसायन लोढानुं सुवर्ण करें हे, तेम श्रनुजव जेहे ते मिथ्यात्वने फेडीने सम्यक्त करें हे; जेम तीर्थनी होर जवाशी श्रपावन होय ते पावन श्रायहे. तेम श्रंथविषे श्रनुजवनो श्र ज्यास ते श्रजाणने जाण करें हे. श्रने श्रनुजवनी जे रसा के एथवी तेहज सुवर्ण पोरसा हे, एटले श्रनुजवनी जत्पित हे, ते सोवन पोरसानी परे वृद्धि पामे हे. श्रने श्रधोरसा के पाताल लोक, ते पण श्रनुजव रूपमां हे, श्रने कर्ष्व लोकनी दोर ते पण

श्रमुजवरूपमांज हे, एटखे श्रमुजवमांज स्वर्ग नरक हे, श्रमे श्रमुजवनी केलि के एरमत ते कामधेनुरूप हे, ते श्रापणीक्षिक्षने वधारनारी हे, श्रमे ते श्रमुजवनी जे केलि हे ते श्रक्य क्षि करवाने चित्रावेली हे, श्रमे श्रमुजवनो स्वाद ते पंचामृतना कौर के ग्रास जेवो हे. श्रमुजव करमने तोडेहे, ने परमात्मानी प्राप्ति जोडे हे; एटखे श्रमुजवशी खोजतां परमात्मानी प्राप्ति श्राप्त श्रमुजव जेवो बीजो कोई धर्म नथी। एटखे श्रमुजव क्राम जाणवाशीज मोक्स मार्ग नजीक हे.॥१९॥

हवे श्रनुत्रव साधवाने ठ ड्रव्यनुं वर्णन करेठे. तेमां प्रथम जीव ड्रव्य वर्णनः— ॥ दोहराः॥— चेतनवंत श्रनंत ग्रन, पर्यय सकति श्रनंत; श्रव्यख श्रखंडित सर्वगत, जीव दरववीरतंत ॥ १० ॥

श्रर्थ:—जाणवा मात्रने चेतन कहें हे तडूप शक्तिमान हे, जेना श्रनंत गुण हे. जेमां पर्याय के नामांतरपणुं पामवानी श्रनंत शक्ति हे, इंडिय श्रगोचर हे, तेथी श्रवक्त हे, देहना खंड थाय पण श्रात्मा श्रखंकित हे, सर्व खोकमां जस्बो हे तेथी सर्वगत हे, एवं जीव डह्यनुं स्वरूप हे. ते कह्यो. ॥ १० ॥

हवे पुजल द्रव्यनुं सक्तण कहेते. श्रथ पुजल द्रव्य यथा:-

॥दोहराः॥-फरस वर्न रस गंधमय, नरद पास संठाणः श्रणुरू पीपुजल दरव, नज प्रदेश परमान ॥ ११ ॥

श्रर्थ:-स्पर्श वर्ण रस गंध ए गुणमय सदा रहे, नरद जे सोगठीरूप राग तेना पासामां सूझा, वृत्त, श्रस्त्र, चतुरस्त्र, श्रायत ए पांच संस्थान हे; तेथी एनुं नाम संस्थान हे. पोत पोतानी वर्गणा योग्यरूप ग्रहण करे, तेथी ए पुजल इत्य श्रमुरूपी श्रथवा पर माणुरूपी हे. जेम श्राकाशप्रदेश श्रनंत हे, तेम ए पण श्रनंत प्रमाण हे ॥ ११ ॥ हवे धर्म इत्यनुं लक्षण कहेहे. धर्म इत्य यथा.

॥दोहराः॥- जैसे सिखल समूहमें, करे मीन गति कर्म; तैसे पुजल जीवको, चल न सहाई धर्मः ॥ ११ ॥

श्रर्थः—जेम पाणीना जरावमां मावखुं गमन किया करें हे, तहां कियानो कर्त्ता मा वखुं हे, श्रने सिखल समृह जे पाणीनो जराव ते कियानो साधक हे तेम पुजलड्रव्य नी तथा जीवड्रव्यनी चलन कियानो साधक धर्मास्तिकाय ड्रव्य हे.॥ ११॥

हवे श्रधर्मास्तिकाय द्रव्यनुं लक्षण कहेते. श्रधर्म द्रव्य यथा:-

॥दोहराः॥-ज्यों पंथिक ग्रीषमसमे, बैठे ठाया माहिं; त्यों श्रधर्मकी जूमिमें, जड चेतन ठहरांहि ॥ १३॥

श्रर्थ:-जेम कोई वटेमार्ग्र बेसवानी कियानो कत्तीं हे, ने कियानी साधक हाया है,

तेम श्रधर्मास्तिकायनी जूमी के॰ श्रवगाहना तेमां जम जे पुजल ने चेतन जे जीव ते बने स्थिर थायहे, तेथी श्रधर्मास्तिकाय द्रव्य स्थिरतानुं कारण हे. ॥ १३ ॥ हवे श्राकाश द्रव्यनुं लक्षण कहेहे. श्राकाश द्रव्य यथा.

॥दोहराः॥—संतत जाके उदरमें, सकल पदारथ वास; जो जाजन सब जगत्को, सोइ दरब श्राकाशः ॥ १४ ॥

अर्थः-संतत के॰ निरंतर जेना उदरमां समस्त पदार्थ वसी रह्याहे, अने जे सर्व जगत्नुं जाजन के॰ आधारजूत हे, ते आकाश झब्य जाणवुं ॥ १४ ॥

इवे कालड्यमुं लक्तण कहेते. काल ड्रव्य यथा.

॥दोहराः॥- जो नवकरि जीरन करै, सकल वस्तु थिति ठान, परावर्त्तवर्त्तन करै, काल दरव सो जान.॥ १५॥

श्रर्थः—जे द्रव्य वडे सघली वस्तुनी स्थिति बंधाय एटले पेहेलां सकल वस्तुने नवी बतावे, ने पठवामेथी ते सघलीने जुनी करी देखाडे, श्रने उलट पालट वर्ता ववानी दशाधरे ते कालद्रव्य जाणवुं.॥ १५॥

हवे या ग्रंथमां कहेवा लायक नव तत्त्व हे तेनुं वर्णन करेहेः—तेमां प्रथम जीवत स्वनी समज पाडेहे. नवतत्त्व वर्णनं, जीवतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥–समता रमता उरधता, ज्ञायकता सुखजासः वेदकता चैतन्यता, ए सब जीव विलासः ॥ १६ ॥

श्रर्थः—सर्व जीव बराबर हे ए समता, घटघटमां रमी रहेहे ए रमता, ऊर्ध्व दिरो गमन करवुं ए उरधता, सर्व पदार्थनो जाणनार ते ज्ञायकता, सुखमय जासे हे तेथी सुखजास, सुखडुःख वेदे ए वेदकता, श्रने चेतना गुणथी चैतन्यता ए स घलो जीव तत्त्वनो विलास हे. ॥ १६॥

श्रय श्रजीवतत्त्व यथा.

॥दोहाः॥—तनता मनता वचनता, जडता जड संमेख; खघुता गुरुता गमनता, ए श्रजीवके खेल ॥ १९॥

श्रर्थः-शरीरपणुं, मनपणुं, वचनपणुं, जमवस्तुमां शेखनेख श्रवापणुं, खघुपणुं, गुरु पणुं, गमनपणुं ए सर्व श्रजीवतत्त्वना खेखहे.॥ १९॥

श्रय पुएयतत्त्व यथाः

॥दोहराः॥-जो विद्युद्ध जाविन बधे, श्ररु ऊरध मुख होय; जो सुखदायक जगतमें, पुन्य पदारथ, सोय.॥ १०॥ श्रर्थः-जेपदार्थ विशुद्ध परिणामथी वधे, श्रने जेनुं ऊर्ध्वमुखहे, ऊर्ध्वगित एज चमेहे, जे पदार्थ जगत्मां सुखदायकहे, ते पुष्य पदार्थ जाणवोः ॥ २०॥ श्रथ पापतस्व यथाः

॥ दोहराः॥-संकिखेसि जाविन वधे, सहज श्रधोमुख होय; डुःखदायक संसारमें, पाप पदारथ सोय. ॥ १ए ॥

श्रर्थः—जे पदार्थ संक्षेश जाव वने कषायनीवृद्धिश्री वधे, सेहजे जेनी गति नीची हे, श्रधोमुखहे, श्रने जगत्मां जे जुःखदायक हे तेज पाप पदार्थ केहेवायहे.॥ १ए॥ श्रथ श्राश्रवतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥-जोई करम जद्योत धरि, होइ क्रिया रस रत्तः; करषै नुतन करमको, सोई श्राश्रव तत्त.॥ ३०॥

श्रर्थः-जे कर्मनो उदय धरीने शुज तथा श्रशुज क्रियाना रसमां रत यई रहे, त्यारे नवां करमनुं करले के॰ खेचवुं करे ते श्राश्रव तत्त्व केहेवाय.॥ ३०॥

श्रथ संबरतत्त्व यथा.

॥दोहराः॥-जो उपयोग सरूप धरि, वरते जोग विरत्तः; रोके श्रावत करमकों, सो है संबर तत्त. ॥ ३१ ॥

श्रर्थः-जे शुद्ध उपयोग खरूपने धारीने मन वचन कायाना जोगधी विरक्त थको वर्ते श्रने नवां करम श्रावताने रोकी राखे ते संवर तत्त्व किहये. ॥ ३१ ॥

श्रय निर्झरातत्त्व यथा.

॥दोहाः॥-जो पूरव सत्ता करम, करि थिति पूरण श्राड, खिरवैकों उद्यत जयो, सो निर्झरा खखाड. ॥ ३१ ॥

श्रर्थः—जे पूर्व कालनेविषे श्रायुविना सात कर्म सत्तारूप हतां श्रने श्रायु कर्म वर्त्तमान कालमां सत्तारूप वे तेनी स्थिति पूर्ण करीने पठी नीरस कर्मने विखेरवामां जे जीव उद्यमवंत थयो ए निर्जरानुं लक्षण जाणवुं. ॥ ३१ ॥

श्रथ बंधतत्त्व यथा.

॥दोहाः॥—जो नव कर्म्म पुरानसों, मिखे गंठि मिढ होइ; सकति बढावै वंसकी, वंध पदारथ सोइ ॥ ३३॥

श्रर्थः-जे नवां कर्म जूना कर्म साथे श्रावी मखे, श्रने तेनी गांठ दृढ बंधाय, श्रने श्रागख जतां ते कर्मना वंसनी शक्ति चढती थाय, ते बंध पदारथ केहेवाय. ॥ ३३ ॥

श्रय मोक्त तत्त्व यथाः

॥दोहाः॥-थिति पूरन करि जो करम, षिरे बंध पद जानि; हंस श्रंस उज्वल करे, मोक्त तत्त्व सो जानि. ॥ ३४ ॥

श्रर्थः—जे कर्मनी स्थितिने पूर्ण करीने कर्मने खेरे के० क्तयकरी नाखे श्रने बंध पद के० सत्तावन प्रकारे बंधस्थान तेने जानि के० जांगीने हंस के० परमात्माना श्रंसने क्रमे उज्वल करे तेज मोक्त तत्त्व जाणवुं ॥ ३४ ॥

ह्वे कवित्त ढंदमां पदार्थनी नाममाला एटले प्रयोजनवाला नामनी नाममाला लखी जणावेढे:--

श्रय नाममाला सूचनिका मात्र लिख्यते. श्रय समुचय वस्तुके नाम.

॥दोहराः॥–न्नाव पदारथ समय धन, तत्त्व वित्त वसु दर्वः प्रविन अर्थ इत्यादि बहु, वस्तु नाम ए सर्वे. ॥ ३५ ॥

श्रर्थः-प्रथम सामान्यपणे वस्तुनां नाम कहें हे. जाव, पदार्थ, समय, धन, तस्व, वित्त, वस्तु, ड्रव्य, ड्रवीण, श्रर्थ, इत्यादि घणां वस्तुनां नाम हे. ॥ ३५ ॥

श्रय ग्रुद्ध जीव ड्रव्यके नामः-

॥संवैया इकतीसाः॥-परमपुरुष परमेसुर परमज्योति, परब्रह्म पूरन परम परधान है; श्रनादि श्रनंत श्रविगत श्रविनाशि श्रज, निरक्षंद मुकत मुकुंद श्रमलान है; निरा बाध निगम निरंजन निरविकार, निराकार संसार सिरोमनि सुजान है; सरव दरसी सरबङ्ग सिद्ध सांई शिव, धनी नाथ ईश जगदीश जगवान है.॥ ३६॥

श्रवं-परमपुरुष, परमेश्वर, परमज्योति, परब्रह्म, पूर्ण, परमप्रधान, श्रनादिश्यनंत, श्रव्यक्त, श्रविनाशी, श्रज, निर्देष्ठ, मुक्ति, मुकुंद, श्रम्खान, निराबाध, निगम, निरं जन, निर्विकार, निराकार, संसारशिरोमणि, सुजान, सर्वदर्शी, सर्वज्ञ, सिद्ध, स्वामी, शिव, धनी, नाथ, ईश, जगदीश, जगवान, कहीये. ॥ ३६ ॥

हवे कर्म व्याप्त श्रग्रुक्त जीव द्रव्यना नाम कहे हे:—संसारी जीव द्रव्यके नाम.
॥संवैया इकतीसाः॥—चिदानंद चेतन श्रव्यख जीव समैसार, बुक्तरूप श्रबुक्त श्रग्रुक्त
खपयोगी है; चिदरूप स्वयंत्रू चिन्मूरति धरमवंत, प्रानवंत, प्रानि जंतु जूत जव
जोगी है; ग्रनधारी कलाधारी जेषधारी विद्याधारी, श्रंगधारी संगधारी जोगधारी जोगी
है; चिन्मय श्रवंम हंस श्रवर श्रातमराम, करमको करतार परम विजोगी है। ॥३॥।

श्रर्थः-चिदानंद, चेतन, श्रबख, जीव, समयसार, बुद्धरूप, श्रबुद्ध, श्रशुद्ध, जप-योगी, चिद्धूप, स्वयंत्रू, चिन्मूर्ति, धर्मवंत, प्राण्वंत, प्राणी, जंतु, जूत, जवजोगी, गुण धारी, कलाधारी, जेषधारी, विद्याधारी, श्रंगधारी, संगधारी, योगधारी, योगी, चि-न्मय श्रखंम, हंस, श्रद्धार, श्रात्मराम, कर्मकर्त्ता, परमवियोगी कहिये.॥ ३९॥ श्रथ श्राकाशके नामः--

॥दोहराः॥-- षं विहाय छांबर गगन, छातरिक्त जगधाम; व्योम वियत्नज मेघपथ, ए ष्टाकाशके नाम. ॥ ३० ॥

श्रर्थः-खं, विहाय, श्रंबर, गगन, श्रंतिरक्त, जगधाम, व्योम, वियत्, नज, मेध-पथ, ए श्राकाशनां नामः ॥ ३०॥

श्रथ कालके नामः

॥दोहाः॥–यम, कृतांत, श्रंतक, त्रिदस, श्रावर्ती मृतथान; प्रानहरन, श्रादित तनय, कालनाम परमान ॥ ३७॥

श्रर्थः-यम, कृतांत, श्रंतक, त्रिदश, श्रावर्त्तिक, मृतस्थान, प्राणहरण, श्रादित्य तनय, एवां कालनां नाम हे. ॥ ३ए ॥

पुष्यके नाम यथा.

॥दोहाः॥–पुष्य सुकृत ऊरधवदन, श्रकर रोग ग्रुज कर्मः सुखदायक संसारफल, जागवहीर्मुख धर्म. ॥ ४० ॥

श्रर्थः-पुष्य, सुकृत, ऊर्ध्ववदन, श्रकररोग, ग्रुजकर्म, सुखदायक, संसार फल, जाग, बहिर्मुख, धर्म, ए पुष्यनां नाम हे.॥ ४०॥

श्रय पापके नाम यथा.

॥दोहाः॥–पाप श्रधोमुख एन श्रघ, कंप रोग डुखधाम; कखिल कछुष किलविष डुरित, श्रञ्जुत कर्मके नाम ॥ ४१ ॥

श्रर्थः-पाप, श्रधोमुख, एन, श्रघ, कंप, रोग, डुःखधाम, कल्लिल, कल्लुष, किह्विष, श्रने डुरित, ए श्रग्रुज कर्मनां नाम जाणवां. ॥ ४१ ॥

श्रथ मोक्तके नामः

॥दोहाः॥–सिद्धवेत्र त्रिज्ञवन मुकुट, शिवमग स्रविचल थानः मोषमुगति वैक्वंव-शिव, पंचम गति निरवान ॥ ४१ ॥

श्रर्थः-सिद्धक्तेत्र, त्रिज्ञवनमुकुट, शिवमार्ग, श्रविचखस्थान, मोक्त, मुक्ति, वैकुंठ, शिव, पंचमगति श्रने निर्वाण ॥ ४१ ॥

श्रय बुद्धिके नाम यथा.

॥दोहाः॥—प्रज्ञा धिषना सेमुखी, धी मेधामति बुद्धिः सुरति मनीषा चेतना, श्राशय श्रंसविशुद्धि. ॥ ধই ॥ अर्थः-प्रज्ञा, धिषना, सेमुषी, धी, मेधा मित, बुद्धि, सुरति, मनीषा, चेतना, आशय, अंशविशुद्धि कहिये ॥ ४३ ॥

श्रय विचक्तण पुरुषके नामः-

॥दोहाः॥–निपुन विचन्न विबुध बुध, विद्याधर विद्वान; पटु प्रवीन पंक्ति चतुर, सुधी सुजन मतिमानः ॥ ४४ ॥ कलावंत कोविद कुशल, सुमन दक्त धीमंत; ज्ञाता सज्जन ब्रह्मविद्, तत्त्वज्ञ गुनीजन संत. ॥ ४५ ॥

श्रर्थः-निपुण, विचक्तण, विबुध, बुध, विद्याधर, विद्यान, पटु, प्रवीण, पंितत, च तुर, सुधी, सुजन श्रने मतिमान ॥ ४४ ॥ कलावान, कोविद, कुशल, सुमन, दक्त, धीमंत, ज्ञाता, सज्जन, ब्रह्मविद्, तत्त्वज्ञ, ग्रणीजन श्रने संत ॥ ४५ ॥

श्रथ मुनीश्वरके नामः-

॥दोहाः॥-मुनि महंत तापस तपी. जिक्क चारितधाम; यती तपोधन संयमी, व्रती साधु रिषि नाम ॥ ४६॥

श्रर्थः मुनि, महंत, तापस, तपी, जिक्क, चारित्रधाम, यति, तपोधन, संयमी, वती, साधु ए रुषिनां नाम जाणवां. ॥ ४६॥

दर्शनके नामः-

॥दोहाः॥-दरस विलोकन देखनो, श्रवलोकन जिगचाल; लखन दृष्टि निरखन ज वन, चिंतवन चाहन जाल ॥ ४७॥

अर्थः-दर्शन, विलोकन, देखवुं, श्रवलोकन, द्रगचालन, खखवुं, दृष्टी, निरीक्षण, जोवुं, चिंतवन, चाहन, ने जालवुं ॥ ४७॥

ग्रुद्ध ज्ञान तथा चारित्रके नामः-

॥दोहाः॥-ज्ञान बोध श्रवगम मनन, जगतन्तान जगजान; संयम चारित श्राचरण, शरन वृति धिरवान ॥ ४० ॥

श्रर्थः-ज्ञान, बोध, श्रवगम, मनन, जगङ्गानु, जगजान, संयम, चारित्र, श्राचरण, श्ररण, वृत्ति, धेर्यवानः ॥ ४७ ॥

श्रय साचके नामः-

॥दोहाः॥--सम्यक् सत्य स्रमोघ सत, निसंदेह निरधार; ठीक यथारथ उचित तथ, मिथ्या स्रादिस्रकार ॥ ४ए ॥

श्रर्थः-सम्यक्, सत्य, श्रमोघ, सत्, निःसंदेह, निर्धार, ठीक, यथार्थ, जिचत, तथ्य, मिथ्या श्रादि शब्दने श्रकार लगामीने बोलीये तो श्रमिथ्या शब्द थाय ते पण एनुं नाम जाणवुं ॥ ४ए ॥

www.jainelibrary.org

श्रय जूठके नामः--

॥दोहाः॥--श्रजयारथ मिथ्या मृषा, वृथा श्रातत्य श्रातीकः मुधा मोघ निष्फल वि तथ, श्रनुचित श्रात श्रातिक ॥ ५० ॥

श्चर्यः श्वययार्थ, मिथ्या, मृषा, वृथा, श्वसत्य, श्वलीक, मुधा, मोघ, निष्फल, वि तथ, श्रनुचित, श्वसत्य, श्रने, श्वठीक, ॥ ५० ॥ इति नाममाला समाप्ताः

श्रथ समयसारके द्वादश द्वार वर्णनः--

॥सवैया इकतीसाः॥-जीव निरजीव करता करम पुष्य पाप, आश्रव संवर निरजरा बंध मोष है; सरब विद्युद्धि स्याद्वाद साधिसाधक जुआसद जुवार धरे समैसार कोष है; दरवानुयोग दरवानुयोग दूरि करै, निगमको नाटक परम रस पोष है; ऐसो परमागम बनारसी बखाने यामें, ज्ञानको निदान गुद्ध चारितकी चोष है ॥ ५१॥

श्रर्थः-जीवद्वार, श्रजीवद्वार, कर्ता कर्म क्रियाद्वार, पुर्खपाप द्वार, श्राश्रवद्वार, सं वरद्वार, निर्जराद्वार, बंधद्वार, मोक्तद्वार, सर्व विश्वद्विद्वार, स्याद्वादद्वार, साध्य सा धकद्वार, श्रा समयसारना ए बार द्वाररूप कोष के० कोठार हे; श्रा ग्रंथमां द्वव्यानुयोग के० द्वव्यनो विचारकरवो, पही द्वव्यानुयोग द्वर करवो, ने शुद्ध श्रात्मसत्ता नोज विचार करवानुं श्रने निगमके० परमात्मानुं नाटक एमां परम शांतरसनो पोष हे, ए परम सिद्धांतने वणारसीदास वखाणेहे. वखी श्रा ग्रंथमां क्ञाननुं निदानके० मूलविवरो तथा शुद्ध चारित्रनी चोखी किया कही बताववानीहे॥ ५१॥

श्रय यंयारंत्रको नमस्कार मंगलाचरण रूप.

॥दोहराः॥–शोजित निजञ्चनुजूतियुत, चिदानंद जगवान; सार पदारथ ञ्चातमा, सकल पदारथ जान ॥ ५१ ॥

श्रर्थः—जे पदार्थ पोताना श्रनुजव युक्त शोजित हे, चित्के० चेतना श्रने श्रानंद तेचिदानंद किह्यें; तथा जगवान के० ज्ञानवंत हे, एवो साररूप पदार्थ संसारमां श्रातमा हे, जे समस्त पदार्थनो जाणनार महोटो ज्ञाता हे॥ ५२॥

श्रय श्रात्मानुं वर्णन करी नमस्कार करेछे:-

॥सवैया तेईसाः॥-जो अपनी जिति आपु विराजत, है परधान पदारय नामी; चेतन अंक सदा निकलंक महासुखसागरको विसरामी; जीव अजीव जिते जगमें तिनको ग्रन ज्ञायक अंतरजामी; सो शिवरूप बसै शिवयानक, ताहि विलोकनमें शिवगामी॥५३॥

श्रर्थ ॥ जे पोतानी द्युतिवमेज पोते विराजमान हे, एटखे पोताथी पोते जासीरह्यों हे, पण बीजा पदार्थवडे जेनो जास श्रतो नथी एवो कोई प्रधान पदार्थ नामी प्र सिद्ध है. जेनुं चेतनरूप श्रंक के विक्षण है; जेसदा निकलंक है; निरंजन है; महोटा सुखसमुद्भमां जेनो विश्राम थई रह्योहे, एटले एकाग्रचित्ते जे सहेजे समाधिसुखमां रमी रह्योहे; जगत्मां जेटला जीव श्रजीव पदार्थ है, ते सर्वना ग्रणनो श्राहक है, श्रमे श्रंतरजामी है. जे घटघटमां विराजमान है. तेहज शिवरूप के सिद्धरूप थयो थको लोकाग्रजागे सिद्धावस्थामां वसेहे; जेने ज्ञान दृष्टिवडे जोईने मुक्ति गामी जीव नमस्कार करे है ॥ ५३॥

हवे जगवाननी वाणीने नमस्कार करेते. श्रथ जिनवाणी वर्णनं.

॥सवैया तेइसाः॥—जोगधरै रहि जोगसुंजिन्न श्रनंत गुनातम केवल ज्ञानी; तासहृदे इहसों निकसी सरिता सम व्हे श्रुत सिंधु समानी; यातें श्रनंत नयातम लहन; सत्य सरूप सिद्धांत बलानी; बुद्धलखे न लखे छुरबुद्धि सदा जगमांहि जगे जिनबानी॥५४॥

श्रर्थः—जे त्रण योगने धारे वे तथापि ते मन वचन कायना जोगथी प्रथक् रहे हे, श्रि खित रहे हे, श्रि चे श्रि खनंत ग्रण प्रगटताने लीधे जेनो श्रात्मा कोई केवल ज्ञानी पुरुष हे ते केवल ज्ञानीना क्रदय रूप प्रह हे, तेमांथी जे नदीरूप थईने निकली ते शास्त्ररूप समुद्रमां जई नली हे, ज्यांथी श्रमंता नय खरूप लक्षण सत्य खरूपे जिनजीयें सिद्धांतमा वलाणी हे, एवी जे वाणी ते तो बुद्धिवंत तत्त्व दर्शी होय तेज लखे, श्रमे छुर्बुद्धि मिध्यामित होय ते लखे नही, जाणे नही, एवी जिनेश्वरनी वाणी जगत्मां सदा जागृत थई रही हे. ॥ ५४॥

हवे जीव द्वारनो विचार खखेठे, ते जीव कवीश्वर पोतेज ठे माटे पोतानी व्यवस्था कहेठे. श्रथ जीवद्वार कवि व्यवस्था कथनः—

॥ विष्पय वंदः॥ – हों निहचें तिहुं काल, ग्रुद्ध चेतनमय मूरित; पर परिनित संयोग, जई जडता विस्फ़्रित; मोह कर्म पर हेतु, पाइ चेतन पर रचें; ज्यों धतूर रस पान, करत नर बहु विध नचें, श्रव समय सार वर्नन करत, परम ग्रुद्धता हो उ मुफ; श्रव नयास बनारिस दास कहि, मिटों सहज ज्रमकी श्रव्ह ॥ थथ ॥

श्रर्थः – ग्रुक्क निश्चयनयवमे श्रतीत श्रनागत वर्त्तमान कालमां हुं ग्रुक्क चेतना मय पिंड हुं, एहिज मारी मूर्त्ति हे, ते एवी हे, त्यारे ग्रुक्क स्वजाव हांमीने विजा वमां केम परिणम्यो हे? एनो उत्तर कहे हे जे, कर्मादिक परवस्तु हे, तेनुं श्रहीं परिणमन थयुं, तेथी तेनी जडता श्रहीं विस्फुरित धई, एटले जमता फेली. शिष्य पूहे हे के, एवो ग्रुक्क स्वजाव हतो त्यारे परपिणिति केम ग्रहण करी? तेनो उतर, मोह कर्म राग देष रूप जे हे तेज परहेतु उत्कृष्ट कारण पामीने चेतन श्रातमा परनी साथे मोहित थयो हे; तेनो इष्टांत कहे हे:—जेम धतुरानो रस पान करी मा

णस तरेहवार रीते नाचवा खागे, तेम अनादिनुं मोह कारण पामीने चेतन जे वे ते पोतानो शुद्ध स्वजाव ढांमीने विजावधी मूर्डा पामी रह्योवे. हवे समयसार के॰ आत्मानुं वर्णन करतांज मुक्तने परम शुद्धताना स्वजावनी खोखखाणधई एटखे शुद्ध स्वजावनी खबर पडी तेथी विजावपण नाश पाम्युं. तेथी अनायास के॰ घणा ग्रंथ वांचवानो प्रयास कीधा विनाज वणारसीदास ज्ञाता कहें हे, के सहज के॰ आत्माने संगे अनादिथी ज्रमनी अरुक्त ते मिथ्यामत मग्नता खागी रही हे ते मारी मिथ्यामत मटी जाश्रो ॥ ५५॥

हवे छा जीवनी ग्रुद्धता ते छागमथी पामीये, माटे छागम वर्णवेढे छथ छा गम ब्यवस्था कथन.

॥सवैया इकतीसाः॥—निहचैमें रूप एक विवहारमें श्रानेक, याही नै विरोधमें जगत् जरमायो है; जगके विवाद नासिवेको जिन श्रागम है, जामें स्याद्वाद नाम लघन सुहायो है; दरसन मोह जाको गयो है सहजरूप, श्रागम प्रमान जाके हिरदेमें श्रायो है; श्रानेसो श्रखंकित श्रनुतन श्रानंत तेज, ऐसो पद पूरन तुरत तीन पायो है. ॥५६॥

श्रर्थः—सर्व श्रागम ज्ञानरूप निश्चयनयमां एकरूप देखाय हे, श्रुने व्यवहार न यनी श्रपेक्तावडे श्रनेक रूप देखाय हे; पण व्यवहार नयमां नयनो विरोध महोटो हे, एज नय-विरोधमां जगत् जरमायुं हे, श्रने एज ज्ञमवके जगत्मां वादविवाद छपज्यो हे, माटे जगत्नो विवाद मटाक्ताने वचमां प्रमाणिक साक्कीरूप जिनेश्व रनो श्रागम हे; जे श्रागममां स्यादाद नाम खेवाश्री सर्वपदार्थनुं खक्कण सर्वने सो हावे हे; स्यात् एटखे केवारेक प्रव्य प्रष्टिए देखीए त्यारे ए नय साचोने केवारे क पर्याय दृष्टिए जोइये त्यारे ए नय साचो; एवं कहे श्रके शिष्य पूर्वहेके एवो स्या प्राद सहित जिन श्रागम प्रमाण हे, त्यारे सर्वना हृश्यामां केम श्रावतो नश्री ? जे पुरुषनो श्रनादि कालनो मिथ्यादर्शनमोह गयो हे, तेना हृश्यामां ए जिन श्रागम प्रमाणरूप श्राव्योहे, पण मिथ्यादर्शनमोह गयो हे, तेना हृश्यामां ए श्रावे नही; हवे स्याद्वादाना जाणनारने केवं फल मखे ते कहे हे—जे पद नय रहित हे, एटखे नयनी पेहे नथी, केमके, नयतो एकांत प्राही हे, ते पूर्ण पद ने केम प्रहण करी शके? श्रने पूर्ण पद श्रखंकितहे, ने ते वखी श्रनादि कालथी हे, माटे श्रन्तन के० पुरातन हे एवं श्रनंत तेजवालुं पूर्ण पद तेने ते तुरत पाम्यो हे॥ यह ॥

हवे निश्चय श्वने व्यवहार नयने लीधे श्वागम कह्यो, तेवारे शिष्य पुढेढे के एवे नयमां कार्य सिद्धिकारी नय कयो है ? तेनो उत्तर गुरु श्वापे हे.

श्रय निश्चय व्यवहार कथन.

॥संवैया तेईसाः॥—ज्यों नर कोडिगरे गिरिसों तिहि, सोइ हितु जु गहे दिढ बांही, त्यों बुधकों विबहार जलो तबलों जबलों शिव प्रापित नाही; यद्यपि यों पर बान तथापि संधे परमारथ चेतनमांही; जीव श्रव्यापक है परसों विवहार सुतौ परकी परढांही ॥ ५७ ॥

श्रर्थः—जेम कोई पुरुष पाहाडनी उपरथी नीचे परतो होय ने बीजो पुरुष तेनो हाथ मजबुत जाली रही तेने परतो श्रटकावी राखे ते तेनो हित करनार कहेवाय; तेम पंक्तिने ज्यां रूधी शिवसुखनी प्राप्ति नथी थई, त्यां सुधी व्यवहार जालो ठे; एटखे चोथा ग्रणठाणाथी लईने चौदमा शेक्षेसीकरण ग्रणठाणासुधी व्यवहारतुं श्राखं वन ठे; यद्यपि ए रीते व्यवहार श्राखंवन प्रमाण ठे, तथापि परमार्थ ज्ञान दर्शन चा रित्रतुं ग्रुऊपणु चेतनमांज सधाय; बीजाथी न सधाय; श्रने जीव जे ठे ते पोताना ग्रणमयी ठे, पोताना ग्रणमां व्यापी रह्योठे; परंतु पर के० कर्मादिक जडजीव सत्ताथी न्यारा, ते साथे जीव श्रव्यापक ठे. श्रने व्यवहार ठे तेतो परनी ठायामां रहेठे, ए टखे परनी निश्राविना व्यवहार न होय माटे व्यवहार करतां निश्रयनय ग्रुऊ ठे॥५॥।

हवे शुद्धनिश्चयनयथी जे सम्यग् दर्शन प्रगटे वे तेनी व्यवस्था विशेषपणे जाण वाने श्वर्थे कहेवे, श्वय सम्यग् दर्शन व्यवस्था कथनः

॥सवैया इक़तीसाः॥—ग्रुद्ध नय निह्ने श्रकेखो श्रापु चिदानंद, श्रपनेही ग्रण परजा यको गहतु है; पूरन विज्ञान घन सोहे विवहार मांहि, नवतत्त्वरूपी पंच डव्यमें र हतु है; पंच डव्यनवतत्त्व न्यारे जीव न्यारो खखै, सम्यग् दरस यहे उरतैन गहतु है; सम्यग् दरस जोई श्रातमसरूप सोई मेरे घट प्रगट्यो बनारसी कहतु है ॥ ५०॥

श्रर्थः नश्रय नयनी श्रपेका खेवाशी चेतनामय जे पदार्थ हो, ते पोतानी स ताये पोते एक लोज हो; श्रने पोतानाज क्ञानादिक ग्रणना पर्यायना श्रवस्था जेदने ते यही रह्योहे श्रने तेज सामान्य क्ञानने शोधो जे षद्र प्रव्यादिक विशेष क्ञान तेने विक्ञान कहीये; श्रने तेनुं पूर्ण घन के पिंग ते ए व्यवहार नयमांज देखायहे; श्रने एज व्यवहार नयशी नवतत्त्वरूप लई धर्मादिक पांच प्रव्यमां एक त्र श्रई रहेहे. श्रने एवाज व्यवहारमां शुद्ध निश्चय केवलना पांच प्रव्य न्यारा हे एम जाण हुं श्रने नवतत्त्वने पण न्यारा जाणवा; एवी प्रव्य दृष्टिशी श्रन्य छपाधिनो श्राश्चय प्रहण करे नही, तेनेज सम्यग् दर्शनी कहीये, श्रने जे सम्यग् दर्शन हे, तेज श्रात्मखरूप मारा घटमां प्रगद्धं एवं वणारसीदास कहेहे ॥ ५०॥ शिष्ये पुट्युं के जीव प्रव्यथी नव तत्त्व श्राने पंच प्रव्य जुदा केम जाणीए तेनो उत्तर ग्रुरु कहें हे: - श्रय जीवप्रव्य व्यवस्था श्रिप्त दृष्टांत.

॥सवैया इकतीसाः॥—जैसै तृन काठ बांस आरने इत्यादि और, इंधन अनेक विध पा वकमें दिहें ये; आकृति बिलोकत कहावे आगि नानारूप, दीशें एक दाहक सुजाउ जब गहिवे; तैसे नव तत्वमें जयो है बहु जेखी जीव, शुद्धरूप मिश्रित अशुद्धरूप कहियें; जाही बिन चेतना शकतिको बिचार कीजै, ताही बिन अलख अजेदरूप लहिये।॥५ए॥

श्रशं-जेम श्रिप्तमां तृण, काठ, वांस श्रने श्रारने के० वननो बीजो कचरो इत्यादि क श्रनेक तरेहना इंधण वासीये ठइये ने जेवी जेवी इंधननी श्राकृति एटले (श्राकार) तेवी तेवी श्राकृतिनो श्रप्ती देखाय; ए रीते श्रप्ति नाना प्रकारना रूपनो कहेवायठे; पण ते बधा श्रप्तिनो स्वजाव एक सरखो दाहक ठे; एम जो ग्रहण करिये तो बधो श्रप्ति एकरूप ठे. तेमज नव तत्त्वमां जीव जेठे ते जातजातना जेष धारी रह्यो ठे माटे जीव पण बहु वेशी के० नाना प्रकारनो थयो एटले शुद्धरूप जीव ठे, ते मि श्रित थयो, त्यारे ए जीवने श्रशुद्धरूप कह्यो एनं नाम व्यवहार नय ठे; श्रने जे क णमां नवे तत्त्वमां एक चेतना शक्ति विचारिये, ते वखते शुद्ध निश्चयनये केवलीवहे नव तत्त्वनो प्रपंच श्रमुख्य राखीने श्रव्यक्तरूप जीव ठे, ते सर्वत्र ते श्रजेदरूप पामिये शुद्ध निश्चय नय जाणवो ॥ एए॥

फरी बीजी रीते शुद्धजीव व्यवस्था कहें हे, श्रथजीव व्यवस्था बनवारी दृष्टांतः— ॥सवैया इकतीसाः॥—जैसे बनबारीमें कुधातुके मिलाप हेम, नाना जांति जयो पे तथापि एक नाम है, किसके कसोटी खीक निरखे सराफ तांही, बानके प्रमान क रिखेतु देतु दाम है; तैसेही श्रनादि पुजलसों संयोगी जीव, नव तत्वरूपमें श्ररूपी महा धाम है; दीशे जनमानसों जयोत बान ठोर ठोर, प्रसरों न श्रोर एक श्रा तमाहि राम है ॥ ६०॥

श्रर्थः—जेम सोनानी मूसमां चोखुं सोनुं गाह्युं श्रने सोनाथी हीण धातु ते कुधा तु किह्ये, तेनां नाम कहें हे;—रूपुं, त्रांबुं, सीसुं, जसत, कथीर, इत्यादि वस्तुनो जु दोजुदो हेमनी साथे मिलाप थयो तेथी जुदी जुदी जातनुं सोनुं थयुं, ते हतां एक सोनाने नामे श्रोलखायहे; श्रने ते श्रशुद्ध सोनाने सराफ कसोटी पथ्थर उपर क सीने तेनी लकीर जुये ने तेउपरथी सोनुं केवुं हे ते प्रमाण करे, जेम श्रा दस रुपीयाना जावनुं हे ने श्रा श्रगीयार रुपीयाना जावनुं हे, ने ते माफक तेना दाम श्रापे लिए हे, तेमज श्रनादि कालथी ए जीव पुजल द्वयनो संयोगी माटे ए जीवे नव तत्त्वरूप व्यवस्था धारी, गितपणे, स्थितपणे, जाजनपणे, वर्त्तमानपणे, श्राधारपणे,

ए पांचे ड्रव्य यहण कीधां श्रने नवतत्त्वरूप धारण कर्यां पण एमां कोई श्ररूपी महा तेजवंत ड्रव्य वे ते तो कोई प्रत्यक्त प्रमाणे यहण चतुं नथी, श्रने श्रनुमान वेडे लइये वइये, तेवारे शिष्ये पुक्युंके, श्रनुमान केडें करीये ? त्यारे ग्रह कहें वे वोर विरो वचोतवान प्रकाशवान ड्रव्य देखाय, तेतो बीजुं कोई ड्रव्य नही, पण एक श्रा तमारामज जाणवो; ए श्रग्रुड्य निश्चय नयशी जीव कह्यो. ॥ ६०॥

हवे एवी रीते जे खोजना करीने परिचय पामिये तेने श्रमुजव किहये, ते श्रमु जवनुं स्वरूप केवी रीते हे ? एवं शिष्ये पूहे थके ग्रह सूर्यना दृष्टांते कहेहे:-

श्रय श्रनुजन व्यवस्था सूर्य दष्टांतः

॥संवैया इकतीसाः॥—जैसे रविमंग्लके उदै महिमंडलमें, त्रातप श्रटल तम पटल बिलातु है; तैसे परमातमाको श्रमुजो रहत जो लों, तो लों कहूं छविधा न कहू पन्न पातु है; नयको न खेश परवानकोन परवेश, निवेपके वंसको विधंस होतु जातु है; जे जे वस्तु साधक हैं, तेंच तहां बाधक हैं, बाकी रागदोषकी दशाकी कोन बातु है॥६१॥

श्रथः—जेम स्थमंडलना जदयथी पृथ्वीमंडलमां श्रातप के तावरो श्रटल थई जाय, श्रने तम के श्रंथकारना पमल नासी जाय, प्रकाश ज्योत थाय, तेमज शुद्ध निश्चयनयना बलवडे ज्यांसुधी श्रंतरात्मानेविषे परमात्मानो श्रनुप्तव रहे हे, त्यां सुधी कांई पण दिविधता न देखाय, पोतपोताना मतनो पक्तपात न रहे, श्रने श्रहीं न यनो लेश के श्रंश न पामिये. नय तो ते हे के, जेणेकरीने वस्तुनं साधन कराय श्रने श्रनुप्तव तो सिद्ध वस्तुनो होय माटे श्रहीं श्रनुप्तवमां नयनो लेश नथी श्रने एमां प्र त्यक्त परोक्तादिक प्रमाणनो पण प्रवेश नथी, केमके जे प्रमाण होय ते तो श्रसिद्धनं साधन करे पण सिद्ध वस्तुने शुं साधशे ?श्रने नाम, स्थापना, प्रव्य, जाव ए चार निक्तेपा हो, तेपण श्रसिद्ध वस्तुनं साधन करे हे, ते तो जेवारें परमात्मानो श्रनुप्तव सिद्ध थयो त्यारे निक्तेपाना वंशनो विध्वंसज थयो. जेम सूर्यना प्रकाशवडे श्रंथकारनो नाश यायहे, तेम ए सर्व विलय थाय हे. श्रा परमात्माने नयप्रमाण निक्तेपादिक वस्तु जे साधक हे ते सर्व वस्तु परमात्माना श्रनुप्तवमां वाधक हे; ज्यांसुधी नयप्रमाण श्रने निक्तेपानो परिवार होय त्यां सुधी शुद्ध श्रनुप्तव न होय एटलासाह ए बाधक हे. बाकी राग देख दशानी श्रु वात केहेवी ? तिहां तो नयादिक कहेवाज जोइये. ॥६१॥

हवे अनुजनमां शुद्ध रूप जीवज खख्यो तेनी व्यवस्था वचन गोचर जेवी होय तेवी केहेबे:- श्रथ जीव व्यवस्था विवरण द्वार

॥श्चिमित्व वंदः॥-श्चादि श्रंत पूरन सुनाव संयुक्त है; पर खरूप परजोग कल्पनामुक्त है; सदा एक रस प्रगट कही है जैनमें, शुद्ध नय।तमवस्तु विराजे वैनमें ॥ ६१ ॥

श्रर्थः—श्रादि निगोद श्रने श्रंत सिद्ध श्रवस्था, तेनी वच्चे चेतना रूप पोताना पूर्ण खत्रावेकरी संयुक्त हे; श्रने ए चेतनामां पर खरूप जे जड खरूप, श्रने परजोग जे पुजल संयोग, तेनी दशा, कल्पना-विचारणा तेणेकरी मुक्त हे श्रादि श्रंतसुधी एकज खत्राव हे. सदा एक चेतना रसमय प्रगट वस्तु हे; ते शुद्ध निश्चय नयनुं श्रालंबन क्षईने जैन श्रागममां कही ने जेवी कही तेवी वचन व्यवहारमां पण विराजमान हे. ॥ ६१ ॥

हवे एवंज खरूप वचन द्वारवने गुरु हितोपदेश रूप केहेवे:- श्रघ हितोपदेश ।।कवित वंदः॥-सतग्रह कहें जव्य जीवनिरसों, तोरहु तुरत मोहकी जेख; समिकत रूप गहो श्रपनो गुन, करहु गुद्ध श्रमुजवको खेख; पुद्गल पिंम जाव रागादिक, इनसों नही तुमारो मेल; ए जमप्रगट ग्रपत तुम चेतन, जैसै जिन्न तोय श्रह तेलने॥६३॥

श्रर्थः—श्रहो जव्यलोक ! वेला थार्ड, मोहनो बंध तोडो. श्रने तमारो पोतानो स मिकत गुण हे, ते श्रहण करो; श्रने ते लईने पोताना शुद्ध श्रनुजवनो खेल खेलो. श्रने देखवामां जे श्रा शरीर हे ते पुद्गल पिंम हे. श्रने कर्म पण पुद्गल पिंम हे. श्रने श्रा पुद्गल पिंडनो राग देषादिक जाव ते स्वजाव हे, पण ए वस्तु साथे त हारो मिलाप नथी. केमके, ए वस्तु तो जमहे, ने प्रगट हे, एटले देखवामां श्रावेहे, ने तमे तो चेतन हो तथा ग्रह्म हो. त्यारे ते पुद्गल पिंडनी ने तमारी जिन्नता हरी; जेम पाणीने तेल जिन्न हो, तेनीपरे जाणी लेवुं. ॥ ६३ ॥

हवे एवो उपदेश सांजलीने ते ज्ञाता पुरुष थयो तेनो विलास कहें हे. श्रथ ज्ञाताविलास

श्रर्थः कोई बुद्धिवंत् सम्यग्दृष्टि मनुष्य होय ते पोताना शरीरमां घरने जुये; श्रमे जड चेतननो जिन्न जिन्न खजाव जाणवो ते जेद ज्ञान कह्युं; तेमां दृष्टि श्रापीने वस्तु वासतो के वस्तु खजावनो विचार करे. श्रतीतकाल, श्रनागतकाल ने वर्त्तमान कालमां मोहरसविषे जीनो थको, कर्मबंधमां विलास करतो थको पोताना चिदानंद परमात्माने लखे. ते पठी अमेक्रमे बंधने विदारतोज जाय. एवं कार्यकरी मोहना स्व जावने मूकतो जाय श्रमे पोताना श्रात्मानुं ध्यान करे, श्रमे श्रनुजवमां प्रकाशरूप देखे. त्यारे कर्म कलंक तेहिज पंक केण कादव तेथी रहित प्रगटरूप श्रचल श्रवाधित सर्व बाध रहित एवो शाश्वत निरंजन देव परमात्मा पोते हे, एवं देखे. ॥ ६४ ॥ श्रथ गुण गुणी श्रजेद कथन व्यवस्थाः

॥सवैया तेईसाः॥-शुद्ध नयातम श्रातमकी श्रनुजूति विज्ञान विजूतिहि सोई; वस्तु विचारत एक पदारथ नामके जेद कहावत दोई; यों सरवंग सदा खिख श्रापुहि,श्रा तमध्यान करें जब कोई; मेटि श्रशुद्धि विजावदशा तब सिद्ध सरूपके प्रापतिहोई॥६५॥

श्रर्थः—हवे गुद्ध श्रनुत्रव जे वे ते गुण वे, एक श्रातमा गुणी वे, तेनुं जेवुं श्रनेद्द स्वरूप वे तेवी श्रनेद श्रवस्था कही बतावेवेः—गुद्ध निश्चय स्वरूपी श्रात्मानो श्र नुन्नृति के० जे श्रनुत्रव वे, तेज विज्ञान विन्नृती के० विशेष रूप ज्ञान संपदा वे श्रहीं श्रात्मा गुणी वे ने श्रनुत्रवज्ञान गुण वे. हवे ए वे वस्तु ग्रुं वे ? एवो जो वि चार करीये तो एकज श्रात्मा पदार्थ जासे वे. एकज पदार्थमां श्रा गुण श्रने श्रा गुणी एवां वे नाम वे. तेज नेद केहेवायवे. एम सरवंग के० सर्व प्रकारे पोतानेज गुणगुणी रूप लखीने ज्यारे कोई श्रात्मध्यान करे, त्यारे श्रगुद्धविनाव दशा मटीने सिद्धस्वरूपनी प्राप्ति थायः ॥ ६५ ॥

श्रथ ज्ञाता चिंतवन स्वरूप कथन.

॥संवैया इकतीसाः॥—श्रपनेही गुन परजायसों प्रवाहरूप, परिनयो तिहूं काल श्रपने श्राधारसों; श्रंतर् वाहिर परकासवान एक रस, खिन्नता न गहे जिन्न रहे जो विकार सों; चेतनाके रस सरवंग जिर रह्यो जीव, जैसे लोंन काकर जयों है रस ठारसों; प्र रन सरूप श्रित उज्वल विज्ञान घन, मोकों होहु प्रगट निशेष निरवारसो ॥ ६६ ॥ श्रर्थः—हवे एज वातने जेम ज्ञाता लोक पोताना चित्तमां चिंतवे तेवुंज स्वरूप

कही देखाडे है:- आ जे कोई आत्मा केहवायहे, ते तो विज्ञान घन हे; विशेष ज्ञान मय पिंत हे; ते अतीत, अनागत ने वर्त्तमान ए त्रणे कालमां प्रवाहरूप कस्वाथी अविश्वन्न धाराये पोतानाज ग्रण पर्याये करीने पोतानाज ज्ञानादिक ग्रणनी अवस्था ने दने लीधे अने पोताना आधारथी परना आश्रयविना परिणामी रहे हे. अने ए वि ज्ञान घननो एवो महीमाहे के तेथी मांहे अने वाहिर एक चित्त चेतना रसवने प्रकाश एवा कार्यमां खिन्नता प्रहण न करे; अने जव विकारथी न्यारो रही सर्व प्रवेशविषे चेतनना रसे करी जीव जरपूर थई रह्यों हे. ए छपर दृष्टांत कहे हे के, जेम खुणना कांकरा खार रसथी जरेला हे, तेम चेतना रसथी जीव जरपूर थई रह्यों हे। ए छपर दृष्टांत कहे हे के, जेम खुणना कांकरा खार रसथी जरेला हे, तेम चेतना रसथी जीव जरपूर थई रह्यों हे। ए छपर ह्यांत कहे हे के, जेम खुणना कांकरा खार रसथी जरेला हे, तेम चेतना रसथी जीव जरपूर थई रह्यों हे। ए छुप स्वरूप ते अखंकित घणुंजज्वल जे विज्ञान घन पूर्वे वखाणुं ते मने प्रगट थाओं।

निशेष निरबार ते सम विजाव दशानुं निवारण करीने पठी ए रीते ज्ञाता पुरुष मनमां चिंतवे त्र्यने एमांज स्थिर रहे ॥ ६६ ॥

श्रथ द्वय पर्याय श्रजेद कथन व्यस्था.

॥ कवित्त ढंदः॥— जहँ ध्रुव धर्म कर्म ढय खन्ठन, सिद्ध समाधि साध्य पद सोइ; सु धोपयोग जोग मिह मंकित, साधक ताहि कहै सब कोइ; यों परतन्न परोन्न ख रूप सु, साधक साध्य श्रवस्था दोइ; जुहुको एक ज्ञान संचय किर, सेवै शिव वंडक थिर होइ. ॥ ६९ ॥

श्रर्थः— विज्ञान घन वे ते द्रव्य वे, श्रने ज्ञाता केह्वाय ते पर्याय वे, एम विज्ञान श्रने ज्ञाता एकज वे, तेथी द्रव्य पर्यायनुं श्रजेदपणुं बतावे वेः— ज्यां सकल क मेनो क्रय लिखे एवो भ्रव धर्म जे निश्चल खजाव वे, एवं कोइक सिद्धपणानुं थवं ते तो पद साध्य केहेवाय वे, श्रने शुद्ध उपयोग लेता थका ए मन वचन काय यो गमां मंनित थका तीर्थं कर साधु प्रमुख पर्याय लई रह्या वे; तेमने सहु कोई साधु कहेवे. एवं साधुपणुं ते प्रत्यक्त खरूप वे; श्रने साध्यपणुं ते परोक्त स्वरूप वे. ए बन्ने श्रवस्था लईने एक विज्ञान घन वे. मोक्तने इन्ननार साध साध्य बन्नेने एक ज्ञान संचयवडे सेवे, ते बन्ने पदमां विज्ञान घन एक वे; श्रने ए बन्ने पदनी सेवामां स्थिर थई रहेवे॥ ६७॥

श्रथ द्वव्य ग्रण पर्याय जेद व्यवस्था कथनः

॥ किवत्त ढंदः ॥— दर्शन ज्ञान चरन त्रिग्रनातम, समख रूप किह ये विवहारः नि हचे दृष्टि एकरस चेतन, जेद रिहत श्रविचल श्रविकारः सम्यग् दशा प्रमाण ज जै नय, नीर्मल समल एकही बारः यों समकाल जीवकी परिनति, कहे जिनंद गहे गनधारः ॥ ६० ॥

श्रर्थः— शिष्य पूठे ठे के, स्वामी! तमे श्रजेद व्यवस्था कही ते कया नयना बल बहे कही? ग्रुरु केहें ठे के, व्यवहार नय वहे प्रव्य ग्रुण पर्यायनी जेद श्रवस्था ठे ते कहुं हुं.— ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रणेश्रात्माना ग्रुण ठे; ए स्वरूपथी जे व्यवहार क हीए ते समल रूप ठे; श्रने एज निश्चय दृष्टिथी जोइये तो ज्ञान, दर्शन, चारित्र एक चेतना रसमय देखाय ठे, श्रने चेतनाज चेतन ठे, तेणे करीने जेदरिहत श्रविचल श्रविकार निर्मेल रूप ठे. निश्चय नय ने व्यवहार नय ए बन्ने ठे ते सम्यग् दशामां प्रमाण ठे; जे नय ठे ते तो श्रजिप्राय विशेष ठे, माटे एकज श्रव्यक्त रूप निर्मेल तथा समल रूप जाणिये. एम समकाले निर्मेल श्रने समल जीवनी परिणित श्रई रही ठे, ते श्री जिन देव कहे ठे श्रने गणधर देव सर्दहे ठे.॥ ६०॥

श्रथ व्यवहार कथनं.

॥ दोहराः॥- एक रूप श्रातम दरव, क्वांन चरन हम् तीनः जेद जाव परिनाम सो विवहारे सु मखीनः ॥ ६ए ॥

श्रर्थः— हवे ज्ञान, दर्शन, चारित्रनुं त्रिक ने ते व्यवहार नयथी थाय ने; ते कहें ने:—श्रात्म डव्य जे ने ते एकरूप ने, ने ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण जे ने ते नेद नाव परिणाम ने; त्यारे एकविषे त्रण नेद थया तेथी ए व्यवहार नयवडे समल रूप थयुं. ॥६ए॥ श्रथ निश्रय स्वरूप कथन.

॥ दोहराः ॥– यदपि समल विवहारसों, पर्यय शक्ति श्रनेकः तदपि नियत नय देखिये, शुद्ध निरंजन एक. ॥ ७० ॥

श्रर्थः-निश्चयनयेकरी निर्मल खरूपमांज ध्याववुं जलुं हे ते केहेहेः-यद्यपि व्यव हारनयनी श्रपेक्ताथी श्रात्मानेविषे श्रनेक शक्ति श्रनेक पर्याय देखायहे; माटे ते स मल हे; तोपण निश्चय नयनी श्रपेक्ताथी शुद्ध निरंजन एकज जाण्यामां श्रावेहे. ॥ ५०॥ श्रथ शुद्ध कथन.

॥ दोहराः ॥- एक देखिये जानिये, रिम रहिये इक ठौरः समख विमल न विचा रिये, यहे सिद्धि नहि और ॥ ७१॥

श्रर्थः हवे शुद्धरूपीज उपादेय हे एवं केहेहे: जे एक शुद्ध चेतनामय रूपज देखवुं ते दर्शन, तेमज जाणवुं ते ज्ञान; श्रने तेमां जे रिम रहेवुं ते चारित्र हे; ते न यनी श्रपेक्तावने समल श्रथवा विमल रूप विचारवुं नहीं. एहिज सिद्धि कहिये, पण बीजा स्वरूपमां सिद्धि नथीं। ॥ ७१ ॥

श्रय गुद्ध श्रनुत्रव प्रशंसाः

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जाके पद सोहत सुखन्नन श्रानंत ज्ञान, विमल विकासवंत ज्योति लहलही है; यद्यपि त्रिविध रूप व्यवहारमें तथापि, एकता न तजे योंनियत श्रंग कही है; सो है जीव कैसीहू जुगतिके सदीव ताके, ध्यान करिवेकों मेरी मनसा उमही है; जाते श्रविचल सिद्धि होतु श्रोर जांति सिद्ध, नांहि नांहि वामें धोलो नांहि सही है. ॥ ५२॥

श्रर्थः — हवे एवा खरूपनो श्रनुजव स्थिर रहेवो ते छुर्छज हो, माटे सर्व ज्ञाता एनो मनोरथ करे हे. जेनेविषे श्रनंत ज्ञानरूप सुलक्षण शोजेहे, श्रने विमल विकास वंत के० पोतानुं तथा परनुं जाणवुं एवी ज्योति जेनेविषे लहलही हो, श्रने यद्यपि ह्यवहारनयमां बाह्यात्मा, श्रंतरात्मा, तथा परमात्मा ए त्रिविध रूप हो, तथापि निश्च यनयनी श्रपेक्षाथी एकताने त्यजे नही एवं एकरूपी कह्युं हो; ते एवो पदार्थतो जीव

है. हवे ते युक्तियी करी आगल केहेशे ते युक्तिये करी निरंतर तेनुं ध्यान करवाने मारी होंस मनमां हमंगी रही है. जेना ध्यानथी पोतानी ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप क्रिक्त अविचल थायहे, एज रीते सिद्धि हे, पण बीजे कोई प्रकारे सिद्धि नथी एमां कंई घोलो नथी, एटले जूहुं नथी, एज वात साची है. ॥ ७१ ॥

श्रय ज्ञाताकी व्यवस्था वर्णनं.

॥ सवैया तेईसाः॥— के अपनो पद आपु सँजारत, के ग्रुक्के मुखकी सुनि बानी;जेद विज्ञान जग्यो जिनके प्रगटे, सुविवेक कला रज धानी; जाव अनंत जये प्रतिबिंबित, जीवनमोष दशा ठहरानी; ते नर दर्पनज्यो अविकार रहे थिर रूप सदा सुखदानी॥ १३॥ अर्थः— हवे जेद विज्ञानवडे एनो अनुजव थाय ठे तेथी मुक्ति मखे तेज परमार्थ कहेठेः— कोई तो पोतानुं पद जे पोतानु निरालंब खरूप, ते पोतेज संजारीने पोताव डे ग्रंथी जेद करी पोताने उंखखेठे कोई तो ग्रुक्ना मुखनी वाणी शांजलीने पोताने उं खखेठे; अने जेना घटमां जम—चेतननुं जेद विज्ञान जाग्युं तेणे करी पोताना चेतन रूपनी जे न्यारी कला ठे, तेनी राजधानी जे तेनुं ईश्वरपणुं जेना घटमां प्रगटयुं; अने एज राजधानीमां अनंत जाव पदार्थ प्रतिबिंबित थया, तेना ज्ञायक थया एटखे जी वता थकाज मोक्त दशा ठरी, मुक्त स्वरूपी थयाः अने एमां अनंतजाव प्रतिबिंबित थया तोपण समलरूप न थया, तेथी ते मनुष्य दर्पण एटखे आरीसानीपरे विकार र हित थया, स्थिररूप थया, अने सुखदायक थयाठे॥ १३॥

श्रय जेद ज्ञान प्रशंसा कथनं.

॥सवैया इकतीसाः॥— याही वर्त्तमान समै जव्यनिको मिट्यो मोह, लग्यो है अना दिको पग्यो हे कर्म मलसो; उदो करें जेदक्कान महारुचिको निधान, उरको उजारो जारो न्यारो दुंद दलसों; याते थिर रहे अनुजो विलास गहै फिरि कबहों, अपनपो न कहै पुदगलसों; यहै करतुति यों जुदाइ करें जगतसों, पावकज्यों जिन्न करें कं चन उपलसों ॥ उ४ ॥

श्रर्थः हवे जेदिविज्ञाननी उत्पत्ति श्रने महीमा कहें हेः श्रा वर्त्तमानकाल विषे जन्यलोकनो मोह भ्रम टली जाय; जे मोह कर्म, श्रात्माने श्रनादिकालश्री लाग्यो हे; श्रने कर्ममलमां न्यापी रह्यो हो; ते मोह ज्रम मटवाश्री जेद विज्ञाननो उदय थाय, ते जेद विज्ञान केवुं हे महारुचिनुं निधान हे ए जेद विज्ञानमां महोटी रुचि पामीये हिये एटले महारुचिनुं कारण है जेद विज्ञानश्री गरिष्ट उरनुं श्रजवालुं प्रगट थाय है, ते श्रजवालुं केवुं हे ?

एटखे महा धाम धुमथी न्यारोबे; दंद्र दशाथी नीकली स्थिरतामां रहे, अने पो

ताना श्रनुजननो विलास यहण करे, पोताने सत्यार्थपणे जाणे, पढी ए जेद विज्ञान पाम्या थकी शरीर कर्मादि पुजल रूपी जाणीने पोतानुं न कहे. श्रात्मा रूप न कहे करतुति के ए जे जेदविज्ञाननी क्रिया तेज जगत्थी जुदाईने करे, पांच इव्यथी जुदाई करे, श्रहीं दृष्टांत बतावेढे:— जेम श्रिष्ठा, माटी पाषाणने कंचनथी जुदां करे ढे तेम जाणी क्षेत्रं॥ 98॥

श्रय परमार्थ शिक्ता कथन.

॥ सवैया इकतीसाः॥— बनारसी कहै जैया जव्य सुनो मेरी शीख, केहुं जांति कसे हुके एसो काज की जिए; एकहु मुहुरत मिथ्यातको विध्वंस होइ ज्ञानको जगाइ खंस हंस खोजि खीजिये; वाहीको विचार वाको ध्यान यहै कोतुहख, योंही जिर जनम परम रस पीजिए; तजी जववासकी विखास सविकाररूप, खंतकरि मोहको खंनत काख जीजिए. ॥ ७५ ॥

श्रर्थः—हवे शुद्ध जीवडव्यमां रहेवुं तेज परमार्थ वे तेनी शिक्का कहेवेः— बणार सीदास केहेवेः— श्रहो जाई जव्य जीवो, मारी शिक्का सांजलों कोई पण रीतेथी कोई डव्य केत्र काल जाव पामीने एवं काम करवुं के जेणे करीने एक मुहूर्जमात्र मां मिथ्यात्व मोहनो विध्वंस थाय श्रने क्ञाननो श्रंश जगावी लेवो, श्रने "सोहं हंसो" एवी ध्वनि करतो हंस जे श्रात्मा तेने लोजी लड्यें. पठी तेनुं लक्कण विचारवुं, पठी तेने छेलखीने तेनुं ध्यान करवुं. एवी एनी कला लोजीने कुतूहल जे लेल ते कल्या करिये; श्रने तेज जन्म पर्यंत परम रस पीवो एरीते सविकार रूपथी फेली रह्यो एवो जववासनो विलास तेने तजीने तथा मोहनो श्रंत श्राणीने श्रनंत कालसुधी जीजिए. जयवंता वर्त्तिये! एटला प्रकारे सिद्ध थवाय हे.॥ ५५॥

श्रय तीर्थंकरकी स्तुति, बाह्यरूप कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः॥-जाकी देह जितसों दसो दिशा पिवत्र जई, जाके तेज आगे सब तेजवंत रुके हैं; जाको रूप निरखी श्रकित महारूपवंत, जाकी वपुवाससों सुवास और ख़के हैं; जाको दिव्य धुनी सुनि श्रवनकों सुख होत, जाके तन बहन श्रनेक आइ हूके हैं; तेई जिनराज जाके कहे विवहार गुन, निहचै निरिख सुद्ध चेतनसों चुके हैं ॥ १६ ॥ श्रर्थः— हवे चेतन महीमावान श्रयाश्री पुजलपण मिहमावान श्राय माटे कि राज तीर्थंकरना बाह्य शरीररूप पुजलनो महीमा कहें हेः—जेनी देहनी द्युति एवी पसरी रही हे के जेशी दशे दिशा पिवत्र श्रई जायहे; एटले शोजायमान श्रायहे श्रने जेना तेज श्रायल सर्व तेजवाला हुपी जायहे एटले सर्व देवता मंद तेजवंत श्रायहे. श्रने जेनं हमें कर्ण जोईने महारूपवंत पंच श्रवत्तरवासी देवता पण चिकत श्रद रहेहे श्रने

जेना शरीरनी सुवासथी अन्य सुवासी वस्तु सर्व खुकी जायहे. अने जेनी दिव्य ध्वनि सांजलीने श्रवणने सुख थाय हे, एटखे जव्य अजव्य सर्वने ते वाणी मीही लागेहे अने जेना शरीरमां अनेक शुज लक्षण आवी दुकी रह्याहे एवा श्री जिनराज देव हे, तेमना एटला गुण कह्या ते अशुद्ध व्यवहार नयनो आश्रय लहने कह्या पण, निश्चयनयथी ए कहेला गुण सर्व शुद्ध चेतननी जिन्नता दर्शावेहे ॥ १६॥

अय जिन स्तुति व्यवहाररूप पुनः-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जामें वाखपनो तरुनपनो वृद्धपनो नांहि, श्रायु परजंत महारूप महा बल है; बिनाहि जनत जाके तनमें श्रनेक ग्रन, श्रतिसे विराजमान काया निर मल है; जैसे विनुपवन समुद्ध श्रविचलक्षप, तैसे जाको मन श्ररु श्रासन श्रचल है, ऐसो जिनराज जयवंत हो जजातमें, जाकी ग्रुजगित महा सुकृतिको फल है ॥९९॥

श्रर्थः— हवे फरी व्यवहारनय वहे जिन स्तुति करे वेः— जेमां जन्मथी मांडीने मरण पर्यंत महारूप श्रने महाबल समान रहेवे; पण बालपणु, तरुणपणु, बृद्धपणु, ए त्रण जे श्रवस्थाना जेद तेमां रूपमां श्रने बलमां जेद न पामे, जेना सहज स्वजावे जतनविना शरीरमां श्रनेक ग्रण श्रावी रहेवे; श्रने जेने विषे चोत्रीस श्रातिशय ग्रण विराजमान थई रह्या वे; श्रने जेनी काया प्रस्वेदरिहत निर्मल रहेवे; जेम पवननी हहेर विना समुद्ध श्रचलरूप थई रहेवे, तेम जेनुं मन श्रचल वे; ने श्रासनपण श्रच ल वे; श्रहीं गतिनी श्रपेकाविना श्रासन श्रचल कह्युं वे, पण निरंतर श्रचल श्रास महामुक्ति फलनी प्राप्ति थाय वे. ॥ ७९ ॥

यथार्थ कथनः-

॥ दोहराः॥– जिन पद नाहिं शरीरकों, जिन पद चेतन मांहि; जिन बर्नन कढुं छौर है, यह जिन बर्नन नांहि.॥ ७०॥

श्रर्थः— एटल्ली व्यवहार स्तुति करीने हवे सत्यार्थ वात कहे वेः— ए जे जिन नाम वे ते जीव विपाकी वे पण पुजल विपाकी नथी, तेथी जिनपद ते शरीरनुं नथी, जिनपद तो चेतननुं वे; तेथी जिनेश्वरनी स्तुति कोई ग्रंग वे पण पूर्वे जे जिनेश्वर नी स्तुति करी ते जिन स्तुति नथी. इहां शरीर जम वे श्वने श्वातमा चेतन वे ए बने जाव जिन्न स्वजावमां वे तेनुं दृष्टांत श्वापेबे. ॥ ५०॥

श्रय जम चेतन जिन्नजाव दृष्टांत कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः॥— उंचे उंचे गढके कंग्ररे यों विराजत हैं, मानो नज खोक खीख बेकों दांत दियो हैं; सोहे चिहोंजर उपबनकी सघनताई, घेरा करि मानो जूमि खोक घेरि बियो है; गहरी गंजीर खाई ताकी उपमा बनाई, नीचो करि श्रानन पाताख जल पियो है; ऐसो है नगर यामें नृपको न श्रंगकोउ, योंही चिदानंदसो शरीर जिन्न कियो है ॥ ७७ ॥

श्रर्थः — जेम कोई गढना उंचा उंचा कांगरा बिराजे हे (श्राहें किव उत्प्रेक्षण करें हे.) पण ते कांगरा नथी पण मानुं हुं जे श्रा नगरमां स्वर्गकोकने गढ़ी जवाने दांत श्राप्यां हे; एटखे जाणे स्वर्ग कोकने गढ़ी जहों. श्रने एनी चारे तरफ उपवन एटखे बाग वाडीनी सघनता एवी शोजी रही हे के जाणे जूमिक्षोक एटखे मनुष्य कोक तेणे घेरी खीधों हे. श्रने ए नगरनी चारे बाजुए उंमी खाहीबनी ते जाणे नीचुं श्रा नन एटखे मुख करीने पातालज पाणी पातो होयनी ए रीते जेणे त्रणे बोक जीत्या हे एवं नगरनं वर्णन कीधुं पण ए नगरमां कोइराजाना श्रंगनुं कांइ वर्णन कीधुं नथी मतलब के चिदानंद श्रकी शरीरने जिन्न करी बताव्युं ॥ ७ए ॥

श्रय तीर्थंकरकी निहचे स्तुति सरूप कथन वस्तु वर्णनं.

॥ सवैया इकतीसाः॥— जामें लोकालोकके सुजाउ प्रतिजासे सब, जगी ज्ञान सगित विमल जैसी श्रारसी; दर्शन उदोत लियो श्रंतराय श्रंतकी , गयो महामोह जयो परम महारसी; संन्यासी सहज जोगी जोगसों उदासी जामें, प्रकृति पंचाशी लिग रहि जिर ठारसी; सोहै घटमंदिरमें चेतन प्रगटरूप, ऐसो जिन राजतां हि बं दत बनारशी ॥ ७०॥

श्रवं हवे तीर्थंकरपदने लेइ रहेली जे वस्तु वे तेमा स्वरूपनुं वर्णन करे वे:— जेमां लोक श्रने श्रवोकनो स्वजाव एटले लट्ट प्रत्य जाव प्रतिजासी रहे, एवी ज्ञान शक्ति निर्मल प्रगटी वे जेम श्रारीसामां पदार्थना जाव जासेवे, एवी रीते जेना ज्ञा नमां सर्व जाव जासेवे, एटले ज्ञानावरण गयुं, श्रने दर्शनावरणना नाश थवाथी के वल दर्शन, उद्योत थयो श्रने श्रंतराय नाश कस्त्रो,तेथी श्रनंतवीर्थ धैर्यवंत थयो; श्रने महा मोह कर्म जे वे ते नाश पाम्युं; तेथी परम उत्कृष्ट महर्षि थयो; तेणे करी यथाख्यात चारित्रनो संन्यास एटले तेनो धारण करनार ज्ञान दर्शनचारित्र श्रादि जे सहजयोग वे तेनो धरनार, मन वचन कायना योगश्री उदास थइने श्रयातिक चार कर्मनी पंच्यासी प्रकृति सत्ताये रहि वे, ते पण बलीने खाल जेवी थइ रही वे; श्रने जेना घटमंदिरमां चेतन देव वे ते प्रगटपणे साक्ती रह्यो वे एवा श्री जिन राज देव तेने वणारसीदास वंदन करेके ए निश्रय स्तुति कही॥ ए०॥

हवे एवा ग्रुद्ध चेतननी स्तुतिनुं दृष्टांत देखाडीने निश्चय व्यवहारनो निर्णय करे हे. श्रथ श्री निश्चय व्यवहार तीर्थंकर स्तुति कथनः— ॥ किवत्त ढंदः॥— तनु चेतन विवहार एकसें, निहचे जिन्न जिन्न है दोइ; तनु स्तु ती विवहार जीव युति, नियत दृष्टि मिथ्या युति सोइ; जिन सो जीव जीव सो जिनवर, तनु जिन एक न मानै कोइ; ता कारन तनकी श्रस्तुतिसों, जिनवर कीश्र स्तुति निह होइ.॥ ७१॥

श्रर्थः— शरीर श्रने श्रातमा ए बने व्यवहारमां एक सरखा है; श्रने निश्चयश्री जोश्ये तो बनें जुदा जुदा है. एमाटे तननी स्तुति करतां जीवनी स्तुति करिये ए व्यवहार है. श्रने निश्चय दृष्टिश्री जोतां ते मिथ्या स्तुतिहे. जिनपद कर्म जे हे ते जीव विपाकी है, पण पुजल विपाकी नश्री, तेथी जिन ते जीव हे, श्रने जीव ते जिन है; पण शरीर श्रने जिन एक करी न मानीए; ते कारणे तननी स्तुति करी ते जिनव रनी स्तुति शर्श नहीं। ॥ ए१ ॥

श्रय वस्तु स्वरूप कथन दृष्टांत करी दिढाइयतु है:-

॥ सवैया तेईसाः॥ – ज्यों चिरकाल गडी वसुधा महि, त्रूरि महोनिधि छंतर गूजी; कोठ उखारि धरै महि ऊपरि, जो दगवंत तिन्हें सब सूजी; त्यों यह आतमकी श्रमुत्रूति पगी जम जाव श्रमादि श्ररूजी; नैजुगतागम साधि कही ग्रह, लग्नन वेदि विचन्नन बुजी ॥ ७२॥

श्रर्थः—शिष्य पुठेठे के एवो श्रनुपम महीमानो धारक जीव श्रा शरीरमां केम पा मिये? त्यारे गुरु दृष्टांत श्रापी न्यारी श्रष्ठुत खरूप वस्तु श्रा शरीरमां दृढावे ठेः—जेम कोई महानिधि घणा काल सूधी धरतीनी श्रंदर दृटाई रही होय, ते श्रंतर ग्रुप्त श्रृंद रहेली लक्षीने कोई खोदी काढी जमीन उपर मूके त्यारे जे नेत्रवंत पुरुष ठे तेने वधी देखाई श्रावेठे. तेम श्रा श्रात्मानो श्रनुजव श्रनादि कालथी जड एटले पुजल इत्यमां दृटाई रह्यो ठे, तेने नयसहित श्रागम जे सिद्धांत तेणेकरी गुरुए साध्य एटले साधने करी सिद्ध करी दीधाथी विचक्षण पुरुष तेने सारी पठे जाणी लियेठे. ॥ ७२ ॥

हवे तेनो नेद ज्ञान पाम्याथी जपादेय वस्तुनुं जपादान करवाथी आवे ते जपर धोबीनुं दृष्टांत बतावे हे:-अथ नेदज्ञान स्वरूप कथन धोबीको दृष्टांत:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैसे कोर्ज जन गयो घोबीके सदन तिन्ह, पिहस्चो परायो वस्त्र मेरो मानि रह्यो है; धनी देखि कह्यो जैया यहु तो हमारो वस्त्र, चीन्ह्यो पिहचा नतहीं त्याग जाव खह्यो है; तैसेही श्रनादि पुदगद्यसों संयोगी जीव, संगके ममत्वसों विजावतामें बह्यो है; जेद ज्ञान जयो जब श्रापो पर जान्यो तब, न्यारो परजावसों स्वजाव निज गह्यो है. ॥ ७३ ॥

श्रर्थः - जेम कोई मनुष्य धोबीने घेर गयो श्रने पारकुं वस्त्र पोतानुं मानी जूलमां

खर्रने पेहेखुं, एटखामां ते वस्त्रनो खरो मालक मछ्यो, तेणे जोईने कह्युं के, जाई, आ वस्त्र जे तें पेहेखुं हे, ते महारुं हे. ते वस्त्रते पेखा मनुष्ये ते वस्त्र जोयुंने परा युंज हे एवं जाएयुं, तेवारे ते वस्त्रनो त्याग जाव छपज्यो, ने तेणे ते वस्त्र तेना धणीने हवासे कीधुं. तेमज जीवने अनादि कालयी पुजलनो संयोग थयो हे, एटसे शरीर तथा कर्मनो संयोगी जीव अनादि कालनो हे, ते संगना ममत्वथी विजावता एटसे छसटा जावमां वही रह्यो हतो ते ज्यारे जड चेतननी जिन्नतानुं ज्ञान थयु त्यारे ते पोताना स्वरूपने तथा परना स्वरूपने समज्यो; अने ते पर रूपथी जुदो थयो ने पोताना स्वरूपने यहण कीधुं. ॥ ६३ ॥

ज्यारे निश्चय पोतानुं स्वरूप जाण्युं त्यारे क्ञाता एवो विचार करवा लागे ते कहे हे:-स्रथ निश्चय स्वरूप कथनः-

॥ श्रिमित्र ढंदः॥— कहै विचन्नन पुरुष सदा हों एकहों, श्रपने रससों जस्तो श्रापनी टेकहों; मोह कमें मम नांहि नांहि ज्ञम कूप है; ग्रुद्ध चेतना सिंधु हमारो रूप है।॥४॥ श्रिशं— विचक्षण पुरुष केहें हे के, हुं सदा एक पणे रहुं हुं; चेतना रस वहे जर पूर हुं, श्रने पोताना श्राधारथी रहुं हुं, मने बीजानो श्राश्रय नथी, श्रने जे जात जा तनो मोह कर्मनो प्रपंच हे ते महारुं स्वरूप नथी, ए ज्ञम रूप कूप हे ते मारुं स्वरूप नथी; पण ग्रुद्ध चेतनानो सिंधु के० समुद्ध ते मारुं रूप है।॥ ७४॥

इवे एवा पोताना स्वरूपने जाण्याथकी केवी श्रवस्था प्राप्त थई ते केहे हे:-

श्रय ज्ञान व्यवस्था कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः॥— तत्त्वकी प्रतीतिसों बख्यो है निज पर ग्रन, हग ज्ञान चरन त्रिविध परिनयो है; विसद विवेक आयो आठो विसराम पायो, आपुद्दीमें आपनो सहारो सोधि खयो है; कहत बनारसी गहत पुरुषारथकों; सहज सुजाउ सों विजाउ मिटि गयो है; पन्नाके पकाय जैसे कंचन विमख होतु, तैसे शुद्ध चेतन प्रकाश रूप जयो हैं: ॥ ७५ ॥

श्रर्थः— एवी जीव तत्त्वनी प्रतीति श्रइतेणे करीने ज्ञानादिक निजगुण श्रने परगुण ते बीजा प्रव्यना गुण जे गति, स्थिति, श्रवगाह, वर्त्तना, वर्णादिक ए सर्व खखीने दर्शन, ज्ञान श्रने चारित्र ए त्रणे गुणनेविषे परिणमी रह्यो हे; निर्मेख विवेक श्राह्याशी सारो विश्राम पाम्यो ते स्थिरता पामीने पोतानो विषेज पोतानो सहज स्वजाव शो धी खीधो श्रहीं वणारसीदास केहें हे के त्यारे श्रा पुरुषार्थ ते श्रात्मस्वरूप श्रर्थ तेनुं श्रहण करीने सहज स्वजावमां राग देष मोहरूपी विजाव जे श्रनादिकाखनो हतो

ते मटी गयो. श्रहीं दृष्टांत कहेंग्रेः— जेम पाकी इंटनी जगीमां गालवाश्री सुवर्ण नि मेल थायमे, तेम शुद्ध चेतन निर्मेलरूप थईने प्रकाश रूप थयोने ॥ ७५ ॥

हवे विजाव ब्रुटवाथी निज खरूप प्रगटताने पामे तेजपर नटी जे नाचनारी स्त्री, तेनुं दृष्टांत कही देखांडे के:- श्रथ वस्तु स्वरूप कथन पातरको दृष्टांत:-

॥सवैया इकतीसाः॥— जैसे कोछ पातर बनाय वस्त्र आजरण, आवित अखारे निशि आडो पट करिके; छुदू उर दीविट संवारि पट दूरि कीजे, सकल सजाके लोक देखे दृष्टि धरिके; तैसे ज्ञान सागर मिथ्यात यंथि जेद करि, जमग्यो प्रगट रह्यो तिहुं लोक जरिके; ऐसो छपदेस सुनि चाहिये जगत जीव, सुद्धता संजारे जग जालसों निकरिके. ॥ ए६ ॥

श्रर्थः— जेम कोई नाचनारी स्त्री श्राको पट करीने तथा वस्त्राजूषणवंडे पोतानों वेष मनोहर बनावीने रातना वखते श्रखाकामां श्रावी जजी रहे, ते श्राका पटथी रात्रीनेविषे देखाय नहीं, ने ज्यारे श्रंतरपट दूर करी बेहु तरफ हाथमां काकडा स खगावी परिवद दूर करे त्यारे सर्व सजाना लोक दृष्टि धरीने तेनां रूप शणगार व गेरेनी शोजा प्रगट जोई रीके वे, तेम झाननो सागर एवो जे श्रात्मा, ते मिथ्यात्व रूप श्राका पटथी प्रवन्न रह्यो हतो, ते कोई समे मिथ्यात्व ग्रंथी रूप पटने जेदीने प्रगट थयो; ते झान समुद्र त्रण लोके जरी रह्यों वे; एटले त्रणे लोक ए श्रात्माने विषे जासी रह्या वे. हवे ग्रह कहेवे के श्रहो ! जगत्वासी जीव, में जे पूर्वे उपदेश दीधो एवा उपदेशनुं श्रवण करवुं तारे जरूरनुं वे; ते सांजली जगत् जाल मांथी निकलीने तारी शुद्ध दशाने संजारी लेईश. ॥ ए६ ॥

॥इति श्रीसमयसारनाटिकना प्रथम जीव द्वारनुं निरूपण बालबोध सहित समाप्त थयुं॥

॥दोहरोः॥–जीव तत्व अधिकार यह, कह्यो प्रगट समुजाइ; अब अधिकार अजी वको, सुनो चतुर मन खाइ.॥ ७७॥

श्रर्थः- जीवतत्त्वनुं जेवुं खद्धप वे तेनो ए श्रधिकार एटखे खरूप, खक्कण, गुण, प्रगट समजाव्यां. इवे बीजो जे श्रजीवद्धारवे, तेमां श्रजीवनो श्रधिकार मुख्यपणे क रीने कहुं हुं; ते चतुर खोको चित्त दईने सांजखजो. ॥ ७७ ॥

हवे अजीवने पण ज्ञानवडेज जाणवानुं बनेने अने आ यंथमां अजिधेय ज्ञानने माटे संपूर्ण ज्ञाननी अवस्था निरूपण करेने:-अथ ज्ञानकी व्यवस्था कथनः-

॥सवैया इकतीसाः॥-परम प्रतीति उपजाइ गनधरकीसी, श्रंतर श्रनादिकी विजावता

बिदारी हैं; जेदज्ञान दृष्टिसों बिवेककी सकित साधि, चेतन अचेतनकी दशा निरवारी है; करमकी नासकरी अनुजो अज्यास धारी, हियमें हरख निज गुऊता संजारी है; अंतराय नास गयो गुऊपरकास जयो, ज्ञानको विवास ताकों बंदना हमारी है. ॥००॥ अर्थ:— प्रथमथी जे ज्ञानवहे जव्य बोकना आत्मामां गणधरनी माफक तत्वनी परम प्रतीति जपजावी, अने समकाखपणे अंतरात्मानेविषे अंतरनी जे अनादिनी वि जावता (मृद्धता) तेने विडारीले, अने जड चेतन ए बने जिन्न ले एवं जेदज्ञान प्रगटयुं तेनी दृष्टि तेज विवेकनी शक्ति ते साधि एटखे जुदा जुदा गुण पर्याय जाण्या, अने जुदा जुदा जाणीने चेतन तथा जड तेनी दशा लीक कीधी, ते पत्नी गुण श्रेणिने ध रीने क्षेक्सणे कर्मनी निर्जरा करवा लाग्यो, ते करी अनुजव अज्यास कीधो, एटखे सत्य प्रत्ययमां पेलो, अने ह्इयानेविषे हर्ष पाम्यो अने पोतानी शक्ति जत्कृष्ट कीधी. ए कार्य यतां अंतराय कर्म जांग्यं, अने केवल रूप प्रकाश पाम्यं, एवो कोई कमे करी ज्ञाननो विवास जत्यन्न थयो, तेने अमारी वंदनाले ॥ ०० ॥

शिष्य पूर्वे हे के, खामी! तमे जे ज्ञान विवास कह्यो, तेतो तेवोज हे, पण ते पा मवुं जुर्बज हे, ते जपर गुरु परमार्थनी शिक्ता दिये हे:—श्रथ परमार्थ शिक्ता कथनः—

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैया जगवासी तूं उदासी व्हैके जगत्सों, एक व महीना उपदेस मेरो मानु रे; श्रीर संकलप विकलपके विकार तजि, वैठके एकंत मन एक ठोर श्रानु रे; तेरो घट सर तामें तुंही है कमल ताकों, तूंही मधुकर है सुवास पहचानु रे; प्रापति न व्है है कहु ऐसो तूं विचारतु है, सही व्है हे प्रापतिसरूपयाही जानुरे ॥ एए॥

श्रर्थः— श्ररे जीव जगत्वासी जाई तुं जगत् के जव त्रमणा तेतु कारण (शब्द, स्पर्श, रूप, रसने, गंध,) एने श्राचारांग सूत्रना वचनथी जगत् कहियें, तेथी उदास यईने, एक उ महिना सूधी श्रखंम धाराए मारो उपदेश शांजल एटखे मान्य कर एमां उ महीना कहा ते उपलक्षणथी जाणवा, पण नियम नथी, श्रने श्राचरी प्रधा नथी श्रक्षान दशामां संकटप विकटप घणा ऊठे, तेथी श्रात्मानेविषे विकार उपजे हे, माटे तेना विकारने तजीदे श्रने एकांत श्रासने वेसी मनने एक ठेकाणे परिणामथी राख; तारो घट के शरीर तेनेज सरोवर जेवो देख; श्रने तेमां एक उज्वल कमल जोइयें, ते कमल तुंज हे; श्रने तुंज उज्वल रूपने लीधे मधुकर रूपे था; एम कर वाथी तुं सहस्र दल कमलमां विलास कर; ए पिंमस्थ ध्यान लगाव्युं एटलुं कार्य क रवाथी पोताना खरूपनी प्राप्ति न यहो एवं तुं क्यारे पण विचारीश नही। एवा प्राणा यामवडे कमल कोष खुलशेने पोताना रूपनी प्राप्ति थशे; एज रीते ज्ञानग्रण खुलशे॥उण॥ इवे जीवने श्रजीव एक सरला थई रह्याहे, ते जुदा जुदा लक्कणवडे देखाडेहे.

श्रय वस्तु व्यवस्था वर्णनं:-

॥दोहराः॥– चेतनवंत श्रनंत ग्रण, सहित सु श्रातमराम, याते श्रनमिल श्रीर सब, पुजलके परिणाम ॥ ए० ॥

अर्थः- चेतनावंत हे अने अनंत गुणसहित जे पदार्थ हे ते तो आत्माराम जाणवो; अने जे एटलां लक्तणोथी मलेला नथी ते सर्व अपर पुजलना परिणाम जाणवा. ॥ ए० ॥

हवे एवी पिठान अनुजविना न होय माटे अनुजवनी प्रशंसा कहें हे:-

श्रय श्रनुत्तव प्रशंसाः-

॥कवित्त ढंदः॥-जब चेतन सँजारि निज पौरुष, निरखे निज हगसों निज मर्म, तब सुखरूप विमल श्रविनाशक, जाने जगत शिरोमनि धर्म; श्रवुजो करे शुद्ध चेतनको, रमे सुजाउ वमे सब कर्म, इहि बिधि सधे मुक्तिको मारग, श्ररु समीप श्रावे शिव सर्मः॥ ए१॥

श्रर्थः—ए चेतन जे हे, ते ज्यारे पोतानुं पुरुष के० पराक्रम संजारे, ने पही पोतानी दृष्टि करी पोतानुं मर्म जे चेतनपणुं हे ते निरखे; त्यारे पोतानो धर्म के० खजाव सुख रूप जे निर्मख पणुं, श्रविनाशी पणुं, जगत्शिरोमणीपणु, सहज खरूप तेने जाणे. एज श्रनुजव एटखे जे निःसंदेह यथार्थ झान हे तेज चेतनने शुद्ध करेहे, श्रने एज श्रनुजव जे हे ते पोताना खजावमां रमे श्रने सर्व कर्मने दूर करे, एरीते श्रनुजव वहे मुक्ति मार्ग सिद्ध थायहे; श्रने शिवशर्म के० मोक्तनुं सुखते पामेहे॥ ए१॥ हवे ए श्रनुजवश्रकी चेतनविषे पोतानुं श्रस्तित्व साधीने परनुं नास्तित्व साधेहेः—

श्रथ श्रनुत्रव प्रशंसाः-

॥ दोहराः॥- बरनादिक रागादि जम, रूप हमारो नांहिः एक ब्रह्म नहि द्सरो, दीसे श्रनुजन मांहिः॥ एर ॥

श्रर्थः-श्रा शरीरमां जे वर्ण, गंध, रस,स्पर्श राग द्वेषादिक पदार्थनेविषे मोह हे ते मारुं श्रात्मरूप नथी; श्रने श्रनुत्तवविषे पोतानुं एकज जाणपणानुं रूप श्रमे जोइये हुइये. पण बीजुं रूप जोता नथी.॥ ए१॥

हवे जीव ख्रजीव एक केत्रावगाही थया ते जुदा केम कहेवाय ? ते उपर दृष्टांत कहेवे:- श्रथ वस्तु विचार:-

॥ दोहराः॥- खांको किहये कनकको, कनक म्यान संयोग; न्यारो निरखत म्यान सों, खोह कहैं सब खोग. ॥ ए३ ॥

श्चर्यः जे सोनानी म्यानमां राखेखी तखवार खोक जाषामां सोनेरी केहेवाय हे, ते सोनेरीनो योगतो म्यान उपर हे; ज्यारे तरवारने सोनेरी म्यानमांथी बार काहा की जोइये त्यारे तरवार खोढानी जणाय, पण सोनेरी नही जणाय. तेम श्चंतरा तमा मांहे जाणवो. ॥ ए३ ॥

हवे व्यवहार नय वडे बाह्यात्मा स्थने स्रंतरात्मा कहेवाय हे; पण एमांज निश्चय नयसी परमात्मा हे; एवो वस्तुनो विचार कही समजावे हे. स्रय निश्चय व्यवहार रूप वस्तु विचार कथनः—

॥ दोहराः॥- बरनादिक पुद्गल दशा, धरै जीव बहु रूप; वस्तु विचारत करम सों, जिन्न एक चिद्धपः ॥ ए४ ॥

श्रर्थः— वर्णादिक ते वर्ण, गंध, रस, स्पर्शरूप ए पुद्गल खनाव हे, तेने नवी नवी रीते जीव धारण करे हे, तेथी जीव बहु रूप धारी केहेवाय हे. श्रने पुद्गल जे हे ते तो कर्महे पण वस्तुनो विचार करवाथी ए कर्म श्रजीवहे; श्रने चिडूप चिदानंद हे ते तो सर्वत्र एक खरूप हे, ने ते ए श्रजीवथी जिन्न हे. ॥ ए४ ॥

इवे ए व्यवहारनो दृष्टांत बतावे हेः- श्रथ व्यवहार दृष्टांत कथनः-

॥ दोहराः॥- ज्यों घट किह्ये घी जको, घटको रूप न घी छ; त्यो बरनादिक नाम सों, जडता खहै न जी छ॥ एए॥

श्रर्थः- व्यवहारमां माटीनो घमो कहेवाय हे, तेम घृतनो पण घमो कहेवाय हे; पण घडानुं रूप जेवी माटी हे तेवुं घृत नथी. तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श प्रमुख नाम कर्म श्रुजीव रूप जड हे, तेना संयोगथी जीव जमपणु पामे नही.॥ एए॥

इवे प्रत्यक्त पणे निराक्षं चेतननुं खरूप दृष्टांत देखाडी कहें छे:-

श्रय चेतनको साहात खरूप कथनः-

॥ दोहराः॥— निराबाध चेतन श्राखल, जाने सहज सुकी छ, श्राचल श्राना श्रानंत नित, प्रगट जगतमें जीछ. ॥ ए६ ॥

श्रर्थः— जेनी कोई पण रीते खंमना नथी तेथी निराबाध एहवो चेतन पुरुष हे; श्रने वली इंडिय ज्ञानवडे लख्यो न जाय; तेथी श्रलख हे; श्रने खकीय जे पोतानो सहज स्वजाव ज्ञातापण तेने पोतेज जाणे पण बीजा श्रन्य ज्ञानांतरवडे न जणाय एवा श्रचल स्वरूपने लीधे श्रनादि, श्रनंत, नित्य, शाश्वत, एवो जीव जगत्मां प्रत्यक्त प्रमाण हे. ॥ ए६ ॥

हवे जीव पोतानो श्रमुजव पोतेज करे वे पण मिमांसक नैयायिक प्रमुख जेम बी जाथी कहे वे तेम नथी ते समजावे वे:— श्रथ श्रमुजव विधान कथनः— ॥ सवैया इकतीसाः॥ — रूप रसवंत मूरतीक एक पुदगल, रूप बिन ठेर युं श्रजीव दर्व ड्रधा है; च्यारि हैं श्रमूरतिक जीवजी श्रमूरतिक, याहितें श्रमूरतिक वस्तु ध्यान मुधा है; श्रीरसों न कबहू प्रगट श्रापु श्रापहीसों, ऐसो थिर चेतन सुजाछ ग्रुद्ध सुधा है; चेतनको श्रनुजो श्राराधे जग तेई जीठ, जिन्हके श्रतंक रस चालिवेकी हुधा है।॥एउ॥

श्रर्थः— जेम रूपवंत तथा रसवंत कहेवाय हे तेम गंधवंत तथा स्पर्शवंत ए छक्त ए जाएवाथी मूर्त्तिक एटले मूर्त्तिवंत ते एक पुद्गल प्रव्य जाएवं; श्रने रूपादिक विना बीजा श्रमूर्त्तिक चार प्रव्य हे; ए रीते श्रजीव प्रव्यते वे प्रकारनुं हेः— हवे ए श्रजीव प्रव्यमां धर्म, श्रधमं, श्राकाश, काल एचार श्रमूर्त्तिक हे; श्रने जीव प्रव्य पण श्रमूर्त्तिक हे; तेथी कोइ श्रमूर्त्तिक वस्तुनुं ध्यान करवाथी मुक्ति हे एम कहेनारा मूर्ख हे. एथी कोई श्रन्य धर्मनुं श्रालंबन लई श्रात्मा प्रव्य प्रगट न थाय एवो स्थिर चे तननो खजाव हे, एज शुद्ध सुधा के विदाय श्रमृत रस तेज चेतनने प्रगट करे हे, एवो जे जगत्ने विषे चेतना खजाव हे ते चेतननो श्रमुजव के यथार्थ ज्ञान श्रारा हे तेज शुद्ध जीव प्रव्यना श्राराधक हे. श्रने जे श्रलंक रसना क्रुधावंत हे ते एना श्राराधक हे.॥ ए७॥

हवे कोई कहे वे के, जीव श्रंग्रष्ट प्रमाण वे, तंडुख प्रमाण वे इत्यादि कहिने जे जीवने मूर्तिमान थापे वे, तेनी मुढता बतावे वे. श्रथ मूर्तिवर्णनं:—

॥ सवैया तेइसाः॥— चेतन जीव ख्रजीव ख्रचेतन, खेबन जेद उजै पद न्यारे; स म्यग् दृष्टि उद्योत विचन्नन, जिन्न लखै लखिके निरधारे; जे जगमांहि ख्रनादि ख्रखंफित, मोह महामदके मतवारे; ते जम चेतन एक कहै, तिन्हकी फिरि टेक टरै नहि टारे.॥ए०॥

श्रर्थः — जीवनुं लक्तण चेतन हे, ने श्रजीवनुं लक्तण श्रचेतन हे; एटले जमता हे; ए लक्तण जेदथी जजय पदार्थ जुदा जुदा हो; पण जेना घटमां समिकत दृष्टिनुं श्रज वालुं पड्युं हे, तेज विचक्तण पुरुष ए बेहुने जिन्न जिन्न जाणे हे. श्रने जीव श्रजी व जुदा निरधार करेहे. श्रने जे जगत्नेविषे श्रनादि कालना श्रलंडित, मूर्ल, श्रने मुहामोहमदवने मतवाला हे, ते लोक जम चेतनने एक कहे हे. श्रने जीवने मूर्तिमा न मानेहे. ते मिथ्यादृष्टिने लीधे माने हे; तेमनी टेक टालवाशी टले नही एवी होयहे॥एछ॥

हवे अजीव पुद्गलमां जीवविलास जूदोज हे, पण अविवेकी पुरुष ते जाणतो नथी अने जे ज्ञानी होय ते जाणे ते कहे हे:— अथ ज्ञाता विलास:—

॥सवैया तेईसाः॥— या घटमें ज्रमरूप श्रनादि विद्यास महा श्रविवेक श्रवारो; ता मंहि डिर सरूप न दीसत, पुजल नृत्य करें श्रति जारो; फेरत जेष दिखावत कोतुक, सो जिल्ले बरनादि पसारो; मोहसुँ जिल्ल जुदो जडसों चिन्, मूरति नाटक देखनहारो॥एए॥ श्रर्थः— श्रा घटमां श्रनादि कालनो विस्तारवंत त्रमरूप महा श्रविवेकनो श्रलाको मंडाई रह्यो हो, ते श्रलाडामां बीजुं कोई ग्रुद्ध स्वरूप तो देखातुं नथी; श्रने पुजल इत्य जे हे ते श्रत्यंत महोटुं नृत्य करी रह्योहे, एज श्रविवेकनी श्राज्ञा ते श्रजीव पुजल इत्य हो. तेहिज एकेंडियादिकना वेषमां लेवरावी फेरवी फेरवी वर्णादिकना पसारनी सामग्री लेवरावी कौतुक देखाकी रह्यों हे. हवे इहां विवेकरूप जे हे ते मो हथी जे पुजल जक तेथी जूदों हो. तेहिज चिन्मूर्ति एटसे चेतन राजाहे ते तो इहां नाटिकनो देखनारों हे ॥ एए ॥

हवे जे जीव खने खजीवनुं एकतापणुं मिथ्या ज्ञानमां जासेवे, तेतो ज्ञान वृद्धिथी जिन्न जिन्न रूप देखाय वे, ते कहेवे:- खय ज्ञान विखास कथन:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे करवत एक काठ वीचि खंग करे, जैसे राजहंस निर वारे प्रध जलकों; तैसे जेदक्कान निज जेदक शकतिसेंति, जिन्न जिन्न करे चिदानंद पुदगलको; श्रवधिकों ध्यावै मनपर्यंकी श्रवस्था पावे, जमिक श्रावै परमाविध केवल कों; याद्दी जांति पूरन सरूपको जद्योत धेरै प्रतिविंबत पदारथ सकलकों ॥ १००॥

श्रर्थः— जेम एक लाकमाने करवती वेहेरीने वे जाग करें है, ने जेम राजहंस छुध ने पाणी एक होय तेने जुदा जुदा करी नाखे है. तेम जेने जित्र वित्र परिपाके जे दक्षान प्रगटे ते पोतानी जेदक शिक्त में चिदानंद तथा पुजल एक में क होय तेने जुदा जुदा करें है. श्रने तेज जेदक्षान पोताना क्रयोपशम माफक पोतानी श्रवधिने ध्यावे एट से पोताना श्रवधि क्षानरूप पर्यायने पामे, पही तेहिज जेद क्षानशी विशुद्ध थयेला मनपर्याय श्रवस्थाने पामे; श्रने तेथी विशुद्ध थईने परमाविध सुधी पोचे; एम वधते वधते जेदक्षान थकी पोतानुं वर्ण खरूप ज्योतवंत धारण करे, एट से केवल श्रवस्था धारे; श्रने सर्व पदार्थने प्रविधित करे।। १००॥

॥इती श्री समयसार नाटकनो बीजो खजीवद्वार वालावबोध सहितसमाप्त थयो ॥ ॥ दोहराः॥— यह खजीव खधिकारको, प्रगट बलान्यो मर्मः; खब सुनु जीव खजी वके, करता किरिया कर्मे ॥ १०१॥

श्रर्थः— श्रजीव द्वार एरीते समजाबीने कह्यो; एनुं रहस्य ए वे के श्रजीव पदार्थ जाणीने तेथकी जीव पदार्थ जुदो जाणवो; तेनुं वर्णन कखुं वे. हवे जीवनेविषे कर्ता कर्मिकियानो विचार श्रने श्रजीवनेविषे पण कर्त्ताकर्मिकियानो विचार ग्रह कहेवे ने शिष्य शांत्रक्षेवे॥ १०१॥

हवे कर्तापणामां जीवनी मिथ्या दृष्टि हे ते जेदकानथी हुटे, माटे जेदकाननुं म हात्म्य कहेहे:- श्रथ जेद कान महात्म्य बर्ननः-- ॥ संवैया इकतीसाः॥— प्रथम श्रज्ञानी जीव कहें में सदीव एक, जुसरो न श्रोर मेंही करता करमको; श्रांतर विवेक श्रायो श्रापापर जेद पायो, जयो बोध गयो मिटी जारत जरमको; जासे वहां दरबके ग्रण परजाय सब, नासे जुःख खख्यो मुख पूरन परमको; करमको करतार मान्यो पुजगल पिंम, श्रापुं करतार जयो श्रातम धरमको. ॥ १॥ जाहि समे जीव देहबुद्धिको विकार तज, वेदत सरूप निज जेदत जरमको; महा परचंड मित मंमन श्रखंम रस, श्रवुजो श्रज्यास परकासत परमको; ताही समे घटमें न रहे विपरीत जाव, जैसे तम नासे जावु प्रगट धरमको, ऐसी दशा श्रांवे जब साधक कहावे तब, करता वहें कैसे पुजल करमको. ॥ ३॥

श्रर्थः — प्रथमथी श्रज्ञानी जीव जे हे, ते पोताना रूपनी जूलवहे एमज कहें हे के निरंतर कर्मनो कर्ता हुंज हुं, बीजो कोई नथी। एरीते जीवनी श्रपेक्ता लईने कर्मनो कर्ता बनेहे. पही ज्यारे घटमां विवेक प्राप्त थाय, लारे निजरूपनो जेद समज्यो ए टले बोध थयो, श्रने भ्रम के० मिथ्यात्वनो लेल मटी गयो; ने भ्रम नाश थता हए इत्यना ग्रण पर्याय श्रात्मानेविषे जासवा लाग्या, क्रण क्रण श्रवस्था जेद ते पर्याय कहीए. श्रने पूर्णपुरुष जे हे तेनुं मुख दीहुं, तेणे करीने कर्मनो कर्ता पुजलिंक मान्यो। श्रने पोते श्रकर्ता थयो श्रने श्रात्मक धर्म जे ज्ञायकता, वेदकता, तथा चे तनता इत्यादिक स्वजावनो हुं पोते कर्ता हुं एम मान्युं, एटले मर्मनो श्रकर्ता श्रने पोताना स्वजावनो कर्त्ता एम केहेवा लाग्यो. ॥ १॥

जे प्रस्तावे जीव हे, ते श्रेणिनुं आरोहण करे, अप्रमत्तता पामे, देहबुद्धिनो विकार तजे, एटले बाह्यात्माने पोतापणे जाणवो ए विकार हांडे, ने पोतानुं स्वरूप जुढुंज वेदे, अने भ्रमनो जेद करे, घणी तीइणबुद्धिनी शोजानो करनार, अने जेनो रस अखंग हे, पूर्ण रसस्वाद हे, एवो जे शुद्धात्मानो अनुजव हे तेनो अज्यास करी अंते परमात्मानो प्रकाश करे तेज प्रस्तावे घटपिंडमां विपरीत जाव रहे नहीं, एटले अहंबुद्धि वमे जे अकर्त्ताने कर्मनो कर्त्ता करी मान्यो; ए विपरीत जाव हतो ते रहे नहीं. ते उपर दृष्टांत कहेहेः—जेम जानुधर्म के पूर्यना तीइण तेजना प्रकाशवाधी तम जे अधकार ते सर्व नाश पामेहे; तेम एवी अप्रमत्त दशा ज्यारे प्राप्त थाय, त्यारे ते आत्मस्वजावनो साधक थयो; ते वखत कर्मनो कर्त्ता केम थाय! अने पुद्गलरूपी कर्मने केवी रीते करे! एनो अहीं उपयोग नथीं. ॥ ३॥

हवे छहीं प्रथम छात्माने कर्मनो कर्त्ता मानीने पढ़ी तेने छकर्ता मानवो ते ज्ञा नना सामर्थ्य वडे बनेडे ते कहेडे:-छथ ज्ञानसामर्थ्यवर्णनं:-

॥सवैया इकतीसाः॥- जगमें अनादिको अज्ञानी कहै मेरो कर्म, कर्ता में याको

किरियाको प्रतिपत्नी है; श्रंतर सुमित जासी जोगसों जयो उदासी, ममता मिटाय परजाय बुद्धि नात्नी है; निरजे सुजाउ क्षीनो श्रमुजोके रस जीनो, कीनो व्यवहार दृष्टि निहचैमें रात्नी है; जरमकी दोरी तोरी धरमको जयो धोरी, परमसों प्रीति जोरी करमको सात्नी है ॥ ४ ॥

श्रशं- संसारनेविषे जीव श्रनादिकालथी श्रज्ञानीज हे, ते कहेहे के शुज श्रने श्रशुज कर्मनो कर्ता हुंज हुं कियानो प्रतिपद्दी के कर्मनी कियानो पद्धराखनारो हुं, पही ज्यारे श्रंतरमां सुमितनो जास थयो, श्रने मन वचन तथा कायाना यो गथी हदास थयो, एटले ए योगने पररूप समज्यो, तथा ए योगनी ममता मटी गई, श्रने परजाय हुक्कि के मन वचन श्रने कायाना योगनी जे हुक्कि तेनाली दीधी; श्रने इव्यहुक्कि राखीने श्रात्मानो जे निर्जय खजाव हे, तेनुं यहण कीधुं श्रने ए स्व जावनो जे श्रनुजव रस तेमां जीनो के मग्न थई रह्यो, श्रने सर्व व्यवहारमां प्रवृत्ति करी रह्योहे, पण दृष्टिमां श्रक्का तो निश्चयमां राखी हे, एम करतां जरमनी दोरी तोमी नाखी, एवं हद्यस्थपणुं मूकी दीधुं, श्रने श्रात्मिक धर्म जेपोतानो स्वजाव तेनो धोरी के धरनारा थयो; परम साथे प्रीति जोडी, एटले सिक्कपदमां प्रीति राखीने मर्मनो साखी थयो; एटले पुजलकर्मने करे तेनो साद्धी थयो हे ॥ ४ ॥

शिष्य पूठें के, चेतन तथा अचेतन एक होत्रमां रहे हे, अने कर्म करें हे, त्यां चे तनने कर्मनो अकर्ता केम मनाय ? गुरु कहें हे के, ज्ञानशक्तिवमे अकर्ता मनायः ते कहे हे — अथ जेदज्ञानको सामर्थपनो कथनः—

॥सवैया इकतीसाः॥— जैसो जो दरव ताके तैसे ग्रन परजाय, ताहुसों मिलत पें मिले न काहु श्रानसों; जीव वस्तु चेतन करम जड जाति जेद, श्रमिल मिलाप ज्यों नितंब जुरे कानसों; एसो सुविवेक जाके हिरदे प्रगट जयो, ताको ज्रम गयो ज्यों तिमिर जग्यो जानसों; सोइ जीव करमको करतासो दीसे पें श्रकरता कह्योंहै शु द्धताके परवानसों. ॥ ५ ॥

श्रर्थः— जे जेवुं ड्रव्य होय तेना तेवा गुणपर्याय होय हे, ते तेज ड्रव्यसाथे म बेहे, पण बीजा ड्रव्यसाथे मलता नथी; जेम कोई क्रिग्धगुणवंडे घृतादिक ड्रव्य पो ताना पर्यायथी क्रिग्ध गुणवाला ड्रव्यसाथे मले, पण रुक्त गुणवालासाथे मले नही; तेम ए जीव वस्तु चेतनजाति हे, श्रमे कर्म जे हे ते जमजाति हे, एवो जातिजेद हे. तेथी चेतन तथा जडने श्रमिलनता हे, पण कांई युक्ति मिलाप नथी. जेम केमना जागनी नीचे पश्चिम प्रदेश नितंब हे, ते छपर रहेला कानसाथे केम मले ? एवो गु णपर्यायनो विवेक जेना हैयामां प्रगट थयोहे, तेना हैयामां पूर्वनो छपजेलो ज्रम नाश पाम्यो, ते उपर दृष्टांत कहें हे के, जेम सूर्यनो उदय थवाथी ख्रंधकार नासे हे, तेम नाश पामे हे; एवा विवेकवालो जीव जे हे ते कर्मनो कर्ता तो देखाय हे पण शुद्धता जे पोतपोताना द्रव्यनी गुण परिणति तेना प्रमाणथी जीवने कर्मनो श्रकर्ताज कह्यो। ॥५॥ हवे जीव श्रमे पुजलना लक्कणना जेद देखाडीने एज वात दृढ करे हे:—

श्रथ जीवपुजललक्षणजेदकथनः-

॥ विषय वंदः॥ जीव ज्ञानगुनसहित, आपग्रण परगुन ज्ञायकः आपा परगुन लखे, नांहि पुजल इहि लायकः जीवरूप चिट्टूप, सहज पुदगल अचेत जमः जीव अमूरति मूरतीक पुदगल अंतर वमः जबलग न होइ अनुजी प्रगट, तबलगु मिथ्यामति लसैः करतार जीव जड करमको, सुबुधि विकाशक ज्रम नसे ॥ ६॥

श्रयं:— जीवजे वे ते ज्ञानगुणसिंहत वे, श्रने जेम पोताना ग्रणनो याहक वे ते मज पारका ग्रणनो पण याहक वे. श्रने एज ग्रणना जेदे करीने पोताने तथा परने लखे के जुएवे; एवी कला शक्ति लायक पुजल क्यारे पण बनी शके नहीं. जीवनुं खरूप चिट्टप के चेतनारूप वे, श्रने पुजलतो सेहेज जावे श्रचेतना रूप वे; एटले जम वे. वली जीव श्रमूर्ति वे श्रने पुजल मूर्ति वे, ए मोटुं श्रंतर ए बंने वचेवे ज्यां सुधी शुद्धचेतननो श्रनुजव प्रगट न शाय. लांसुधी मिण्यामित लसे के दीति वंत होयवे श्रने जडस्वरूपी कर्मनो कर्ता जीव वे, ते त्रमबुद्धि वे; पण ए श्रनादि कालनो त्रम ते सुबुद्धिना विकाश श्रवाशी नाश पामेवे ॥ ६ ॥

हवे कर्त्ता, कर्म छने किया ए त्रणे स्वरूप कहे हे:-श्रथ कर्त्ताकर्मकियास्वरूपकथनः-॥दोहराः॥- करता परिनामी दरब, करमरूप परिनाम; किरिया परजैकी फिरनि, वस्तु एक त्रय नाम.॥ ७॥

श्रर्थः—ह्रपांतरने जाजे ते परिणामी कहेवाय, एवं जे डव्य, ते कर्ता किहये; रूपां तर थवं ते परिणाम, ऐने कर्मनुं स्वरूप किहयें; श्राने पर्यायनुं क्रमे क्रमे फरवुं तेने क्रिया किहये. ए रीते कर्त्ता, कर्मने, क्रिया एवां त्रण नाम वे पण वस्तु तो एकज वे. ॥९॥

हवे कर्त्ता, कर्म, ने किया ते केहेवामां नाम जिन्न जिन्न वे पण वस्तु एकज वे ते कहेवे:-श्रथ कर्त्ताकर्मिकियैकत्वकथनः-

॥दोहराः॥-कर्त्ता कर्म किया करें, किया कर्म करतारः नाज जेद बहु विधि जयो, वस्तु एक निरधार ॥ ७ ॥

श्रर्थः कर्ता त्यारे कहेवाय के ज्यारे किया करे, श्रने किया त्यारे कहेवाय के ज्यारे कर्म करे, एम नाम जेद जातजातनो पड़्यो पण करवाश्री कर्ता, करवाश्री कर्म ने करवाश्री किया ए त्रणे एकज वस्तु है. ॥ ए ॥

हवे एक कर्म क्रियानो कर्ता एकज होयहे, ते स्थापन करेहे:- श्रथ कर्ता कर्मिक याप्रतिस्थापनाः--

॥दोहाः॥– एक कर्म कर्त्तव्यता, करें न कर्ता दोय; डुधां दरब सत्ता सु तो, एक जाव क्यों होयः ॥ ए ॥

श्रयः- ए वात तो खुद्धी हे के, एक कर्मनी कर्त्तत्यता के किया ते एकज होयहे. श्रमे तेनो कर्ता पण एकज होयहे, पण वे कर्ता एकज क्रियाना करनार नहोय. श्रहीं चेतन ड्रव्यसत्ता श्रमे पुजलड्रव्यसत्ता ते तो ड्रधा के वे प्रकारे जुदी जुदी हे, ते माटे एक जाव एक कर्म केम बने ? ॥ ए॥

इवे कर्ता कर्म ने कियानो विचार कहें हे. श्रथ कर्त्ताकर्म किया विवरणं:-

॥संवैया इकतीसाः॥— एक परिनामके न करता दरब दोय, दोय परिनाम एक दर्ब न धरतु है; एक करतृति दोइ दर्ब कबहों न करें, दोई करतृति एक दर्बन करतु है; जीव पुदगल एक खेत श्रवगाही दोई, श्रपने श्रपने रूप कोछ न टरतु है, जड प रिनामनिको करता है पुदगल, चिदानंद चेतन सुजाछ श्राचरतु है ॥ १० ॥

श्रर्थः-एक परिणामना वे ड्रव्य कर्ता न होय, श्रने एक ड्रव्य जे वे ते वे परिणाम धारण करे नही; ए रीते वे ड्रव्य मिलीने एक करतूती के किया क्यारे पण नज करे. तेमज एक ड्रव्य वे किया पण नहीज करे; ए व्यवस्था बुद्धि कहेवा लायक कहेवे के, जीव श्रने पुद्गल एकमेक श्रई रह्यां वे; तेशी ए बंने एक केत्रावगाही श्रयां पण पोत पोताना स्वजावश्री कोई टले नही; तेशी पुजल जे वे ते जड वे; ते जडपरिणाम नोज कर्ता श्राय; श्रने चिदानंद चेतन वे ते चेतन स्वजावने श्राचरे॥ १०॥

हवे सम्यक्तवश्रवस्थामां कर्मनो श्रकर्ता श्रने मिथ्यात्वश्रवस्थानेविषे कर्मनो कर्ता वे एम कहेवे:-श्रथ सम्यक्तविमध्यात्वकथनं:-

॥संवैया इकतीसाः॥— महा ढीठ छःखको वसीठ पर दर्वरूप, श्रंध कूप काहुपै निवास्त्रो निह गयो है; ऐसो मिथ्याजाव लग्यो; जीवकों श्रनादिहीको, याही श्रहं बुद्धि बिये नाना जांति जयो है; काहू समै काहूको मिथ्यात श्रंधकार जेद, ममता उठेदि ग्रुद्ध जाज परिनयो है; तिनही विवेक धारि बंधको विलास मारि, श्रातम सकतिसों जगत जीति लयो है. ॥ ११॥

खर्थः - महाधृष्ठ खने जुःखनो पढु खात्मद्रव्य ते परद्रव्य के० पुजलद्रव्य जेनुं रूप वे, पिंड वे, खने जेमां सत्य दृष्टि पोची शकती नथी, तेमाटे खंधकूप समान वे; खने कोईथी निवारण नथी थतो, एवो मिथ्याजाव जे मिथ्यात्व मोह कर्म ते जीवने ख नादि काल थकी लागेलुं वे, एथी परद्रव्य तरफ जीवनी ख्रहंबुद्धि लागी, तेथी जीव नाना प्रकारनो थयो. अने कोई समये यथाप्रवृत्तिकरण कोई जव्यजीवनो मिथ्यात्व अंधकार जेदायो, ते मिथ्यात्वयंथि जेदीने अने सर्व कार्यनेविषे जे अहंबुंद्धिवडे रहे स्वी ममता हती, तेने वेदीने शुद्ध चिदानंद जावमांज परिणमी रह्यो, ते समये ते जव्यजीव जेद विज्ञान के० जड चेतननो विवेक धारण करीने अविरति, कषाय, योग तथा प्रमाद ए जे बंधनाहेतु हता, तेनो विलास वोडीने आत्मशक्तिवडे एटले पोता ना वीर्यबलवडे जगत्ने जीति सीयेवे; जगत्थी निरालो थाय वे. ॥ ११॥

हवे जेम कर्मनो कर्ता आत्मा नथी तेम ए कर्म आत्माना करेखां नथी; अने कर्ताने कर्म एक रूपज वे ते कहेवे:—अय यथा कर्म तथा कर्ता एकरूपकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— ग्रुद्धनांव चेतन श्रग्रुद्धनांव चेतन, हुहूंको करतार जीव श्रोर नही मानीये; कर्मपिंडको विलास बर्न रस गंध फास, करता हुहुंको पुदगलपर मानिये; ताते बरनादि ग्रन ज्ञानावरनादि कर्म, नाना परकार पुजलरूप जानिये; स मल विमल परिनाम जे जे चेतनके, ते ते सब श्रलख पुरुष यों बलानिये।॥ ११॥

श्रर्थः— चेतनानेविषे शुद्ध नाव तथा श्रशुद्ध नाव ने नाणवामां श्रावेवे, ते तो परिणामरूप कर्म वे; तेथी ते बनेनो कर्ता जीवज वे, बीजो कोई कर्ता मानवो नही. श्रमे इानने ढांकवुं,दर्शनने ढांकवुं, इत्यादि कर्म पिंमनो विलास वे;श्रमे वर्ण,गंध,रस,स्पर्श, इत्यादि ने कार्य श्रमे कर्म वे,ए बनेनो कर्ता पुद्गलड्यनेज प्रमाण राखिये;तेणे करी ने वर्णादि के० वर्ण, रस,गंध, स्पर्श गुण वे ते श्रमे ज्ञानावरण, दर्शनावरण प्रमुख ने कर्म वे ते सर्व नाना प्रकारना पुजलरूप जाणवां; जेम कह्युं वे के, "जोगापयि प्रयसा," के० जोगवडे प्रकृतिप्रदेशबंध थाय, ने तेनेविषे चेतनना समलपरिणाम के० श्रशुद्ध परिणाम श्रमे विमलपरिणाम के० श्रशुद्ध परिणाम ए ने कर्मरूपक वे ते ते सर्व श्रल क्र पुरुषरूप वे, माटे कर्त्ता कर्मने एकज वखाणीए ॥ ११॥

ह्वे ए वातना रहस्यने मिथ्यादृष्टि जाणे नही, तेना उपर हस्तिनो दृष्टांतः-श्रथ मिथ्यादृष्टि बर्ननं हस्तिको दृष्टांतः-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे गजराज नाज घासके गरास करि, जबत सुनाय निह जिन्न रस वियो है; जैसे मतवारी निह जाने सिखरिन स्वाद, जुगमें मगन कहै गऊ इध पियो है; तैसे मिथ्यामित जीव ज्ञान रूपी है सदीव, पग्यो पाप पुन्य सों सहज सुन्न हियो है; चेतन अचेतन इहुकों मिश्र पिंड लिख, एकमेक मानेन विवेक कबु कियो है। ॥ १३॥

खर्थः— जेम हाथीने खनाज साथे घास जेखवीने ग्रास खापेठे ते खायठे हाथीनो स्वजाव एवोठे के, घासने खनाजनो जुदो स्वाद खेतो नथी. वसी कोई माणस मय पीने मतवारो थयो होयने तेने दहीने खांमथी बने छुं शीखरण जमवाने आपीये ने पुठीये के एनो स्वाद केवोठे, तो ते कहें हो के गायनुं छुध पीये तेवोठे पण तेने दा रूनी जममां जुदा स्वादनी खबर पडती नथी, तेम जीव मिध्यामतिवालो थईने जो पण श्रमादि कालनो ज्ञानरूपी ठे एटले ज्ञानमय ठे तो पण पापकर्म श्रमे पुष्पकर्म मां लीन थई रह्यो ठे, माटे सहज जावे शुन्यहृदय थयोठे; त्यारे चेतन श्रचेतन जे पुजल ते बेठने मिश्र के० एक पिंम जोईने एकमेक मानेठे; पुजलना जेलथी चेतनने पण पुजलकर्मनो कर्जा मानेठे पण कदी विवेकनी नजरथी जोतो नथी। ॥ १३॥ हवे जीवने कर्मनो कर्जा मानवे ए ज्ञमवडे मनायहे; ते उपर दृष्टांत श्रापेठे.

श्रय ज्रमस्वरूपकथनदृष्टांतः-

॥ संवैया इकतीसाः॥—जैसै महाधूपकी तपितमें तिसीयो मृग, जरमसों मिथ्याजल पीवनकों धायो है; जैसे अंधकारमांहि जेवरी निरखी नर, जरमसों मरपी सरप मानि आयो है; अपने सुजाय जैसे सागर सुथिर सदा, पवन संजोगसो उठिर अकुलायो है, तैसे जीव जडसों अट्यापक सहजरूप, जरमसों करमको करता कहायो है।॥१४॥

श्रर्थः— जेम वैशाख ने जेठना घणा सख्त तापनी गरमीवहे मृग तरस्यो थईने मृगजलने जोई तेने जल जरेलुं तलाव मानी ते मिथ्या जलने पीवाने दोमेठे; तथा जेम श्रंथारे पहेली दोरहीने जोइने कोई मनुष्य जरमवहे तेने साप जाणी मरीजायठे; वली जेम समुद्रनो स्वजाव स्थिर ठे पण पवनना संजोग थकी जठलतो देखायठे, तेम जीव निश्चय थकी जोतां जह वस्तुथी श्रव्यापक ठे, पण श्रनादि कालनो सह जरूपी श्रम तेणे करीने ते जीवने कर्मनो कर्जा कहें हो।। १४॥

हवे जे सम्यग् दृष्टि थाय ते सम्यक् स्वजावे करीने ज्ञम दूर करे; अने जुदो जु दोज जाव जाणे, ते उपर राजहंसपक्तीनो दृष्टांत आपेते. अथ सम्यग् दृष्टिस्वजावव र्णनं, राजहंसके दृष्टांतः—

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैसे राजहंसके वदनके सपरसत, देखिये प्रगट न्यारो ठीर न्यारो नीर है, तैसे समिकतीकी सुदृष्टिमें सहजरूप, न्यारो जीव न्यारो कर्म न्यारोई शरीर है; जब शुद्ध चेतनाको श्रमुजी श्रम्यासे तब, जासे श्रापु श्रचल न छजो ठर सीरहै;पूरव करम छदे श्राइके दिखाई देहि,करता न होइ तिन्हको तमासगीर है॥१५॥

श्रर्थः - जेम राजहंसनुं वदन के॰ मुखनी श्रंदरनी जीज, तेना श्रहकवाथी इधने पाणी एकमेक होय ते फाटीने इध जुड़ं ने पाणी जुड़ं थाय है; तेमज सम्यग्दृष्टि वहे सहजरूपे जीव हे ते जुदोज जणाय ने कर्म पण जुड़ंज जणाय; श्रने शरीर पण जुड़ंज जणाय, एटखे वाह्यात्मा, श्रंतरात्मा ने परमात्मा ए त्रणे जुदा जणाय. ज्यारे

शुद्ध चेतन श्रनुजवनो श्रन्यास करे त्यारे पोतेज देखाय. कर्मादिकनो बीजा कोई साथे जेख नथी. पूर्व संचित कर्म जे हे ते निज स्थिति पूर्ण थये श्रयवा छदीरणा करी के कर्म छदय श्राव्याथी देखाय, पण जीव कांई कर्मनो कर्त्ता नथी,पण ते कर्म ना छदयनो तमासो जुएहे ॥ १५ ॥

हवे शिष्य पूर्व वे के, हे स्वामी! जीव तथा पुजल एकमेक थई रह्यां वे, त्यारे ते उनेविषे एवो जुदो जुदो स्वजाव केम जाणीये? त्यारे ग्रह तेनो उत्तर आपतां पाणिनुं तथा शाकनुं दृष्टांत आपेवेः अथ कर्तृत्व स्वजाव तप्तोदक तथा व्यंजननो दृष्टांतः—

॥ संवैया इकतीसाः॥—जैसै उसनोदकमें उदक सुन्नाउ सीरो,श्रागिकी उसनते फर स ज्ञान खिखये; जैसे स्वाद व्यंजनमें दीसत विविध रूप, खोनको सवाद खारो जीज ज्ञान चिखये; तैसे याहि पिंकमें विजावता श्रज्ञानरूप, ज्ञानरूप जीव जेद ज्ञानसो परिखये,जरमसों करमको करता है चिदानंद, दरव विचार करतार जावनिखये,॥१६॥

श्रर्थः — जेम लक्षोदक के जनुं पाणी ते पाणीनो पोतानो स्वजाव तो सीरो के शितलज हे, पण तेनो स्पर्श करतां गरम लागे हे,ते गरमी श्रागनी हे. श्रने स्वादिष्ट ह्यंजन के शाकमां जात जातनो स्वाद होय हे श्रने लोन के निमकनो खारो स्वाद जुदोज जणाय हे, ते जीज ज्ञानवडे जणायहे; तेमज घटपिंगमां विजावता जे कर्मनी साथे चेतनतुं मलवुं तेतो जेम में श्रा की धुं एम मानवुं, एतो श्रज्ञानरूप हे. श्रमे जीव हे ते शुद्ध ज्ञानरूपी हे, एनेतो शुद्ध जाणवो एज एनुं कार्य हे. ए वात जेदज्ञान वमे जणाय हे. ए चिदानंद जे हे तेने कर्मनो कर्त्ता मानवो ते श्रमवडे म नाय हे! पण इत्यनो विचार करतां एनो कर्त्ता जाव बने नही पण ज्ञाता जावज बने ए रहस्य हे. ॥ १६॥

हवे निश्चय प्रमाणवडे जे जेनो कर्ता वे तेने जुदो बतावे वे श्रय कर्तृत्वविवरणंः ॥ दोहाः॥– ज्ञान जाव ज्ञानी करे, श्रज्ञानी श्रज्ञान; दरब करम पुदगल करे, यह निहचे परवान ॥ १९॥

श्रर्थः— ज्ञानी होय तेतो ज्ञानजाव करे एटखे जाणवारूपजे कार्य वे ते करे वे; श्रने श्रज्ञानी होय ते हुं कर्चा बुं एम मानी श्रज्ञानजाव करेवे; द्रव्यरूप जे कर्म वे तेने पुजलज करेवे, निश्चयप्रमाणमां एवं स्पष्ट वे. ॥ १९॥

शिष्य पूठें के हे स्वामी! ज्ञानजाव ज्ञानी करे ए वात कहेतां ज्ञाननो कर्ता जी व ठरें के, ते कया नयथी ठरें के? तेनो उत्तर ग्रह आपे के:-श्रथ व्यवहार कर्तृत्वक्यनः-

॥ दोहाः॥- ज्ञानसरूपी आतमा, करे ज्ञान निह र्राः, दर्व कर्म चेतन करै, यह विवहारी दौरः॥ १०॥ श्रर्थः श्रात्मा ज्ञानस्वरूपी वे माटे ज्ञानने तो तेज करे, पण बीजो नही, ए नि श्रयः श्रने जे एम कहे वे के, प्रव्यकर्मनो कर्ता पण चेतन वे तेतो व्यवहारमां कहेवाय॥१०॥ हवे शिष्य प्रश्नः कर्तृत्वकथनः

॥ सवैया तेईसाः॥-पुदगल कर्म करे निह जीव कही तुम में समुजी निह तैसी; कोन करे यह रूप कहो श्रव, को करता करनी कहु कैसी; श्रापुहि श्रापु मिलेबिवुरे जड क्यों किर मोमन संशय ऐसी; शिष्य संदेह निवारन कारन बात कहै गुरु है कतुं जैसी.॥१ए॥

अर्थः हवे शिष्य पूठे ठे के, जीवने निश्चयनयथी ज्ञाननो कर्ता कह्यों ने कर्मनो अकर्ता कह्यों, तेनुं शुं कारण? हे गुरु! पुजल इत्यरूप कर्मने जीव करे नहीं एवी जे वात तमें कही, ते वात हुं यथार्थ समज्यों नहीं. ए पुजलरूपी कर्मनो खजाव करे? इहां कर्ता तो ठरावता नथी अने तेनी किया केवी ठे ते कहों. वली पुजल कर्मनो कर्ता पुजलनेज बनावोठो त्यारे कर्ता कर्म बंने जम थयां, ते पोतानी मेले मलवुं बटा थावुं केम बनी शके? ए मारा मनमां संदेह ठे शिष्यनों संदेह निवारवाने आ प्रक्षनो यथार्थ उत्तर गुरु हवे कहेठे: ॥ ११ए॥

श्रय गुरु उत्तर कथन:-

॥दोहाः॥— पुदगल परिनामी दरब, सदा परिनमै सोय; याते पुदगल करमको, पुदगल कर्त्ता होय ॥ २० ॥

श्रर्थः— हे शिष्य! पुद्गल जे वे ते परिणामी ड्रव्य वे. क्तण क्तणमां तरेहवार बनी जायवे तेमाटे सदा परिणमी रह्यो वे, ते युक्तिश्री पौजलिक कर्मनो कर्त्ता पुज लज थई शकेवे. ॥ २० ॥

श्रय पुनः शिष्य प्रश्नः-

॥ श्राडुल वंदः ॥— ज्ञानवंतको जोग निर्जरा हेतु है; श्रज्ञानीको जोग बंध फल देतु है;यह श्रवरजकी बात हियेनहि श्रावही;बूजैकोऊ शिष्य गुरू समुजावही.॥११॥ श्राथः—हवे शिष्य पूठेठे के, ज्ञानजाव ज्ञानी करे एवं कहेवाथी जोग निर्जरारूपी थाय ठे ते केम ? ज्ञानी जोग जोगवे ते कर्मनी निर्जरा करेठे, त्यारे तो ज्ञानीनो जोग निर्जरानो हेतु ठे श्रने श्रज्ञानी जे जोग जोगवे ते कर्म वंधन करेठे; त्यारे तो श्रज्ञानीनेज जोग वंध फलदाई कह्यो एतो श्रवरजनी वातठे; केमके जोग जोगव वामां समान होय ने एकनो जोग निर्जरानो कारक श्रने बीजानो जोग वंधनो का रक एम केम बने ? श्रने ए वात हृदयमां ठसती नथी. श्रावं शिष्यनं केहेवं सांज लीने गुरु तेनो उत्तर कहेठे:— ॥ ११ ॥

श्रथ गुरु उत्तर कथन:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— दया दान पूजादिक विषय कषायादिक, दोहू कर्म जोग पे छहूको एक खेतु है; ज्ञानी मूढ करम करत दीसे एकसे पें, परिनाम जेद न्यारो न्यारो फल देतु है; ज्ञानवंत करनी करें पें जदासीन रूप, ममता न धरे ताते निर्जराको हेतु है; बहे करतूति मूढ करें पे मगन रूप, श्रंध जयो ममता सो बंध फल खेतु है.॥ ११॥

श्रर्थः— दया पालवी, दान देवुं, पूजा प्रमुख करवी, एक एवी रीतनां कर्महे, श्रने पांच इंडिश्रोना विषयनुं सेवन करवुं, कषायनुं सेवन करवुं; एक एवी रीतनां कर्म हो, ए बंने कर्मनो संसारमां जोग हो, पण क्तेत्र एक हो, तथी बंने बंधरूप हो. श्रने हानी पण ए वे कर्म करे हो, तथा श्रज्ञानी पण करे हो, श्रने ए कर्म करतां तो ज्ञानी श्रज्ञानी एक सरखाज देखाय हो, पण एना परिणाम जेद जुदा जुदा हो माटे ए कर्मनुं फल जुड़ं जुड़ं श्रापे हो. ज्ञानवान जे कर्म किया करेहे, ते जदासीन रूप श्रदेने करे हो, एटले एनी मेले जदय श्रावेद्धं कर्म करेहे, पण ममता धरतो नथी; ए माटे निर्जरानो देनु हो. श्रने एज कर्म किया मूह करे हो, पण ए किया कर वामां श्रानंद रूप रहे हो; ने निजात्मश्रुद्धिने विसरी जाय हो; एटले श्रंध जेवो वनी जाय हो, श्रने ममता धारण करे हो, तेथी बंध फलने लिये हो; एज माटे श्र ज्ञानी श्रज्ञाननो कर्त्ता हरे हो. ॥ ११ ॥

हवे कुंजारनुं दष्टांत आपीने मूढनुं कर्जापणुं सिद्ध करेंगेः— अय मूढ कर्तृत्व कथन कुलाल दष्टांतः—

॥ उपय उंदः ॥— ज्यों माटीमिह कल्लस, होनकी शक्ति रहे ध्रुवः दंड चक्र चीवर कुलाल बाहिज निमित्त हुवः त्यों पुदगल परवानु, पुंज बरगना जेष धिरः झानी बर नादिक सरूप बिचरंत विविध पिरः बाहिज निमित्त बहिरातमा, गहि संसै श्रज्ञान मितः जगमांहि श्रहंकृत जावसों, करम रूप व्है पिरनमिति ॥ १३ ॥

श्रर्थः— जेम कलसरूप कार्य थवामां माटी ड्रव्यनी शक्ति भ्रुव के० निश्चय हे. श्रने ते कार्यनेविषे तेने फेरववानो दंम श्रने चक्र के० चाकने चीवर उतारवानी दोरी ने कुंचार ए सर्व बाह्य निमित्त थयां, तेम परमाणु पुजलनो पुंज ते वंधपणु ध रीने काम्मीणवर्गणानो जेप धरीने ज्ञानावरणी, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, श्रा पुष, नामकर्म, गोत्रकर्म,श्रंतराय ए खरूपे विविध के० जात जातनो पुजल खंध विचर्यों; श्रहीं बहिरात्मा एटले देव मनुष्यादिरूपी बाह्यात्मा बाह्यनिमित्त धर्इने ज्रम

रूपी श्रज्ञान यहीने श्रहीं कारण बन्यो; त्यारे जगत्मां श्रहंकारबुद्धिनी संगति ते हिज पुजलखंध कर्मरूप बनीने परिणम्यो हे. ॥ १३॥

हवे निश्चये जीवनुं श्रकत्तापणुं मानीने एना श्रमुजवमां रेहेवुं तेनुं महातम्य कहेवे:-श्रथ शुद्धानुजव महातम्य कथनः-

॥ सवैया तेईसाः ॥— जे न करै नयपक् विवाद धरै न विषाद श्राह्मीक न जाखै; जे उदवेग तजै घट श्रंतर, शीतखनाव निरंतर राखै; जे न गुनी गुन नेद बिचारत, श्राकुलता मनकी सब नाखै;ते जगमें धरि श्रातमध्यान श्रखंडित ज्ञानसुधारस चाखै॥१४॥

श्रर्थः—जेम मिथ्यात्वी लोक पोतपोताना नयनो पक्त धरीने पोतपोतामां विवाद करे तेम न करतां जे सहज आनंदमां रहे हो; ने विवाद धरता नथी, श्रने फू हुं बोल ता नथी, श्रने छुष्ट ध्यान धरता नथी एटले उद्वेगनो त्याग करे हे; श्रने हमेश पो ताना हदयने विषे शीतल जाव राखे हे, ने एवा शुद्ध श्रात्माना श्रनुजवमां मले हे. जेथी श्रात्मा ग्रणी हे ने ज्ञानग्रण हे, एवो जेने जेद विचार रह्योज नथी, श्रने वि कहप के व्याकुलताने मनमांथी काढी नाखे, एवा जे शुद्ध श्रनुजवी थाय, तेज श्रा तमध्यान धरीने जगत्ने विषे संपूर्ण केवल ज्ञानरूप श्रमृत रस तेने चाखे हे. ॥ १४ ॥

हवे निश्चय नय थकी श्रकर्त्तापणानी स्थापना श्रने व्यवहार नयवडे कर्त्तापणानी स्थापना प्रमाण करी बतावे वे:-श्रथ निश्चय व्यवहारनय प्रमाण स्थापना:-

॥संवैया इकतीसाः॥— विवहार दृष्टिसों विलोकत बंध्योसो दीसे, निहचे निहारत न बांध्यो यह किनही; एक पन्न बंध्यो एक पन्नसों श्रवंध सदा, दोन पन्न श्रपने श्रमादि धरे इनही; कोन कहें समल विमल रूप कोन कहें, चिदानंद तैसोई बलान्यो जैसो जिनही; बंध्यो माने खुल्यो माने छुहुनको जेद जाने, सोई ज्ञानवंत जीव तत्त्व पायो तिनही। ॥ १५ ॥

श्रर्थः चतुर्गतिरूप संसारमां त्रमण करवानो श्रात्मानो व्यवहार जोइए तो श्रात्मा कर्त्ताज देखाय ने वंधमां पण जणाय, श्रने निश्चयनयवडे झाननोज कर्त्ता श्रने झानखरूपी जोइये तो एज श्रात्मा कशामां वंधायलो नही जणाय; तेथी ए कलो व्यवहार पक्त ग्रहीये तो श्रात्मा वंधमां हो, ने एकलो निश्चयपक्त ग्रहीये तो श्रात्मा सदा श्रवंध जणाय, एवा वंने पक्त श्रनादिकालना ग्रहण कीधा हो, कोई व्यवहारनयवालो होय ते जीवने समल कहेहे, ने कोई निश्चयनयवालो होय ते एने विमल कहेहे. पण जेणे जेवो पोतानी बुद्धिश्री चिदानंदने वखाण्यो तेवोज चिदानं दहे. हवे जे सम्यग्दृष्ट होय तेतो श्रात्माने बंधायलो पण माने, श्रने श्रवंधपण

माने, पण ए मानवामां बेहुनयनो नेद जे जाणे तेज ज्ञानी कहेवाय, अने तेणेज जीव तत्त्वनुं खरूप र्वेखख्युंबे ॥ १५ ॥

हवे बेज नयने समान राखीने समिकत राखेथी समरस जावमां रहे तेनी प्रशंसा करेते:-श्रथ समरसी जाव प्रशंसा कथन:-

॥सवैया इकतीसाः॥— प्रथम नियत नय इजो विवहार नय, जुहुकों फलावत श्र नंत जेद फले हैं; ज्यों ज्यों नय फले त्यों त्यों मनके कलोल फले, चंचल सुजाय लोका लोकलों उठले हैं; ऐसी नय कह्त ताको पह्त तिज ज्ञानी जीव, समरसी जये एकतासों नही टले हैं; महा मोह नासे ग्रुद्ध श्रमुजी श्रज्यासे निज, बल परगासे सुख रासि माहिं रले है ॥ १६ ॥

श्रयं:— पहेलोतो निश्चय नय हे, श्रने बीजो व्यवहार नय हे; ए बें नयने एक एक प्रव्य साथे फलाविये त्यारे श्रनंत प्रव्यनी श्रपेक्ताने लीधे नयना श्रनंत जेंद फले हे. हवे ए नयना श्रनंत जेंद मननाज विचारथी फले हे, तथी जेम जेम नयतुं फलाव थाय तेम तेम मनना तरंग पण श्रनंत जेंदे फले हे, श्रने मनना कल्लोल जे टला होय तेटला चंचल खजावमनना थई जाय, एनुं प्रमाण षट्यणी हानि हृद्धि लेले लोकालोक प्रदेश परिमाण होय एवी जे नय कक्ता के नयने श्रंगीकार करी तेनो पक्तपात त्यजीने जे ज्ञानी जीव समरसी जावमां रह्या श्रने सघला नयना वि स्तारमां चेतनानी एकता होय तथी टले नही ते तो समरसी जाव वाला महा मोह के ज्ञमनो नाश करीने श्रने शुद्ध चिदानंदना श्रमुजवनो श्रज्यास करीने, एटले क्त्यकश्रेणि श्रारोहण करीने परमात्मानुं जे बल हे तेनो प्रकाश करीने सुख राशि जे मोक्स पद हे तेनेविषे मली जायहे॥ १६॥

हवे निश्चय व्यवहार बतावीने पोतपोतानुं जे सत्य खरूप खद्कण हे तेहिज क हेहे:-श्रथ सम्यक् खरूप खन्चन कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जैसे काहु बाजीगर चौहटे बजाई ढोख, नाना रूप धरी के जगस विद्या ठानी है; तैसे में श्रनादिको मिथ्यातके तरंगनिसों जरममें धाइ बहु काय निज मानी है; श्रव ज्ञान कला जागी जरमकी दृष्टि जागी, श्रपनी पराई सब सोंजु पहिचानी है; जाके उदे होत परवान एसी जांति जई, निहचे हमारी ज्योति सोई हम जानी है. ॥ १९॥

श्रर्थः— जेम कोई बाजीगर चौटामां ढोख वगामीने जात जातना रूप धरीने पो तानी जगब विद्या प्रसारे हे, ने तेने लोको साची मानेहे, ते रीते हुं श्रनादि का खर्थी मिथ्यात्व तरंग के० ब्हेरोमां मगन बनी रह्यो तेथी जगखविद्या जोनाराने न्याये ज्ञममां धायो थको घणी कायार्र पामीने पोतानी मानी हीधी हती, ते हाल मने कान कहा प्राप्त थवाथी ज्ञमनी दृष्टि दूर थई गई, त्यारे पोतानी तथा पारकी सोंज के० सामग्री ते सर्वने श्रोलखी हीधी; जे ज्ञान कलाना उदय थवाथी वस्तुनुं परमाण थायहे एवी रीत थई तथी पोतानी परंपरानी शुद्धि श्रावी, एवा निश्चयथी श्रमारी ज्योति जे श्रमारं खरूप तेने श्रमे श्रोलखी हीधुं॥ १९॥

हवे जे ज्ञाता होय ते सम्यक् स्वरूपने ग्रुद्ध श्रनुजवनेविषे विचारी बिये ते कहे हे:- श्रथ ग्रुद्धानुजव चिंतन ज्ञान विलासः-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसै महा रतनकी ज्योतिमें लहरि उठे, जलकी तरंग जैसे लीन होइ जलमें; तैसे ग्रुद्ध स्थातम दरवपरजाय करी, उपजे बिनसे थिर रहे निज थलमें; ऐसे श्रविकलपी श्रजलपी श्रानंद रूपी, श्रनादि श्रनंत गहि लीजे एक पलमें; ताको श्रनुजन कीजे परम पिऊष पीजे, बंधको विलास मारि दीजे पुदगलमें ॥ १०॥

श्रर्थः— जेम हीरा, लाल, पन्ना श्रने रलनी ज्योतिमां लहरी उठे, ने ज्योतिमांज समाइ जाय ठे, वली जेम पाणीना मोजां पाणीमांज समाई जाय, तेम शुरू श्रात्म द्वार्यना जे ज्ञान प्रमुख गुणना पर्याय ठे ते समये समये उपजे ठे, ने वणसे ठे, श्रने द्वार्य पोताना द्वार्य स्थानने विषेज रहेठे. उपजवुं ने वणसवुं ए विकट्प पर्यायने श्रा श्रये थाय ठे; पण द्वार्यमां तो थिरता रही ठे, द्वार्यमां विकट्प नथी माटे जे श्रवि कट्पक श्रने श्रजट्पी के० स्थिरठे सर्वथा वचन गोचर नथी, श्रने श्रानंदरूपी ठे, तेथी सहज समाधि थईठे, एवं कोइ श्रात्म द्वार्यठे, तेनुं श्रनादि श्रनंत काल सुधी एक रूपमां यहण करवं, श्रने तेज द्वार्यनो श्रनुजव करवो, एटले तेने विषेज उपयो ग राखवो, ए श्रनुजवमां परम पिज्ञष के० परम श्रमृतरस उपजे ठे ते पीवो श्रने जे श्राश्रव बंधनो विलास श्रात्मामां ठे तेने पुजलनी सामग्रीमां नाखी देवो, एटले पुजलरूप जुडंज ठे॥ १०॥

हवे आत्मानो शुद्ध अनुजव परम पदार्थ हे, तेनी प्रशंसा करेहे: अथ अनुजव प्रशंसा:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— दरवकी नय परजाय नय दो जनय, श्रुत क्रानरूप श्रुतका न तो परोष है; ग्रुद्ध परमातमाको श्रनुजी प्रगट ताते, श्रनुजी बिराजमान श्रनुजी श्रदोष है; श्रनुजी प्रवान जगवान पुरुष पुरान, क्रान श्री विक्रानघन महासुखपोष है, पर म पवित्र योंही श्रनुजी श्रनंत नाम, श्रनुजोविना न कहों रेर ठोर मोष है ॥ १ए ॥

श्रर्थः पदार्थने वेलखवाने बेज नय प्रवर्ते हे, एक द्रव्यार्थिक नय वहे द्रव्यनो विवरो श्रने पर्यायार्थिक नयवडे पर्यायनो विवरो थाय हे, ए बंने नय श्रुतज्ञानरूप हे, श्रने श्रुतज्ञान जे हे ते परोक्त ज्ञान हे; श्रने शुद्ध परमात्मानो श्रमुजव जे हे तेतो प्रगट के॰ प्रत्यक्त प्रमाणमां आवे हे, तेथी अनुजवज महा बलवान थको बिरा जमान थई रह्योहे, एथी अनुजव ते अदोष के॰ शुद्ध हे हवे अनुजवनां नाम कहेहे, अनुजव किहेथे, प्रमाण किहेथे, जगवान कहीथे, एनेज पुराण पुरुष कहीथे, एनेज झान कहीथे, एनेज महा सुखनुं पोष कहीथे, एनेज परम पिवत्र किहेथे, एवा अनुजवनां अनंत नाम हे. अने ए शुद्ध अनुजव शिवाय बीजे कोई स्थानके मोक्त नथी॥ १ए॥

हवे शुद्ध श्रनुजविना संसारमां जमे श्रने शुद्ध श्रनुजव प्राप्त थये मोक्त पामे ते कहे हे. श्रथ श्रनुजव साम्यर्थ जलको दृष्टांतः—

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जैसे एक जल नाना रूप दरबानुयोग, जयो बहु जांति पहिचान्यो न परतु है; फीरि काल पाई दरबानुयोग दूरि होतु, श्रपने सहज नीचे मारग ढरतु है; तैसे यह चेतन पदारथ विजावतासों, गित योनि जेष जव जावर जरतु है; सम्यक सुजाइ पाइ श्रमुजोंके पंथ धाइ, बंधकी जुगती जानि मुगति करतु है ॥३०॥

श्रर्थः— जेम पाणी एक रूप हे तथापि तेनेविषे नाना प्रकारनी माटी प्रमुख इव्यनो मिलाप थये पाणी पण तरेहवार जातनुं थाय हे, हवे देखवामां तो माटी प्रमुख देखाय हे, पण पाणी श्रोलखातुं नथी. फरी कोई श्रोषधादिकथी ते द्रव्यनो मिलाप द्रर थयो श्रने पाणी तरी श्राव्युं लारे पोतानुं सहज रूप लईने नीचाण तरफ ह लवा लाग्युं; ते रीते जे चेतन पदार्थ हे ते विजावतासों के० पोतानी जुल थकी चार गतिमां चोरासी लाख जीव योनिनेविषे जेष के० एक कोड सामासत्ताणुंलाख कुल कोमीमां जातजातना जवकरतो जावरी के० फरी रेहे हे, एज जीव कोई श्रवसर सम्यग् जाव पामीने पोताना श्रनुजवना मारगमां दोमीने श्रने बंधनना विलासने तो कीने कर्मनी मुक्ति करे हे।॥ ३०॥

हवे मिथ्यादृष्टि होय ते श्रमुजव शिवाय कर्मनो कर्त्ता होयज ते कहे हेः- श्रथ मिथ्यादृष्टि कर्तृत्व कथनः-

॥ दोहाः ॥- निशिदिन मिथ्या जाव बहु, धरै मिथ्याती जीवः ताते जावित कर मको, करता कह्यो सदीव. ॥ ३१ ॥

श्रर्थः - रात ने दिवस पोतानी जूलनेविषे मिथ्यात्वी जीव होय ते फलाणुं में कीधुं में लीधुं, श्रामारुं इत्यादिक मिथ्या जाव धारे ते माटे श्रद्धाद्ध चेतनाजे हे ते विजा वित कर्महे तेनो कर्त्ता सदीव के निरंतर कह्यो। ॥ ३१ ॥

हवे ज्ञानी श्रने मूढ करम करे हे, ते एक सरखां देखाय हे, तथापि मूढ जीवने

कर्मनो कर्त्ता कह्यो ने ज्ञानी जीवने कर्मनो श्रकर्त्ता कह्यो तेनुं कारण कहे वे:-श्रय मूढ कर्मको कर्त्ता ज्ञाता श्रकर्ता यहु कथनः-

॥ चोपाईः ॥– करै करम सोई करताराः जो जानै सो जाननहाराः जो कर्ता नहि जानै सोईः जानै सो करता नहि होई ॥ ३१ ॥

खर्थः जे कर्मने करे तेज कर्त्ता कहेवाय खने जे जाणे हे तेने तो जाणनार कहीये; जे कर्त्ता हे तेज जाणनार नथी खने जे जाणनार हे ते कर्त्ता नथी॥ ३१॥

हवे जे जाणनार हे ते श्रकर्ता हे ते समजावे हे:-श्रथ ज्ञाता श्रकर्ता कथनं:-

॥ सोरठाः ॥– ज्ञान मिथ्यात न एक, निह रागादिक ज्ञानमिहः; ज्ञान करम श्र तिरेक, जो ज्ञाता करता नही. ॥ ३३ ॥

श्रर्थः—ज्ञान जाव श्रने मिथ्यात्व जाव एक कहेवाय नही; श्रने रागादिक जे राग द्वेष मोह इत्यादिक जाव ज्ञानमां होय नही; एथी ज्ञान जे हे ते कमिथी श्रतिरेक के जुड़ं हे, तेमाटे जे ज्ञाता होय ते कर्ता न होय ॥ ३३॥

हवे जे मिथ्यात्वी जीव हे ते पुजलाइच्य रूप कर्मनो श्रकर्ताज हे श्रने जाव कर्मनो कर्ता हे ते कहेहे:- श्रथ जीवइच्य कर्मको श्रकर्ता यह कथन:--

॥ उप्पयंदं ।।- करम पिंम श्रह राग, जाव मिखि एक होहि नहि; दोक जिन्न स्वरूप, वसिह दोक न जीवमिह; करम पिंड पुजल बिजाव रागादि मूढ ज्रम; श्रवल एक पुग्गल श्रनंत किम धरिह प्रकृति सम; निज निज विलास जुत जगत मिह, जथा सहज परिनमिह तिम; करतार जीवजम करमको, मोह विकल जन कहि इम ॥ ३४॥

खर्थः- पुजग डव्य रूप कर्म पिंम खने राग देषादिक जाव ए बंने मलीने एक रूप थाय नही, ए बंने जाव जिल्ल स्वरूपमां हे, पण ए बेंड जाव जीवमां रेहेता नथी। एनो विवरो कहेंहे:- कर्मपिंड हे तेतो पुजलरूपी हे. छने जे रागादिक विजाव हे तेतो मूह जीवनो भ्रम हे; खलख जीव हे तेतो एकता लीधे रह्यो हे छने पुजल खन्तेताने लेई रह्याहे. तो कर्मनुं कर्जापणुं एवी सम प्रकृति बेंड केम धारण करहो ? जगत्मां सर्व कोई पोतपोताना स्वजाव विलासमां युक्त थई रह्याहे, जेवो पोतानो स हज स्वजाव हे तेवोज परिणमी रह्यो हे ए न्यायनी वात हे, तेथी जड रूपी कर्मनो कर्जा जीव हे, एवं वचन जे जीव मोहथी विकल होय हे ते कहेंहे ॥ ३४॥

हवे सम्यक् प्रकारे करीने सिद्धांत समजावेते. अथ सम्यक्त प्रजाव कथनः--

॥उप्पयंत्रंदः॥- जीव मिथ्यात न करें, जाव निह धरे जरम मल; ज्ञान ज्ञान रस रमें, होइ करमादिक पुजल; श्रसंख्यात परदेश, सकति जगमें प्रगटे श्रति; चिद् वि

लास गंजीर, धीर थिर रहे विमल मित; जब लिग प्रबोध घटमहि उदित, तब लग श्चनय न पेखियै; जिम धरमराज वरतांतपुर, जह तह नीति परेखिये ॥ ३५ ॥

अर्थः - जीव वे ते मिथ्यारूपी कर्म करें नहीं, एनों हेतु कहे वे के, भ्रम मल रूपी जे जार हे तेने ए जीव धारण करे नहीं. अने ज्ञान ज्ञाननाज रसमां रमे एटसे ज्ञा तापणामां रहे. श्रने कर्मादिक जे ज्ञानावरणादिक राग द्वेषादिक तेतो पुजलसाम मीने स्रने ए जीवना तो श्रसंख्यात प्रदेशनेविषे एवी शक्ति स्रति प्रगटपेषे जग मगी रही हे. ते कहीये हृइये के, चिद्विलास के॰ ज्ञान विलासनेविषे गंत्रीरहे, धीर ने विमल मतिवंत थको स्थिरता यई रह्यो है; एवं प्रबोध सम्यग् ज्ञान जां सुधी घट पिंममां प्रकाशमान थई रह्युं हे त्यांसुधी स्त्रनय के स्त्रन्याय स्वंह्रपने दे खीये नही, ते उपर दृष्टांत कहें छे जेम पुर नगरमां धर्मराज वर्त्तता थका जहां तहां नीतिज जोवामां आवे ॥ ३५ ॥

॥ इति श्रीसमयसार नाटक कर्त्ता कर्म क्रिया द्वार तृतीय बाखबोध सहित समाप्तं ॥

॥ दोहराः ॥- करता किरिया करमको, प्रगट बखान्यो मृबः श्रव बरनों श्रिधिकार यह, पाप पुष्य समतूल ॥ ३६ ॥

अर्थः कर्त्ता क्रिया अने कर्म एउनुं मूल के॰ रहस्य ते प्रगट करी वखाएयुं. हवे पाप श्रने पुष्य ए बने बराबर हे तेनो श्रधिकार वर्णन करुं हुं ॥ ३६॥

हवे पाप पुख द्वार विषे प्रथम ज्ञानचंद्रनी कलाने नमस्कार करेहे:-

श्रय ज्ञानचंद्र कला वर्णनं:-

॥कवित्तवंदः॥-जाके उदे होत घटश्रंतर, विनसे मोह महातम रोक; सुन श्रह श्रशु ज करमकी डिबिधा, मिटे सहज दीसे इक थोक; जाकी कला होतु संपूरन, प्रतिजासै सब लोक श्रलोक; सो प्रबोध शशि निरित्व बनारिस, सीश नमाइ देतु पग धोक ॥३९॥

श्रर्थः जे प्रबोध चंद्रना प्रकाशवाथी समान घटमां जे मोहरूप महातम के व घोर श्रंधकारनुं रोक जे श्रटकाव ते नाश पामे, श्रने जेम श्रंधकार गयाथी एक कर्म ग्रुन खने एक कर्म खग्रुन एवी जे कर्मने विषे दिविधा हे ते मटी जाय, खने स हज जावे कर्म बंधरूप हे एवं एक थोक देखाय छने जेने प्रबोधचंडनी सर्व संपूर्ण कला प्रगट थयेथके सर्व लोकालोकनो प्रतिजास थाय ते प्रबोधरूपी चंद्रकलाने नि रखीने बनारसीदास माथुं नमावीने पगधोकदेतुहे के० प्रणाम करेते. ॥ ३७ ॥

हवे मोहमां ग्रुज श्रग्रुज कर्मनी द्विविधता देखायने ते एकरूपपणे देखाडेने:-

श्रथ शुनाशुन एकत्वीकरनः-

॥सवैया इकतीसाः॥—जैसे काहु चंडाली जुगल पुत्र जने तिन्ह, एक दियो बामन कूं एक घर राख्यों है; बामन कहायों तिन्ह मद्य मांस त्याग कीनो, चंनाल कहायों तिन मद्य मांस चाख्यों है; तैसे एक वेदनी करमके जुगल पुत्र, एक पाप एक पुत्य नांज जिन्न जाख्यों है; हहों माहिं दोरधुप दोज कर्म बंधरूप, पाते ज्ञानवंतने न कोज श्रजिलाख्यों है. ॥ ३०॥

श्रर्थः— जेम कोई चंमालनी स्त्री जुगल पुत्र के० वे पुत्र जणे ने पठी एक ठोकरो ब्राह्मणने श्रापे, ने एक ठोकरो पोताना घरमां राखे, हवे जे ठोकरो ब्राह्मणना घरमां उठरें ते ब्राह्मण केहेवाय, ने ते मद्य मांसनो त्याग करे, जे चंमालना घरमा रहे ते चंमाल केहेवाय, ने ते मद्य मांस पण चाखे, ते रीते एक वेदनीय कर्मनां वे पुत्र ठे, एक पाप ने बीजो पुष्य, एवां जुदां जुदां नाम कह्यांठे, पण बंनेनो स्वजाव एक ठे, एटखे वेउने विषे दोरधूप के० वेदनानी सत्ता ठे. एटखे खेदसंताप ठे वली पापने पुष्य ए वेउ कर्म बंधरूप ठे, एटला वासते झानीजने ए वेउमांथी कोइनो पण श्र जिलाष कीधो नथी. ॥ ३०॥

हवे पाप तथा पुर्ख ए बेजने समान कह्यां तेजपर शिष्य प्रश्न पूठेहे:-श्रथ शिष्य प्रश्नः-

॥ चोपाईः॥ कोऊ शिष्य कहै ग्रह पांही; पाप पुष्य दोऊ सम नांही; कारन रस सुनाव फल न्यारे; एक अनिष्ट लगे इक प्यारे.॥ ३ए॥

श्रर्थः कोई शिष्य ग्रहनी पासे श्रावी कहे के, खामी पाप ने पुख ए बेने समान कह्यां पण ते समान देखातां नश्री केमके, ए बेनां कारण, रस, खजाव तथा फल ते तो जुदां जुदां हे; वस्ती एमांथी एक प्रिय लागे हे, ने एक श्रप्रिय लागे हे. ॥ ३७॥

इवे शिष्य ए बेजनां कारण प्रमुख जुदां जुदां कहे हे:- श्रय शिष्य कथन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— संकिखेस परिनामिनिसों पाप बंध होइ, विशुद्धसों पुन्य बंध हेतु जेद मानिये; पापके उदे श्रमाता ताको है कटुक खाद, पुन्य उदे साता मिष्ट रस जेद जानिये; पाप संकिखेस रूप पुन्यहिं विशुद्ध रूप, छुहूंको सुजाउ जिन्न जेद यों बखानिये; पापसों कुगति होय पुन्यसों सुगति होय, ऐसो फल जेद परतन्न परवानिये. ॥ ४०॥

श्रर्थः तीव्र कषायमय जे परिणामवे तेनुं नाम संक्षेत्रा परिणाम, तेणे करीने पा पनो बंध थायवे; श्रने कषायनुं जे मंदपणुं तेने विद्युद्ध किहेचे; तेवडे पुर्णाने बंध थाय; एवा हेतु एटखे कारण जेद मानिये व्हये. श्रने पापना चुदयथी श्रज्ञाता थाय है, तेनो स्वादतो कटुक होय है. ने पुष्यना उदयवडे शाता उपजे हे, तेनो मिष्ट खाद होय है. एट खे पाप ने पुष्य ए बे उने विषे रस जेद थयो; वली पापकर्म क्षेश रूप हे, तीत्र कषाय रूप हे; श्रने पुष्य कर्म विशुद्ध रूप हे. मंद कषाय रूप हे; ए बंने कर्मनो जिल्ल जिल्ल खजाव थयो, ते एज उपरथी ए वंने कर्मनो जेद वखाणीये हश्ये; श्रने पापश्री कुगति के वर्क गति तिर्यंच् गति, थाय हे, श्रने पुष्यवडे मनुष्यगति, देवगति एवी सुगति थाय हे; ए रीते पाप पुष्य रूप कर्मने विषे फलनो जेद प्रत्यक्त प्रमाण्यी हे।।४०॥ हवे शिष्यना प्रश्ननो गुरु उत्तर करे हे:— श्रथ ग्ररु उत्तर वचन यथा:—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— पाप बंध पुन्य बंध छुहूमें मुगति नांहि, कटुक मधुर खाद पुग्गलको पेखिये; संकिलेस विद्युद्धि सहज दों कर्म चालि, कुगति सुगति जग जालमें विद्ये खिये; कारनादि जेद तोहि सूजत मिथ्यातमांहि, ऐसो द्वेत जाव इान दृष्टिमें न लेखिये; दों महा खंधकूय दों कर्म बंध रूप, छुहू को बिनास मोष मारगमें देखिये. ॥ ४१ ॥

श्रर्थः— पापनो पण बंध थाय ने पुष्यनो पण बंध थायहे; ने ज्यां बंध होय त्यां मुक्ति न होय, एटले बेहियी मुक्ति नहीं ते माटे बेहि समान हे; श्रने जे कटुक र समां पाप हे ने मधुर रसमां पुष्य हे ए बेहि रस पुद्गलना है तथी। पापने पुष्य समानज है. वली जे संक्षेश स्वजावने लीधे पाप हे, ने विशुद्ध स्वजावथी पुष्य हे; पण् ए बेहि स्वजाव जे हे ते कर्मनी चाल है. श्रने हुगति तथा सुगति ते पाप पुष्यनां फल है, ते जेदबड़े जगत् जालनी विशेषता है, तथी पाप पुष्य समानज हे. श्ररे! शिष्य! तने जे पाप पुष्यना कारणादि जेद तेणे करीने पाप पुष्यनो द्वेत जाव के दिविध जाव सूजे हे, ते तो मिथ्यामितमां सूजे हे; पण ज्ञान दृष्टि करी जोतां तो ए दितजाव देखाशे नहीं। ए बेनेविषे श्रात्मानुं श्रवलोकन नथी, तथी ए बेह महा श्रंधकूप हे, श्रने ए बेह कर्म हे; ते बंधरूप हे श्रने मोक्तमार्गने विषे ए बेहनो विनाश देखीये हीए तथी ए बेह समान हे॥ ४१॥

इवे मोक्त मार्गनेविषे वेउनो विनाश बतावे ठे:- श्रथ मोक्त पद्धति कथन:-

श्रर्थः - ब्रह्मचर्य तप, पंचें द्रिय नियह, संवर, दान पुजाप्रमुख किया; पुष्य एवंध

हवे श्रधी सवैयामां शिष्य प्रश्न करें हे, ने श्रधी सवैयामां ग्रह तेनो उतर वासे हे:— श्रय शिष्य प्रश्न ग्रह उत्तर कथनः—

॥ संवैया इकतीसाः ॥— शिष्य कहै खामी तुम करनी शुज श्रशुज, कीनी है नि षिद्ध मेरे संसो मनमांहि है; मोषके संधेया ज्ञाता देसविरती मुनीस, तिन्हकी श्र वस्था तो निरावलंब नांहि है; कहै गुरु करमको न्यास श्रनुजो श्रज्यास ऐसो श्रव लंब जन्हहीको जनमांहि है; निरुपाधि श्रातम समाधि सोइ शिवरूप, श्रोर दौर धूप पुदगल परठांहि है. ॥ ४३ ॥

अर्थः— शिष्य पूर्वे हे सामी, तमे तो मोक्त मार्गमां शुजने अशुज करणी बेउनो निषेध कीधो, तेनो मारा मनमां संदेह पडे हे; केमके मोक्तमार्गना साधक ज्ञाता देश विरती पंचम ग्रण स्थान वर्त्त थया अने मुनीश के षष्ट सप्तम ग्रणस्थानवर्त्त सर्व विरती थया, तेमनी अवस्था तो निरालंबन नथी, एट खेपोतपोतानी शुद्ध कियाना आ लंबनने केईने देश विरती सर्व विरती कहेवाय है, त्यारे करणी निषद्ध केम थई? हवे ग्रह कहे हे:— जेवो अक्तरनो न्यास मांड्यो तेवुं श्रुत ज्ञाननुं आलंबन होय तेम शुज कर्मनो न्यास तेतो जोवामां हे पण ते अनुजवनोज अज्यासहे, ते अनुजव अ ज्यासह्य आलंबन ते तो ज्ञातानुं ज्ञाता पासेज हे, अने तेमां निरुपाधि के राग देष कषाय इहादिकविना आत्मानी जे समाधीहे, एट ले जे पर रूपने विषे निरुपयो गीपणे रहे वुं तेज शिवरूप, के मोक्तरूपहे अने जे दोरधूप के लेद संताप जेहे ते तो पुजलनी परिठां ही के लांयाहे॥ ४३॥

हवे एज ग्रुज कियाविषे बंध अने एज ग्रुज कियाविषे मोक्त ए बेज खरूप कही बतावेंगे:- अथ बंध मोक्त खरूप कथन:-

॥ सबैया तेईसाः ॥— मोठसरूप सदा चिनमृरति, बंधमई करतृति कही हैः जा वतकाल वसे जह चेतन, तावत सो रसरीति गही है; आतमको अनुजो जबलों त बलों शिव रूप दसा निवही है; अंध जयो करनी जब ठानत, बंधविथा तब फेलि रही है ॥ ४४॥ श्रर्थः— चिन्मूर्ति के० चिदानंद वे ते तो सदा मोक्स खरूप वे, श्रने करतूती के० किया तेतो सदा बंधमयवे यावत् काल के० जेटला काल सुधी चेतन ज्यां वसे ता वत्काल के० तेटला काल सुधी तेज रसरीति यहण कीधी वे, एटले तेज रसमां र हेवे; एटले ज्यांसुधी श्रात्मानो श्रवजन रहे त्यां सुधी श्रुज किया करतां वतां शि वपद दशा निवही एटले मोक्स स्वरूपमां रहे, श्रप्रमतता कहेवाय; श्रने पोतानुं स्वरूप जुलीने श्रंध श्रयो श्रको ज्यारे करणीनोज रस वरावे त्यारे तो बंधनाज कष्ट रोग फेलावे वे॥ ४४॥

हवे मोक्तप्राप्तिनुं कारण कहें हे:- अथ मोक्त मार्ग निरूपणं:-

॥ सोरठाः ॥– श्रंतर् दृष्टि खखाज, श्ररु सरूपको श्राचरणः ए परमातमजाज, शिवकारन एई सदा ॥ ४५ ॥

श्रर्थः- बाह्य दृष्टि ग्रंडीने श्रंतर्दृष्टि श्रापीने श्रवक्तनो जापकरवो, श्रने तेना स्वरूपनुं श्राचरण करवुं, एटखे ज्ञान, दर्शन, चारित्रने श्राचरिये, तेथकी परमात्म जावसिद्ध थाय; सदाकालनेविषे एज मोक्तनुं कारण वे ॥ ४८ ॥

हवे बाह्य दृष्टिवमें बंध पद्धति थाय ते कहे छे:- श्रथ बंध मार्ग निरूपणं:-

॥ सोरठाः ॥– करम ग्रुजाग्रुज दोइ, पुजल पिंम विजाव मल; इनसों मुगति न होइ, नांही केवल पाइए ॥ ४६ ॥

े श्रर्थः — शुजकर्म ते पुष्य ने श्रशुज कर्म ते पाप ए वेज कर्मने, पुजलना पिंड ने, श्रने विज्ञाव जे राग द्वेषादिक मलरूप ने ए वेजनेविषे दृष्टि रहेवाश्री मुक्ति श्राय नहीं, श्रने केवलक्काननुं पद पामिये नहीं ॥ ४६॥

ए वात उपर शिष्य प्रश्न करे हे, ने तेनो उत्तर ग्रुरु दिये हे:-श्रथ शिष्य प्रश्न ग्रुरु उत्तर कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोज शिष्य कहें खामी श्रग्जन किया श्रग्जिक, ग्रुन कि या ग्रुक्त तुम ऐसी क्यों न बरनी ?; ग्रुरु कहें जबलों क्रियाको परिणाम रहे, तबलों चपल जपयोग योग धरनी; थिरता न श्रावे तोलों ग्रुक्त श्रनुत्रों न होइ, याते दोज किया मोष पंथकी कतरनी; बंधकी करेया दोज छहूमें न जली कोज, बाधक विचा रमें निषिद्ध कीनी करनी ॥ ४७॥

श्रर्थः कोई शिष्य पूठे ठे के हे खामी ! तमे एवं वर्णन केम करता नथी के श्र शुज किया जे हिंसादिक ते श्रशुद्ध ठे श्रने शुज किया जे दया दानादिक ते शु द्धि है? त्यारे गुरु उत्तर श्रापेठे के श्रहो शिष्य! ज्यांसुधी कियाना परिणाम रहे ठे त्यां सुधी उपयोगनी धरनी के० देत्री एटखे उपयोगवंत श्रात्मा चंचल रहे ठे. ज्यांसुधी कियामां जपयोग रहे त्यांसुधी श्रात्मानी स्थिरता श्राय नहीं, श्रने श्रात्मानो शुद्ध श्रमुजन होय नहीं, ए जपरश्री ए पुण्य पापनी बेज किया हे ते मोक्तमार्गनी कत रणी समान हे; बंधनी करनारहे एश्री बेज कियामां एक पण जली नश्री. ज्यां मु किमार्गनो बाधक विचारे त्यां बेज किया निषद्ध कीधी है ॥ ४५ ॥

हवे मात्र ज्ञान मोक्तनो मार्ग वे ते कहे वे:- श्रय ज्ञान मोक्त मार्ग यह कयन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— मुकतिके साधककों बाधक करम सब, श्रातमा श्रमा दिको करममांहि बुक्यो है; एते परि कहै जो कि पाप बुरो पुष्य जलो, सोइ महा मूढ मोडमारगसों चुक्यो है; सम्यक् सुजाउ बिये हियेमें प्रगट्यो ज्ञान, उरध उमंगि चढ्यो काहूपे न रुक्योहै; श्रारसीसो उज्वल बनारसी कहत श्रापु, कारन सरूप उहैके कारजकों दुक्यो है ॥ ४० ॥

श्रयं:— जे श्रात्मा मुक्तिनो साधक हे, तेने सर्व कर्म बाधक हे; एथीज श्रनादि कालनो श्रात्मा कर्ममां लुक्यो एटले दबाई रह्यो हे; एम हतां पण जो कोई एवं क हेके, पाप कर्म नहारुं हे, ने पुएय कर्म सारुं हे, तेने महा मूह जाणवो; ने ते मोक्त मार्गथी चुक्यो हे, एम जाणवुं. एवामां कोईने जन्यत्व परिपाक थकी सम्यक् खजा वनी प्राप्ति थइ तेवारे हीयामां ज्ञान प्रगट्युं तो ते उध्वे दशा तरफ हमंगे करीने चाल्यो, पण कोई कर्मथी रोकायो रह्यो नही. ते श्रारीसानी पहे हज्वल थईने निज ज्ञानोपयोगीपणे कारण स्वरूपी थईने पोताना मुक्तिरूप कार्यने पोतेज हुके हे, एवं बनारसी दास करें हे ॥ ४०॥

हवे ज्ञाननो तथा कर्मनो विवरो बतावेठे:— अथ ज्ञान तथा कर्म विवरनः—
॥ सवैया इकतीसाः ॥— जोलों अष्ट कर्मको विनास नाही सरबथा, तोलों अंत
रातमामें धारा दोई वरनी; एक ज्ञानधारा एक ग्रुजाग्रुज कर्मधारा, जुहूकी प्रकृति
न्यारी न्यारी धरनी; ग्यान धारा मोठरूप मोठकी करन हार, दोषकी हरन हार
जो समुद्र तरनी; इतनो विशेष जु करमधारा बंधरूप, पराधीन सकति विवि
ध बंध करनी ॥ ४ए॥

श्रर्थः— ज्यां सुधी श्राठ कर्मनो सर्वथा विनाश थतो नथी त्यांसुधी मुक्ति न होय श्रने लांसुधी श्रंतरात्मा थकी वे धारा वहें हें, तेमां एक ज्ञाननी धारा ने बीजी शु जाशुज कर्मनी धारा ए बंनेनी प्रकृति जुदी जुदी हें, श्रने धरनी के क्षेत्र ते पण जुड़ं जुड़ं हें. एमां एटहुं विशेष हे के जे कर्मधारा हे ते बंधरूप हें; श्रने जमपणाने हीधे एनी शक्ति पराधीनरूपहें श्रने प्रकृतिवंध, स्थितिवंध तथा रसवंध एवा जात जा तना बंधनी करनारी है; श्रने ज्ञानधारा मोक्तस्वरूप है; मोक्तनी करनारी है; ने दोष मा त्रनी हरनारी है श्रने जवसमुद्ध तरवाने तरनी के नाव समान है ॥ ४ए॥ हवे मोक्त कर्ता जे ज्ञान किया एवो जे स्याद्धाद तेनी प्रशंसा करेहे:-श्रथ स्याद्धाद प्रशंसा:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—समुक्तै न ज्ञान कहै करम कियेसों मोक्त, ऐसे जीव विकल मिथ्यातकी गहलमें; ज्ञान पछ गहैं कहै आतमा अबंध सदा, वरते सुछंद तेछ बूके हैं च हलमें; जथाजोग करम करे पें ममता न धरे, रहें सावधान ज्ञान ध्यानकी टहलमें; तेई ज वसागरके छपर ठहें तरे जीव, जिन्हको निवास स्याद्वादके महलमें ॥ ५०॥

श्रयः- कियावादी कहें हे के, "न ज्ञान श्रेय" एनो श्रयं एहे के ज्ञान जा नथी. जेमां संशय उपजे हे, श्रने संशय थया थकी जीव श्रहींनो नहीं ने तहींनो पण नहीं एवो थाय हे, माटे किया कर्म करवाथीज मोक्त हे, एम विकल थयलो जीव मिथ्यात्व नी गहलमां कहें हे. हवे जे ज्ञानवादी सांख्यमती हे ते ज्ञाननोज पक्त प्रहीने रहे हे ने एवं कहें हे वे वंध ने मोक्त प्रकृतिने विषेज हे, पण श्रात्मा तो सदा श्रवंध पणे वर्ते हे; एवी श्रद्धावहें खहंद के पोतानी मरजीमां श्रावे तेम चालेहे, ते उचहल के क दममां बूमेला हे. श्रने जे स्याद्धादी हे ते कोईना विरोधी नथी, तेथी यथायोग्य ए टले गुण हाणा माफक कर्म किया करेहे, पण कर्मने उदय दशामां राखे हे, श्रने म मताने धरता नथी, ज्ञान ध्याननी सेवामां सावधान रहे हे; एवा स्याद्धादी जीव उप र शह रह्या थका जवसागर तरेहे, जेनो निवास स्याद्धाद रूपमेहेलमां हे. ॥ ५०॥ हवे मृहनी तथा विचक्तणनी कियानुं वर्णन करे हे:— श्रथ मृहविचक्तण कियावर्णनं:

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैसे मतवारो कों कहें और करें और, तैसे मूढ प्रानी वि परीतता धरतु है; अग्रुज करम बंध कारन बखाने माने, मुगतिके हेतु ग्रुज रीति आ चरतु है; अंतर सुदृष्टि जई मूढता बिसरि गई, ज्ञानको ज्योत ज्रम तिमिर हरतु है; करनसों जिन्न रहे आतम सरूप गहे, अनुजो आरंजि रस कोंतुक करतु है. ॥ ५१॥

श्रर्थः — जेम कोई मतवारो पुरुष कहे कई श्रने करे कई तेम मृढ प्राणी जलटोज जाव धारे हे, एटले श्रश्चज कर्मने बंधनुं कारण समजे श्रने मुक्तिनो हेतु श्रुज रीत के॰ श्रुज क्रियाने श्राचरेहे. हवे झानीने श्रंतर सुदृष्टि थई तेथी मृढता मटी गई ने झान नो उद्योत थयो; तेणे करीने जमरूप तिमिरनो नाश थयो, त्यारे मुक्तिनुं कारण जे श्रुज क्रिया हे तेथी ते झानी जिन्न रहे, ममतान धरे, श्रने श्रात्मानुंज स्वरूप ग्रही श्रात्माना श्रमुजवना श्रारंजना रसनुं कोतुक करे हे ॥ ५१॥

॥ इति श्री समयसार नाटकको पुष्य पाप एकत्वी कथन चतुर्थ द्वार संपूर्णः॥

॥ दोहराः॥-पुन्य पापकी एकता, बरनी श्रगम श्रनुप; श्रव श्राश्रव श्रधिकार कर्तुं, कहों श्रध्यातम रूप. ॥ ५२ ॥

श्रर्थः— पाप पुण्यनी एकता तो श्रगम वे श्रने श्रनुपम वे तेनुं वर्णन कीधुं, हवे कईंक श्राश्रवनो श्रधिकार वे ते कहुं श्रुं श्रने श्रध्यात्मनुं स्वरूप कहुं ॥ ५१ ॥ श्राश्रव सुजटनो नाश करनार कान सुजटने नमस्कार करे वे:—श्रथकान वस वर्णनं:-

॥ संवैका इकतीसाः॥— जे जे जगवासी जीव यावर जंगम रूप, ते ते निज वस करी राखे बख तोरिक; महा अनिमानी ऐसो आश्रव अगाध जोधो, रोपि रनयंज ठा ढो जयो मूठ मोरिक; आयो तिहि यानक अचानक परमधाम, ज्ञान नाम सुजट स-वायो बख फोरिके; आश्रव पठायों रनयंज तोरि डायों ताहि, निरखी बनारसी नम्त त कर जोरिके. ॥ ५३॥

श्रर्थः— जे जे थावर जंगमरूप जगत्वासी जीव हे, तेना सहज बख ने तोमीने ते ते जीवोने श्राश्रव जोधाए पोताने वश करी राख्याहे, एवो महा श्रजिमानी श्राश्रवरूपी श्रगाध जोड़ो जगत्मां रहे हे, ते रण्यंत्र रोपीने मूह मरोमीने हाहो थयो हे; ते एम कहे हे के, जगत्मां मने जीते एवो कोइ नथी ते स्थक्षे श्रचानक परम धाम के श्रित तेजस्वी ज्ञान नामनो सुजट छपला श्राश्रव जोडानो प्रतिपद्दी ते सवायो बल फोरवीने लडवाने श्राह्यो; तेणे श्राश्रव सुजटने पहाड्यो श्रने तेनो रण्यंत्र तोमी नाख्यो। एवा ज्ञान सुजटने निरलीने बनारसीदास हाथ जोडी नमस्कार करेहे॥ ए३॥

हवे प्रव्यरूपी आश्रव अने जावरूपी आश्रवनां लक्षण कहेवेः— अने सम्यग् ज्ञा-ननुं लक्षण पण कहेवेः— अथ दिविध आश्रव लवन तथा ज्ञान लवन वर्णनंः—

॥ सवैया तेइसाः॥-दर्वित श्राश्रव सो किह्ये जिहं पुजल जीव प्रदेस गरासै; जावित श्राश्रव सो किहए जिहें राग विरोध विमोह विकासै; सम्यक्पद्धति सो किह्ये, जिहें दर्वित जावित श्राश्रव नासै; ज्ञानकला प्रगटै तिहि थानक,श्रंतर् बाहरि श्रोरन जासे॥५४॥

श्रर्थः—ज्यां पुजल इव्य हे ते जीवना सर्व प्रदेशने यासे हे के गली जायहे, ते इवित श्राश्रव जाणीये श्रने ज्यां इवित श्राश्रवना प्रसंग थकी श्रात्माने विषे राग हेष विमोहनो विकाश थाय त्यां जावित श्राश्रव कहीये, श्रने ज्यां श्रात्माने विषे स म्यक् पद्धति के लम्यक् स्वरूप किहये त्यां तेने इवित श्राश्रव श्रने जावित श्रा श्रवनो नाश थाय, एटले सम्यक् पद्धतिनेविषे ज्ञान कला प्रगटे, तेशी श्रंतर्जावाश्रव मां बाहिर इव्याश्रवमां बीजुं जासे नहीं, सम्यक्ज दीठामां श्रावे॥ ५४॥

हवे सम्यक् स्वरूपनो धणी जे ज्ञाता तेनुं बक्तण कहेते. श्रथ ज्ञाता बक्तणं:--

॥ चोपाई ढंदः॥—जो दरबाश्रवरूप न होई, जह जावाश्रव जाव न कोई;जाकी दशा ज्ञानमय खिहेचे, सो ज्ञातार निराश्रव किहेचे॥ ५५॥

श्रर्थः— जे द्रव्याश्रवना स्वरूपमां होय नही, श्रने ज्यां जावाश्रवनो पण जाव कोई नश्री, श्रने जेनी दशा ज्ञानमय होय, तेज जीव ज्ञानी श्रने श्राश्रवरहित कहिये. हवे ज्ञातानी समर्थाईश्री निराश्रवपणुं देखाने हेः—श्रथज्ञाताकोसमर्थपणोवर्णनंः—

॥ संवैया इकतीसाः॥— जेते मन गोचर प्रगट बुद्धि पूरवक, तिन परिनामनकी म मता हरतु है; मनसा श्रगोचर श्रबुद्धि पूरवक जाव, तिन्हिक विनासवेको उद्यम ध रतु है; याहि जांति परपरिनतिको पतन करे, मोखको जतन करे जोजल तरतु है; ए से ज्ञानवंत ते निराश्रव कहावे सदा, जिन्हको सुजस सुविचक्कण करतु है ॥ ५६॥ श्रर्थः— जेटला परिणाम प्रगट मनगोचर हे, एटला जिन परिणामने मनमां संजा रेहे, जाणे हे, श्रने बुद्धिपूर्वक के० पोतानी श्रहं बुद्धिवडे जे श्रग्रुद्ध परिणाम उपजेहे, ते परिणामनी ममता हांडे हे; श्रने जे जाव मनश्री श्रगोचर के० जेनुं स्वरूप मनवडे देखाय नही, श्रने श्रवुद्धि पूर्वक के० जेने बुद्धिनो प्रचार लागे नही, एवा श्रनागत कालना जे श्रग्रुद्ध परिणाम, तेनो विनाश करवाने ज्यम करे हे, ए रीते परपरिनति के० पर वस्तुनो जे परिणाम जे श्रतीत कालमां श्रयो हे, वर्त्तमान कालमां हे, श्रनाग त कालमां श्रशे, तेनुं पतन करे श्रने मोक्स के० तेशी हुटबुं तेनुं जतन करे, ते जव सागरश्री तरे, एवा जे ज्ञानवान् प्राणी हे तेतो सदा निराश्रव कहेनांवाय, जे सुजश ने स्तुति ते पंडित पुरुषो गायहे॥ ४६॥

इंग्नीने निराश्रव कह्या तेजपर शिष्य प्रश्न करेंग्रे:- श्रथ शिष्य प्रश्न कथन:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— ज्यों जगमें विचरे मितमंद सुढंद सदा वरते बुध तैसे; चं चल चित्त श्रसंजत बैन, सरीर सनेह जथावत जैसे; जोग सजोग परिग्रह संग्रह मोह विलास करे जाह ऐसे, पूछत शिष्य श्राचारजसों यह, सम्यकवंत निराश्रव कैसे?॥५७॥

श्रर्थः— जेम मितमंद के॰ श्रङ्कानी जन जगत्मां स्ववंद के॰ मरजी मुजब वर्ते, तेम पंक्ति पण सदा तेवी रीते वर्ते, ते श्रावी रीते चंचल चित्तवाला रहे, श्रमंजत बेन के॰ विचारिवना वचन बोले, श्रने शरीर स्नेहने प्रवर्तावे, श्रने श्रङ्कानीनी माफ क जोगसंयोग राखे, परिग्रहनो संग्रह करे, श्रने ज्ञान श्रवस्थामां मोहविलास एवो ज करे, ए रीते श्रङ्कानीनी श्रने ज्ञानीनी एक सरखी रीति जोईने शिष्य श्राचार्यने पुवेबे के, एने सम्यक्तववंत निराश्रव केम किहये ?॥ ५७॥

हवे ए प्रश्ननुं उत्तर गुरु छापेहे:- श्रथ गुरु उत्तर कथनः॥ सवैया इकतीसाः॥- पूरव श्रवस्था जे करमबंध कीने श्रव, तेई उदे श्राई नाना

नांति रस देत हैं; केई ग्रुन शाता केइ श्रग्रुन श्रशातारूप, डुहुसों न राग न विरोध सम चेत हैं; यथा योग किया करे फलकी न इठा धरे, जीवन मुगतिको बिरुद गहिसेत हैं; यातें ज्ञानवंतकों न श्राश्रव कहत कोड, मुद्धतासों न्यारे नये सुद्धता समेतहें.॥ ५०॥

श्रर्थः—पूर्वकालमां श्रज्ञान श्रवस्थाने विषे जे जे कर्मबंध की घेलां होय, तेज कमों वर्त्तमान कालमां उदय श्रावीने नाना प्रकारनो रस श्रापे हे. तेमां केटलां एक शुज कर्म ते शातारूप हे, श्राने केटलां एक श्रश्जात कर्म श्रशातारूप हे; एवां बें ज जात नां कर्मने विषे ज्ञानीने राग श्राने विरोध नश्री, एश्री ज्ञानी समिचत्त हे. श्राने यथायो ग्य के उदयमाफक किया करे, पण फलनी इन्ना राखे नही; ने जीवताज मुक्त श्रया हो, तेथी जीवनमुक्तिनुं बिरुद धारे हे, ए रीते ज्ञानवंत मनुष्यने कोई श्राश्रव कहेतुं नश्री. ते मूहताश्री न्यारो श्रयो श्राने श्रुद्धता समेत हे ॥ ५०॥

हवे राग, देष, मोह अने ज्ञाननां बक्तण कहे छे:-अथ राग, देष, मोह, ज्ञान बक्तण:-

॥ दोहराः॥– जो हितजाव सु राग है, श्रनहितजाव विरोधः चामकजाव विमोह है, निर्मल जाव सुबोध ॥ ५ए॥

श्रर्थः—जे हितनाव वे ते राग वे श्रने श्रनहितनाव ते विरोध वे; श्रने न्रामकना व वे तेने विमोह कहिये, श्रने निर्मखनाव ते बोध एटखे ज्ञान कहिये ॥ ५ए॥ हवे राग देषनुं खरूप कहेवेः— श्रय राग देष कथनः—

॥ दोहाः॥– राग विरोध विमोह मल, एइ श्राश्रव मूल; एइ कर्म बढाइके, करें धरमकी जूल ॥ ६०॥

श्रर्थः— राग, द्वेष ने विमोह जे वे ते श्रात्माने मल वे, श्रने एज दोष श्राश्रवनां मूल वे. श्रने एज राग देष श्रने मोह वे. ते कर्मने वधारीने धर्मने जुलावी दिएवे॥६०॥ हवे ज्ञाताने निराश्रव कहेवेः— श्रय ज्ञातानिराश्रव कथनः—

॥ दोहाः॥- जहां न रागादिक दसा, सो सम्यक् परिनामः यातें सम्यकवंतको, कह्यो निराश्रव नाम ॥ ६१॥

श्रर्थः-ज्यां राग, द्वेष, मोइनी दशा न मक्षे तेने सम्यक् परिणाम कहिये, ए ज परथी सम्यक्तववंत पुरुषने निराश्रवी नाम श्राप्युं ॥ ६१ ॥

इवे ज्ञाता जे वे ते निराश्रवणपणामां विलास करेवे:- श्रथ ज्ञाता कथन:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जे कोई निकट जव्य रासी जगवासी जीव, मिथ्या मदजेद इन जाव परिनये हैं; जिन्हकी सुदिष्टिमें न राग दोष मोह कहूं, विमल विलोकनि में तीनो जीति लये हैं; तजि परमाद घट सोधि जे निरोधि जोग, शुद्ध उपयोगकी

दशामें मिलिगये हैं; तेई बंध पद्धति विडारि पर संग मारि आधुमें मगन व्हैंके आ परूप नये हैं ॥ ६२ ॥

श्रर्थः - जे कोई जव्य राशिमां जगत्वासी जीव हे, ते जव्यत्व परिपाकने खीधे नि कट के॰ पासे थया; ने मिथ्यामितने जेदीने पोतानुं स्वरूप जे ज्ञान जाव तेने विषे परिणमी रहे हे; जेनी ज्ञानरूपी दृष्टिमां राग, देवने मोह कंइ पामिये नही; अने नि मेल निज स्वजावनी विलोकतामां राग, देवने, मोह ए त्रणेने जीती लीधा है; अने पांचे प्रमाद तजी पोताना शरीरने साधीने मन, वचन अने कायाने शैक्षेशीकरणमां निरोध करीने शुद्ध उपयोग दशा जे केवल दशा तेने विषे मली गया, तेवा झानी बंधनो मार्ग विडारी स्त्रने परवस्तुनो संग होमीने स्नात्माने विषे मग्न सई स्नापरूपें यया ॥६१॥

शिष्य पूर्वेर्वे के, एम ज्ञातानेविषे निराश्रवपणुं यशे तो श्रायुष्यपर्यंत ज्ञाता निरा श्रवी थरो. गुरु उत्तर श्रापेछे के, ज्ञातापणुं तो उपरामजावने क्योपराम जाववडे चं

चल हे ते कहेहे:- अथ उपशमी क्योपशमी व्यवस्था कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः॥- जेते जीव पंिनत खयोपरामी जपरामी, तिन्हकी श्रवस्था ज्यों बुहारकी संडासी है; बिन श्रागमांहि बिन पानिमांहि तैसे एव, बिनमें मिथ्या त िनु ज्ञान कला जासी है; जोलों ज्ञान रहे तोलो सिथिल चरन मोह, जैसे कीले नागकी संगति गति नासी है; आवत मिथ्यात तब नानारूप बंध करे, जो जकी से ना गकी प्रकृति परगासी है ॥ ६३ ॥

श्रर्थ:- मिथ्यात्वनी गांठ जेद कीधा पठी जे मिथ्यात्वनो श्रंश उदय श्रावे हे ते जेनो खपी जाय अने मिथ्यात्वपुंज उपशम्यो रहे, ते जीव क्योपशमी कहिये अने जेने द्यंतर्मुहूर्त्तलगी उपशम्योज रहे तेने उपशमी कहिये एवा बेंड जाव ते जे जीव पंडित वे तेनी अवस्था ते खुहार्नीसाण्सी समान वे; जेम साण्सी घडीमां लोहने ग्रहण करी श्रागमां होयहे, ने घमीमां तेहज साणसी लोखंडने ठंको करवा सारु पाणीनेविषे होयछे; तेम ए क्योपशमी अने उपशमी जीव क्ण एकमां मिथ्यात्व जावमां आवे ने क्णानेविषे ज्ञानकलाना प्रकाशमां रहे हे एवी श्रवस्थानेविषे ज्यांसुधी ज्ञानकला रहेते, त्यांसुधी चारित्र मोहनीयनी पचीस प्रक्र ति शिथिख के जिल्ली थई रहे हे; जेम मंत्रनी जमीए करीने सर्पनी शक्ति-गति शिथिल थई जायहे, तेम ए पण जाणवुं. हवे ए जीवने फरी मिथ्यात्व उदय आ वेढे त्यारे तो नाना प्रकारना कर्मबंध करेढे; जेम नागनी जकीलनी करवाथी ना गनी पोतानी प्रकृति फरीथी प्रगटे ते रीते जाणवुं ॥ ६३ ॥

इवे ज्ञानना गुद्धपणानी प्रशंसा कहेते:-श्रथ गुद्धनय प्रशंसा:-

॥ दोहाः॥-यह निचोर या प्रंथको, कहै परम रस पोषः तजे शुद्धनय बंध है, गहै शुद्धनय मोष ॥ ६४ ॥

श्रर्थः-श्रा समयसारग्रंथनुं रहस्य एज वे श्रने एज उत्कृष्ट रसनो पोषकवे के जे ग्रुक्तानी नय रीति वांडी तो वंध वे श्रने ग्रुक्तानी नयरीति ग्रही तो मोक्त वे॥६४॥ हवे वे नयनेविषे जीवनो विखास कही बतावे वेः-श्रथ जीव विखास वर्ननंः-

॥ संवैया इकतीसाः॥—करमके चक्रमें फिरत जगवासी जीव, व्हें रह्यो बहिर मु ख व्यापत विषमता; श्रंतर् सुमित श्राई विमल वडाई पाई, पुजलसों प्रीति टूटी बूटी माया ममता; सुद्ध ने निवास कीन्हो श्रमुजों श्रज्यास लीन्हो, ज्रमजाव ग्रं किदीनो जिनो चित्त समता, श्रनादि श्रमंत श्रविकलप श्रचल ऐसो, पद श्रवलंबी श्रवलोके राम रमता ॥ ६५ ॥

श्रर्थः—चौदराजलोकमां कर्मनुं चक्र के॰ कटक फरी रह्युं हे, तेमां जगत्वासी जीव पण फरी रह्यो हे, श्रने ए फरवामां जीव विषमताए युक्त थयो थको क्यारे इष्ट संयोगी ने क्यारे श्रनिष्ट संयोगी थई ने तेमां विह मुंख थई रह्यो, एटले बाह्य विषय जोगनोज प्राहक थयो, श्रने श्रंतर्हिष्टथकी श्रात्मा न जाएयो, एटलामां श्रंतर्नेविषे सुमति छपजी, तेणे करीने पोतानी निर्मल प्रजुताने पाम्यो, त्यारे परव स्तु जे पुजल तेनी प्रीति तूटी। एटला कालसुधी पुजलनी माया ममता जे नहीं छटी हती ते छटी। जेम शुक्तनयवहे श्रात्मानुं स्वरूप कह्युं, तेवा शुक्तनयमां पोते नि वास कीधो, श्रने श्रात्मस्वरूपमां छपयोग राखीने श्रनुजवनो श्रन्यास लीधो, एथी ज्रमजावनो त्याग थयो, श्रने मन जे हे ते समाधिनेविषे लीन थयुं; त्यारथी श्रनादि श्रनंत कालसुधी जे स्वरूपमां कंइ बीजा विकट्प न पामिये एवं पोतानुं श्रचल पद श्रवलंबीने पोतानुं जे रमतारामपणु हे तेने श्रवलोके॥ ६५॥

हवे श्रात्मानुं गुद्धपणु सम्यग् दर्शन हे, तेनी प्रशंसा करे हे:-श्रथसम्यक्त्वप्रशंसा:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— जाके परगासमें न दीसे राग दोष मोह, आश्रव मिटत न हि वंधको तरस है; तिहुं काल जामें प्रतिबिंबित ख्यनंतरूप, ख्रापु हु अनंत सत्ता नं ततें सरस है; जावश्रुत ज्ञान परवान जो विचारि वस्तु, ख्रनुजो करे जहां न वानीको परस है; ख्रतुल ख्रलंग ख्रविचल ख्रविनासी धाम, चिदानंद नाम ए सो सम्यक दरस है

श्रर्थः—जे शुद्ध श्रात्माना प्रकाशमां राग, द्वेष, मोह न देखाय, श्रने श्राश्रव न होय तेमां बंधनो तरस के॰ लागवुं ते पण न होय, श्रने जे शुद्ध श्रात्माना प्रकाशमां त्रणे काले श्रनंतरूप प्रतिबिंबित याय हे; श्रने निजस्वरूप पण श्रनंत हे, श्रने सत्तानंत मां सरस हे, ते सत्तास्वरूपी श्रनंत पदार्थ हे, तेथी सरस हे, एटले जेना श्रनंतपर्याय सर्व तेज धर्म कहे, श्रने जावश्रुत ज्ञानने प्रमाण करी वस्तुनो विचार श्रनुजव करे श्रने ज्यां वाणीनो स्पर्श नही, एटखे जे वचन गोचर नथी, श्रनक्तररूपनो श्रनुजव पोते करे, ए संयोगी गुणस्थानकनी दशा हे. जेनी तुलना नथी एटखे श्रतुल; वली जेनी खंडना नथी माटे श्रखंड, एवं श्रचल ने श्रविनाशी धाम के० तेजोमय तेज चिदानंद स्वरूप हे; एवं इश्वररूप सम्यग् दर्शननुं स्वरूप कहिये॥ ६६॥

॥ इति श्री नाटक समयसारिवषे बालाबोधरूप आश्रवद्वार पंचम संपूर्णः ॥ ॥ दोहाः॥– अधिकार आश्रवको यह, कह्यो यथावत् जेम; श्रव संवर वरनन करों, सुनौ जविक धरि प्रेम. ॥ ६७ ॥

श्रर्थः ए रीते श्राश्रवनो श्रधिकार कह्यो; हवे संवरतत्त्वनुं वर्णन करुंढुं; श्रहो ! जविक के॰ जव्य प्राणीर्ज! प्रेम धरीने ते सांजलो.॥ ६७॥

हवे संवरनुं श्रादि ज्ञानवस्तु तेने नमस्कार करेठे:- श्रथ ज्ञान वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— श्रातमको श्रहित श्रध्यातमरहित ऐसो, श्राश्रव महातम श्रखंम श्रंडवत है; ताको विसतार गिलिबेकों परगट जयो, ब्रहमंमको विकासी ब्रह मंमवत है; जामें सबरूप जो सबमें सबरूपसो पें सबनि सों श्रलिप्त श्रकाशखंमवत है; सो है ज्ञान जानु शुद्ध संबरको जेष धरे, ताकी रुचि रेखको श्रमारे दंडवत है॥६०॥

श्रर्थः— श्रात्मानुं श्रहित करता श्रने श्रध्यात्मस्कूपथी रहित एवं श्राश्रवरूप म हातम के महा श्रंधकार श्रखंमपणे श्रंडवत के सर्व लोकने ढांकी रह्यों हो, तेनो विस्तार गलवाने जे ज्ञानसूर्य प्रगट थयों ते ब्रह्मांड जेवों सर्व लोकालोकने विकाश नो करनारों थयों, श्रने ब्रह्मांडनुं मंडन जेथकी थाय हे,श्रने जेने विषे सर्वरूप जासे हे श्रने जे सर्वरूपे सर्वमां पामिये हियें श्रने जे सर्व मूर्तिक वस्तुथी श्राकाशखंडनी परे श्रविप्त हे; ते ज्ञानरूपी सूर्य तथा जे शुद्ध संवरनो जेष धरी रह्या हे; तेनी रुचि रेखाने एटले तेना हदयने श्रमारों दंमवत् के नमस्कार हे ॥ ६०॥

इवे जम चेतनना जेद ज्ञान थकीज संवररूपी परमात्माने जेखखाय हे, ते सम जावे हे:- श्रथ जेदज्ञान महिमा कथन:-

॥ सवैया तेइसाः॥-ग्रुक्ष सुढेद श्रजेद श्रवाधित, जेद विज्ञान सु तीवन श्रारा; श्रं तर जेद सुजाव विजाव, करे जम चेतनरूप छुफारा; सो जिन्के वरमें वपज्यो न रुचै तिन्हको परसंग सहारा; श्रातमको श्रवुजौ करि ते हरखे परखे परमातम धाराः॥६ए॥

श्रर्थः-शुद्धपणे स्ववेद के॰ पोतपोताना न्यारा स्वरूपने बतावनार,श्रजेद के॰ एक स्वरूप श्रवाधित एटले कोई प्रमाणांतरे श्रखंकित एवं जेदज्ञान ते ती इण सुलाख वे, ते सुलाखश्री श्रंतरात्मामां जेदन करीने स्वजाव श्रने विजावने जुदा जुदा करे, ने ज

डरूप तथा चेतनरूपने छफार के॰ न्यारा करी बतावे, एवं जेदक्कान जेना क्रदयनेविषे उपज्युं हे, तेज जीवने परवस्तुनो संग ते सहारा के॰ रुचे नही. श्रने तेज जीव पो ताना खरूपनो श्रनुजव करी यथार्थपणे श्रंतरात्मानेविषे जेपरमात्मानी धाराहे तेनेपारखे.

हवे जोदिवज्ञान जे हे, ते सम्यग् ज्ञान हे, तेनी समर्थाइ यकी स्वरूपनी प्राप्ति थाय हे; ते कहेहे:— श्रथ सम्यक्त सामर्थ्य कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥- जो कबहु यह जीव पदारथ, श्रोसर पाइ मिथ्यात मिटावै; स म्यक धार प्रवाह वहे गुन, ज्ञान उदे मुख ऊरध धावै; तो श्रजिश्रंतर दर्वित जावित कर्म किलेश प्रवेश न पावै; श्रातम साधि श्रध्यातमको पथ पूरण टहे परब्रह्मकहावै॥७०॥

श्रर्थः— जो कोई श्रा जीव पदार्थ हे ते यथाप्रवृत्ति करण्रूप श्रवसर पामीने मि ध्यात्वश्रं घे जेदीने मिध्यात्वने मिटावे; शुद्ध सम्यक् श्रने स्वरूप जलधारानो प्रवाह वहे श्रने ज्ञानग्रणना हदय वहे ऊर्ध्व मुख धईने मुक्ति सन्मुख दोके, त्यारे श्रज्यंतर जे प्रवित कर्म श्रने जावित कर्म तेना क्षेशनो प्रवेश ते न धायः जे प्रकृति प्रदेशरूप कर्म ते प्रवित कर्म श्रने राग देषादिक ते जावित कर्म ए बंने प्रवेश नही करी शके श्रने श्रध्यात्मना पंथ सेखीमां श्रावीने श्रात्माने साधीने पोताना रूपमां पूर्ण धईने परब्रह्म कहेवाय. ॥ ७०॥

हवे संवरतं कारण सम्यग्दृष्टिवे, तेनो महिमा कहे वे:-श्रथ सम्यग् दृष्टि महिमा:॥ सवैया तेइसाः॥-तेद मिथ्यात सु वेद महारस, तेद विक्वान कला जिन पाई; जो
श्रपनी महिमा श्रवधारत, त्याग करे उरसों ज पराई; उद्धतरीति वसे जिनके घट, हो
तु निरंतर ज्योति सवाई; ते मतिमान सुवर्ण समान लगे तिनकों न शुनाशुनकाई॥९१॥

श्रर्थः—मिथ्यात्वयंथि जेदीने तथा उपरामरूप महारस वेदीने जे बुद्धिवंते जेद वि ज्ञाननी कला पामी हो, श्रने जे ए जेदिवज्ञान वमे पोताना स्वरूपनी प्राप्ति करीने पोताना ज्ञान, दर्शन चारित्ररूप महिमाने श्रवधारे, उर के हैया थकी पराई सोज के सामयी तेनो त्याग करे श्रने जेना घटमां उद्धतरीति के देशविरति तथा सर्व विरतिनी रीत फुरी श्रने निरंतर तप थकी जेनी सवाई ज्योति थाय हे, तेने बुद्धिमा न कहिये, ते सुवर्णसमान हे तेमने शुजाशुज कर्मरूप काट लागी शकतो नथी ॥११॥ हवे संवरनुं मूल जेद विज्ञान हे; ते मोक्तनुं कारण कही समजावेहे:—

श्रय जेदकान महिमा कथनः-

॥श्रिमिल्ल वंदः॥-नेदिक्षान संवरिनदान निरदोष है; संवरसो निरजरा श्रानुक्रम मोष है; नेदिक्षान शिवमूल जगतमिह मानिये, यदिष हेय है तदिष उपादेय जानिये॥ ११॥ श्रियः- नेदिक्षान जे वे ते निर्दोष संवरतुं निदान केण मूलकारण वे श्राने निर्जरा नुं कारण संवर वे श्वने निर्जरा जे वे ते मोक्तनुं कारण वे. ए श्वनुक्रम प्रमाणे मोक्तनुं का रण परंपराथी जेदिवज्ञानज वे. श्वगर जो शुद्ध स्वरूपनी श्वपेक्ताने खीधे जेदज्ञान खाग जोग वे, तो पण नयोनुं जपादेय, ते श्वादरवा जोग्य जाणिये.॥ ११॥

हवे स्वरूपनी प्राप्ति थया पठी जेदङ्गाननुं हेयपणुं देखाडेठेः-स्वरूप कथनः-

॥ दोहाः॥— जेदकान तबसों जलो, जबलों मुक्ति न होयः परम ज्योति परगट जहां, तहां विकटप न कोय ॥ ७३ ॥

श्चर्यः- जेदज्ञान त्यांसुधी ज्ञांहे, के ज्यांसुधी मुक्ति यई नथी. ज्यां परम ज्योति प्रग ट याय त्यां विकल्प कोई रहे नहीं, तो जेदज्ञान केम करीने रही शके ?॥ ७३॥ जेदज्ञान मुक्तिनो जपाय हे ते कहेहे:- श्रथ जेदज्ञानमहिमा कथनः-

॥ चोपाईः॥- जेदकान संवर जिन्हि पायो, सो चेतन शिवरूप कहायो; जेदकान जिनके घट नांही, ते जमजीव बंधे घटमांही ॥ ७४ ॥

श्रर्थः- जे जीवने नेदक्षानरूप संवरनी प्राप्ति यह, तेज चेतन शिवरूप किहयें; जेना हृदयनेविषे नेदक्षान नथी, ते मूर्ख घट पिंमनेविषे बंधायलो रहेते. ॥ ५४॥ हवे नेदिवक्षानवहे श्रात्मानो महिमा वधेते ते कहेते:-श्रथ नेदक्षानको महात्म्यः-

॥ दोहराः॥— जेदक्कान साबू जयो, समरस निर्मेख नीर; धोबी छांतर छातमा, धोवै नीज गुन चीर.॥ ७५॥

श्रर्थः- नेदज्ञान जे वे ते साबुरूप जाणवुं; श्रने उपशम रस ते निर्मख पाणी वे ने श्रंतर् श्रात्माने धोबी मानवो; ते धोबी पोताना गुणरूप वस्त्रने धुवेवे ॥ ७५ ॥ इवे नेदविज्ञाननी जे किया वे ते कहेवेः-श्रथ नेदज्ञानकी कर्त्तव्यता महात्म्यः--

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जैसे रजसोधा रज सोधिके दरव काढे, पावक कनक काढी दाहत जपलकों, पंकके गरजमे ज्यो मारिये कतक फल, नीर करे जज्वल नितारिडारे मलको; दिधको मथैया मिथ काढे जैसे माखनको, राजहंस जैसे द्रूध पीवे त्यागि ज लको; तैसे कानवंत जेदकानकी सकति साधि, वेदे निज संपति जठेदे परदलको॥७६॥

श्रर्थः — जेम कोइ रज सोधा के॰ जोनारो रजने सोधीने एटले सोना रूपा प्रमुख इव्यने काढवाने पावक के॰ श्रियाने लगाडे, ने सोनुं काढीलइ पथरा धूल वगेरेने वाली नाखेठे वली जेम कतकफलने पंकना गर्जनेविषे नाखीये तो ते फल जलने में लथी जूड़ं करेठे, वली जेम दिधनो मथनहार दिधनुं मथन करी मालणने जूड़ं करेठे ने राजहंस पाणी इध जेगां होय तेमांथी मात्र इध पीइ जायठे, पाणीने जुड़ं करे हे; तेम ज्ञानवंत प्राणी जेदविज्ञाननी शक्ति साधीने पोतानी ज्ञानसंपत्तिने वेदे श्रने परदल के॰ पुजलनुं कटक जे राग देषादिक तेने कापी नाखेठे ॥ ७६॥

श्रय जेदज्ञान मोक्तमूल यह कथनः--

॥ उप्पय उंदः॥— प्रगट जेद विज्ञान, श्रापगुण परंगुणजानै; परपरिनति परि त्यागि ग्रुक्त श्रमुजव थिति ठानै; करि श्रमुजव श्रज्यास, सहज संवर परगासे, श्राश्रव द्वार निरोक्त, कर्म घनतिमिर विनासे; उय करिविजाव समजाव जिज्ञ, निरविकल्पनिज पद गहै; निर्मेख विग्रुक्त सासुत सुथिर, परम श्रतीं द्विय सुख खहै. ॥ ९९ ॥

श्रर्थः नेद इान जे वे ते प्रगटपणे पोताना तेम पारका ग्रणने जाणेवे, तेथी पर वस्तुमां जे परिणमन वे तेनुं झान करे, पोताना शुद्ध श्रनुजवनो ठराव राखे, ने ते श्रनुजवनो श्रन्यास करीने सहज संकरना रूपनो प्रकाश करे, श्राश्रव द्वारनो निरोध करीने कर्मरूप मेघ श्रंधकारनो नाश करे; श्रने विजाव के मोह दशानो इत्य करीने समजाव के समाधिने जजे, तेणे करीने ज्यां कांई विकल्प नथी एवं पोतानं निर्विकल्प पद तेने पामे, एटले जे सुखनेविषे मल नथी ए जपरथी ते विशुद्ध श्रनंत कालसुधी एकरूप तेथी शाश्रव स्थिर एवं श्रतीं द्विय के इंद्रियगोचर नही एवं सुख पामे

॥ इति श्री समयसारनाटकको बालाबोधरूप संवर द्वार वठो संपूर्णः॥

॥ दोहाः-बरनी संवरकी दसा, जथा जुगति परमान; मुक्ति वितरनी निर्जरा, सु नहु जविक धरि कान ॥ ७०॥

अर्थः—संवररूपनी दशा कही ते युक्ति तथा प्रमाणे करी कही है; हवे मुक्तिनी वितरणी के ज्ञापनारी एवी जे निर्जरा है तेनुं वर्णन करु हुं:— ते अहो! जब्य खोको तमे कान दईने शांजखो. ॥ ७०॥

हवे निर्जरानुं केवुं खरूप हे ते कहेहे:- श्रय निर्जराखरूप कथन:-

॥ चौपाई:॥-जो संवर पद पाइ श्रनंदे; जो पूरव कृत कर्म निकंदे; जो श्रफंद हहै बहुरि न फंदे; सो निरजरा बनारिस बंदे.॥ ७ए॥

श्रियः—पोतानुं जे शुद्ध स्वरूप राखवुं तेनुं नाम संवर किहये; तेनुं पद पामीने संवर श्रानंद करे; श्राने पूर्व कालनेविषे जे कर्म कीधांग्ने, तेने जमश्री जखेमी नाखे; श्राने जे पूर्व कर्मना फंद ते श्राकी बूटीने पानु ते फंदमां सपडाय नहीं तेनुं नाम श्रात्मानी निर्जरा किहये. ते निर्जराने बनारसी दास वंदन करेग्ने ॥ ९ए॥

निर्जरानुं कारण सम्यक्तव हे, माटे सम्यक्तवनो महिमा वखाणे हे:-

श्रय सम्यक्त्व महिमा कथनः-

॥ दोहाः॥-महिमा सम्यक् ज्ञानकी, श्ररु विराग बल जोइ; क्रिया करत फल छं जते, करमबंध नहि होइ.॥ ए०॥

श्चर्यः-जे कर्म दुटे तेनुं फरीने बंधन थइ शके नही, ए सम्यग् ज्ञाननो महिमा

हे. वही ए सम्यम्कान साथे वैराग बहनो जोग हे, तेथी ग्रुनाग्रुन किया करता थका ने तेनुं फल जोगता थका शृंखलाबंध नवां कर्मनो बंध थतो नथी. ॥७०॥ इवे सम्यक्त्वनी महिमामां किया करतांज कर्मनी निर्जरा थाय हे ते दृष्टांते कहेहे:– ॥ सवैया इकतीसाः॥– जैसे जूप कौतुक सरूप करे नीच कर्म, कौतुकी कहावै

तासों कौन कहैं रंक है; जैसे विजचारिनी विचारे विजिचार वाको, जारहीसों प्रेम जरतासों चित्त वंक है; जैसे धाइ बाबक चुंघाइ करें बाबि पाबि, जाने तांहि छोर को जदिप वाके छंक है; तैसे झानवंत नानाजांति करतूति ठाने, किरियाकों जिन्न माने यातें निकलंक है। ॥ ७१ ॥

पुनः— जैसे निशिवासर कमख रहें पंकिहमें, पंकज कहावें पे न याके ढिग पंक है; जैसे मंत्रवादी विषधरसों गहावें गात, मंत्रकी सकित वाके विना विषडंक है; जैसे जीज गहें चिकनाइ रहें रूख छंग, पानीमें कनक जैसे कांइसो छाटंक है; तैसे ज्ञान वंत नानाजांति करतृति ठाने, किरियाकों जिन्न माने याते निकलंक है। ॥ ७१ ॥

श्रर्थः— जेम कोई जूप के० राजा होय ने ते पोताना कौतुके करीने गमें तेवुं नीच कर्म करे ते किया करवाने खीधे ते कौतुकी कहेवाय पण कोई ते राजाने रंक नहीं कहे; जेम कोई कुखटा व्यिजचारिणी स्त्री होय ते यद्यिप पोताना धणीनी साथे रहे खरी, तोपण धणीनी साथे तेनुं चित्त खुट्ध होतुं नथी; चित्तने विषे तो व्यिजचारनो ज विचार थाय, के जो वखत मखे तो नीकबी जाउं ने यारने मखुं; जेम कोइ धाव होय ने ते पारका बालकने धवरावे, श्रने रमाडे खालन पालन करे, श्रने श्रंक के० पोताना खोलामां खइने बेसे, यद्यिप एवी किया तो करे खरी, पण एम जाणे के श्रा बालक पारकुं हे; तेवीज रीते जे सम्यग् इानी हे ते नाना प्रकारनी शुजाशुज किया राजा श्रेणिक तथा जरत चक्रवर्त्त श्रने बीजा साधुनी माफक करे हे, पण ए किया ने पुजलरूप जाणे हे, पोताना खरूपथी जिन्न माने हे एथी बंधननुं कलंक लागतुं नथी.

एज उपर बीजा दृष्टांत कहें वे के; जेम कमल वे ते रात्र दिवस पंक के कर्दमने विषे रहे वे, तेथकीज उत्पन्न थयुं वे, तेथी पंकज कहें वाय वे; तोपण कमलने पंकनो स्पर्श नथी होतो; जेम कोई गारूडी मंत्रवादी होय ते पोताना गात के शरीरने सर्प पासे पकमावे करमावे, पण ते मंत्रवादीना मंत्रनी शक्तिवडे सर्पनो डंख विषसंजोगर हित होयवे; जेम जिव्हा इंडिय घी दही प्रमुखनी चीकणाई प्रहण करें वे, पण पो ताना श्रंगने ते चिकाशनो क्षेश रहेवा देती नथी, किंतु जूखीज रहे वे; जेम सोनुं पाणीने विषे रहेतां थका काटवालुं थतुं नथी, तेवी रीते झानवंत प्राणी

नाना प्रकारनी किया करें हे, पण कियाने पुजल संयोगवाली जाणी आत्मस्वरूपथी जिल्ला माने हे, तेथीज कर्म बंध कलंकथी जुदो रहे हे ॥ ७२ ॥

हवे विषय जोगवता थका कर्म बंध न थाय एवी ज्ञानवैराग्यनी शक्ति बतावे हेः-श्रथ ज्ञान वैराग शक्ति वर्णनंः-

श्रर्थः— पूर्व संचित कर्म जदय श्राव्याथी तेना संबंधे समकीति जीव विषय जोग जोगवे हे, पण नवां कर्मबंध करतो नथी, ए सम्यगू ज्ञान तथा वैरागनी शक्ति हे॥ ए३॥ इवे जे ज्ञाता होय हे ते सम्यग् ज्ञान श्रने विषयनी श्ररुचि ए वेजने साधेहे, ते कहेहेः— श्रथ ज्ञाताकी व्यवस्था कथनः—

॥ सवैया तेइसाः॥— सम्यकवंत सदा उर श्रंतर, ज्ञान विराग उन्ने गुन धारै; जासु प्रजाव खखै निज खन्नन, जीव श्रजीव दशा निरवारै; श्रातमको श्रनुजो करि उहै थिर, श्रापु तरे श्रह श्रोरनि तारै; साधि सुदर्व खहै शिवसमी सुकर्म उपाधि व्यथा विमडारै.

श्रर्थः— जे समिकती होय ते सदा पोताना श्रंतःकरणनेविषे ज्ञान श्रने वैराग ए वे गुणने धारे जे गुणना प्रजाववडे पोतानुं ज्ञातापणुं बक्तण जोईने जीव श्रजीव दशा एटसे जीव श्रजीवनुं स्वरूप निरवार के० जुड़ं जुड़ं जाणे, ते पठी श्रात्माने यथार्थ पणे वेदीने श्रात्मिक स्वजावमां स्थिरता थइ रहेठे; ते पोते पण तरे श्रनेसत्य जपदे श श्रापी बीजाने पण तारेठे; ए रीते पोताना श्रात्मद्रव्यने साधीने मोक्तसुखने पामे, श्रमे कर्मजपि सहित जे व्यथा तेनुं वमन करेठे॥ ०४॥

हवे विषयनी श्ररुचिविना ज्ञाननुं बल निष्फल हे, श्रने एवा ज्ञानीने एकांत पक्तने विषे रहेवाथी मिथ्या दृष्टि हरावे हे:— श्रथ मिथ्यादृष्टि व्यवस्था कथनः—

॥ संवैया तेइसाः॥— जो नर सम्यक्वंत कहावत, सम्यग् क्ञान कला निह जागीः, श्रातमञ्जंग श्रवंध विचारत, धारत संग कहै हम त्यागीः; त्रेष धेर मुनिराज पटंतरः मोह महानल श्रंतर दागीः; सून्य हिये करतुति करे परि,सो शठ जीव न होइ विरागी.

श्रर्थः— जे मनुष्य पोते सम्यक्तवंत कहेवाय श्रने सम्यग् ज्ञाननी कला न जागी, एटले सम्यग् ज्ञाननी प्राप्ति न श्रई तेशी श्रात्माना श्रंगविषे बंधविचारे नहीं, श्रात्मा श्रवंध हे एम माने; ने तेशी ते श्रज्यंतर संयोग धारे हे वल्ली कोई निश्चय नयनो पक्त लड़ने पोते त्यागी हे एम कहे, मुनिराजनी पहे पटंतर के जेष धरे; पण श्रंतर नेविषे मोहमहानल के मोहरूप श्रक्षि शलगी रही होय; विषय शकी वैरागी न

थयो, तेथी हैया सुन्य थको मुनिराजनी पेठे किया करे, पण ते जीव मूर्खज कहेवा यहे पण वैरागी कहेवाय नही ॥ ७५॥

> हवे जे सर्व किया करता थका पण मृढ कहेवाय हे ते कहे हे:-श्रथ मृढ किया वर्णनं:-

॥संवेया तेइसाः॥ – यंथ रचे चरचे शुज पंथ खखे जगमें व्यवहार सुपत्ताः साधि संतोष अराधि निरंजन, देइ सुसीख न खेइ अदत्ताः नंग धरंग फिरे तिज संग वके सरवंग मुधारस मत्ताः ए करति करे शव पें समुके न अनातम आतम सत्ताः॥७६॥ ध्यान धेर किर इंडिय नियह, वियहसों न गिने निज नत्ताः त्यागि विजूति विजूति मिटै तन जोग गहै जवजोग विरत्ताः मौन रहे खिह मंद कषाय सहै वध बंधन होइ न तत्ताः ए करतित करे सव पे समुके न अनातम आतम सत्ता ॥ ७७॥

श्रर्थः - यंथ रचना करे, जला मार्गनी चरचा करे, जला मार्गने लखे, जगत्मां व्यवहार मार्गमां प्राप्ति थको रहे, संतोषी थईने निरंजनने श्राराधे, लोकोने सारी शिलामण श्रापे, श्रदत्तदान ले नही, परियह संग त्यागीने नंग धरंग फिरे के० दि गंवर थई फरे, श्रने मुधा के० मुग्धपणे पोताना रसमां मातो थको सर्वांगे ठक्यो रहे एवी एवी किया मूर्ल होय ते करे वे पण श्रनातम सत्ता के० श्रात्माथी पृथक जे मो हनी गहलता वे तेने, श्रने श्रात्मसत्ता के० शुद्ध जाणपणानी जे सत्तावे, तेने जुदी जुदी जाणे नही तेमने मूर्ल कहेवा ॥ ७६ ॥

वली मूहनी किया केहें हे के, ध्यान धरे, इंडिय दमन करे, वियह करे हे ते शरीर नी साथे पोताना ख्रात्मानो संबंध गणे नहीं. विजूति के संपत्तिनो त्याग करी विजूति के जस्म शरीर उपर लगाडे, योग मार्ग यहे, ख्रने संसारना जोगधी विरक्त रहे, मौनपणे रहे, कषायनुं मंदपणुं समजे, वध बंधन सहतो धको पण तातो नहीं खाय, क्रोधादिक न करे, एवी किया शह मूह होय ते करे हे, पण ख्रनातम सत्ता एटले कर्मादिक प्रजावनी सत्ता ख्रने ख्रात्मसत्ता एटले ख्रात्मानुं सत्य खरूप तेने समजे नहीं माटे तेने मूर्ष समजवो. ॥ 59 ॥

इवे फरी मूढपणानुं खरूपठे वतावे:- पुनः मूढ वर्णनं:-

॥ चौपाईः॥– जो बिनुङ्गान क्रिया श्रवगाहै; जो बिनु क्रिया मोख पद चाहै; जो बिनु मोख कहै में सुखिया; सो श्रजान मूहिनमें मुखिया ॥ ठ० ॥

अर्थः जे जन ज्ञानविना क्रिया अवगाहे अने क्रियाविना मोक् पद वांहे, वली जे मोक्क पाम्या शिवाय कहे के हुं सुखी हुं, तेने अजाण मूर्खनो शिरोमणि जाणको. हवे जेने कर्मसत्ता तथा श्रात्मसत्तानी जिन्नता जासती नथी, तेने महामूढ किह ये. तेनुं विवेचन करेनेः— श्रथ महामूढ व्यवस्थाकथनः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जगवासी जीवनिसों ग्रह उपदेश कहै, तुम्हे इहां सोवत अनंत काल बीते हैं; जागो व्हे सुचेत चित समता समेत सुनो, केवल वचन जामें अक्र सजीते हैं; आउ मेरे निकट बताउं में तुह्यारे ग्रन, परम सुरस जरे करमसों रीते हैं; ऐसे बैन कहै ग्रह तउ ते न धरे उर, मित्रकेसे पुत्र किथो चित्रकेसे चीते हैं.

श्रयः— सर्व जगवासी जीवना हित वात्सहयने श्रयें गुरु एवो उपदेश करें हे के, श्रहों! जव्य प्राणी जीव! तमें श्रा जगत्मां मोहनिद्धाने विषे सूता रह्या थकाज श्रनादि श्र नंतकाल तमोने वीत्यों हे, माटे हवे तो चित्तमां सचेत थईने जागों; श्रने समता सहित थका केवलीनां वचन सांजलों, जे केवलीनां वचनमां श्रक्तर रस के॰ इंडियना विषय रस तेने जीतेला हे; श्रने तमें मारी पासे श्रावों तो तमारा ग्रण बतातुं; ते ग्रण केवा हे, परम एटले उत्कृष्ट सुरसे करी जरेला हे; श्रने कर्म थकी रीते के॰ न्यारा हे; एवां वचन ग्रुरु कहे हे ते जे प्राणी हैयामां धरता नथी ते मित्रना पुत्र जेवाहे, के मके मित्रना पुत्रविशे श्रावे हेतुं नथीं। श्रने तेने शीलामण श्री देवी? श्रने चित्रामण जेवा हे, कारण के चित्रामण थकी कांई सत्य किया थती नथीं। ॥ ७ए॥

॥ दोहाः॥- एते पर बहुरो सुग्रुरु, बोखे बचन रसाख; सेन दशा जागृत दशा, कहै हुहूंकी चाल ॥ ए० ॥

श्चर्यः- ए प्रमाणे सफुरु वे ते फरी सरस वचन बोखे वे, के जीवने एक सयनद शा ने बीजी जाग्रतदशा एवी वे दशा वे तेनी चाल शांजलो ॥ ए० ॥

हवे सैन दशानुं वर्णन करेवे:- श्रथ शयन दशा वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— काया चित्र सारीमें करम परजंक जारी, मायाकी संवारी सेज चादर कलपना; सैन करे चेतन श्रचेतनता नींद लिए, मोहकी मरोर यहै लोच नको ढपना; उदै बलजोर यहे श्वासको सबद घोर, विषे सुख कारजकी दोर यहे सुपना; ऐसी मुढ दसामें मगन रहै तिहू काल, धावै ज्रमजालमें न पावै रूप श्रपना.

श्रर्थः नायारूप चित्रशासी है, तेमां कर्मरूप पर्यंक है, तेहपर मायानी सेज सं वारी है, कहपना के मननी विकहपनारूप चादर है, श्रचेतनानी जंघ स्न एवी सामग्रीमां चेतन शयन करी रह्यों है, मोहनी मरोक तेणे करीने सोचन ढंकाया है; हदय बस जोर जे है, ते श्वासनों घोर शब्द है, श्रने विषय सुख कार्यनी दोड एटसे करणी करवी ते स्नावस्था है, श्रने एनुंज नाम मूहदशा तथा शयन दशा कहिये.

www.jainelibrary.org

श्रने ए दशानेविषे जे मूढ जन होय, ते त्रणे काल मन्न थको धावे हे, एटखे ज्रम जालमां दोडेहे, पण पोतानुं रूप पामतो नथी. ॥ ए१ ॥

हवे जीवनी जाएतदशानुं वर्णन करेवेः- श्रथ जाएतदशा वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— चित्र सारी न्यारी परजंक न्यारो सेज न्यारी, चादर जी न्यारी इहां जुठी मेरी थपना; श्रतीत श्रवस्था सैन निद्धा वही कोछ पेन, विद्यमान प खक न यामें श्रव ठपना; श्वास श्रो सुपन दोछ निद्धाकी श्रवंग बूज, सूंजे सब श्रंग खिख श्रातम दरपना; त्यागी जयो चेतन श्रचेतनता जाव त्यागी, जाखे दृष्टि खोखि के संजाखे रूप श्रपना. ॥ ए१ ॥

श्रर्थः— श्रात्मज्ञान पाम्याथकी कायारूप चित्रसारी जुदी जुए, श्रने कर्मरूप पखं गने पण न्यारो देखे; मायारूप सेज पण जुदी जुए, कल्पनारूप चादरने न्यारी जुए. मतलबके ए ठेकाणे मारी स्थापना जुठी ठे एम समजे. श्रतीत श्रवस्थानेविषे एटले सयनदशामां निद्धा लेनार पण कोई बीजा रूपे हुं ज ढुं, विद्यमान कालमां ते श्रवस्था नथी, हवे पलकमात्र पण श्रा श्रवस्थामां मारो श्रजाव थनार नथी. श्रास श्रने स्वप्त ए वे निद्धानी श्रलंगना संयोगे बूजे, श्रने श्रात्मारूप श्रारिसामां श्रात्मा नुंज सर्व श्रंग सूजे, एवी रीते श्रचेतनतारूप निद्धानो त्याग करीने चेतन त्यागी थयो, त्यारे पोतानी दृष्टि खोलीने जूए, श्रने पोतानुं रूप संजाले. ॥ ए१ ॥

वली सद्गुरु शिक्तानां वचन कहें हे:- अय पुनः सद्गुरु शिक्ता कथनं:-

॥ दोहाः ॥– इहि विधि जे जागै पुरुष, ते शिवरूप सदीवः जे सोवहि संसारमें, ते जगवासी जीव ॥ ए३ ॥

श्रर्थः ए रीते जे पुरुष जागे हे, तेतो सर्व कालनेविषे शिवरूप केण मोक्कूप जा णवा. श्रमे जेटला संसारनेविषे सूता हे, तेटला तो जगत्वासी जीव समजवा।।ए३॥

हवे मोक्तपद उपादेयरूप कहीने स्तुति करेके:-श्रथ आत्मड्व्य स्तुतिकथनं:-

॥ दोहाः ॥– जो पद जौपद जय हरै, सोपद सोज श्रनुप; जिहि पद परसत श्रीर पद, खगे श्रापदारूप ॥ ए४ ॥

श्रर्थः — जे पद के॰ जे स्थानक जवस्थानकनो जय हरे हे, तेनेज पद कहेवुं, तथा श्रमुप स्थानक कहेवुं, श्रने जे पदनो स्पर्श थतांज श्रम्य पद जे कर्म पद हे, ते श्रा पदारूप लागे हे. ॥ ए४ ॥

इवे जव जे संसार पद तेनो जय बतावे छे:- श्रथ संसार वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जब जीव सोवै तब समुफ सुपन सत्य, विह फुठ खागै जब जागै नींद खोइके; जागे कहैं यह मेरो तन यह मेरी सोज, ताहू फुठ मानत म रणिथिति जोइके; जाने निज मरम मरन तब सूँफे फूठ, बूँफे जब और अवताररूप होइ के; वाहु अवतारकी दशामें फिरियहे पेच, याहि जांति फूठो जग देख्यो हम ढोइके ॥एए॥ अर्थः— ज्यारे जीव सयन दशामां सूतो होय ठे, त्यारे खप्तने सत्य करी माने ठे.

श्रवं:— ज्यारे जीव सयन दशामां सूतो होय हे, त्यारे खप्तने सत्य करी माने हे. श्रमे तेज खप्त रूपने ज्यारे निद्धा मूकी जागीने जुए हे, त्यारे फ्रूं जाणे हे, जागी ने कहे के श्रा मारुं शरीर तो श्राहीं हे, श्रा सोंज के सामग्री सर्व मारी है; ने ज्यारे पोतानी मरण स्थितिनो विचार करे हे, त्यारे तो वर्त्तमान शरीर तथा सामग्री सर्वने फ्रूं माने हे, श्रमे ज्यारे पोताना मर्मनी वात जाणे एटखे पोताना खरूपनी वातने जाणे, त्यारे तो मरणने पण फ्रूं जाणे; एमज वही बीजो श्रवतार खे त्यारे बीजा रूपे शईने बीजी वात जाणे; फरी तेज श्रवतारमां सूता-जागता, फ्रूं नानानो पेच श्रा गढीज रीते खाग्यो रहे. ए रीते वारे वारे श्रवतार खेवाने वढी सामग्रीने पोतानी समजवी ने वढी मरवुं; ए रीते सर्व संसारने होई के देखीने श्रमे सर्व संसारने फ्रूं जाणो. ॥ एए ॥

हवे ज्ञाता केवी किया करे ते समजावे हे:- श्रथ ज्ञाताकी किया कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— पंिमत विवेक लिह एकताकी टेक गिह, छंदज श्रवस्थाकी श्रमेकता हरता है; मित श्रुत श्रविध इत्यादि विकलप मेटी, निरविकलप ज्ञान मन में धरता है; इंडियजनित सुख छःखसों विमुख टहैके, परमकी रूप टहे करम निर्जरता है; सहज समाधि साधि त्यागी परकी जपाधि, श्रातम श्राराधि परमातम करता है.एइ

श्रर्थः— जे पंक्ति जन होय ते विवेकनो जेद एटखे विज्ञान खहीने पोतानी एक तानी टेक राखीने प्रथमनी इंड श्रवस्था जे श्रम श्रवस्थामां श्रनेकता हती तेने हरे हे. श्रने मित, श्रुत, श्रवधि इत्यादि ज्ञानखरूपना विकल्पने मटाकीने निर्विकल्प ज्ञान तेने मनमां धरेहे. श्रने इंडियजनित जे सुख डुःख तेथी विमुख धर्व परमात्मारूप श्रव्मे कर्मनी निर्जरा करे हे, एटखे निर्जरा थाय हे. तेथी पोतानी सहज समाधिसा धिने पर जे कर्म पुजलादिकनी छपाधि जे राग द्रेषादिक, तेनो त्याग करीने श्रात्मा ने श्राराधी परमात्मापणु करेहे. ॥ ए६ ॥

हवे जे ज्ञान समुद्र परमात्मानी प्राप्ति थाय हे, ते ज्ञाननी प्रशंसा करेहे:-श्रथ ज्ञान समुद्रवर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जाके उरखंतर निरंतर अनंत दर्व, जाव जासि रहे पें सुजा ज न टरतु है; निर्मालसों निर्माल सुजीवन प्रगट जाके, घटमें अघट रस कौतुक करतु हैं; जाने मित श्रुत श्रोधि मनपर्ये केवल सु, पंचधा तरंगिन जमंग जहरतु है; सो है क्षानजदिध जदार महिमा अपार, निराधार एकमें अनेकता धरतु है ॥ ए७ ॥

श्रर्थः— जे ज्ञान सागरना मध्यजागनेविषे निरंतर श्रनंत द्रव्य पदार्थ जासी रह्या है, पण ते द्रव्यनो खजाव पोते पामतो नथी, निर्मेखमां निर्मेख एवं सुजीवन के जी वन के जी वितव्य श्रने समुद्र पक्ते सुजीवन के पाणी ते, जेनुं प्रगट हे, श्रने घट में के हदयनेविषे श्रघट के श्रक्तणरस कोतुक के सत्यार्थ वेदननो जे रस तेनुज कुतुहल करे हे, एटले ए समुद्रनेविषे रस कुतुहल घणा हे, श्रने जे ज्ञान समुद्रने विषे मितज्ञान, श्रुतज्ञान, श्रवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान ने केवल ज्ञान ए पांचे ज्ञान तरं गरूप हे, हमंग के पोतपोताने हेकाणे प्रगट श्रद रह्यां हे एवो ज्ञानसमुद्र ते हदार प्रधान हे, एनो श्रपार मिहमा हे, एने विषे सर्व पदार्थ जासे हे तेथी पोते निराधार श्रने एक खरूप हतां ज्ञातापणामां श्रनेकता धरे हे ॥ ए७ ॥

हवे ज्ञानविना मात्र क्रियाव मेज मोक्तनी प्राप्ति नथी तेनु वर्णन करें छे:श्रथ मोक्तमार्ग श्रप्राप्ति कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— केई क्रूर कष्ट सहै तपसों शरीर दहै, धुम्रपान करें श्रधो मुख टहैके जुबे हैं; केई महा व्रत गहै कियामें मगन रहें, वहै मुनि जारमें पयारके से पूबे है; इत्यादिक जीवनको सविया मुगति नांहि, फिरे जगमांहि ज्यो वयारके वधुबेहैं; जिनके हियेमें ज्ञान तिन्हहीको निरवान, करमके करतार जरममें जूबेहैं ॥ए०॥

श्रर्थः – कोई श्रज्ञानी ऋर कष्ट सहन करें छे अने पंचाि प्रमुख तप करीने शरीर ने बांखें ; कईक श्रज्ञानी श्रियाना धुमानानुं पान करें हे, नीचुं मुख राखी उंचा पग करिने जुलें हे; केटलाक श्रज्ञानी जैन लिंग लईने पांच महात्रत प्रव्याधी श्रहण करें हे, श्रमें कियामां मग्न रहे हे; ए रीते मुनिराज पणानो जार वहे हे, पण ते पयारना जेवा पूखें हे, (देश जाषाये) पयार एटले पलाल, जेना फूलने विषे कण होता नथी, तेवी रीते निराश जाणवा; इत्यादि केवल किया कलापवंडे जीवने सर्वथा मुक्ति थती नथी; ते ज गत्ने विषे वयारना बघुल जेम उंचा नीचा फरी रहे हे, पण एक हे काणे हरता नथी तेवा समजवा; श्रमें जेना हृदयने विषे ज्ञान कला जायतरूप थईहे, तेमने निरवाण के मोक्त हे; श्रमे जे कर्मना करतार एटले केवल कियानाज करनारा हे तेतो जर्म ने विषेज जूली रहाहे. ॥ ए० ॥

हवे जे मूढ जन वे तेनी दृष्टि निश्चयमां नथी, पण व्यवहारने विषे वे, तेथी तेने विषे श्रज्ञान वे ते कहेवे:— श्रथ मूढ व्यवस्था वर्णनं:—

॥ दोहाः ॥– स्नीन जयो विवदारमें, जकति न जपजै कोइ; दीन जयो प्रजु पद जपै, मुकति कहांसों होइ. ॥ एए ॥

अर्थ:- जे व्यवहारमां सीन थई रह्यो होय एटसे मन्न थइ रह्यो होय, तेने कोई

जकित के तत्त्वदृष्टि जपजे नहीं, छने पोते छनाय थईने पोताना नाथना पदने जजे, ए रीते पोतानुं निश्चयरूप जाण्याविना मुक्ति क्यांथी थाय १॥ एए ॥

॥ दोहाः ॥– प्रजु समरो पूजो पढो, करो विविध विवहारः मोक्त सरूपी श्रातमाः ज्ञानगम्य निरधारः ॥ २००॥

अर्थः प्रजुने समरो, जावे पूजो, ने जावसहित पढो इत्यादि व्यवहार करो पण मोक्त खरूपी आत्मावे तेतो निरधार के० निश्चय ज्ञान गुम्य वे. ॥ २००॥

हवे निश्चय स्वरूपनेविषे ज्ञान पर्याय रूपी ष्टर्थनुं निरूपण करेहे:-

श्रथ पर्यायार्थ निरूपणं:-

॥ सवैया तेइसाः ॥— काज विना न करे जिय उद्यम, खाज विना रनमांहि न जुं फैं; डीखविना न सधै परमारथ, सीखविना सतसो न श्ररूफैं; नेम विना न खहे नि हचे पद, प्रेमविना रस रीति न बूफैं; ध्यानविना न थन्ने मनकी गति, ज्ञान विना शिवपंथ न सूजै.॥ १॥

श्रर्थः— श्रहीं श्रर्थांतर बतावे हे के. जेम जीव पोताना काम विना उद्यम करतो नथी; जेम खाज विना रणसंप्रामने विषे फुफतो नथी; वही जेम देह धस्त्राविना पर मार्थ थतो नथी; श्रने शील धारण कीधाविना सत्व साथे मखातुं नथी; वली नियम धस्त्रा शिवाय निश्चय पद मलतुं नथी, श्रने जेम प्रेमनी प्रीत विना रसरीत जणाती नथी, तथा ध्यानविना मननी गति थोजाती नथी, तेम ज्ञानविना शिवपथ के मु किमार्ग ते सूजतो नथी. ॥ १॥

हवे ज्ञानवंतनो महिमा देखामीने तेनी व्यवस्था कहें हे:-श्रथ ज्ञानमहिमा धारक व्यवस्था कथनं:-

॥ सवैया तेईसाः॥ ज्ञान उदै जिनके घट अंतर, ज्योति जगी मित होति न मैं ही; बाहिज दृष्टि मिटी जिन्हके हिय, आतम ध्यान कला विधि फैली; जे जड चेत न जिन्न लखे सु विवेक लिये परखे गुन थेली; ते जगमें परमारथ जानि गहै रुचि मानि अध्यातम सैली ॥ १॥

श्रर्थः— जेना हृदयनेविषे ज्ञाननो उदय श्रवाथी पोतानी ज्योति जागृत श्रईने तेथी मित जे बुद्धि ते उज्वल श्रई पण मेली नश्री; श्रने पोताना बाह्य श्रारीरने श्रात्मा करी माने एवी बाह्य दृष्टि ते मटी गई, श्रने हृदयनेविषे श्रात्मध्याननी कला तेनी विधि जे यमनियमादिक ते विधि फेली एटले पसरी, ते वखतश्री जड चेतनने जिन्न जिन्न लखे, श्रने पोतानो विवेक के० जेदिविङ्गान तेणे करी पोताना ग्रणनी श्रेली पार खी खीधी. एवा जे जीव तेज जगत्मां परमार्थने जाणी तेने रुचिये करी ग्रहण करे. ए रीते अध्यात्मशैली मान्य करीने परमार्थने जाणे, ॥ १॥

इवे मोक्तनी समय प्राप्ति देखाने छे:- श्रथ मोक्तप्राप्ति कथनं:-

॥ दोहाः ॥– बहु विधि किया कलेससों, शिवपद लहै न कोइ; ज्ञान कला परका शसों, सहज मोक्त पद होइ. ॥ ३ ॥ ज्ञान कला घट घट वसे, योग युगतिके पार; निज निज कला उदोत करि, मुक्त होइ संसार ॥ ४ ॥

श्रर्थः— जात जातनी कियाने निमित्ते क्केश करवो, तेथी मोक्तपद मखे नही. पण् कानकलानो प्रकाश थवाथी सेहेज मोक्तपद थायहे. ॥ ३॥ क्ञानकला तो घट घटने विषे वसी रहेली हे, पण मन वचन श्रने कायाना योगनी युक्तिथी पार रहेली हे, माटे पोत पोतानी कलाने प्रकाश करवाथी संसारथी मुक्त थवाय हे, एवो सर्वने सफ रुनो श्राशीर्वाद हे. ॥ ४॥

हवे मुक्तपणुं अनुजव यकी यायने माटे अनुजवनी प्रशंसा करेने:-अय अनुजव प्रशंसा:-

॥ कुंमिलया ढंदः॥— श्रनुत्रव चिंतामिनिरतन, जाके हिय परगास; सो पुनीत शि वपद लहे, दहे चतुर्गतिवास; दहे चतुर्गतिवास श्रास धरि क्रिया नमंडे, नुतन बंध निरोध, पूर्वकृत कर्म विहंडे; ताके न गनु विकार, नगनु बहु जार न गनु जो, जाके हिर देमांहि रतनचिंतामिन श्रनुजो ॥ ॥ ॥

श्रर्थः— श्रनुजवरूपी चिंतामिण्रत्न जेना हृदयनेविषे प्रकाशमान शर्इ रह्युं हे, ते जीव पुनीत के० पवित्र शर्इने शिवपदने पामे हे, ने चतुर्गतिनो जे वास तेने दहन करे हे; एट खे देवगति, मनुष्यगति, तिर्यंचगति ने नरकगति ए चारे गतिना वासने बाखी नाखे हे; श्रनुजवी जननी रीत एहे के ते श्राशा धरीने किया मांडे नही. नुतन बंध के० नवा कर्मना वंधने निरोधीने संवर धारण करे, तथा पूर्वकृत कर्मने विहं की ना खीने तेनी निर्जरा करे हे, तेना विकारने श्रहो! जव्य जीव! तुं गणीश नही; श्रने तेना श्रातजारने तुं गणीश नही, श्रने तेना श्रातजारने तुं गणीश नही, श्रने तेना ज्यने पण गणीश नही, जेना हृदयमां श्रनुज वरूपी चिंतामिण्यत्व प्रकाशी रह्युं हे॥ ५॥

हवे अनुजवीनी ज्ञानदृष्टिनुं सामर्थ्य वखाणेठेः- अथ ज्ञानदृष्टि सामर्थ्य कथनंः-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जिनके हियेमें सत्य सूरज उदोत जयो, फेलिमित किरन मिथ्यात तम नष्ट है; जिनकी सुदृष्टिमें न परचे विषमतासों, समतासों प्रीति ममतासों खष्ट पुष्ट हैं; जिन्हके कटाठमें सहज मोक्त पथ सधे, साधन निरोध जाके तनको न कष्ट हैं; तिन्हिकों करमकी किलोल यह है समाधि, मोले यह जोगासन बोले यह मष्ट है॥६॥ श्रर्थ:— जेना हियानेविषे सत्य सूर्यनो उद्योत यई इह्योठे, श्रने सत्य सूर्यना मित रूप किए फेली रह्याठे, तेथी मिध्यात्व रूप श्रंथकार ते नाश पाम्यो. वली जे जीवनी सुदृष्टिमां विषमतानो परिचय नथी, एटले समतासाथ प्रीति वंधाणी ठे, ने ममतासा ये तथा मोहसाथे लप्ट पुष्ट के० चित्तविनानी प्रीति राखेठे, ने जेना कटाक्तनेविषे ए टले योडा विलोकनमां सहज खजावे मोक्तमार्ग सिद्ध थायठे. साधन के० मनोयोगा दिक त्रण योगनो निरोध एटले नियह कस्योठे श्रने जेना शरीरने कप्ट नथी, एवा ज्ञानधारीने जे कमें लहेर श्रावेठे तेने गणतीमां समाधि जावज जाणेठे; जो कदी गित कमेना उदयवडे डोलेठे तोपण ते जोगासनधारीठे श्रने जो बोलेठे तोपण मष्ट के० मौनवति ठे. ॥ ६॥

हवे ज्ञानीने परवस्तुनो त्याग कह्यो श्वने विशेषपणे तेनोज त्याग वखाणेठेः—
॥ श्रथ परवस्तुको त्याग ताको विशेष वर्णनंः—॥

॥ सवैया इकतीसाः॥— श्रातम सुजाउ परजाउकी न सुद्धि ताकों, जाको मन ग मन परिग्रहमें रह्यो हैं; ऐसो श्रविवेकको निधान परिग्रह राग, ताको त्याग इहां खों समुचैरूप कह्यो हैं; श्रव निज परे ज्रम टूरि करिवेके काजु बहुरो सुगुरु उपदेशको उमह्यो हैं; परिग्रह श्ररु परिग्रहको विशेष श्रंग, कहिवेको उद्यम उदीरि लह लह्यो है.

श्रर्थः ने जेनुं मन परिग्रह ने विषे मग्न थई रह्यं हे, ते जीवने पोताना तथा पारका स्वजावनी शुद्धता थती नधी. परिग्रह नो राग तेतो श्रविवेकनुं निधान कह्यं हे, जे परिग्रह ना रागने विषे पोताना ने पारका स्वजावनी शुद्धता नथी, ते परिग्रह रागने त्याग श्रहीं सुधी सामान्य मात्र कह्यो. हवे निजस्वरूपनो श्रम ने पर स्वरूपनो ग्रम तेने दूर करवाना कार्यने घणा प्रकारे सद्गुरु उपदेश करवाने छह्ंगवंत थया हे. हवे इहां परिग्रह तथा ते परिग्रह नुं विशेष श्रंग केहेवाने सद्गुरु जे हे ते उद्यम छदीर णा करीने बह बह्यो के० सचेत थया हे. ॥ ॥ ॥

हवे सामान्यरूप परिग्रहनो राग श्रने विशेषरूप परिग्रहनो राग तेनो विवरो कहे हे:- श्रथ सामान्यविशेष कथनं:-

॥ दोहाः॥– त्याग जोग परवस्तु सब, यह सामान्य विचारः विविध वस्तु नाना विरति, यह विशेष विस्तार ॥ ७ ॥

श्रर्थः— जेटली परवस्तु हे तेटली बधी त्याग जोग हे. एतो सामान्यपणे परित्रह ना त्यागनो विचार जाणीये; श्रने ते परवस्तु जात जातनी हे श्रने तेना छपर विचा रपण जातजातनो हे; एने विद्योषपणे परित्रह त्यागनो विस्तार जाणवो. ॥ ७ ॥ हवे परिग्रह ठतां ज्ञातानी परिग्रह जपर श्रविप्त दशा कहे वे:-श्रय ज्ञाता श्रविप्त कथनं:-

॥ चोपाईः॥-- पूरव कर्म जदै रस जुंजे; क्ञान मगन ममता न प्रयुंजे, जरमें जदा सीनता बहिये, यों बुध परिगह वंत न कहिये ॥ ए ॥

श्रर्थः पूर्व कर्मना उदयथकी जे शुनाशुन रस उपजे ते नोगवे पण ते रस जोग नेविषे ममता प्रयुंजे नहीं, मात्र ज्ञाननेविषेज मग्न रहें, पण परिप्रहना संयोग वियो गनेविषे हर्ष विषाद उपजे नहीं, एवी रीते जेना मनमां उदासीनता पामीये उद्ये, एवा बुध के पंक्तिने परिप्रहवंत कहेवाय नहीं ॥ ए॥

हवे ज्ञानीनी निस्पृह दशा वखाणे ठेः- श्रथ ज्ञानी श्रवांठक कथनंः-

॥ संवैया इकतीसाः॥— जे जे मनवं ित विद्यास जोग जगतमें, तेते विनासिक सब राखे न रहत हैं; छोर जे जे जोग छाजिलाष चित्त परिणाम, तेते विनासीक धर्मरूप व्हें वहत हैं; एकता न छहों मांहि ताते वांठा फुरे नांही, ऐसे ज्रम कारजको मूरख वहत हैं; सतत रहे सचेत परसो न करे हेत, याते ज्ञानवंतको छावंठक कहत हैं॥१०॥

श्रयं:— मनना मानी लीधेला जे जे जगत्ना जोग विलास हे, ते ते नाश रूप हे, श्रापणा राख्या रेहेता नथी. वली जे जे जोग श्रजिलाषरूप चित्त परिणाम रहेहे ते ते चित्त परिणाम चंचलपणे विनासी धर्म रूपने विषे थई रह्या हे. एवा जोगनेविषे तथा जोग श्रजिलाषनेविषे श्रनेकता हे, पण एकता नथी. वली विनश्वरपणुं हे तेथी एना उपर ज्ञानीनी वांहा फुरती नथी. एवा ज्रम कार्यने मूर्ख होय तेज चाहे हे, जे सतत के विनंतर सावधान रहे श्रने परवस्तु साथे हेत करे नही, एज माटे ज्ञान वंतने श्रवंहक निस्पृही कहेहे। । १०॥

हवे परिग्रहमां रेहेता वतां ज्ञाताने श्वलिप्तपणुं केवी रीते कहेवाय ते दृष्टांत श्वा पीने समजावे वे:- श्रथ ज्ञाता श्रलिप्त दृष्टांत कथन:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे फिटकडी बोझ हरनेकी पुटविना स्वेत वस्त्र डारिये मजीठ रंग नीरमें; जीग्यो रहे चिरकाल सर्वथा न होइ लाल, जेदे नही छांतर सपेती रहे चीरमें; तैसे समिकतवंत राग दोष मोह बिनु, रहे निशिवासर परियहकी जीरमें, पूरव करम हरे नूतन न बंध करे जाचे न जगत सुख राचे न शरीरमें॥ ११॥

श्रर्थः— जेम कोइ स्वेत वस्त्र होय तेने फटकमी लोदर तथा हरमानी पुट के॰ पट दीधा शिवाय मजीठना लाल रंगना पाणीमां चिरकाल के॰ घणाकाल सुधी जीनावी राखे तोपण ते वस्त्र सर्वथा प्रकारे लाल थाय नही; श्रंतर्रंग जेदे नही तेथी ते ची रमां सफेती रहेज; तेमज समकितवंत जे जीव होय ते राग देष मोहना पटविना निशिवासर के॰ रात दिवस परियहनी जीडमां रहे हे, तोपण पूर्व कर्मना जोगनी नि जिरा करे हे, अने नवां कर्मनुं बंधन करे नही, अने जगत्ना सुखने जाचे नहीं विधी शरीरने जोईने राचे नहीं ॥ ११॥

हवे परिग्रहने विषे रेहता क्वाताने उद्देग रहितपणुं होय वे ते दृष्टांत वडे दृव क रावे वेः— श्रय क्वाता श्रमुद्देग कथनंः—

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे काहु देसको वसैया बलवंत नर, जंगलमें जाई मधु वत्ताकों गहतु है; वाकों लपटाय चहु ख्रोर मधुमिक्तका पे कंबलीकी उंटसों खडंिकत रहतु है; तैसे समिकती शिव सत्ताको सरूप साधे उदेकी उपाधिकों समाधिसी कहतु है; पहिरे सहज को सनाह मनमें उठाह, ठाने सुखराह उदवेग न लहतु है.॥११॥

श्रशं- जेम कोईक देशनो रेहेवासी जील वगरे बलवंत नर जंगलमां जईने मध पुडाने यहण करे हे, ते बलत ते पुरुषने चारे तरफ मधु मिक्तका के॰ मध माली हे ल पटाई जाय हे, पण ते पुरुषना शरीर पर कांमली होयहे, तेश्री श्रडंकित के॰ डंखिन ना श्रडंख रहेहे; तेमज समिकती जीव शिव के॰ परमात्मानी सत्ता के॰ सद्भूतपणुं तेनुं खरूप जे एक विज्ञानघनपणुं तेने साधे हे, श्रने कर्म हदयनी जे श्रात्माने छपा धि लागी रहीहे, तेने ते समाधि करी जाणे हे सहज ग्रण जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र तप्त्रूप जे सनाह के॰ बखतर ते पहेरी राखेहे, श्रने ए रीते जे कर्मनिर्जरा तेनो हहा हमनमां धारण करे एवा श्रनंत सुखना राह के॰ मार्गनेविषे रहेतो थको हहेग द शाने पामतो नथी। ॥ १२ ॥

हवे ए रीतमां ज्ञातानुं श्रवंधकपणुं बतावेठेः - श्रथ ज्ञाता श्रवंध कथनंः -

॥ दोहराः॥ ज्ञानी ज्ञान मगन रहे, रागादिक मल खोइ; चित जदास करनी करे, करम बंध निह होइ. ॥ १३ ॥ मोह महातम मल हरे, धरे सुमित परगास; मुगित पंथ परगट करे, दीपक ज्ञान विलास. ॥ १४ ॥

श्रर्थः— इानी पुरुष तो झानमां मग्न रहे हे, श्रने रमे हे, श्रने राग-देष-मोहरूपी जे मल हे, तेने खोइ दिए हे; श्रने जे किया करे हे ते पण उदासीनरूप करे हे, माटे एवा झानीने कर्म बंध थतो नथी. ॥ १३ ॥ वली मोहरूपी महातम के घोर श्रंध काररूप जे मल तेने हरे, श्रने सुमतिना प्रकाशनार दीपकने धरे, ए रीते मुक्ति पं थने प्रगट करी बतावे, एवोज झाननो विलास ते दीपकरूप जाणवो. ॥ १४ ॥

हवे ज्ञानदीपकतुं खरूप कही देखाडेठेः- श्रथ ज्ञान दीपक वर्णनंः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जामें धूमको न खेस बातको न परवेस, करम पतंगनिका नाश करे पखमें; दसाको न जोग न सनेहको संयोग जामें, मोह श्रंधकारको विजोग

www.jainelibrary.org

जाके थलमें; जामें तप्तताइ नही रागरंग नांइ रंच, खह खहे समता समाधि जोग ज लमें; ऐसी ज्ञानदीपकी सिखा जगी अजंगरूप, निराधार फ़री पें छरी है पुदगलमें॥

श्रर्थः— जे ज्ञान दीपकमां धुमाडानो खेरा नथी ने जेमां वायुनो पण प्रवेश नथी श्रने जे कर्मरूपी पतंग जीवनो पलकमां नाश करे हे, ने जेमां दशा के दीवेटनो जोग नथी, (बीजो श्रर्थ)— कोइ विकट्प दशा नथी श्रने जेने सनेह के पृत तेलनो संयोग नथी; वली जेना प्रकाशमां मोहरूप श्रंधकारनो वियोग थयो हे; वली जे दीपकमां तस तापणुं नथी; वली जेमां लालरंगनीरंचमात्र लालाश नथी, श्रने जे समता समाधिनो जोगते रूप जल तेनेविषे लहलहायमान थई रह्यो हे,एवो जे ज्ञानदीपक हे, तेनी शिखा सदा श्रजंगरूप जागी रही हे, श्रने ए शिखा सर्व पदार्थनुं ज्ञान करवानो श्राधार हे श्रने पोते निराधार फुरी रही हे, श्रने पुजलमां छुरी के हुपी रही हे. ॥ १५ ॥

हवे ज्ञानना खजावमां खंमना नथी ते उपर दृष्टांत आपेवे:-

श्रथ ज्ञान खत्राव श्रखं ित दृष्टांत कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैसो जो दरब तामें तैसोही सुजाछ संघे, कोछ दर्व काछ को सुजाछ न गहतु है; जैसे संख छज्वल विविध वर्ण माटी जखे, माटीसो न दीसे नित छज्वल रहतु है; तैसे ज्ञानवंत नाना जोग परिगह जोग, करत विलास न श्र ज्ञानता लहतु है; ज्ञानकला दूनी होइ छुददशा सूनी होइ जनी होई जो शित वनारसी कहतु है। ॥ १६॥

श्रर्थः— जे जेवुं द्रव्य हे, तेमां तेवोज खनाव सिद्ध हे, पण कोई द्रव्य श्रन्य द्र व्यनो स्वनाव यहण करे नहीं. जेम कोई जलाशयमां संख बेइंद्रीजीव होय ते खरू पमां उज्वल होय हे, पण जात जातनी माटी खाय हे, तेम हानवंत प्राणी परिय स्वरूपमां देखातो नथीं, तेतो नित्य उज्वलज देखाय हे; तेम ज्ञानवंत प्राणी परिय हना जोग थकी नाना प्रकारना जोग जोगवतो हतां श्रने विलास करतो हतां श्रज्ञानता पामतो नथीं. श्रने ज्ञाननी कला बमणी थाय हे, श्रने दंद्धदशा के ज्ञमदशा ते श्रुनी थाय हे, श्रने जवस्थित के संसारस्थित ते हणी के उही थाय हे, एवी रीते वना रसी दासनं कहेवुं हे ॥ १६॥

हवे सम्यग् ज्ञाननी साथे सम्यक् किया स्याद्धाद मतने श्राश्रयी कहे हे:-

॥ संवेया इकतीसाः ॥— जोलों ज्ञानको उदोत तोलों नही बंध होतु, वरते मिथ्या त तब नाना बंध होहि है; ऐसो जेद सुनिके लग्यो तुं विषे जोगनिसों, जोगनिसों उद्यमकी रीतितें विठोहि है; सुनो जैया संतत कहे में समकितवंत, यहु तो एकंत प रमेसरकी दौहि है; विषेसों विमुख होइ श्रनुजो दशा श्रारोहि, मोख सुख ढोहि ऐसी तोहि मित सोहि है ॥ १९॥

श्रर्थः - ज्यां सुधी ज्ञाननो ज्योत हे त्यांसुधी बंध यतो नथी श्रने ज्यारे मिथ्या त्वदशावंत हे, त्यारे तो नाना प्रकारनो बंध थाय हे, कोई एकांतवादीयें एवो ज्ञान माहात्म्यनो जेद सांजलीने एवं कहां, के तुं विषय जोगववा लाग्यो हे, श्रने मन, वच न, कायाना योग थकी ज्यमनी रीति जे किया, तेने तें हों ही दीधी हे, तेने कहें हे के हे सत् पुरुष, सांजल तुं जे कहें हे, के हुं समकितवंत हुं, पण ए एकांतमत जे हे ते परमेश्वर परमात्मानी दोही के जोह करनारी हे, मादे तुं विषयधी विमुख थईने श्रनुजव दशामां गुण श्रेणि धरी श्रारोहण करी श्रने मोक्तना सुखने होही के जो, तो एवीज बुद्धि थकी शोजे हे. ॥ १९॥

हवे ज्ञाननुं तथा विषय विमुखतानुं सहचारिपणुं बतावेनेः— श्रथ ज्ञान वैराग्य युगपद् वर्णनंः—

॥ चौपाईः ॥– ज्ञानकला जिनके घट जागी; ते जगमांहि सहज वैरागी; ज्ञानी मगन विषेसुखमांही; यहु विपरीत संजवै नांही ॥१०॥ दोहाः॥– ज्ञान सहित वैराग्य वल, शिव साधै समकाल; ज्यों लोचन न्यारे रहें, निरखे दोऊ नाल ॥ १ए॥

श्रर्थः— जेना घटनेविषे ज्ञानरूपी कला जागी वे तेतो जगत्नेविषे सहेजे वैरागी रहे वे ज्ञानी थईने विषयसुखमां मग्न होय ए विपरीत वात संजवती नथी॥ १०॥ वली ज्ञाननी संगति ने वैरागनी संगति ए वंने चीज समकाल मलीने मोक्तने साधे; जेम वे श्रांखो जुदी रहीवे, पण नाल के० साथे वेज नेत्र पदार्थने जुएवे ॥ १ए॥

हवे मूर्वने कर्मनुं कर्त्तापणुं श्वने ज्ञानीने निर्जरानुं कर्त्तापणुं ए बेनुं स्वरूप कहेते. श्रथ मूढ कर्त्ता कर्मको यह कथनं:-

॥ चौपाई:॥— मृढ कर्मको कर्त्ता होवै; फलश्रजिलाष धरै फल जोवै; ज्ञानी किया करे फल सूनी; लगे न लेप निर्जराष्ट्रनी ॥ २० ॥ दोहाः— बंधे कर्मसों मृढज्यो, पाट कीट तन पेम; खुलै कर्मसों समिकती, गोरख धंधा जेम. ॥ ११ ॥

श्रर्थः मूढ हे ते कर्मनो कर्ता बने हे, केमके ते क्रियाना फलनो श्रजिलाष धरे हे, श्रने फलने जोई रहेहे; ने जे ज्ञानी होय ते क्रिया तो करें पण फल शुन्य करे, तेथी ज्ञानीने कर्मनो लेप लागतो नथी; एथी बमणी निर्जरा थाय हे. ॥ १०॥

वसी जे मूढ हे ते कर्मनेविषे वंधाइ रहेहे, जेम रेशिमनो किनो पोताना शरीर ना प्रेमवडे पोतानी खाख थकी पोतेज वंधाय हे, श्रने जे समकिती होय तेतो कर्म नी जालची खुबेलो रहे हे, कोनी पेठे? जेम गोरखधंधो पोतानी जालची खुबी जा यहे तेम जाणवुं॥ ११॥

हवे ज्ञानी जीवने कर्मनुं श्रकत्तापणुं तथा निर्जरारूप त्ररावे हेः-श्रथ ज्ञानीको श्रकर्तृत्व कथनंः-

॥ सवैया तेईसाः ॥— जे निज पूरव कर्म छदे सुख जंजत जोग छदास रहेंगे; जे छखमें न विलाप करे निरवेर हिये तन ताप सहेंगे; है जिनके दृढ ष्ठातम ज्ञान किया करिके फलकों न चहेंगे; ते सुविचन्नन ज्ञायक है तिनको करता हम तो न कहेंगे॥११॥

श्रयः— जे जीव पोताना पूर्व संचित शुज कर्मना उदय वहे सुख जोगवतो यको पण जोगथी उदास रहे हे, श्रने जे जीवने श्रसाता वेदनीयना उदयथी छुःख उपजे तो पण विलाप करेनही, श्ररतिनो विजाग करे नही, श्रंतरमां कोई चिंता नही राखे; श्रने शरीरनो संताप सहन करे, वली जेनीपासे श्रात्मज्ञान हे, तेतो किया करीने फ लने इहे नही, तेज उत्कृष्ट विचक्तण ज्ञानी कहेवाय हे, श्रने तेने कर्म करता थका कर्मना कर्ता एम तो श्रमे कही शकशुं नही ॥ ११ ॥

हवे एवा ज्ञानीनी व्यवस्था कहे हे. ज्ञाता वर्णनं:-

॥ सवैया इकर्तीसाः ॥— जिनकी सुदृष्टिमें श्रानिष्ट इष्ट दोन सम, जिनको श्राचार सुविचार सुज ध्यान है; खारथको त्यागी जे बहैंगे परमारथको, जिनके वनिजमें नफा न है न ज्यान है; जिनकी समुफमें शरीर ऐसो मानीयतु, धानकोसो ठीलक क्रपान कोसो म्यान है; पारखी पदारथके साखी ज्रम जारथके, तेई साधु तिनहीको जथारथ क्रान है। ॥ १३ ॥

श्रर्थः— जे ज्ञातानी सुदृष्टि एवी वे के, जेनेविषे इष्ट वस्तु तथा श्रनिष्ट वस्तु बेख बराबर वे, श्रने जेनो श्राचार एवो वे के जे जाता विचारथी शुज ध्यानमांज रहे, श्रने विषय सुख प्रमुख खार्थने त्यागीने जे श्रध्यात्मरूप परमार्थ तेनेविषे लागी रहे वे, वली जेनां वचन एवां वे के, जेमां नफो नथी तेम टोटो पण नथी, एटले कोईने सु सीख किंवा कुसीख देता नथी; मौन वृत्तिज रहे वे वली जेनी समफ एवी होय के श्रा रीरने धाननी वील के तुस जेवुं श्रने कृपान के तरवार तेना म्यान जेवुं माने वे, मतलब के श्रात्माने शरीरथी जुदो जाणे वे. वली जे जेवो पदार्थ होय तेवी तेनी परीक्षा करे वे, श्रने जेम नय ज्ञानविना पांच दर्शनमां जे त्रमनुं जारथ चाली रह्यं वे,तेनोसाक्षी वे; पूठवानुं थानक वे, तेहिज साधु कहेवाय वे, श्रने तेने यथार्थ ज्ञानी कहिये. ॥१३॥

हवे समिकतनुं साहसपणुं वर्णन करेवेः - श्रय सम्यक्वंतको साहसकथनंः -॥ सवैया इकतीसाः ॥ - जमकोसो च्राता छःखदाता है श्रसाता कर्म, ताके जुदै मूरख न साहस गहतु है; सुरग निवासी जूमिवासी ख्रो पताखवासी, सबहीको तन मन कंपत रहतु है; उरको उजारो न्यारो देखिये सपत जेसों, डोखतु निशंक जयो ख्रानंद खहतु है; सहज सुवीर जाको सासुतो शरिर ऐसो, ज्ञानी जीव ख्रारज ख्रा चारज कहतु है।। १४॥

श्रर्थः— श्रीहं संसारनेविषे जे श्रसाता वेदनीय कर्म हे, ते केवां प्रःखदाता हे? श्रहिं उत्प्रेक्ता करे हे:— जमकासो जाता के प्रमना जाई हे, तेनो हदय यता मूरख जन जे हे, तेतो साहस ग्रही शके नहीं. सुरगनिवासी के देवता जूमिवासी के म नुष्य तिर्यंच् श्रने पाताखवासी देवता नारकी एवा सर्व त्रिखोकवासी जीवोनां तन मन श्रसातावेदनीय थकी कांपता रहेहे, हवे ज्ञानी जीवना हरनुं श्रजवाखुं जे हे ते श्रंत रना चांदरणां जेवुं हे, ते केवुं हे? ते समजावे हे के, ते सात जय थकी जुड़ंज हे, जे श्रजवाखाशी साते जय प्राप्त थता नशी, श्रने ए प्रजावशी निःशंक थई मोखे हे, श्रमे श्रानंद पामे हे सहज सुवीर के महोटो साहसीक सुजट, जेनुं ज्ञानरूपी शरीरशा श्रत हे, एवा ज्ञानी जीवो श्राचार्य के महा पुरुष पूज्य जाणवा, एवं श्राचार्य कहेहे. ॥१४॥ हवे साते जयनां नाम कहेहे:— श्रथ सप्त जयनाम:—

॥ दोहाः॥- इह जव जय परखोक जय, मरन वेदना जातः श्रनरक्ता श्रनगुप्तजय श्रकस्मात जय सात ॥ १५ ॥

श्रर्थः— श्रा जवनो जय, परलोकनो जय, मरण जय, वेदना उपजवानो जय, श्रनर कानो जय, श्रनग्रस जय, श्रने श्रकस्मात् जयः ए सात जय जाणवा ॥ १५ ॥ हवे साते जयनां लक्षण कही जुदां जुदां उललावे ठेः-श्रथ सप्त जय लहन कथनंः-

॥ संवैया इकतीसाः॥— दसधा परियह वियोग चिंता इह जव, छुर्गति गमन पर लोक जय मानिये; प्रानिको हरन मरन जे कहावै सोई, रोगादिक कष्ट यह वेदना वलानिये; रक्तक हमारो कोछ नांही अनरका जय, चौर जे विचार अनग्रप्त मन आ निये, अनचिंत्यो अबहि अचानक कहांधों होइ, ऐसो जय अकस्मात जगतमें जानिये.॥

श्रर्थः— शास्त्रमां जे दश जातनो परियह कह्यों हे, तेना विजोगनी चिंता रहे तेज श्रा जवनो जय जाणवों डुर्गतिगमननो जे जय ते परक्षोकनो जय किहे ये; प्राण हृटवा नो जे जय ते मरण जय; रोग प्रमुख्यकी जे कष्ट छपजे ते वेदना जय वखाणिये; श्र मारी रक्षा करनार कोई नथी देखातो ए श्रनरक्षा जय; चोर श्रयवा डुश्मन श्राव्या थी हुं शुं यस करी शकीश एवो जे जय तेने श्रनग्रत जाणिये श्रणचिंत्युं शुं थशे एवो जे जय मननेविषे रहे तेनुं नाम श्रकस्मात् जय जाणवो ॥ १६ ॥ हवे श्रा जवना जय निवारण रूप मंत्र कहें छे:— श्रय इह जव जय निवारण कथनं:— ॥ छप्पय छंदः॥— नख शिख मित परवान, ज्ञान श्रवगाह निरस्कत; श्रातम श्रंग श्रजंग, संग परधन इम श्रस्कत; छिनजंगुरसंसार, विजव परिवार जारज सु; जहाँ छतपति तहाँ प्रखय, जासु संयोग विरह तसु; परिश्रह प्रपंच परगट परिख, इह जव जय छपजे निवत; ज्ञानी निशंक निष्क खंक निज; ज्ञानरूप निरखंतनित ॥ १९ ॥

श्रर्थः— पगना नखर्यी ते मायानी शिखासुधी एटखे सर्व शरीर प्रमाण श्रात्मानो ग्रण जे ज्ञान ते श्रवगाह के० व्याप्ति तेने जुए, एवां नख शिख सिहत ज्ञानमय श्रा तमानुं श्रंग श्रदंग रहे, तेनी साथे पुजल हे तेने परधन के० परद्रव्य कहेंहे, श्रने सर्व संसार क्षणजंग्रर हे, ने तेने जे विजव परिवाररूप जार हे, ते पण क्षणजंग्रर हे, श्रने जेनी हत्यित तेनो विनाश हे, जेनो संयोग तेनो वियोग पण थाय हे, एवो परिमहनो प्रपंच प्रगट परखीए तो श्रा जवनो जय चित्तमां छपजे नही. ए रीते जे ज्ञानी होय ते परिमहना वियोगनी चिंता न राखे, निःशंक रहे, पोतानुं निष्कलंक खरूप ज्ञान मय सदा जुए ॥ १९ ॥

हवे परलोकजय निवारणनुं मंत्र कहें हे:- श्रथ परलोक जय निवारण मंत्र:-

॥ छप्पय ढंदः॥ — ज्ञान चक्र मम लोक, जासु श्रवलोक मोल सुख; इतरलोक मम नां हि नां हि जिसमां हि दोष छुख; पुन्न सुगति दातार, पाप छुरगति पद दायक; दो खं िक त खानिमें, श्रखं िकत है शिवनायक; इह विधि विचार परलोक जय, निह् व्यापक वरते सुखित; ज्ञानी निःशंक निष्क खंक निज ज्ञानरूप निर्खंतनित ॥ १०॥

श्रयं:— ज्ञान चक्र के० ज्ञान विस्तार तेतो ममलोक के० मारो लोक हे, महारो प्र चार हे, तेने प्रत्यक्त जोवो, श्रने मोक्त सुख बन्ने रूप हे, श्रने इतर लोक के० तेवि ना श्रन्य लोक ते मारो नथी, महारो ज्ञान लोक मारी साथे हे, जेनेविषे दोष डुःख नथी. परलोकमां सुगतिनुं देनार पुष्य हे, श्रने परलोकमां कुगतिनुं श्रापनार पाप हे. ए वे पुष्य पाप श्रात्मानी खंडनानी खाणी हे. श्रने हुं श्रखंडित रूप हु. शिवना यक के० सिद्धरूपी हुं एवा विचारथी परलोक जय व्यापेनही; श्रने सुखित के० सदा सुखवंत वर्त्तं; ए प्रमाणे परलोक जय हांकिने ज्ञानी पुरुष निशंक थको निष्कलंक एवं जे निजज्ञानरूप तेने सदा निरखे॥ १०॥

हवे मरणजय निवारणनो मंत्र कहे हे: अथ मरन जय निवारण मंत्र:-

॥ वृष्य वंदः॥- फरस जीज नाशिका, नैन श्ररु श्रवन श्रक् इति; मन वच तन बल तीन, सास वस्सास श्राव थिति; ए दस प्राणविनाश, ताहि जग मरण कहीजे;

ज्ञान प्राण संयुक्त, जीव तिहु काल न छीजे; यह चित करत निह मरण जय, नय प्र माण जिनवर कथित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंतनित.॥ १ए॥

श्रर्थः स्पर्श, रसना, घाण, चक्क, श्रोत्र, ए पांचे इंडिय; मनोबल, वचनबल, ने कायबल ए त्रण, श्वासोश्वास, श्रायुस्थिति, ए दश प्राण श्रादिनो विनाश थाय, तेने जगत्मां मरणजय कहे हे, पण जीव पदार्थ हे ते ज्ञानरूपी जाव प्राण संयुक्त हे, तेतो जीवने ज्ञान प्राण त्रणे कालनेविषे त्रूटे नही, एवो विचार मनमां करवाथी मरणजय छपजे नही. नय प्रमाण वडे एवं जिनेश्वरनं कथन हे, ज्ञानी लोक निःशंक पणे पोताना निष्कलंक स्वरूप ज्ञानरूपने सदा निरंतर निरखत के० सत्यपणे जुए हे॥१ए॥

हवे वेदना जय निवारणरूप मंत्र कहे हे:-श्रथ वेदना जय निवारण मंत्र:-

॥ छप्पय ढंद॥ - वेदनवारो जीव, जांहि वेदंत सोछ जिय; यह वेदना श्रजंग, सुतो मम श्रंग नांहि व्यय; करम वेदना द्विविध, एक सुखसमय द्वतीय द्वख; दोऊ मोह विकार, पुजलाकार बहिरमुख; जब यह विवेक मनमहिं धरत, तब न वेदना जय विदित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥ ३०॥

श्रर्थः—वेदनावारो एटखे जाणनारो तेतो जीव हे, श्रने जेने जाण हुं हे, तेपण जीवज हे, एटखे वेदनावंत ते ज्ञानी जीवए ज्ञानरूप वेदन जे श्रजंग रूप हे तेतो मारं श्रंग हे, श्रने कर्म वेदना जे हे ते मारी नथी. श्रने ते कर्मरूप वेदना वे प्रकारनी हे, एक सुखमय वेदना ने बीजी छु:खमय वेदना हे, ए वेह मोह विकार हे, एवी सुख छु:खनी वेदना पुजलाकार हे, पुजलनी हाया बाह्यरूप हे, ज्यारे एवो विवेक विचार मनमां धरे हे, त्यारे वेदनानो जय वेदी शकातो नथी. ज्ञानी लोक होय तेतो वेदनाना जयथी निःशंक रहे श्रने निष्कलंक एवं पोतानुं ज्ञान स्वरूप तेने सदा जोता रहे ॥ ३०॥

हवे श्रनरक्ताजय निवारणरूप मंत्र कहे हे:-श्रथ श्रनरहा जय निवारण मंत्र:॥ हप्य हंदः॥ - जो स्ववस्तु सत्ता सरूप जगमिह त्रिकाल गतः; तास विनास न हो इ सहज निहचे प्रमाण मतः सो मम श्रातम दरव, सरवया निह सहायधरः तिहि कारन रष्ठक न, हो इ जष्ठक न को इ परः जब यहि प्रकार निरधार किय, तब श्रन रहा जय निसतः इति निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित ॥ ३१ ॥

श्रर्थः—स्ववस्तु के० निजन्नात्मरूप वस्तु; सत्तास्वरूप के० ड्रव्यपणे वतुं कहेवा य ते जगत्मां त्रणे कालनेविषे पामिये, तेनो क्यारे पण विनाश नथी थतो, एवुं स इज स्वरूप निश्चयनयना प्रमाणविडे जाणवुं; एज मारुं श्चात्मड्रव्य जे वे, तेतो सर्वथा प्रकारे कोईनो सहाय धरतुं नथी, तेमाटे ए श्चात्मड्रव्यनो कोई रक्तक नथी. तेमज कोईपर के बीजो एनो जक्तक पण नथी. जेवारे एवो विचार हृदयमां नकी करी राखे, त्यारे स्थनरक्ता जय नाश पामे, एवा झानी होय ते स्थनरक्ता जयस्री निःशंक स्थका पोताना निष्कलंक झानस्वरूपने सदा निरखे हे. ॥ ३१ ॥

हवे चौरत्रय निवारण रूप मंत्र कहे हे:-श्रथ चौरत्रय, निवारनमंत्र:-

॥ उपय उंदः॥ परम रूप परतञ्च, जासु लञ्चन चिन् मंिन, पर प्रवेश तहाँ नांहि महि माहिं श्रगम श्रखंकित; सो मम रूप श्रन्प, श्रकृत श्रमित श्रखूट धन; तांहि चोर किम गहै, ठोर निह लहे श्रीर जन; चितवंत एम धिर ध्यान जब, तब श्रगुप्त जय उपसमित; ज्ञानी निसंक निकलंक निज, ज्ञानरूप निरखंत नित. ॥ ३१॥

श्रर्थः—जे परम स्वरूप कहेवाय हे, श्रने मान सन्मानवडे प्रत्यक्त हे, चिन्मंित के चिन्मय एवं जेनुं लक्षण हे, श्रने जेना स्वरूपनेविषे परस्वरूपनो प्रवेश नश्री; महीमांहि के पृथ्वीना वचमां श्रगम्य हे, श्रने श्रखंडित हे, एवं तो श्रन्पम मारं रूप हे, ते कोईनुं कीधे हुं नश्री, श्रमित के प्रमाणविना, एवे श्रखूट धन हे, ते धनने चोर केम हरी शके ? श्रने श्रीर के बीजा कोई लोक तेनी जगा पामी शके नहीं, ज्यारे ध्यान धरीने एवं चिंतवन करे त्यारे श्रगुप्त जय के ज्याडा धननो जे जय ते जपश्मी जाय श्रने एवा झानी होय ते श्रगुप्त जयश्री निःशंक श्रका पोताना निष्कलंक झान स्वरूपने सदा निरखता रहे हे ॥ ३१॥

हवे श्रकस्मात्त्रय निवारण रूप मंत्र कहे छे: —श्रथ श्रकस्मात्त्रय निवारण मंत्रः—॥ छप्पय छंदः॥ —श्रुद्ध श्रुद्ध श्रविरुद्ध, सहज सु समृद्ध सिद्ध समः श्रवस्य श्रमादि श्रमंत, श्रतुल श्रविचल सरूप ममः चिद विलास परगास, वीत विकलप सुख श्रामकः जहाँ छिविधा निह को इ. हो इतहाँ कत्नु न श्रचानकः जब यह विचार छपजंत तब, श्रकस्मात जय निह छितः इति। निसंक निकलंक निज, इति रूप निरखंत नितः ॥ ३३॥

श्रर्थः—जे वस्तु शुद्ध हे, केवल पोताना स्वरूपने विषेज हे, बुद्ध के॰ ज्ञानमय हे, श्रविरोधी हे, सिद्धसमान इद्धिवंत हे, श्रवद्ध हे, श्रादिरहित हे, श्रने श्रंत रहित हे, जेनी तुलना कोईश्री न थाय माटे श्रतुल हे, एवं श्रविचल मारुं रूप हे. चिद्विलास के॰ ज्ञानविलासनो जेने प्रकाश हे. वीतविकलप के॰ श्रवस्था जेद रहित हे, श्रने समाधि सुखनुं थानक हे. ज्यां कोई विजातीय न पामिये त्यां कोई श्रणचिंतहयो श्रचानक जय शोक कांई छपजे नहीं, श्रावो विवेकविचार हदया मां ज्यारे छपजे हे, त्यारे श्रस्कमात् जय जे हे, ते छदय थतो नशी. जे ज्ञानी हो

य वे ते श्रकस्मात् जयश्री निःशंक श्रको पोताना निष्कलंक ज्ञान स्वरूपने सदा जोता रहेवे ॥ ३३॥

हवे निर्जराना करनार ज्ञानीनी व्यवस्था कहे हे:- श्रथ ज्ञानी व्यवस्था कथनं:-

॥ उपय वंदः॥—जो परगुन त्यागंत, शुद्ध निजगुन गहंत धुवः विमल ज्ञान श्रंकूरा जासु घट मिंह प्रकास हुवः जो पूरव कृतकर्म, निर्जरा धार वहावतः जो नव बंध निरोध, मोक्त मारग मुख धावतः निःसंकतादि जस श्रष्ट गुन, श्रष्ट कर्म श्रिर संहर तः सो पुरुष विचन्नन तासु पद, बनारसी बंदन करतः ॥ ३४॥

श्रर्थः— जे कोई पुजलादि गुणनो त्याग करे, श्रने भ्रुव के० निश्चयरूप एवा ग्रुद्ध पोताना ग्रुणनुं यहण करे; निर्मल ज्ञाननो श्रंकुर के० उदय जेना घटमां प्रकाशित थयो, श्रने जे पूर्वकृत कर्मने निर्जरानी धार के० श्रेणिविषे वहावि दिये वली जे नवा बंधनो निरोध करीने एटले निराश्रव श्र्वेन मोक्तमार्गने सन्मुख दोडेंग्ने; ग्रुण श्रेणिमां दोडेंग्ने, निशंकित प्रमुख जेना श्राग्न ग्रुण ग्रे, ते श्राग्ने कर्मरूप शत्रुनो संहार करे, तेज विचक्तण पुरुष कहेवाय, श्रने तेना चरणकमलने वणारसीदास वंदन करेग्ने ॥ ३४ ॥ हवे श्राग्न श्रंगनां नाम कहेग्ने— श्रथ श्रष्टांगके नाम कथनंः—

॥ सोरगः॥- प्रथम निसंसैजानि, जितिय श्रवंगित परिनमनः तृतिय श्रंग श्रिग लान, निर्मेल दृष्टि चतुर्थ गुन ॥ ३५ ॥ पंच श्रकथ परदोष, थिरी करन वृत्रम सहज सत्तम वञ्चल पोष, श्रुठम श्रंग प्रजावन. ॥ ३६ ॥

श्रर्थः- पेक्षं निःसंशय के० निःशंकित, बीजुं समिकतनो गुण जे श्रवांठक पणारूप मननो परिणाम, त्रीजु श्रंग श्रग्लान, चोशुं गुण निर्मेल दृष्टि एटले मूढ दृष्टि नही ते ॥ ३५ ॥ पांचमुं परदोष श्रकथन, ठठुं श्रंग समिकत स्थिर करवाना खजावरूप, सा तमुं सर्व साथे वाठलपणुं श्रध्यात्मक पोषक, श्रने श्राठमुं श्रंग प्रजावना गुणरूप॥३६॥ हवे श्रंगनां लक्षण कहे ठेः- श्रथ श्रंग लक्षणं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— धर्ममें न संसै ग्रुजकर्म फलकी न इन्ना, श्रग्जजको देखि न गिलानि श्राने चित्तमें; साचि दृष्टि राखे काहू प्रानीको न दोष जाखे, चंचलता जानि थिति ठाने बोध चित्तमें; प्यारे निजरूपसों जठाइके तरंग जठे, एह श्राठो श्रंग जब जागे समिकतमें; तांहि समिकतकों धरे सो समिकतवंत, वहे मोषपावे जन श्रावे फिर इतमें ॥ ३७ ॥

पुनः- धर्मनेविषे संदेह नहोय ते निःशंकित ग्रण, ग्रुज कर्मना फलनी इन्ना न होय ते निस्पृही ग्रण, श्रनिष्ट वस्तुने जोइने चित्तमा ग्लानी न लाववी ते श्रग्लान ग्रण, कोईना मगाव्यामगवुं नही ने साचनेविषे दृष्टि राख्नि ते श्रमूढ दृष्टिगुण, कोई प्राणीनो दोष कहेवो नही ते दोषाकथन गुण; चंचलता त्यागीने ज्ञानरूप चित्तनेविषे स्थिरता राख्नि ते थिरीकरण गुण;श्रात्म खरूपमां प्रेम राख्ने ते वठल गुण;श्राने श्रात्मस्वरूप साध ननेविषे उज्ञाह लहरी के० तरंग उठवापणुं लीधुं रहे ते प्रजावना गुण, एम एक समिकतना श्राठे श्रंग ज्यारे जागे, श्रने ते श्राठ गुणे सहित सम्यक्त धारण करे, ते समिकतवंत केहेवाय ने तेवाज समिकती मोक्त पामे, ने फरीथी श्रा संसारमां श्रावे नही

हवे निर्जराधारी चैतन्यनुं नाटक कहे हे: - अथ चैतन्य नाटक कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥—पूर्व बंध नासे सोतो संगित कला प्रकारो, नव बंध रुंधी ताल तोरत उठिरके; निसंकित खादि खष्टखंग संग सखा जोरी, समता खलाप चारि करे सुख जरिके; निरजरा नाद गाजे ध्यान मिरिदंग वाजे, ठक्यो महानंदमें समाधि रीिफ करिके; सत्तारंग जूमिमें मुकत जयो तिहू काल, नाचे शुद्ध दृष्टि नट ज्ञान खांगधरिके ३०

श्रयः — जेम पूर्वकालने विषे जक्तृष्ट स्थिति थकी बंध करतो हतो तेवी रीते न करतां श्रमुक्तृष्ट स्थिति थकी करवो एम पूर्व बंध नासे, तेतो संगित कला श्रालापचारी प्रकारों, श्रमे नवा बंधने रोधवुं ते रूपताल उठले हे, तालतोरे हे, निःशंकित प्रमुख जे समकितनां श्राह्य श्रंग कह्यां, ते सहाय जो नी समता समाधि धारी तङ्क्षप खर बांधीने श्रालाप करे हे, श्रंही कर्मनी निर्जरा हेतु हे, एटले कर्मनाश करवारूप कार्यमुं निर्जरा कारण हे, ते ध्यानने विषे एक खरूपनाद गाजे हे, श्रमे "सोहं" ध्विन हे तेरूप मृदंग वाजे हे, श्रंही जे महानंदमय थईने हाक्यो तेतो सुखी थयो, ते जाणिये रीज थई, ने पोतानी श्रात्मसत्ता तेज कोई रंगजूमि हे एटले रंग मंडप थयो, तेने विषे त्रणे का लमां शुद्ध हिसहित ज्ञानरूप वेष स्वांग पहेरी धरीने नटरूप चैतन्य मुक्त थइने नाचे हे

॥ इतिश्री समयसार नाटकविषे बाबबोधरूप निर्जराद्वार सप्तम संपूर्ण.॥

॥ दोहाः ॥– कही निर्जराकी कथा, शिवपथ साधनहारः श्रब कतु बंध प्रवंधको, कहुं श्रहप विस्तार ॥ ३ए ॥

अर्थः-मोक्त मार्गनी साधनकार जे निर्जरा तेनी कथा हती ते कही, हवे जे बंध याय वे तेना अधिकारनो अष्टप विचार कहेवे॥ ३ए॥

हवे बंध जे हे ते हांडवा योग्य हे, माटे ते बंधनो विदारणहार जे समिकत तेने नमस्कार करेहे:-श्रथ बंध विदारन सम्यक्त वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥—मोइ मद पाई जिन संसारी विकल कीने, याहिते श्रजा नुबाहु विरद वहतु है; ऐसो बंध वीर विकराल महाजाल सम, ज्ञान मंद करे चंद राहु ज्यों गहतु है; ताको बल जंजिबेकों घटमे प्रगट जयो, जस्त जदार जाको उदेस महतु है; सो है समकित सूर आनंद अंकूर ताही, निरखी बनारसी नमो नमो कहतु है. ॥ ४० ॥

श्रर्थः—जे बंधरूप सुजट वे ते मोहरूप मिरा पाईने सर्व संसारी जीवने विकल करें हो, एथी ए बंधरूप वीर वे ते श्रजानुबाहुनुं बीरुद कहावे वे के पार्वजोम थई र हेला वे, एवो विकराल ए बंधरूप वीर सुजट वे, वली ए महाजाल समान वे श्रने एज झान प्रकाशनें मंद करें वे, कोनी पे वे ? जेम राहु चंडने मंद करें वे, तेनी पवे जाणी खें बुं. हवे एवा बंधरूप वीरनो प्रतिपद्धी जे वे, ते एनुं बल तोमवाने घटने विषेज प्रगट थयो वे, जेनो उद्यम उद्धत वे, एटले कोईश्री रोक्यो रहे एवो नथी, श्रमे उ दार वे के श्रेष्ठ वे तथा महत के मोटो वे, तेतो समिकतरूप श्रुर्वीर जाणवो ते श्रानंद श्रंकर लईने उदय थयो वे, ते सम्यक्त श्रूर्वीरने जोईने पोताना श्रंग उल्ला सित थको बनारसीदास नमो नमो कहे वे. ॥ ४०॥

हवे चेतनाविना कर्म बंध नथी यतां, माटे ज्ञानचेतना तथा कर्म चेतना ए बे जनी समज पाडेहे:-श्रथ कर्मचेतना ज्ञानचेतना वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः—जहां परमातम कलाको परगास तहां, धरम धरामें सत्य सूरजको धूप है; जहां ग्रुज श्रग्जज करमको गढाश तहां; मोहके विलासमें महा श्रं धेर कूप है; फेल्ली फिरै ठटासी घटासी घट घन बीच, चेतनाकी चेतना इहोंघा ग्रपचूप है; बुद्धिसों न गही जाय वेनसों न कही जाय, पानीकी तरंग जैसे पानीते ग्रमुप है।॥४१॥

श्रर्थः—जे चेतनामां परमात्मानी कलानो प्रकाश थाय हे, ते धर्म धरती हे. ते धर तीमां सत्यरूप सूर्यनो तमको हे, एटले छजली जगा हे. बली जे चेतनाने विषे झुज श्रम्र कर्मना रसनी गढाश हे, एटले झुजा इप कर्मना रस वहे जे चेतना घोला रही हे, त्यां मोहराजा विलास करे हे, तेतो घोर श्रंधकार हे, ए रीते चेतन पुरु पनी जे चेतना के पंका हे, तेतो घटाघन बीच के शरीररूप मेघवचे हटानी माफक फेली रही हे, श्रने घटानी माफक फेली थरी है, श्रने घटानी माफक फेली थरी करे है, श्रने ए चेतना ते पर मात्मानी कलाना प्रकाशमां तथा मोह विलासमां ए बेंड तरफ ग्रपचुप हे, एटले चुप शर्थ रही हे; एवी ए चेतना वे तरफ प्रवेश करे हे, ए वात बुद्धिश्री प्रहण थाय है; पण वचनश्री कही जाय एवी नथी, जेम पाणीना तरंग पाणीमां ग्रमुप्य हे तेम चेतना बेंड तरफ ग्रमुप्य है. ॥ ४१ ॥

हवे बंध द्वारनेविषे बंधनो हेतु कहे हे:- अय बंधनिदान कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— कर्मजाल वर्गनासों जगमें न बंधे जीव, बंधे न कदापि मन वच काय जोगसों; चेतन अचेतनकी हिंसासों न बंधे जीव, बंधे न अलख पंचिवेषे विखरोगसों; कर्मसों श्रवंध सिद्ध जोगसों श्रवंध जिन हिंसासों श्रवंध साधु ज्ञाता विषे जोगसों; इत्यादिक वस्तुके मिलापसों न बंधे जीव, बंधे एक रागादि श्रद्धाद्ध जपजोगसों ॥ ४१ ॥

श्रर्थः – कोई कहे वे के कर्मजाल वर्गणा थकी जगत्मां जीव वंधाय वे, ते वात खोटी एटले कर्म वर्गणा जीवना बंधनो हेतु नथी, एवी रीते कदाचित् मनवचन का याना योगथी पण जीव वंधातो नथी; चेतन तथा श्रचेतननी हिंसाथकी पण जीवने वंध थतो नथी. श्रलक्त पति वे, तथा श्रलक्तरूपी वे; ते पंचेंद्रियना विषयरूप विष रोग वर्म पण वंधातो नथी. कर्म वर्गणाथी सिद्धना जीव वंधाता नथी; वली जिनेश्वर देव वे तेतो त्रणे योगमां वे तोपण श्रवंध वे; साधुजेवे, ते श्रवाचोगपणे हिंसा करे वे, तोपण श्रवंध वे; क्षाता विषय जोगवेवे, तो पण ते श्रवंध वे. ए रीते कर्म व र्गणा प्रमुख वस्तुना मिलापथी जीववंधातो नथी. पण मात्र एक राग देषने मोह श्रवे जीव वंधरूप श्रद्धाद्ध उपयोगथीज जीव वंधाय वे॥ ४१॥

हवे राग द्वेष श्रने मोहनेज दृढपणे बंधना हेतु ठरावे है:-श्रथ बंधनिदानदृष्टि करन व्यवस्था:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कर्मजाल वर्गनाको वास लोकाकाश माहिं, मन वच का याको निवास गति खाडमें; चेतन खचेतनकी हिंसा वसे पुजलमें, विषे जोग वरते उदेके उरजाउमें; रागादिक शुद्धता खशुद्धता है खलखकी; यहे उपादान हेतुबंधके ब ढाडमें;याहिते विचठन खबंध कह्यो तिहूं काल, राग दोष मोहनादि सम्यक् सुजाउमें. ४३

अर्थ: – कम जाल वर्गणानो वास तो लोकाकाशमांज हे, केवल कम वर्गणा कार ण यकीज जो अमूर्ति चेतन इन्य बंधजावने पामे, तो लोकाकाशनो बंध केम नही याय? तेमज मन वचन अने कायाना योगनो वास तो चारे गतिनेविषे हे, अने चारे आज्ञषामां हे, त्यारे योग ते आत्माना बंधना हेतु केम थाय? चेतननां प्राण हरणथी हिंसा थाय हे; ते पुजल बंधरूप प्राणमांज हिंसा थाय हे, एमज अचेतननी हिंसा पण पुजलमां हे, ते आत्मासाथे स्पर्शती नथी, तो बंध केम थाय? अने विषय जोग जे वरते हे, तेतो कर्मना छदयमां हे, अरुजी रह्या हे, अने आत्मा तो तेथी निरालो हे, ते बंधाय केम? माटे राग देषने मोहथकी जेशुद्धता के मुग्धता थाय ने परवस्तु ने पोतानी करी मानवी ते अलल पुरुषनी अशुद्धता हे. अने एज अशुद्धता बंधने वधारे हे, ए माटे विचक्षण पुरुषने त्रण कालविषे अबंध कह्यो; केमके, तेने सम्यक् स्वजावमां राग देष अने मोह नथी. ॥ ४३॥

हवे ज्ञाताने श्रवंध कह्यो तोपण उद्यमी श्रइने किया करवी ते समकावेढे:-श्रथ उद्यम प्रशंसा:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— कर्मजाल जोग हिंसा जोगसों न बंधे पे त, थापि ज्ञाता उद्यमी बलान्यो जिन बैनमें; ज्ञानदृष्टि देतु विषे जोगनिसों हेतु दोछ, क्रिया एक खेत यो तो बने नांहि जैनमें; छद्दे बल उद्यम गहै पे फलकों न चहे, निरदे दसा न होइ हिरदेके नैनमें; श्रालस निरुद्यमकी जूमिका मिथ्यात मांहि, जहां न संजरे जीव मोहनींद सैनमें ॥ ४४ ॥

श्रर्थः जीव वे ते कदापि कर्मजाल श्री बंधाय नहीं, श्रने जोग थकी, पण बंधाय नहीं श्रने हिंसा थकी पण न बंधाय, जोगव है बंधायतोपण जिनेश्वरनाव चनथकी झाता जीवने उद्यमीज वखाणों वे झानने विषे दृष्टिपण श्रापे वे, श्रने विषय जोगमां प्यार पण राखे हे, एवी बे किया एक खेत के एक श्रात्मा विषे एक स्थानक विषे करे हे, एवं तो जैनवासीमां बने नहीं; श्रने जे झानी होय ते एट खं तो करे के जे संहनन के ल सं घयण प्रमुख कर्म नं उदय बख हे, तेथी यथायोग ते किया विषे उद्यमवंत थाय, श्रने तेना फल ने इन्हें नहीं, ने हृदय रूप नेत्रने विषे निर्देय दशावंत न थाय; श्रने श्रालस निरुद्यम तो मिथ्यात्वमांज पामिये, एश्री श्रालस ने निरुद्यमनी मिथ्यात्व सूमिका हे, जे सूमिका ने विषे जीव मोह निद्धा खेतो थको शयन दिशामां रहे हे, श्रने पोताना स्व रूपने संजारतो तथीं। ॥ ४४॥

हवे जे उदय माफक किया कही तेथी उदय बसनी व्यवस्था कहें हो:-श्रय उदे व्यवस्था वर्णनं:-

॥ दोहाः॥– जब जाको जैसे उदै, तब सो है तिहि थान; सकति मरोरे जीव की, उदै महा बखवान ॥ ४५॥

श्चर्यः — जे काखनेविषे जेनो उदय जेवो याय ते काखनेविषे ते स्थान के० ते खरू पमां जीव रहे हे; ते जीवनी शक्ति मरोडीने पोतानी शक्ति प्रगट करे, एथी कर्म उद य महा बखवान् हे ॥ ४५ ॥

हवे उदय बल उपर दृष्टांत आपैहे:- अथ उदे बल वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैसे गजराज पद्यो कर्दमके कुंडबीच उद्यम श्रहुटै न पै बू टै छुःख दंदसों; जैसे खोइ कंटककी कोससो उरज्यो मीन, चेतन श्रसाता खहै साता खहे संदसों; जैसे महाताप सिरवाहिसों गरास्यो नर, तके निजकाज उठी सके नसुठं दसों; तैसे ज्ञानवंत सब जाने न वसाईकबु, बंध्यो फिरे पूरब करम फख फंदसों. ४६ श्रर्थः—जेम हाथी कर्दमना कुंडमां पड्यो पठी तेमाथी निकलवाने उद्यम श्रहुटै के करेंग्ने, पण ते छु:खदंडथी बूटी शको नथी; जेम हृदयमां खोह कटकी केण खोढाना कांटानी श्रणीमां जरायो एवो मह बुटो थई शकतो नथी, तेथी मत्स्यनुं चेतन श्रशा ता पामे, श्रमे संद केण बुटे तो शाता खहे पण बूटे नही; वली कोई माणस ताप ज्वर श्रमे माथाना दरदथी हेरान थतो पथारीमां पनी रह्यो होय श्रमे ते मनुष्य पो ताना कार्य करवाने वास्ते त्यांथी जठवाना श्रमेक जपाय करतो जतां पोताना स्ववं दथी जठी शकतो नथी, तेमज ज्ञानवंत जीवतो सर्व हेय जपादेय जाणे जे पण कोइ पोतानुं बल चाले नही; पूर्व संचित कर्मना फलना फंदथी एटले कर्मना जदयथी बांध्यो फरे जे॥ ४६॥

हवे खालसुने निरुचमीनी जेवी खवस्थाने तेवी बतावे ने:-खथ यथावस्था वर्ननं:॥ चौपाई:॥- जे जिय मोहनींदमें सोवे, ते खालसु निरुचमि होवे; दृष्टिखोलिजे जगे प्रवीना; तिन्हि खालस तजि जचम कीना ॥ ४९ ॥

श्रर्थः— जे जीव मोहरूप निद्रानेविषे सुइ रह्या हे, ते जीवने श्रावसु कहीए ने तेज निरुद्यमी कहेवाय. श्रने जे प्रवीण जीव ज्ञान दृष्टि खोसी जाएत हे, ते श्रावस त जीने जद्यम करे हे ॥ ४७॥

हवे छालसु ने उद्यमीनी क्रियानुं वर्णन करे हे:- ष्ठाय यथावस्थातथा क्रिया कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— काच बांधे सिरसों सुमनी बांधे पायनिसों, जाने न गवार कैसी मनी कैसो काच है; योंही मूढ जूठमें मगन जूठहिकों दोरे, जूठ बात माने पे न जाने कहा साच है; मनीकों परिख जाने जोहरी जगत मांहि, साचकी समुफी इान खोचनकी जाच है; जहांको जु वासी सो तो तहांको मरम जाने, जाको जैसो स्वांग ताको तैसेरूप नाच है ॥ ४०॥

श्रर्थः— काचने माथा जपर बांधे श्रने मिणने पगे बांधे, एवा गमार खोकने खबर नथी होती के काच शी वस्तु हे, श्रने मिण शी वस्तु हे? एम मृह श्रक्तानी जीव जूही वातमां मग्न रहे, जुहा कार्यमां दोड़े, श्रने जूही वात माने, पण एम न जाणे के एमां साच केट छुं हे ? मिण रलनी तो जे जवेरी होय तेज जगत्मां परीक्ता करी शके, ते मज साचानी समज पण तेनेज पड़े, जेने ज्ञानरूपी खोचननी उत्पत्ति शई होय ? के मके, जे ज्यांनो वासी होय ते त्यांनो मरम जाणे, एट खे मिण्यात्व जूमिकानो वासी मिण्यात्वनेज शहे श्रने सम्यक्त्व जूमिकानो वासी ते समिकतनेज साचुं माने, मतलब जे जेवो वेष धरी श्रावे ते तेवोज नाच नाचेहे. ॥ ४०॥

हवे जे जेवी कियाकरे ते तेवुं फल पामे ते कहे हे:- अथ यथा किया तथा फलकथनं:-

॥ दोहाः ॥– बंध बंधावे श्रंध व्है, श्रावसी श्रजान; मुक्ति हेतु करनी करे, ते नर जद्यमवान ॥ ४ए॥

श्रर्थः - जे जाव श्रंध थईने बंधने वधारे, ते श्रजाण श्रावसु कहेवाय वे श्रने जे मुक्ति हेतुने श्रर्थे किया करेवे, ते मनुष्य उद्यमवंत कहेवाय वे ॥ ४ए॥

हवे जो ज्ञान होय तो वैराग्यपण होय छने जो वैराग्य न होयतो ज्ञान पण न होय, तेथी ज्ञान वैराग्यनुं सहचारिपणुं:-अधज्ञानवैराग्य सहचारित्ववर्णनं:- कहे हे.

॥ संवैया इकतीसाः॥— जब लगु जीव शुद्ध वस्तुकों विचारे ध्यावै, तबलगु जोगसों जदासी सरबंग हैं; जोगमें मगन तब झानकी जगन नाहिं, जोग श्रजिलाषकी दशा मिध्यात श्रंग है; तातें विषे जोगमें मगन सो मिध्याति जीव, जोगसों जदासि सो समिकिति श्रजंग है; ऐसी जानि जोगसों जदासि वहें मुगति सांधे, यह मन चंगतों कठोत मांहि गंग है. ॥ ५०॥

श्रर्थः— ज्यांसुधी जीव शुद्ध वस्तुना विचारमां दोमतो होय, ज्यांसुधी सर्व श्रं गनेविषे जोगथी उदासीनपणुं जोवामां श्रावे; श्रने ज्यारे जोगमां मगन रेहेतो होय, त्यारे तो ज्ञाननी जगन के॰ जाएती न होय, केमके जोग श्रजिलाषनी दशामां वर्त्त वुं तेतो मिथ्यात्वनुं श्रंग हे, तेथी विषयजोगमां मगन रहे ते जीव मिथ्यातनुं श्रंग हे, तेथी विषयजोगमां मगन रहे ते जीव मिथ्यात्वी कहेवाय, श्रने जे विषय जोगथी ज दासी रहे ते तो श्रजंग समिकती हे एवं जाणीने श्रहो ! जव्यलोको ! जोगथी जदास श्रई, ने मुक्तिने साधो. ते जपर दृष्टांत कहे हे के, जेनुं मन चंगुहे तेने कथरोटमांज गंगा हे, मतलब के कथरोटमां नातां श्रका गंगा स्नाननुं फल ते पामेहे. ॥ ५०॥

इवे मोक्तना अधिकारनेविषे चार पदार्थनुं खरूप कहे हे:-

श्रय पदार्थ चतुष्क कथनं:-

॥ दोहाः॥– धरम श्ररथ श्ररु काम सिव, पुरुषारथ चतुरंगः कुधी कलपना गहिः रहे, सुधी गहे सरवंग ॥ ५१ ॥

अर्थः धर्म, अर्थ, काम, ने मोक्त, पुरुषार्थना ए चार अंग हे, ए पुरुषार्थ विषे कुधी के कुमतिवालो पोतानी मित कल्पनाने जालीने वेसे हे, अने सुधी के पंकित पुरुष है ते सर्वागनुं ग्रहण करे हे.॥ ५१॥

हवे चारे पदार्थनी न्यारी न्यारी व्यवस्था सुमित अने कुमितनामन आश्री कहे हे:- अथ पदार्थ व्यवस्था कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥- कुलको श्राचार ताहि मूरल धरम कहै, पंिमत धरम कहै वस्तु के सुजाउकों; खेहको खजानो ताहि श्रज्ञानी श्ररथ कहै, ज्ञानी कहै श्ररथ दरवदरसा जकों; दंपतिको जोग ताहि पुरबुद्धि काम कहै, सुधीकामकहे श्रजिलाष चित श्राजकों; इंद्रलोक थानकों श्रजान लोक कहें मोक्त,मतिमान मोक्त कहें बंधके श्रजाजकों ॥५१॥

श्रर्थ:— जे मूर्ख जन होय ते पोताना कुलना श्राचारने धर्म कहै हे, श्रने पंितत जन तो वस्तुना स्वजावने धर्म कहे हे, श्रक्तानी जन होय ते खेहना खजाना जे सोनुं रुपुं जवाहिर वगेरे हे तेने श्रर्थ केण इत्य कि बतावे हे, श्रने ज्ञानी जन होय ते इत्यना दरशावने श्रर्थ कहे हे; एटले पट्डियने श्रर्थ कहे हे छुर्बुक्त जन स्त्री जर तारना जोग संयोगने काम कहे हे, पण सुधी केण पंितत जन तो चित्तनी इहा श्र जिलापने काम कहे हे, श्रने जे इंड्र इंस्थानक हे, तेने श्रजाण लोक मोक्त कहे हे, श्रने जे मितमान एटले पंितत लोक हे तेतो जेथकी बंधनो श्रजाव थाय हे, तेने ए टले बंधना नाशने मोक्त कहे हे॥ ए१॥

हवे चारे पुरुषार्थने अध्यातमरूप कहे हे:-श्रथ पुरुषार्थ चतुष्क अध्यातमरूपकथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥—धरमको साधन जु वस्तुको सुजान साधे, श्रायको साधन विलब दर्व षटमें; यहै काम साधना जु संगहै निरास पद, सहज स्वरूप मोष सुद्ध ता प्रगटमें; श्रंतर सुदृष्टिसों निरंतर विलोके बुध, धरम श्राय काम प्रोत्न निजघटमें; साधन श्राराधनकी सोंज रहे जाके संग, जूलो फिरे मूरख मिथ्यातकी श्रलटमें ॥५३॥

श्रर्थः— धर्मनुं साधन तो तेने कहीये के जे वस्तुना खजावने साधवो एटले वस्तु ना स्वजावने यथार्थ जाणवो; श्रर्थनुं साधन तेने कहीये के जे षट्ट प्रव्यने विलक्षण के० जुदां जुदां जाणवां; काम साधन तेनुं नाम वे के, जे निरास पदनो संग्रह करवो, एटले निस्पृह दशामां रहेवुं; मोक्तनुं साधन ते वे, के जेवने पोतानी सहज स्वरूप शु कता प्रगट जावमां करवी; ए रीते श्रंतर्दृष्टि वहे एटले ज्ञान दृष्टि थकी बुद्धिमान पुरुष धर्म, श्रर्थ, काम ने मोक्त ए चार पुरुषार्थने निरंतर पोताना घटमां देखे; एम चारे पुरुषार्थ साधवानी जेना संघाते सोंज के० सामग्री रहे वे, तोपण मूर्ल जे वे ते मिथ्यातनी श्रटलमां जूल्या फिरे वे ॥ ५३॥

इवे शुक्क व्यवहार नये करी वस्तुनुं सत्य स्वरूप कहेवे:-

श्रथ शुद्ध नय वस्तु स्वरूप कथनं:-

॥ सवैया एकतीसाः॥-तिहुं लोकमांहि तिहूं काल सब जीवनिको, पूरव करम उदें आइ रस देतु हैं; को उदीरघाउ धरे को उ अलपाउ मरे, को उ छली को उ सुली को उसली को समचेतु हैं; यादीमें जीवायो याहि मास्यो याहि सुली कस्यो, छली कस्यो एसी मूढ आपु मानी लेतु हैं; याही अहं बुद्धिसों न विलसे जरम मूल, यहे मिथ्या धरम करम बंध देतु हैं ॥ ५४॥

श्रयः— त्रणे लोक तथा त्रणे काल तेनेविषे जगत्वासी सर्व जीवने पूर्व संचित कर्म उदय श्रावेठे, ने ते पोतानो कडवो तथा मीठो रस श्रापेठे, तेणे करी ने कोई दीर्घ श्रायुष्य जोगवी मरेठे, ने कोई श्रव्य श्रायुष्यमांज मरेठे, कोई छुःखी ठे, श्रने कोई सुखी होयठे, कोई समचित के० सम जावमां रहेठे, एम पोत पोतानी कमाई थी सर्व जीव सुखी श्रयवा छुःखी ठे. तेने मृढ प्राणी जे ठे ते पोताना साधन माने ठे के, जो में फलाणाने जीवाड्यो, फलाणाने मारी नाख्यो, फलाणाने छुःखी कीधो, ने फलाणाने सुख श्राप्युं. एवो मृढ श्रहं बुद्धिश्री जर्ममां जुख्यो फरेठे, श्रने ए जुल एनी मटती नथी, एज मिथ्या धर्म मृढने कर्मबंधनो हेतु थाय ठे. ॥ ५४॥

हवे फरी मूढनीज व्यवस्था कहे छे:- अथ मूढता कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— जहां जातके निवासी जीव जगतमें, सबै श्रमहाको ज काहुको न धनी है; जैसी जैसी पूरव करम मत्ता बांधि जिन, तैसी तैसी उर्देभें श्रवस्था श्राइ बनी है; एते परि जो कोज कहै कि में जीवावो मारो इत्यादि श्रमें क विकलप वात धनी है, सो तो श्रहं बुद्धिसों विकल जयो तिहुं काल, मोले श्रातम संकति तिन्ह हनी है. ॥ ५५॥

श्रर्थः ज्यांसुधि जीव जगत्मां निवास करें त्यांसुधी एक बीजाने श्रसहार पणे रहें हे, कोई कोईनो सहायकारी नथी, तेम कोई कोइनो धणी नथी, श्रने जेवी जेवी पूर्व कालनेविषे कर्मसत्ता बांधी राखी हो, तेवी तेवी छदय कालनेविषे जीवनी श्रवस्था बने हे; एटला छपर जे कोई कहें के में श्राने जीवाड्यों ने श्राने मार्यों, इत्या दि श्रनेक मनना विकल्पनी वातो घणी हे, ते सघली श्रहं बुद्धि यकी थाय हे, श्रने ते जीव त्रणे कालने विषे श्रहंकार बुद्धिमां मोले हे; तेणे श्रुद्ध झानशक्तिने हणी हे श्रने ते जीवनी ए मूढ श्रवस्था कहेवाय हे ए रहस्य हे. ॥ ए६ ॥

हवे चार प्रकारे करीने जीवनी व्यवस्था उपर चार दृष्टांत श्रापेहे:-श्रथ चार प्रकार जीव व्यवस्था कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— उत्तम पुरुषकी दशा ज्यों किसमिस आख, बाहिज श्रिति तर विरागी मृड श्रंग है; मध्यम पुरुष नारीयर केसी जांति बिये, बाहिज किन हिय कोमख तरंग है; श्रथम पुरुष बदरीफल समान जाके, बाहिरसों दिसे नरमाइ दिख संग है; श्रथमसों श्रथम पुरुष पुंगीफल सम, श्रंतरंग बाहिर कठोर सरवंग है

श्रर्थः— जत्तम पुरुषनी दशा किसमिस डाक्त जेवी हे, जेम किसमिस डाक्त बें हिरथी ने श्रंदरथी कोमल हे; तेमज जत्तम पुरुष बाह्य व्यवहार श्रने श्रज्यंतर व्या हारमां पण मृष्ठ श्रंग केण कोमल हे; मध्यम पुरुष नारीयल सरीलो हे, जेम नारी ख बाह्य व्यवहारमां कठोर श्रने श्रन्यंतर कोमल हे, तेम मध्यम पुरुष पण बहारशी कठण श्रने ह्र्यामां कोमल होय हे. श्रधम पुरुष बोर समान हे; जेम बोर बाह्य व्य वहारनेविषे नरम देखाय हे, ने मांहेश्री कठोर हे, तेम श्रधम पुरुष बहार नरमाश राखे पण श्रंतरमां संग के पाषाण जेवो कठण होयहे. श्रने श्रधमाधम पुरुष पुंगी फल के सोपारी जेवोहे; जेम सोपारी बहारने श्रंदर सर्वांगमां कठोर हे, तेम श्रध माधम पुरुष मांहे श्रने बहार सबसे कठोर होय हे. ॥ ५६ ॥

हवे उत्तम पुरुषनी दशा कही बतावेठेः- श्रय उत्तम पुरुष कथनंः-

॥ सवैया इकतीसाः॥— कीचसो कनक जाके नीचसो नरेसपद, मीचसी मित्ताई ग रवाई जाके गारसी; जहरसी जोग जानि कहरसी करामित, हहरसी हैं।स पुदगब ठिव ठारसी; जाबसों जग विखास जाबसों जुवन वास, काबसों कुटंब काज बोक खाज खारसी; सीठसों सुजश जाने वीठसों वखत माने ऐसी जाकी रीति ताही वंदत वनारसी. ॥ ५७॥

श्रर्थः— जे पोताना हैयानेविषे सुवर्णने कादव सरखुं जाणे, श्रने नरेश पद के० राज्य गादीने नीच सरखी जाणे, मित्राईने मीचसी के० मरण जेवी जाणे, ने गरवाई के० वमाई ते खीपवानी गार जेवी जाणे, रसायन प्रमुख द्रव्यजोगनी जातिने जे फेर सरिखी जाणे, मंत्र शक्तिवने जे करामत थाय तेने कहर सरखी जाणे, देशी जाषाने विषे हहर के० श्रनर्थ ते सरखी होंस हे, श्रने पुद्गखनी हबी ते राख समान जाणे, माया रूप जाल तथा जगत्नो विलास तेने जाल जेवो जाणे, जुवनवास के० घरवास ने तीरना जाल समान जाणे, कुटुंब कार्यने काल समान करी जाणेहे, लोकलाज रा खबी ते मोहमानी लाल जेवी जाणे हे, सुयशने सीह के० नाकना मेल समान जाणे, जाग्यो दयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेहेए श्रार्थो दयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेहेए श्रार्थो दयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेहेए श्रार्थो दयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेहेए श्रार्थो दयने विष्टासमान जाणे, एवीजेनी रीत होय तेने बनारसीदास वंदना करेहेए श्रार्थों स्वार्थों स्वार्थो

हवे मध्यम पुरुषनी दशा बतावे हे:- श्रथ मध्यम पुरुष यथा:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— जैसे को उसुजट सुजाय ठग मूरखाय, चेरा जयो ठगनी के घेरामें रहतु हैं; ठगोरी उतिर गई तब तांहि सुधि जई, पस्चो परवस नाना संकट सहतु हैं; तैसेही श्रनादिको मिथ्याति जीव जगतमें, मोखे श्राठो जाम विसराम न गहतु हैं; क्वान कला जासी जयो श्रंतर उदासी पें तथापी उदे व्याधिसों समाधि न लहतु हैं ॥ ५०॥

श्रर्थः—जेम कोई खनावे सुन्नट होय ने तेने कोइ गम से ने ते सुन्नटने कोइ जड़ी मूसी खबरावे, तेथी ते सुन्नट गनो चेस्रो थइ जाय, श्रने गना घेरामां पड़्यो रहे, पत्नी ते सुन्नटे मूस्री खांधेस्ती तेनी श्रसर नीकस्ती जाय ने पान्नो पोतानी ग्रुद्धिमां श्रावे, तेवा

रे ते ठगने छुर्जन करी जाणे, पण पोते परवश पड्यो तेथी नाना प्रकारना संकट स हन कर्या करे हे, तेम श्रनादि कालनो मिथ्यात्वी जीव परवश पडेलो नाना प्रकारना संकट सहन करेहे, ते श्राठ प्रहर संसारमां विकल थइ ने डोले, पण विश्राम लिये नही, एटलामां क्वान कलानो जास थयो, तेवारे श्रंतरमां उदासी थयो तो पण कर्म ना उदयरूप ट्याधिवडे समाधि लेतो नथी, श्राश्रवमांज रहेहे॥ ५०॥

हवे श्रधम पुरुषनी दशा दृष्टांत दृश्ने दृढावे हेः— श्रयं श्रधम पुरुष यथाः—

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जैसें रांक पुरुषके जाये कानी कोमी धन, जलूवाके जाय. जैसे संकाई विहान है; कूकरके जाये ज्यों पिंमोर जिरवानी मठा, सूकरके जाय ज्यों पुरीष पकवान है; वायसके जाये जैसे नींबकी निंबोरी दाख, बालकके जाये दंत कथा ज्यों पुरान है; हिंसकके जाये जैसे हिंसामें धरम तैसें, मूरखके जाये सुज बंध निरवान है

श्रर्थः — जेम रांक पुरुषने काणी कोढी हो तेहीज धन मनाय हो, श्रने जेम घुवडने संध्याकाल प्रजात मनाय हो, श्रने कुकमाने पिंडोर जीरवानी के गाय जेंसनुं पाणी ते दहींनो थमो मनाय हो, श्रने सूकर के सूश्ररने पुरीष के विष्टा तेज पकान्न मना यहे श्रने कागडाने लींबोडी तेज जाहा जेवी मनाय हो, श्रने वालकने दंत कथा के लोकनी कथा है तेज पुराण मनाय हो, ने हिंसकने हिंसामांज धर्म मनाय हो, तेम ज मूर्वने पुरुषवंध ते निरवाण के मोक्षपद मनाय हो, ए श्रधम पुरुषनी दशा जाणवी.

हवे अधमाधम पुरुषनी दशा दृष्टांतेकरी दृढावेठे:-अथ अधमाधम पुरुष यथा:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कुंजरको देखि जैसे रोष करी जुंसे खान, रोष करै निधन बिलोकि धनवंतकों; रेनके जगैयाको विलोकि चोर रोष करै, मिध्यामित रोष करै सुनत सिद्धांतको, इंसकों विलोकी जैसे काग मिन रोष करे, श्रिजमानी रोष करै देख तमहंतकों; सुकविकों देखि ज्यों कुकवि मन रोष करे त्यों ही छरजन रोष करे देखि संतको

श्रर्थ:— जैम हाथी जोइने कुतरा रीशे जराईने जुंके हे, जैम निर्धन पुरुष धनवान में जोईने रीशे जराय हे, जेम राते जागनार पुरुषने जोईने चोर रीशे जराय हे, जेम मिथ्यात्वी सिद्धांतने शांजली रीशे जराय हे, जेम हंसने जोईने कागडो रीशे जराय हे, जेम महंतने जोईने श्रजिमानी रीश करे हे, जेम सुकवि के सारा कविने जोई में कुकवि के नहारों कवि रीशे बसे हे, तेम श्रधमाधम पुरुष साधुने जोईने छुष्ट मन वमे रीशे जराय हे. ॥ ६०॥

हवे वा श्रिथमाथम पुरुषनी चाल कहे छे:-श्रिय पुनः श्रिथमाथम पुरुष वर्णनं:॥ सवैया इकतीसाः ॥- सरलकों सठ कहै वकताकों धीठ कहै, विनो करे तासों कहै धनको श्रिथीन है; छमीको निवल कहै दमीकों श्रदत्ती कहै, मधुर वचन बोलै

तासों कहै दीन है; धरमीको दंत्री निसपृहीको ग्रमानी कहै, तिशना घटावै तासो कहै जागहीन है; जहां साधु ग्रण देखे तिन्हकों खगावै दोष, ऐसो कब्रु डर्जनको हिरदो मलीन हे.॥६१॥

श्रर्थः— सरखं चित्तवालाने शठ के० मूर्ख कहे, वक्ता के० कथा कीर्त्तन वांचनारने धीठ कहे, विनय करनारने कहे के एतो धननी श्राधीनताथी करेठे, क्तमावंतने नि वंल कहे; इंडिय दमन करनारने श्रदाता कहे, श्रने मधुर जाषण करनारने कहे एतो गरीव बीहामणो ठे, धर्मीने दंजी कहे, निस्पृहीने श्रहंकारी कहे ठे, तृष्णा ठो मनारने जाग्यहीन कहे, ज्यां एवा सरलतादिक गुण देखे त्यां द्रषण लगाडे, एवं दुर्ज ननं हृद्यं मलीन के० मेलं होय ठे. श्रने एवा दुर्जननेज श्रधमाधम पुरुषनी प्रकृति जाणवी-

हवे मिथ्यादृष्टिनी ऋहंबुद्धिनुं वर्णन करे हैं:- अथ मिथ्यादृष्टि वर्णनं:-

॥ चौपाईः॥– में करता में कीन्ही कैसी; श्रव यों करो कही जो ऐसी; ए विपरीत जाव है जामें; सो वरते मिथ्यात दसामें ॥ ६१ ॥ दोहराः– श्रहं बुद्धि मिथ्यादसा, धरे सु मिथ्यावंत; विकल जयो संसारमें, करे विलाप श्रनंतः ॥ ६३ ॥

श्रर्थः— हुं कर्त्ता हुं, श्रा वर्त्तमान कालमां केवी वात करुंहु, जिविष्य कालमां जेवी कहीश तेवी करीश, एवी श्रहं बुद्धि ए विपरीत जाव हे, श्रने ए जाव मिथ्यात्व दशा ना हे ॥६१॥ जे एवी श्रहंबुद्धि हे, तेज मिथ्यात्व दशा हे, श्रने ए मिथ्यात्वदशाने धारण करे, तेज मिथ्यात्वी कहेवाय हे, श्रने एवा पुरुषोज संसारनेविषे विकल श्रका संसारमां जटकता छु:ख सहता श्रनंत विलाप करेहे.॥ ६३॥

हवे मूढ प्राणीनी व्यवस्था कही देखांडे हे:- श्रय मूढ व्यवस्था कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— रिवके उदोत श्रस्तहोत दिनदिन प्रति, श्रंजुलीके जीवन ज्यों जीवन घटतु है; कालके यसत िवनिवन होत वीन तन, श्रोरके चलत मानो का वसो कटतु है; एते पिर मूरल न लोजे परमारथकों, खारथके हेतु ज्रम जारथ वट तु है; लग्यो फिरे लोगनिसों पग्यो परजोगनिसों, विषे रस जोगनिसों नेकु न हटतु है। ॥६४॥ जैसे मृग मत्त वृषादित्यकी तपितमांहि तृषावंत मृषा जल कारण श्रटतु है; तैसे जववासीमायाहीसों हित मानिमानि वानिवानि ज्रमजूमि नाटक नटतु है; श्रागेकों हुकत धाय पावे बठरा चराय, जैसे हग हीन नर जेवरी वटतु है; तैसे मूढ चेतन सु कृत करतूति करें, रोवत हसत फल खोवत खटतु है। ॥ ६५ ॥

श्रर्थः— सूर्यना जदयथी ते श्रस्तसुधीमां श्रंजिलना पाणीनी परें श्रायुष्य घटतुं जा यहे, श्रने क्रण क्रणिवेषे काल जे हे ते शरीरने प्रासेहे, तेथी शरीर क्रीण थाय हे ए रीते तन श्रीर के॰ शरीर तरफ काल प्रसी रह्योहे, एटले जेम शस्त्र कोई वस्तुने का पेठे तेम कालरूपी शस्त्र शरीरने कापेठे एवं कार्य थइ रह्युं ठे तोपण मूर्खजन जे ठे ते परमार्थने खोजतो नथी, पण पोताना खार्थने माटेज ज्रमना जारने खेंची रहेठे; लोग के॰ परवस्तु जे काम कोधादिक ते साथे लागो फिरेठे, श्रने परपुजलजोग तेथी पग्यो के॰ हिल मिल रहेठे, तेथी विषयरसने जोगवतां जरा पण हटतो नथी। ॥६४॥

वली जेम कोइ जबरों मृग होय वे ते वृषादित्य के० वृषसंक्रांतनो सूर्य एटले जेष्टमास तेना तापनेविषे श्रात तृषावंत थयो थको मृषा के० ज्वी इष्टा थकी पाणीने माटे श्राटत है के० जटके वे, तेवी रीते संसारी जीव परस्वरूप मायाजालने विषे हेत राखीने एटले तेने हितकारी मानीने श्रमरूपी श्रूमीनेविषे वराव करी नट नी पेवे नाची रह्यों वे. ते केवो वे तो के जेवो कोई हगहीन के० श्रांखविनानो पुरुष होय ने ते दोरी वाटतो होय त्यां पासे वावग्रं होय ते दोरीने चावी नाखतो होय तेने ते जाणी शकतो नथी तेथी तेनी मेहनत व्यर्थ जाय वे. तेम मृढ प्राणी जे वे ते सुकृतनी किया करेवे त्यारे रोवत हासत के० श्ररति श्रने रतियें करी किया करेवे तेथी ते करेली कियाना परम फलने खोई देयवे. ॥ ६५ ॥

हवे फरी बंधना करनार मृढ विषयिनी श्रवस्था कहे हे: श्रय मृढ विषयी वर्णनं:— ॥ सवैया इकतीसाः ॥— बिये डिढ पेच फिरे बोटन कबूतरसो, जबटो श्रनादि को न कहो सुबतु है, जाको फब डुःख ताही सातासो कहत सुख, सिहत बपटी श्रसी धारासी चटतु है; ऐसे मृढ जन निज संपती न बखे क्योही, मेरी मेरी मेरी निशिवासर रटतु है; याही ममतासों परमारथ विनसी जाइ, कांजीको फरस पाई इध ज्यों फटतु है. ॥ ६६ ॥

श्रर्थः— जेम लोटण खबुतर होय ते जो पांख बंध करीने पेच लाग्यो तेथी उलट पालट फरें हो, तेम मूढ प्राणी श्रनादि कालना कर्म बंध पेचमां पडेलो हो माटे श्रवलो मार्ग धरे हो, पण कोई रीते सवलो मार्ग धरतो नथी. श्रने जेनुं फल छुःख हे एवा विषय जोगवंड जे कंईक साता उपजे, तेने सुख माने हो, जेम कोई मधे लपेटी तरवार नी धारने चाटे, जेमां मधनी मीठाश थोमी होय ने तरवारनी धार ते मीठास चाख वा जतां जीजने हेदी नाखे तेनुं छुःख बहु थाय, तेम मूर्ख प्राणी पोतानी झानादिक संपत्तिने कदी उल्लखतो नथी, पण परवस्तुने रात दिवस मारी मारी मानी रह्यो हो, एज फूठी ममतावंड परमार्थ जाणवानो विनाश थई जायहे; जेम कांजीना पाणीना स्पर्शथी छूध फाटी जायहे, तेम ममताथी परमारथ वगडी जायहे. ॥ ६६ ॥

हवे मूढनी श्रहंबुद्धिनी वव्यवस्था कही बतावेवे:- श्रथ पुनः मुढ व्यवस्था:-॥ सवैया इकतीसाः॥-रूपकी न जांक हिये करमको मांक दिये, ज्ञान दिव रह्यो

www.jainelibrary.org

मिरगांक जैसे घनमें, लोचनकी ढांकसों न माने सदग्रह हांक, मोले पराधीन मूढरांक तिहूं पनमें; टांक इक मांसकी डलीसी तामें तीन फांक, तीनि कोसो छांक लिलिराख्यो काहु तनमें; तासों कहें नांक ताके राखिवेको करे कांक, लांकसो खरग बांधिबांक धरे मनमें.

श्रर्थः— श्रात्मानुं रूप हइयामां नथी दीतुं, तेथी कर्मनो डांक पीधो, एटले कर्मनो रस व्यापी गयो, तेणे करी श्रात्मानुं खरूप जे ग्रुक्ष ज्ञान ते दबाई रह्युं. कोनी पेते? जेम धन कहेतां मेघरुप वादलाउने विषे चंद्र ढंकाइ रहेत्वे तेम ज्ञानरुप लोचनउपर मिथ्यात्वनी ढांक पढ़ी तेथी सद्गुरुनी हांक के० श्राज्ञा तेने मानतो नथी, श्रने मूर्ख पराधीन थको रांक वचन बोलेते, श्रने त्रणे कालनेविषे निःशंक रहेते. हवे मूढता प्र गट करी बतावेते जे नाकते ते टांक के० एक मांसनी सीमरी ने तेनेविषे फांक ने ते प्रत्यक्त प्रमाणे देखिये तेयें, ते त्रण फांक केवा देखायते ते कहेते, ते जाणे त्रणनो श्रांक त्रण फांकवालो कोइए शरीरमांज लखी राख्योते, ते श्रीदारिक श्रवयवने नाक कहेते, श्रने ते नाकने राखवाने कांक के० लडाई करे ने विचारे जे मरी जईश तोष ण नाक तो रहेशे एवा विचारशी लडाई करेते खग धरेते श्रने मनमां वांक धरीज राखेते.

हवे मूहना विषय रागीपणानी दशा कहे हे:- अथ मूह विषय वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जैसे कोज क्रूकर क्रुधित सूके हाँड चावे, हामनिकी कोर चिहू जेर चुने मुखमें; गाख ताख़ रस मांस मूढिनको मांस फाटे, चाटे निज रुधिर मगन खादमुखमें; तैसे मूढ विषयी पुरुष रित रीत ठाने, तामें चित साने हित माने खेद जुखमें, देखे परतठबख हानी मख मूत खानी गहे न गिखानि पगी रहे रागरु खमें

श्रथः— जेम कोई कुतरो जिल्ला यको हामकाने चावे हे, ते हाडक सूकु होय हे, तो पण तेने चारे तरफ फेरबीने ते चाटे हे, ने तेम चाटतां तेना गाल जीज ने ता लवानी चामकी फाटे हे, श्रने तेथी लोही नीकले हे ने तेज पोताना लोहीना खाद श्री मगन थई जाय हे, तेमज जे मूढ विषयी पुरुष हे, ते रित के ही पुरुष संयोग नी रीति जे श्रृंगार रस तेनेविषे मग्न रहे हे, श्रने तेथी खेद डु:ख उपजे हे, तोप ण तेमां सुख माने हे, श्रने ते कार्यथी प्रत्यक्त पणे बलनी हानि थती जाणे हे, तथा तेने मल मूत्रनी लाण जुए हे. तेम हतां तेमां ग्लानि प्रहण करतो नथी, डुगंहा पामतो नथी, श्रने रागरूप रख के वृक्तमां मली रहेहे, तेनो शोक श्राणतो नथी, जलटो तेमां चित्त लगावी श्रानंद मानेहे. ॥ ६०॥

हवे संसारीनी विकलता कहीने साधु जननी व्यवस्था कहे हे:-श्रय संसारी तथा मुनि व्यवस्था कथनः-

॥ श्रिडिख्न ठंदः ॥- सदा करमसों जिन्न सहज चेतन कह्यो; मोह विकलता मानि

मिथ्याती व्हे रह्यो; करें विकल्प श्रमंत, श्रहंमित धारिके; सो मुनि जो थिर होइ ममत्त निवारि के ॥ ६ए॥

श्रर्थः— निश्चयनय वडे सहजरूपे चेतन हे, ते सदा कर्मथी जिन्न कह्युं हे, पण व्यवहारमां पडीने मोहनुं विकलपणुं मानीने मिथ्यामती थई रह्यों हे, तेथी मनमां श्चनंत विकल्प धरीने श्चहं बुद्धि धारी रह्यों हे, श्चने जेणे ममत्व निवारण कीधुं ने स्थिरता पाम्यों तेज साधु थयों ॥६ए॥

हवे मिथ्यात्व जावथकी व्यवहारनुं ख्रसंख्यातपणुं कहे वे:-श्रय मिथ्यात्वजाव व्यवहार एकत्व कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— श्रसंख्यात लोक परवान जो मिथ्यात जाव, तेई व्यवहार जाव केवली उकत है; जिन्हके मिथ्यात गयो सम्यक दरस जयो, ते नियत लीन वि वहारसों मुकत है; निरविकलप निरुपाधि श्रातम समाधि, साधि जे सगुन मोठ पंथ कों दुकत है, तेई जीव परम दशामें थिररूप व्है के, धरममें दुके न करमसों रुकत है.

श्रर्थः— एक खोकाकाश हे, तेनी श्रसंख्यातपणे कटपना करीयें; तेना प्रदेश श्रसंख्यात हे, ते प्रमाणेज मिथ्यात्व जाव हे. जीवना श्रध्यवसाय स्थान हे, ए व्यवहार जावे केवखीन कहे हुं हे, श्रने जेनु मिथ्यात्व गयुं, जेने सम्यक् दर्शन थयुं, जे निश्चय—खीन थयों, ते व्यवहारश्री मुक्त थाय. जेमां विकट्प नश्री ते निर्विकट्प, श्रने जेमां जपाधि नहीं ते निरुपाधि, एवी समाधिथी जे सगुण थईने एटखे ज्ञानादिकगुणमय थईने मोक्त मार्गने जुए हे, ते जीव परम दशामां स्थिर रूप थईने श्रात्मिक धर्ममां दुके पण कमिथी रोकाय नहीं। ॥ ७०॥

इवे गुरुने शिष्य प्रश्न पूठे हे:- ख्रय शिष्य प्रश्न कथनं:-

॥कवित्त ढंदः॥— जे जे मोह करमकी परिनित, बंध निदान कही तुम सब;संतत जिन्न शुद्ध चेतनसों, तिन्हिको मूल हेतु कहु अब्ब; के यह सहज जीवको कौतुक, के निमित्त है पुजल दव; शिश नवाइ शिष्य इम पूछत, कहे सुग्रह उत्तर शुनु जब।॥११॥ अर्थः— मोह कर्मनी जे जे परिणित ठे, एटले राग द्वेषादिक ठे, ते तो तमे सर्व बंधनुं निदान कह्युं, अने एतो निरंतर शुद्ध चेतन थकी जिन्न ठे, ते माटे ए बंधनो हवे मूल हेतु कहो; ए बंध थाय ठे ते शुं जीवने सहज कौतुक ठे, के एने पुजल

इंट्य निमित्त हे ते कहो एम, शिष्य माथुं नमावीने गुरुने पूहे है. हवे गुरु उत्तर आपे हे के जन्य प्राणी एनो उत्तर शांजलो॥ ११॥

श्रथ गुरु वचनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जैसे नाना वरन पुरी बनाइ दीजे हेि हे, उज्जल विमल मनु

सूरज करांति है; जजलता जासे जब वस्तुको विचार कीजे, पुरीकी जलकसों वरन जांति जांति है; तैसे जीव दरवको पुग्गल निमित्त रूप, ताकी ममता सो मोह मदि राकी मांति है; जेद ज्ञान दृष्टिसों सुजाव साधि लीजे तहां, साचि शुद्ध चेतना श्र वाची सुख शांति है. ॥ ११ ॥

श्रर्थः— जेम सूर्यकांति मणि हे तेम बीजो काहिमरी पाषाण तेवोज हे, ने ते महा हिज्यल हे, ने तेनी नीचे तहरेतहरेना रंगनी पुरी बनावी श्रापिये, त्यारे तेमां जात जातनो रंग देखाय; पण ज्यारे ते सूर्यकांति मणिना खजावनो विचार करिये,त्यारे तो तेनी कांति जे उज्यल हे, तेज मनमां श्रावे, श्रने दीहामां तो नीचेनी बनावेली रंग नी पुरणीनी जलक पडेहे तेथीज तरेहवार रंग वरण देखाय हे, ते रीते जीव इत्यनी श्रद्धा दशानुं निमित्त कारण पुजल इत्य हे, तेनी ममताथी मोहरूप मदिरानुं उन्म त्रपणुं हे श्रने ज्यारे जम चेतननी जेद ज्ञान दृष्टिवडे चेतननो खजाव साधिये, त्यारे साची शुद्ध चेतनाज जासे. श्रने श्रवाच के वचन गोचर नही, एवी रीतनी सुख शांति हे तेज जासे ॥ ११ ॥

हवे वस्तुना संयोगधी स्वजावमां जेद पडेठे, ते उपर दृष्टांत थ्यापे ठेः-ष्यथ संयोगिका खजाव वर्णनंः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— जैसे महिमंग्छमें नदीको प्रवाह एक, ताहीमें श्रनेक जांति नीरकी ढरिन है; पाथरको जोर तहां धारकी मरोरि होति, कांकरिकी खानि तहां जागकी जरिन है; पोनकी जकोर तहां चंचल तरंग उठे, जूमिकी निचानि तहां जौरकी परिन है; तैसे एक श्रातमा श्रनंत रस पुदगल, हुहूकी संयोगमें विजावकी जरिन है।॥१३॥ श्रर्थः — जेम पृथ्वी मंगल उपर नदीनो प्रवाह एकरूप ठे, श्रने तेज नदीना प्रवा

श्रर्थः — जेम पृथ्वी मंगल उपर नदीनो प्रवाह एकरूप हे, श्रने तेज नदीना प्रवा हमां पाणीनुं व्हें ब्रुं श्रनेक तरेहनुं हे, जे वेकाणे नदीना प्रवाहमां मोटा मोटा पथरा श्रावी श्रमेला होय त्यां धार मरडाईने पमे हे, श्रने ज्यां कांकरी घणी होय त्यां जा गनी जरनी केण जाग एटले पाणीना जरा जजकी उठेहे. श्रने ज्यां पवननी जकोर चालती होय त्यां चंचल तरंग उठेहे, श्रने जे वेकाणे जमीन नीची होय त्यां जोर पडेहे, वमल थायहे, तेम श्रात्मद्भव्य हे, तेने पुजल द्भव्यनो संयोग हे श्रने रस जे हेते षद्गुणी हानि वृद्धिश्री श्रनंत हे, तेनो संयोग थये श्रात्मानेविषे विजावनी जरणी थायहे.

हवे आतमा अने शरीर एक मेक बंधाई रह्यां ने पण लक्कण जेदे जुदा जुदा ने.

ते बतावे हे:- अथ आत्मशरीर लहन जिन्न कथनं:--

॥ दोहराः ॥- चेतन खन्नन स्थातमा, जम खन्नन तन जाखः; तनकी ममता त्यागि के, स्रीजें चेतन चाख ॥ ७४ ॥ श्रर्थः— श्रात्मानुं चेतन बक्तण हे. शरीरनुं जम खक्तण हे, तेथी शरीरनी ममता होडीने चेतननुं शुद्ध क्वानपणुं तेनुं यहण करी खेनुं ॥ १४ ॥

हवे निःकेवल श्रात्मानी शुद्ध चाल कहे हे:- श्रथ श्रात्मा यथा:-

॥ सवैया तेईसाः॥— जो जगकी करनी सब ठानत, जो जग जानत जोवत जोई; देह प्रमान पे देहसुँ इसरो, देह अचेतन चेतन सोई; देह धरे प्रज देहसु जिन्न, रहे पर ठन्न लखे निह कोई, लठन वेदिविचठन बूजत अठनिजों परतठ न होई. ॥७५॥

अर्थः— जे पदार्थ सर्व जगत्नी करणी करें हैं, एटले चतुर्गति गमन करें हें, अने जे जगत्ने जाणे हें, अने जोवत के देखें हें, पेताना देहने प्रमाणे हें, पण देह थी ते जुदों हें देह अचेतन पिंग हे अने आत्मा चेतनिष्म हें, देह धारी हें, प्रजु हें, पण दे हथी जिन्न हें. देहनेविषे प्रहन्न के ढंकाई रह्यों हें, एने कोइ लखतों नथी, पण एनां जे लक्षण हें तेने वेदी के जाणीने विचक्षण पुरुष एने डेलखेंहे. एवो ए आत्मा अक्ष के इंडियथी प्रत्यक्ष नथी. ॥ ७५ ॥

हवे देहनी चाली कहेते:- श्रथ देह यथा:-

॥ सवैया तेईसाः॥—देह अचेतन प्रेत दरी रज रेत जरी मल खेतकी क्यारी; व्या धिकी पोट अराधिकी उंट उपाधिकी जोट समाधिसों न्यारी; रे जिय देह करे सुख हानि इते परि तोहि तु लागत प्यारी; देह तु तोहि तजेगि निदान पि तूहि तजे क्युं न देहकि यारी ?॥ 9६॥

श्रर्थः— देह श्रचेतन हे, प्रेत दरी के॰ जमतारूप प्रेतनी गुफा हे. रज के॰ लोहि, रेत के॰ वीर्य ते यकी जरेलो हे, श्रने मलरूप खेतरनो क्यारो हे. व्याधि॰ रोगनी पोट हे, श्राराध के॰ श्रात्माने हुपावाने हैट हे श्रने हपाधिनी जोट के॰ मेलारूप हे. एने विषे श्रममाधिज रहेहे, समाधि रहेती नथी. माटे श्ररे! जीव! ए देह ते सुखनो नाश करे हे एवो हे, तोपण तने ए देह प्यारो लागे हे. श्ररे! जीव! हुं समक के ए देह नि दान तनेज तजरो पण हुं ए देहनी यारीनो त्याग करतो नथी? ॥ १६॥

॥ दोहराः ॥— सुनु प्रानी सद्गुरु कहै, देह खेहकी खानि; धरै सहज छुख दोष कों, करै मोठकी हानि ॥ ९९ ॥

श्रर्थः-सद्ग्रह कहें वे क श्ररे प्राणी! शांत्रखों देह वे ते खेह के व धुखनी खाण वे एनो सहज स्वजाव वात, पित्त, कफ रूप डुःख दोषने धरनारो वे श्रने मोक्तनी हानि करे वे. ॥ १९ ॥

हवे देहनुं वर्णन करेंग्ने:- अथ देह वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥- रेतकीसी गढी किधों मढी है मसान केसी छंदर छंधेरी

जैसी कंदरा है सेखकी; ऊपरकी चमक दमक पट जूखनकी, धोखे लागे जली जैसी कली है कनेलकी; श्रोगुनकी श्रोंमी महा जोंमी मोहकी कनोंडी, मायाकी मसूरित है मूरितहैंमें खकी; ऐसी देह याहि के सनेह याकी संगतिसों, व्हे रही हमारी मित कोलू केसेबेलकी. ॥७०॥ ठौर ठौर रकतके कुंम केसिनके छुंड हाडिनसों जरी जैसे थरी है चु रेखकी; थोरेसे धकाके लगे ऐसे फट जाइ मानो, कागदकी पुरी किधों चादर है चे खकी; सूचे जम वानि ठानि मूडिनसों पहिचानि, करें सुखहानि श्रुरुखानि बदफेल की, ऐसी देह याहि के सनेह याकी संगतिसों, व्हे रही हमारी मित कोलू केसे बेलकी.

श्रयं:— जाणे रेतीनी ढीग बांधी होय, के मसाणनी मढी एटले श्रपवित्र ठेकाणे हाम मांसनुं एक थवुं कछुं होय, वली जेनी श्रंदर सेल के० पहाडनी कंदर के० ग्रु फाजेवुं श्रंधारुं हे, एवुं श्रपवित्र देहरूप स्थानहे. ते उपरना जूषणना चमक दमकथी शोने हे;धोले के० जूहा जजकाथी देह जलो लागे हे. ते उपर दृष्टांत हे के, जेम कनेरनी किल उपरथी सुंदर देखाय हे, पण तेमां श्रंदर बिलकुल सुवास होतो नथी; तेथी उचा-टकारी लागे हे, तेम वलीदेह श्रवगुणनी ठरडी हे, महाजुंडो हे, श्रने मोहनी कनोंडी के० मोहनी काणी श्रांख हे, तेथी सूजतुं नथी, श्रने मायानी मसूरित के० मायानो समुदायहे; एवी मेलनी मूर्ति ए देह हे; एना स्नेहथी श्रने संगतथी श्रमारी मित शेलडीपीलवानुं कोव्हु तेना बलद सरखी बनी गई हे। ॥ उठ॥

वली ए देहनेविषे ठेकाणे ठेकाणे लोहीनां कुडलां ठे, ने अपवित्र केशनी फुंम ठे. तेमां हाडकां जरेलां ठे जेम चूडेल- व्यंतरीनुं स्थानकहोय तेवो ए देह ठे. थोमोधको लागवाथी ए देह फूटी जाय ठे; जेम कागलनी पुडी अने जुंनी मेली चादर ते टकोराथी फाटी जाय, तेम देह फाटी जाय ठे; एवी ए देहनी ममताथी ज्रम वाणी के० मिथ्यावाणी सुचै के० कहे, अने मूढलोक एनी पिठान राखे ठे, अने ए देह सुखनी हानिकर्ता ठे, अने बदफेलीनी खाण ठे एवा ए देहना स्नेह तथा एनी सोबत थकी अमारी बुद्धि शोलकी पीलवाना कोव्हाना बलदनी गित जेवी थई गई ठे.

हवे कोव्हुना बलदनी श्रवस्था श्रने तेनी बराबर संसारी जीवनी गति हे, एवं स्पष्ट करी बतावे हे; श्रथ कोव्हुका बैलकी श्रक संसारी जीव समानरूप कथनं:—

॥ सवैया इकतीसाः ॥— पार्टी बंधे लोचनसों संकुचे दबोचिनसों, कोचिनको सोच सोनिवेदे खेद तनको;धाइवोही धंधा श्रक्त कंधा माहि लग्यो जोत,वार वार श्रारस है काय र है मनको; जूखसहे प्यास सहे डुर्जनको त्रास सहे, थिरता न गहे न उसास लहे जिनको; पराधीन यूमे जैसो को बहु कोकमेरो बेल, तेसोइ खजाव जैया जगवासी जनको श्र्यः— जेनी श्रांख उपर पार्टी बांधी है, जे दबोच के पगथी हेल हुं, तेथी संकोचा

य ठे, श्रने परोणानी श्रारना घोंच वागे ठे, तेनी सोचनांथी शरीरने खंचवा दे नही, ने दोमतो फिरे, पोताना धंधामां धावतोज रहे, जे ने खांधे जोतर खाग्युं रहे ठे,वारंवा र जेने श्रारनो मार पडे ठे, तेजे सहन कस्यां करे, श्रनेजे मननो कायर ठे, त्रूखने पण वेठे ठे, श्रने जुजननो त्रासपण खमे ठे, श्रने स्थिरता पकमतो नथी, क्रण वार पण सुखे मोडेथी श्वास खई शकतो नथी, एरीते पराधीन थको जेम कोव्हुनो कमेरो, के० काम करनारो बखद यूमेठे, तेम जगत्वासी खोक यूमे ठे. श्रर्थात् हे! जाई!कोव्हुना बखद सरखो तेमनो पण खजाव ठे. ॥ ७० ॥

हवे जगत्वासी जीवनी व्यवस्था कहे हे:- श्रथ जगत्वासी यथा:-

॥ सबैया इकतीसाः ॥— जगतमें डोखे जगत्वासी नर रूप धरी, प्रेतकैसे दीप किधों रेत केसे धुहे है; दीसे पटजूखन आमंबरसों निके फिरे, फीके विनमांही सांजी अंबर ज्यों सुहे है; मोह के अनल दगे मायाकी मनीसों पगे दाजकी अनीसों लगे जसकेसे फुहे है, धरमकी बुकिनाहिं, रिके जरम माहि नाचि नाचि मरजाहि मरीकेसे चुहे है.

श्रर्थः— जगत्वासी जीव मनुष्यरूप धरीने मोली रह्या हे; ए केवा हे, जाणियें प्रे तना दीप हे, ते जेम जलदी मटी जाय हे, तेम ए पण समजवाः वली रेतिना धूमा हा जेवा हे, तथा वस्त्र जूषणना श्रामंबरथी शोजायमान देखाय हे, श्रने क्रणेकमां फीका यई जाय हे, जेम सांज समये श्राकाशमां वादल रंग बदले हे, तेम जाणवा. वली मोहना श्रायथी दाजे हे, ने मायानी मनी के० पोतापणुं तथी पगे के० व्यापी रह्या हे, जाणियें डाजनी श्रणीलपर लागेला पाणीना विंद्ध सरखा हे, हारना विंद्ध जेवा हे। धर्मनी जेललाण जेने नथी श्रने ज्ञमनेविषे जे श्रक्ती रह्या हे, जेम मरी जत्पादनां हं दरमां नाची नाची ने मरी जाय हे. तेम ए संसारी जीव नाचीने मरण पामेहे। ॥७१॥

हवे जगत्वासीनी मोह व्यवस्था कहे हे:- श्रथ जगत् व्यवस्था कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः— जासों तुं कहत यह संपदा हमारी सोतो, साधिन श्रमारी ऐसे जैसे नाक सिनकी; जासों तुं कहत हम पुन्य जोग पाई सोतो, नरककी साई हैवडाई देढ दिनकी; धेरा मांहि पर्यों तू विचारे सुख श्राखिन्हिको, माखिनके चूंटत मिठाई जैसे जिनकी; एते परि होहि न जदासी जगवासी जीव, जगमें श्रसाता है न साता एक जिनकी। ॥ जर ॥

श्रर्थः— श्ररे !प्राणी !जेने तुं कहें हे के श्रा मारी संपत्ति हे, तेने तो साधु खोके नाकना मेखनी जेम नाखी दीधी हे, श्रने जे बमाईने तुं कहें हे के पुष्पना जोगश्री हुं पाम्यो हुं, ते तो नरकनी सहायी हे; जे राजादिकनी साहेबी हे. ते दोम दिवसनी हे. ए परिवारना घेरामां तुं पड़्यो श्रको श्रांखनुं सुख समजे हे, पण

ते मिठाईनी ऊपर माखीनी पेठे टोखानो जणजणाट थई रहे तेम परिवारनो घेरोठे, एवं ठतां जगवासी जीव जदास थतो नथी. वास्तविक रीते तो जगत्नेविषे श्रसा ताज ठे, एक क्रणमात्र पण साता नथी. ॥ ७२ ॥

॥ दोहराः ॥– यह जगवासी यह जगत्, इनसों तोहि न काजः तेरे घटमें जग वसै, तामें तेरो राज ॥ ७३ ॥

श्रर्थः ए जे पूर्वे वखाण्या एवा जगत्वासी लोक हे, श्रने ए लोकोनो ज्यां वास हे, तेने जगत् जाणवुं, ए साथे संबंध राखवानुं तारुं काम नथी, पण तारा घटनेविषे ज जगत्नो वास हे, श्रने ते जगत्मां तारुं राज्य हे. ॥ ७३॥

हवे जे विंमे ते ब्रह्मांडे एवात साची हे, एवं सिद्ध करी आपेहे:-श्रय विंड ब्रह्मांम वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— याही नर पिंगमें विराजे त्रिज्ञवन थिति, याहिमें त्रिविध परिणाम रूप सृष्टि है; याहिमें करमकी उपाधि छःख दावानल, याहिमें समाधि सुख बारिदकी वृष्टि है; यामें करतार करतित याहिमे विज्ञति, यामें जोग याहीमें वियोग यामें वृष्टिहै, याहिमें विलास सब गर्फित गुपतरूप, ताहिकों प्रगट जाके छंतर सुदृष्टिहै.

श्रर्थः— मनुष्य पिंडनेविषे कटीनी नीचे पाताल लोकने, नाजि ते तिर्यक् लोकने, ते जपर जर्द्र लोकने, एवी त्रिज्ञवननी स्थिति जाणवी, श्रने एनेविषेज कईक परि णाम जपजे ने, ने कईक नाश पामे ने, ने कईक स्थिर ने, एवी त्रिविध सृष्टि बनी रही ने; श्रने एज पिंडमां श्रारमाने कर्मनी जपाधि वलगी ने, तेज छु: खकारी दावानल के ज्ञायानों समृह लाग्यों ने; श्रने एज पिंडमां कोईवारे समाधि सुख श्रावेने तेज वाद लनी वृष्टि जाणवी ते दावानल जपर मेघनी वृष्टि ने, एज पिंडमां कर्मनो कर्ता पुरुष ने, एज पिंडमां कर्मनो कर्ता पुरुष ने, एज पिंडमां कर्मनो कर्ता ने, ए पिंममांज विज्ञति के ज्ञानादिक संपत्ति ने, एज पिंममां कर्मनो जोग ने कर्मनो वियोग ने, श्रने एज पिंममां श्रारमानुं घृष्ट के व्यवन जे शुजाशुज ग्रणोमां घसमाई रहेवुं ते ने; ए रीते ए पिंममां गर्जित के मध्य जागमां ग्रहरूपे सर्व विलास ने. पण जेना श्रंतर्मां सुदृष्टिनो प्रकाश ने, तेने सर्व विलास प्रत्यक्तपणे जणाय ने ॥ ०४ ॥

हवे ए वातनो उपदेश गुरु कहे हे:- श्रथ गुरूपदेश कथनं:-

॥ सवेया तेईसाः॥— रे रुचिवंत पचारि कहै ग्रुरु, तुं अपनो पद बूजत नांही; खोज हिये निज चेतन खठन, है निजमें निज ग्रुफत नांही; सिद्ध सुठंद सदा अति जिल्ला मायाके फंद अरूफत नांही; तोर सरूप न छंदकि दोहिमें तोहिमंहै तुहि सूफत नांही.॥ ७५॥ श्रर्थः—पचारी के० बोलावीने गुरु कहे हे, के रे! रुचिवंत तुं पोतानुं पद के० स्थान तेने जाणतो नथी. पोतानुं चेतन लक्षण हृझ्यामां खोज. ए पोतानुं लक्षण पोताने विषे हे ते गुजत के० गुप्त नथी; तारूं लक्ष्प सिद्ध समान हे, खहंद के० निज श्राधीन हे, सदा श्रित निर्मल हे, पण मायानी जालना फंदमां पम्युं हे, तेमांथी हूटी शकतुं नथी; तारूं लक्ष्प दंद्वनेविषे नथी एटले ज्रम जालनी दिविध दशामां नथी. तारामांज हे; पण तने सूजतुं नथी. ॥ ७५ ॥

हवे ज्ञानना प्रकाश वडे ईश्वरताने पमाय ते समजावे हे:-श्रथ ज्ञान महारम्य कथनं:-

॥ सवैया तेईसाः॥-केइ जदास रहै प्रज कारन, केइ कहीं जिठ जाहि कहींके; केइ प्रनाम करें गढि मूरति, केइ पहार चढे चिंढ ठींके; केइ कहें असमान के जपिर, केइ कहें प्रज हेठि जमीके; मेरो धनी निह टूरिदशांतर मोमिह है मुहि सूजतनी के॥ ए६॥

श्रयः— कोई पोताना परमेश्वरने जेलेखवाने जदासी थई बेसी रहे हे, कोई कई केन्ननेविषे जतो रहे हे, कोई परमेश्वरनी घमेली मूर्तिने प्रणाम करे हे, कोई परमेश्वरने पामवा हीकामां बेसी पर्वत जपर चढे हे, कोई परमेश्वरने श्वास्मान जपर हे एवं कहे हे, कोई कहे हे के परमेश्वर जमीननी नीचे हे, (ए कुरानवालानी श्रद्धा हे); पण ए विषे मारो निश्चय तो ए हे के मारो धणी तो कांइ दूर देश नथी; पण माराविषेज हे. एम श्रनुत्रवथी मने सारुं मालम पडे हे. ॥ ए६ ॥

॥ दोहराः ॥– कहै सुग्रुरु जो समिकती, परम जदासी होइ; सुथिर चित्त श्रानुजी करै, यह पद परसे सोइ॥ ७७॥

श्रर्थः – सद्ग्रह कहे वे केजे समिकती होय ते परम उदासी रूप थइ चित्तने स्थिर राखीने निज श्रनुत्रव श्रज्यासथी पोताना पदने पामे ॥ ७७ ॥

हवे मननी चंचलता दर्शावी तेने स्थिर केम राखवुं ते उपदेशे ठे:-

श्रथ मन खरूप कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— विनमें प्रवीन विनहीमें मायासों महीन, विनकमें दीन विन मांहि जेसो शक्त है; बिये दोरधूप विन विनमें अनंतरूप को बाहब वानत मथानको सो तक्त है; नट को सो थार कि धों हार है रहट को सो नदी को सो जौर कि कुंजार को सो चक्त है; ऐसो मन ज्ञामक सुथिर आजु के सो हो इ, उरिह को चंचल अनादि ही को वक्त है। ॥ ०० ॥ धायो सदा काल पै न पायो कहू साचो सुख रूपसों विमुख जुख कूपवास वसा है; धरमको घाती अधरमको संघाती महा, कुराफाती जाकी सं निपातीकी सी दसा है; मायाकों जपटि गहै, कायासों खपटि रहै, जूब्यो अम जीरमें बहीरकोसो ससा है; ऐसो मन चंचल पताका कोसो अंचल सु ज्ञानके जगेसें निर वान पथ धसा है.॥ ७ए॥

श्रयं:— श्रा मन क्तणमां प्रवीण यायहे, क्तणमां मायानेविषे मसीन यायहे, क्तण मां दीन दशा धरेहे, क्तणमां शक के॰ इंद्र जेवुं बनेहे, क्तणमां दोक धाम करेहे, क्तणमां श्रनंतरूप धरे हे, जेम दहीने वसोवतां कोसाहस यायहे, तेवो कोसाहस ए मन करेहे वसी नट जे नाचनार घुमे तेवो, के श्ररहटनी मासा घुमे तेवो, के नदीनो वम स घुमेहे तेवो, श्रयवा कुंजारनुं चक फरेहे तेवो सदाकास मननो ज्ञामक स्वजाव हे. एवुं ए मन श्राज केम स्थिर याय? जाते चंचस श्रने श्रनादिकासथी वाकुं चासनारं मन हे. वसी केवुं हे? ॥ ०० ॥ हमेशा दोडतुं फरेहे, पण एने किहांय साचुं सुख प्राप्त यतुं नथी, पोताना समाधिस्रस्थी विमुख श्रयुंहे श्रने छःखरूप कूप वास मां वस्युं हे, वसी ए मन धर्मनुं घाती हे, श्रने श्रधमेनुं संघाती हे, एवुं महा कुरा फाती हे, ए मननी दशा तो जेम कोई पुरुषने सिन्नपात थयो होय तेना सरखी हे. डोह तथा वंचनाने फट प्रही सिये ने कायाना मोहश्री मन्न रहे, ने ज्ञम जासमां पनी जुहयुंज फरे जेम कटकनी जीममां ससलुं श्रावी पने ने जमतुं फरे, तेवुं मन हे. ने पताका के॰ ध्वजा तेना श्रंचस के॰ हेमानी पेहे जाणवुं. ते ज्यारे ज्ञान प्रगटे त्यारे निरवाण के॰ मोक्त मार्ग तेने विषे गमन करे एवं हे ॥ ०ए ॥

॥ दोहराः ॥— जो मन विषय कषायमें, वरते चंचल सोइ; जो मन ध्यान विचार ों, रुके सु श्रविचल होइ ॥ ए० ॥ ताते विषय कषायसों, फेरि सु मनकी वानि; ातम श्रनुजीविषे, कीजे श्रविचल श्रानि ॥ ए१ ॥

श्रथः— जो मन विषय कषायरूप राग द्वेषमां वर्ते तो चंचल जाणवुं. श्रने जो ए मन राग द्वेष ठांडो ध्यान विचारश्री रोक्युं रहे तो श्रविचल जाणवुं. ॥ ए० ॥ माटे विषय कषायमां मननी लागणी ठे तेने काढी निज ग्रुद्धात्मना श्रनुजवमां लगामीने श्रा मनने श्रविचल करियें. ॥ ए१ ॥

> हवे मन स्थिर करवाने आत्मानो विचार करवो ते कहे हे:-श्रथ विचार शिक्ता कथनं:-

॥ सवैया इकतीसा॥:— श्राख श्रमूरित श्रह्मपी श्रविनासी श्रज, निराधार निगम निरंजन निरंध है; नानारूप जेष धरे जेषको न खेस धरे, चेतन प्रदेस धरे चेतनाको षंध है मोह धरे मोहीसो विराजे तोमें तोहीसो, न तोहिसो न मोहीसो नि रागी निरबंध है; ऐसो चिदानंद याही घटमें निकट तेरे, ताही तुं विचार मन श्रीर सर्व धंध है. ॥ एए ॥ श्रर्थः ए श्रात्मा श्रवक्त हे, श्रमूर्ति हे, श्रह्मि हे, श्रिवनाशीहे श्रज के ज नम्यो नही एवो हे, श्रमे जेने कोईनो श्राधार नही, ज्ञानरूपी हे, तथा रंगिवनानो हेने हिद्ध विनानो हे व्यवहारमां जोईये तो नाना प्रकारना वेष धरनारो हे, निश्रय मां जोईये तो वेषनो क्षेश्र धरे नही मात्र चेतनाए प्रदेशनुं धारण करनारो हे, श्रमे चेतना नो षंध के पुंजरूप हे, ए उपदेश मनने बाह्यात्मानो हे. ते मनने कहे हे के, ए चिदानं द जेहेतेराजाहे ने श्रापिमनो मोह धरे हे, श्रमे हे! मन! ए चिदानंद तारामां ताराजेवो विराजे हे, पण निश्रयनयथकी तारा ने माराविषे एने मोह नथी, एवो निरागी निर्वंध हे, एवो जे चिदानंद जगवान हे, ते श्ररे मन जे घटमां हे ज्यां तुं वसेहे तेज घटमां ते पण वसेहे माटे ते ईश्वरनोज विचार तुं कर, बीजो विचार सर्व छंछ रूपहे.

हवे ए चिदानंदनो जे रीते शुद्धानुत्रव याय, ते रीते मनने उपदेश करेबे:-

श्रय ग्रुद्धानुत्रव शिक्ता कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— प्रथम सु दृष्टिसों सरीररूप की जे जिन्न; तामे और सूत्रम शरीर जिन्न मानियें; श्रष्ट कर्मजावकी जपाधि सोई कि जे जिन्न, ताहुमें सुबुद्धिको वि खास जिन्न जानिये; तामें प्रजु चेतन विराजित श्रखंमरूप, वहे श्रुत ज्ञानके प्रवान ठीक श्रानिये; वाहिको विचार करि वाहिमें मगन हुजे, वाको पद साधिवेकों ऐसी विधि ठानिये. ॥ ए३॥

श्रर्थः— प्रथम सम्यग् दृष्टिवडे श्ररीररूप बाह्यातमा जिल्ल राखवो, ते बाह्यातमा विषे बीजुं स्ट्या श्ररीर कर्म संबंधी श्रंतरात्मा हे ते पण जिल्ल जाणवो, ते श्रंतरात्मा श्री परमात्माना ज्ञान दर्शननुं श्राह्यादन थायहे, एवं श्रष्ट प्रकारनुं कर्म तेना जावनी उपाधि ते पण जिल्ल जाणवी श्रने ते श्रंतरात्मानेविषे सुबुद्धिनो विलास जे जेद ज्ञा नादिक ते पण जिल्ल जाणीये, श्रने ते सुबुद्धि विलासमां चेतनरूपी प्रजु जे हे तेश्र खंमरूपे विराजे हे, श्रने ते चेतन श्रुत ज्ञानना प्रमाण्यी हृदयमां सारी पहे हरावि ये, ए रीते हे ! मन ! तुं तेनाज विचारमां मग्न रेहेजे, ने ते चेतननुं पद साधवाने एटखे मोक्त मार्ग ग्रहवाने एज विधि युक्त हे एम जाणजे. ॥ ए३ ॥

हवे ज्ञाता जीवनुं खरूप वर्णवे हे:- श्रय ज्ञानी जीव कथनं:-

॥ चोपाईः ॥– इहि विधि वस्तु व्यवस्था जाने; रागादिक निजरूप न माने; तातें इानवंत जगमांही, करम वंधको करता नांही.॥ ए४॥

श्रर्थः ए रीते वस्तुनी व्यवस्था जाणे श्रने राग द्वेषादिक जे जाव हे, तेने पोता नुं रूप न माने, तेणे करीने ज्ञानवंतने जगत्मां कर्म बंधनो कर्त्ता कह्यो नथी. श्राह कर्म तेने बंध करी शकतां नथी. ॥ ए४॥ इवे ज्ञातानी किया कहे हे:- श्रय ज्ञाताकी किया कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— ज्ञानी जेद ज्ञानसों विखेबि पुदगल कर्म, श्रातमाके धर्म सों निरालो किर मानतो; ताको मूल कारन श्रद्धाद्ध राग जावताके, नासिवेको ग्रद्ध श्रद्धात्ती श्रद्धात्म वानतो; याही श्रद्धकम पररूप जिन्न बंध त्यागि, श्रापुमांहि श्रपनो सुजाउ गहि श्रानतो; साधि शिवचाल निरवंध होतु तिहू काल, केवल विलोक पाई लोकालोक जानतो. ॥ एए ॥

श्रर्थः— क्वाता होय ते जेद क्वानवमें पौद्गितिक कर्मनुं विलक्षण केम करे ते कहें है. श्रात्मक धर्मथी पौद्गिलिक धर्मने जूदो करी जाणे, एम विलक्षण करे, श्रने ते पुद्मिल धर्मनुं मूल कारण श्रश्चाद्ध प्राद्धिषादिक जाव हे, तेनो नाश करवाने शुद्ध श्र ज्ञात श्रन्थास जे रीते पूर्वे कह्यो ते प्रमाणे श्रवस्था देखी श्रन्थास राखे. ए रीते श्रनुक्रमें प्रथम सुदृष्टिश्री शरीररूप जिन्न करतुं, ए श्रनुक्रमें पूर्व संबंधश्री श्रनादि कर्म बंधने त्यागीने पोतानेविषे पोतानोज क्वानादिक खजाव श्रहण करे, एम शिव पदनी साधना करीने त्रणे काल निर्वंध थाय, तेवो श्रई केवल क्वान पामीने लोकालोकने जाणनार थाय. हवे सम्यक्त्व धारीनुं पराक्रम कही बतावे हेः— श्रथ सम्यक्त्वधारी वैजव वर्णनंः—

॥ संवैया इकतीसाः॥— जैसे कों हिंसक अजान महा बखवान, खोदि मृख विर ख उखारे गिह बाहुसों; तेसे मितमान दर्वकर्म जावकर्म खागि, व्हे रहे अतीतमित क्वानकी दसाहुसों; याहि किया अनुसार मिटे मोह अंधकार, जगे ज्योति केवल प्र धान सिव ताहुसों; चुके न सकतिसों खुके न पुदगलमांहि, दुके मोषथलकों रुके न फिरि काहुसों. ॥ ए६॥

श्रर्थः — जैम हिंसक पुरुष जील प्रमुख जे हिंसानां फलथी श्रजाण हे, श्रने महा बलवान हे, ते वृक्ता मूलने खोदीने पही पोताना जुजाना बले करी तेने उखेडी नाखे हो, तेम मितमान के लम्यक्त्वी पंडित जे हे, ते पुद्गल खरूपी प्रव्य कर्मने श्रने का नावरणीय, दर्शनावरणीय इत्यादि श्राठ जाव कर्मने त्यागीने क्ञान दशावडे श्रतीत के कर्मरहित शर्द रह्यों हे, श्रने क्षण क्षणमां ए क्रियाना श्रनुसारे मोह श्रंधकारने म टावे हे, श्रने तेथी केवल क्ञाननी ज्योति उदय थाय, ते ज्योति मितक्ञान प्रमुख सर्व क्ञानोमां प्रधान हे, श्रने एथी श्रनंत वीर्य प्रगटे, ने फिरि ए शक्तीते चुके नही श्रने मोक्स स्थानने जई दुके, श्रने कोईथी रोकाय नहीं। ॥ ए६ ॥

॥ इतिश्री समयसार नाटकविषे बंध द्वार बाखबोध रूप श्रष्टम समाप्तः॥

॥ दोहराः॥- बंध द्वार पूरन जयो, जो डुःख दोष निदान; श्रव बरनों संवेपसों मोक्त द्वार सुखखान॥ ए७॥ श्रर्थः— फु:खने दोषनुं निदान जे बंध तेनो द्वार संपूर्ण थयोः हवे सुखनुं स्थान जे मोक्त तेनो द्वार संकेपथी वरणवुं हुं.॥ ए७॥

हवे मोक्त द्वारने आदि ज्ञान विलासने नमस्कार करे हे:- अथ ज्ञान विलास वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥ – जेद कान श्ररासों छुफारा करे कानी जीव, श्रातम करम धारा जिन्न जिन्न चरचै; श्रमुजो श्रज्यास लहे परम धरम गहे, करम जरमको ख जानो खोलि खरचै; योंही मोखमुख धावै केवल निकट श्रावे, पूरन समाधि लहे पूरनके परचै; जयो निरदोर याहि करनो न कतु श्रोर ऐसो विश्वनाथ ताहि बना रसी श्ररचै ॥ ए० ॥

श्रयं- जेम कोई परीक्षानो करनार पुरुष मुद्रा प्रमुख द्रव्यने सुलाकनी श्रारवहें जेदी सुधातु हो, के कुधातु हो, तेनो निश्चय करे हो, तेम ज्ञानी जीव हो, ते जेद ज्ञाम रूपी श्रार वहें श्रात्मा तथा कर्म ए बेडने जुदां करे हे, श्रने ते बेडने जुदा जुदा चरचे के तेमां श्रात्मिक धारानेविषे तो श्रमुजवनो श्रज्यास धारण करे, तेथी परम धर्म के ग्रुद्ध समाधि तेनुं प्रहण करे; श्रने कर्मजालने जुदी जाणी हो, तेने सत्ता कर्मरूप खजानो खोलि खरचे के विखेरी नाखे, तिहां निर्जरा थाय, एवी क्षपक श्रेणिने लीधे मोक्तना सुखने धाय, त्यां केवल ज्ञान द्रकमो श्रावे, श्रने पूर्ण श्रात्म खरूपना परिचय थकी पूर्ण समाधि पामे, पही जव श्रमणनी दोर हांडीने निर्दोर थाय. ते पही तेने कई बीजुंकृत्य करवानुं बाकी रहे नही; ने तेथी ते विश्वनो ना थयो, तेने बनारसी दास पूजे हे॥ ए०॥

हवे सुबुद्धि विलास वडे आत्मस्वरूप संधाय ते अधिकार कहें हेः नी अथ सुबुद्धि विलास वर्णनंः न

॥ सवैया इकतीसाः ॥— काहु एक जैनी सावधान व्हे परम पैनी, ऐसी बुद्धि के घटमांहि डारि दीनी है; पैठी नो करम जेदि दरब करम बेदि, सुजाउ विजाउ ता की संधि सोधि दीनी है; तहां मध्य पाती होइ लखी तिन्हि धारा दोइ, एक मुधा मई एक सुधारस जीनी है; मुधासों विरचि सुधा सिंधूमें मगन जई, ए ती सब कि या एक समे वीच कीनी है॥ एए॥ ॥ दोहराः॥— जैसी बेनी लोहकी, करे एक सों दोइ; जड चेतनकी जिन्नता, त्यों सुबुद्धिसों होइ॥ ३००॥

श्रर्थः— कोई एक जैनी जैन श्रागमना जाणनारे सावधान थईने परमपैनी के॰ श्र ति तीइण एवी बुद्धिरूप बैनी के॰ सोनीनी बीणी ते शस्त्र विशेष, पोताना घटमां नाखी दीही, पढी ते सुबुद्धिरूप बीनी नो कर्म के॰ श्रात्म प्रदेशनेविषे श्लेष्म रूप जे राग देष परिणाम बे, ते नो कर्मना जेद तेना पुजलरूपी प्रव्य कर्मने बेदीने ख जाव श्रने विजावतानी संधी शोधि लीधी हो, त्यां सांधनेविषे मध्यपाती के जिहा ईत बनीने ते पुरुषे वे धारा लखी, तेमां एक तो मुधामइ के श्रक्कान मय हो, ने बी जी सुधारस जीनी के श्रमृत रस जीनी ज्ञान समाधिमय हो, श्रहीं राग देषादिकनी दशा हो, ते मुधा दशा हो, तेश्री विरचि के वैराग धारीने सुधा सिंधुमां मम्न श्र खुं, ज्ञान समाधिरूप सुधा समुद्रमां मम्न रेहे हुं, ए जे किया कही ते सर्व कियानो विचार एक समयमां करे ॥ एए ॥ जेम लोढानी हीणी एकना वे जाग करे हो, तेम जड चे तननी एकता जांगीने जिन्नता करवी ते सुबुद्धिश्वकीज श्राय हो. ॥ ३०० ॥

हवे जेवो सुबुद्धिनो विलास हे, तेवो कहे हे:- श्रय सुबुद्धि विलास कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— (सर्व ह्रस्वाक्तर चित्राखंकार) घरति घरम फखहरति क रम मख, मन वच तन बख करत समरपन; जखित स्थसन सित चखित रसन रित, खखित स्थमित वित करि चित दरपन; कहित मरम धुर दहित जरमपुर, गहित प रम गुर जर जपसरपन; रहित जगत हित खहित जगित रित, चहित स्थगित गित यह मित परपन ॥ १ ॥

श्रर्थः— सुबुद्धि जे वे ते धरम रूप फलने धारें वे, कर्मरूप मलने हरे वे, श्रने ए कियाने विषे मनबल, वचनबल श्रने कायानुं बल तेने समर्पण करे एटले ए त्रणे बल ते कियामां कामे लगाडे. जलति के० लाय वे, सित के० शीतल जोजन ते रसन क्रां के० जीजना स्वादिवना जोजन जमें, श्रमित वितके० परिमाण विनानुं पो धा इं इानादिक धन चित्तरूप दर्पण वहे जुए, मर्म धुर के० मर्मनी वात जे जीवनुं न पि ते कहें, श्रम पुर के० मिथ्या नगर तेने बाले, श्रने श्रंतर्नेविषे उत्कृष्ट गुरुनां नने श्रहण करें, श्रमे हृदयनेविषे उपसरपन के० स्थिरता धारे श्रने जगत्नो हि कारी श्रको रहें, त्रणे लोकनी जिक्त श्रने रित के० सुल तेने लहें, एटले सर्व लो कने पूजनीक थाय होई श्रगति गित के० जेनेविषे बीजा सामान्यनी गित थती नथीं, तेवी मोक्रगति चाहें, एवो सुमतिनो उत्कृष्ट विलास वे ॥ १॥

हवे ज्ञातानो विखास कहे हे:- श्रथ ज्ञाता वर्णनं:-

॥ संवेया इकतीसाः ॥— (सर्व ग्रुह श्रक्तर चित्राखंकार) रानाकोसो बाना छीने श्रापा साधे थाना चीने, दाना श्रंगी नानारंगी खाना जंगी जोधा है; माया वेखी जेती तेती रेतेमें धारेती सेती, फंदाहीको कंदा खोदे खेतीकोसो खोधा है; बाधा सेती हांता खोरे राधासेती तांता जोरे, बांदी सेती नांता तोरे चांदी कोसो सोधा है; जाने जाही ताही नीके माने राही पाही पीके, ठाने बाते माही ऐसो धारा श्रही बोधा है ॥ १ ॥

श्रर्थ:- जे बुध के ब्हानी हे, ते राणा के राजा जे पातसाहनुं खांग क्षेतो थको रहे हे. जेम राजा पोताना आत्मानुं साधन करे; अने पोताना मंगलनो साज राखे-पोताना थाणाने चीन्हे के० नीघेबानी राखे, दानाइ राखे पण नादानी नही राखे, ए चारे जपाय वडे नाना रंग करे, खाना जंगी के लकाईनेविषे जोद्धा थई रहे, तेम इानी पुरुष आतम साधन करे, गुणठाणा चिन्हे अने त्यागी थको कर्म निर्जरानेविषे नाना प्रकारना रंग धारे, राग-द्रेष डुर्जन साथे खनी तेने हटावी देय, एवी रीते एक पदमां वे अर्थ थाय हे. जेम बुद्दार रेतरमीवमे खोढाने घसी नाखे हे, तेम जेटखी जे टली माया वेली के० कर्मजाल तथा गजवेल ने कोध तेने मेधा के० सुबुद्धि ते रूप रेतरमी वडे घसी नाखे; श्रने फंदना कंदने खोदेहे. जेम खोधा के॰ खेमुत खेतरनी ध रतीने कंद के० मूलयी खोदी नाखे हे, तेम बाधा के० कर्मबंध तेथी हातालोरे के० जुदाई करे, श्रने राधा के० सुबुद्धि ते साथे नातो जोडे; बांदी के० कुबुद्धि तेनो नांतो के व संबंध ते तोडे. जेम सोनारूपानी चांदी शोधनार वस्तु उज्वल करें हे, तेम जे जेने तेने जाणे, हेय जे ढांडवा योग्य वस्तु श्रने उपादेय जे श्रादरवो योग्य वस्तु तेने पण नीके के वीक जाणे, पण हैयाने राहीपाही के फुल समान पीकसमान जाणे जीनासथी खीखावेठे, ए रीते माही वातो ठरावे एवो सम्यक्त धारानो वेहेनार बोधा के॰ पंडितने ज्ञानी कहीये ॥ १॥

हवे ज्ञाताने चक्रवर्त्ति समान कही बतावेठ:- श्रथ ज्ञाता चक्रवर्त्ति समान कथनं:॥ सवैया इकतीसाः ॥- जिन्हिके दरब मिति साधत ठ खंड थिति, विनसै विजा व श्रिएंकति पतन है; जिन्हिके जगतिको विधान पईनो निधान त्रिगुनके जेदमान चौदह रतन है; जिन्हिके सुबुद्धि रानी चूरि महा मोह वज, पूरे मंगलीक जे जे मो खके जतन है; जिन्हिके प्रमान श्रंग जोहे चमू चतुरंग, तेई चक्रवर्ति तनुधरे पेश्रतन है.

श्रर्थः— जेणे उए इच्य प्रमाण करी साध्या तेज जाणे उये खंड साधी खीधा श्रने जेना राग द्रेषादि विजावदिशा वणसी जाए तेज जाणिये शत्रुनी पंक्तिनुं पतन के० नाश थयो, श्रने तेने नव प्रकारनी जिक्तनुं विधान के० करतुं तेज तेने नव निधान ठे, ज्ञान दर्शनने चारित्ररूप जे त्रण गुण ठे, श्रने तेना क्योपशम माफक जे जेद उपजेठे, ते जेना चौद रतन प्रगटमान ठे,श्रने जेम चक्रवर्त्तिने स्त्रीरत होय ठे, ते तेनो उ खंड साधवानो राज्याजिषेक समय होय त्यारे वज्जरत हाथवडे चूरीने, मुख श्रागख मंगलीक पूरे तेम जेने सुबुद्धिरूप स्त्री रत्न ठे, ते महा मोहरूप विले चूरीने मोक्तन जतनने माटे मंगलीक पूरे ठे, एटले मंगल कार्य करे; श्रने जे, प्रत्यक्त प्रमाए करीने श्रर्थनुं प्रहण करेंठे, तथा परोक्त प्रमाणे करीने पण श्रर्थनेप्रहेंठे, एवा जेना

प्रमाणरूप छंग हे, तेज तेनी चतुरंगी सेना थई एम जाणवुं. ए रीते झाता पुरुषे च क्रवर्त्तिनो देह धार्यों हे, तेम हतां पण झाता छतनके प्रशारीरीजेवो हे. ॥ ३ ॥ पूर्वे कही जे नवधा जक्ति तेनुं हवे वर्णन करेहे:— छथ नवधा जक्ति वर्णनं:—

॥ दोहाः ॥- श्रवन कीरतन चिंतवन, सेवन वंदन ध्यान; खघुता समता एकता, नौधा जक्ति प्रमान. ॥ ४ ॥

श्रर्थः ज्यादेय स्वरूपने शांजलवुं, किरतन करवुं, चिंतवन करवुं, सेवा पूजा कर वी, वंदन स्तुति करवी, ध्यान धरवुं, तन्मयता करवी, समाधि करवी, श्रने एकमेक पणुं, ए नौधा के॰ नव जेदवडे जिक्त प्रमाण थायहे ॥ ४॥

> हवे जे ज्ञाता मोक्त सन्मुख थयो तेनी श्रनुजन दशा कहे हे:-श्रथ श्रनुजनी नचनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोई श्रनुजवी जीव कहै मेरे श्रनुजोमें, खठन विजेद जिन्न करमको जाख है; जाने श्राप श्रापुकों जु श्रापु करी श्रापुविषे, उतपति नासधुव बारा श्रमराख है; सारे विकखप मोसों न्यारे सरवथा मेरो निहचे सुजाउ यह विवहार चाख है; मे तो शुद्ध चेतन श्रनंत चिन मुद्धा धारी, प्रजुता हमारी एक रूप तिहू काख है।

श्रर्थः— जे श्रात्मानो श्रनुत्रव पाम्यो तेज श्रनुत्रवी जीव एवं कहे हे, के मारा श्र नुत्रवमां लक्षण जेदशकी कर्म जाल हवे जिन्न दीसवा लागी. श्रने श्रात्माज कर्ता कारक, श्रात्माज करण कारक, श्रात्माज श्राधार कारकविषे श्रात्माज कर्म कारकने जाणे. श्रने श्रहीं कोई पर्यायनी उत्पत्ति श्रने नाश हे, श्रने द्वव्य ध्रुवता पणे हे, ए त्रणे धारा श्रहीं श्रस्तराल पणे वही रही हे, तोपण ए त्रणे धारा विकल्परूप हे, श्रने माराश्री तो सर्व विकल्प सर्वथा जुदाज हे, विकल्पमां तो कहीं निश्चय नथी. श्रने मारो तो चेतना स्वरूप निश्चय खजाव हे, श्रने श्रागल कही जे त्रण धारा तेतो व्यव हार नयनी चालमां हे. श्रा जे सिद्धांत वचन कहुं हुं तेणे करीने हुंतो शुद्ध चेतना स्वरूपी हुं, श्रनंत चिन्मुद्धा धारी के० श्रनंत ज्ञाननो धरवावालो हुं, एहवी महारी प्रजुता त्रणे कालने विषे एक रूपेहे. ॥ ॥

हवे चेतनानुंज स्वरूप बतावे हे:- श्रथ चेतना वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः॥— निराकार चेतना कहावे दरसन गुन साकार चेतना शुद्ध इतान गुण सार है; चेतना श्रद्धित दों चेतन दरवतांहि, सामान विशेष सत्ताहीको विसतारहै; को कहे चेतना चिनह नाही श्रात्मामें, चेतनाके नास होत त्रिविध वि कार है; बढनको नास सत्ता नास मूख वस्तु नास, तातें जीव दरवको चेतना श्रा धार है ॥ ६ ॥ ॥ दोइराः ॥– चेतन खठन आतमा, आतम सत्ता मांहि; सत्ता प रिमित वस्तु है, जेद तिह्रमें नांहि ॥ ७ ॥

श्रर्थः— श्रात्मानो दर्शन ग्रेण जे निराकार कहीये ठश्ये तेतो निराकार चेतना थई, श्रने जे श्रात्माने ग्रुद्ध झान ग्रेण सारजूत कहीये ठश्ये तेतो साकार चेतना थई, विशेषताने खीधे रह्यो ठ माटे साकार किहेये, ए रीते निराकार श्राने साकारपणे दर्शन तथा झाननेविषे देत जाव थयो, पण चेतनानेविषे तो श्रद्धेत जावज रह्यो ठे, श्रने चेतनाग्रेण थकी चेतन द्वर्य ठे, तेथी चेतन द्वर्यमां बेठ समाश गयां. वली निराकार ने साकारपणुं सामान्य ने विशेषपणाथकी ठे, ते तो सामान्यता श्रमे विशेषता चेतना द्वर्यनी सत्तानो विस्तार ठे; कोई मूढमित वैशिषक प्रमुख दर्शन वाला कहे ठे, के, श्रात्मानेविषे चेतन चिन्ह नथी, चेतना बक्तण नथी, तेने केहेवुं के श्ररे! मूढ,! जो चेतन चिन्ह न किहये तो चेतनानो नाश थवाथी त्रिविध विकार उपजशे, ते कया ?तो के मन वचन ने कायाना विकार जाणवा, माटे बक्तणनो नाश थवाथी वस्तुनी सत्तानो नाश थशे श्रमे वस्तुनी सत्तानो नाश थवाथी मूल रूप वस्तु नो पण नाश थशे, माटे जीवने जाणवानो तो एक श्राधार चेतनानोज ठे॥ ६॥ श्रात्मानुं चेतना बक्तण ठे, सत्ता धर्मविना श्रात्मा ठरे नही तेथी श्रात्मा सत्ताने विषेज ठे, श्रने पोतपोतानी सत्ता प्रमाणेज सर्व वस्तु ठे, वस्तु द्वर्य विचारी जोइये लारे जत्यादादि त्रणे वस्तुमां जेद कोई नथी॥ ॥॥

हवे चेतना खक्तणनुं शाश्वत तथा श्वविनाशीपणुं हड करावेहेः-श्रय चेतना श्वविनाशी यह कथनंः-

॥ संवैया तेईसाः ॥— ज्यों कलधीत सुनारिक संगति, जूषन नांछ कह सब कोई; कंचनता न मिटी तिहिं हेतु वह फिरि छोटि तु कंचन होई; त्यों यह जीव श्रजीव संयोग जयो बहु रूप जयो निह दोई; चेतनता न गई कबहू तिहिं, कारन ब्रह्म क हावत सोई। ॥ ७ ॥ देखु सखी यह श्रापु विराजत याकि दसा सव याहिकुँ सोहै; एकमेँ एक श्रनेक श्रनेकमेँ, दंद्र लिये छविधामिह दो है; श्रापु सँजारि लखे श्रपनो पद, श्रापु विसारकेँ श्रापुहि मोहै; व्यापक रूप यहे घट श्रंतर, ज्ञान मेँ कौन श्रज्ञानुमेँ कोहै! ॥ ए ॥ ज्यों नट एक धरे बहु जेष कला प्रगटे जग कौतुक देखे; श्रापु लखे श्रपनी करतृति वहे नट जिन्न विलोकत पेखे; त्यों घटमें नट चेतन राछ विजाछ दसा धरि रूप विसेखे; खोखि सुदृष्टि लखे श्रपनो पद, छुंद विचार दसा निह क्षेत्वे. ॥ १० ॥

श्रर्थः-जेम कलधौत के॰ सोनुं तेने सोनी घमीने जूषण बनावेढे, त्यारे ते घाटना

संयोगधी लोको तेने जूषण केहेवा लागेहे. पण मूल वस्तु जे कंचन ते कांई जतुं रह्यं नथी, केमके, ज्यारे ते घाटने ख्रियमां गासी नाखे त्यारे पाढुं ते सोनुं केहेवाय, तेम श्रा जीव जे हे, ते श्रजीवरूप कर्म पुर्गल इत्यादिक बीजा पण पुजलना संयोगथी एक को नी साडी संताणुं लाख कुल को नीमां बहुरूपे थयो, तोपण दिविध नथी थयो, केमके, चेतनता कंई गई नथी; तेमाटे ते खरूपमां जीव ब्रह्मज केहेवाय हे, जेनो वि स्तार मोटो तेने ब्रह्म कहीये. ॥ ७ ॥ श्रात्मानी श्रनुजूति ते सुबुद्धि सखीने कहेबे, हे सखी, जो आ आपणो ईश्वर विराजे हे, अने ए ईश्वरनी दशा सर्व एनेज शोनेहे, एवी विरुद्धता बीजे ठेकाणे न शोजे. लक्कणवडे एकतामां जोईये तो एक रूप हे, श्यने श्रपर सत्ताए देखीये तो श्रनेकरूप हे, श्रने इंद्र दशामां देखीये एटखे श्र ज्ञान दशामां देखीये स्रने ज्ञान दशामां देखीये तो द्विविध रूप हे, ते द्विविधपणुं कहें हे:- क्यारेंक तो पोतानुं पद जे पोतानुं खरूप तेने संजारीने जुए, श्रने क्यारेक तो पोताने विसरीने पोते मोहमां पडे. हे सखी, एहिज ईश्वर घटने अंतर्व्यापक रूप वे, तेथी जे जे अवस्थामां आप वे, तेवारे ज्ञाननेविषे पण बीजो कोइ नथी अने अ क्वाननेविषे पण बीजो कोइ नथी. ॥ ए ॥ इवे एना उपर दृष्टांत कहें हेः – जेम कोई नट होय ते बहु वेष धरें हे, ने तेते वेषनी केंद्या प्रगट करें हे, त्यारे जगत् तेने कुतु इस समजे पण नट पोते पोतानी किया जाणे हे, ने तेणे धरेखा वेषथी पोते जुदोहे, एवुं जाणेहे. तेम घटनेविषे चेतन राजा रूप नट हे, ते विजाव दशा धरीने रूप वि शेष करें हे, पण ज्यारे सुदृष्टि खोली जुए त्यारे तो पोतानुं पद उंखले अने दंद्र वि चारनी दशाने पोते खेखामां गणे नहीं. ॥ १०॥

हवे चेतन नटनी सघ ही चेतना एक है, ते कहे हे:— श्रथ चेतना छपादेय कथनं:—
॥श्रिक्त हंहः॥— जाके चेतनजाव चिदातम सोइ है; श्रीर जाव जो धरे सु श्रीरे कोइ है; यों चिन्मं ित जाव, छपादे जानते; त्याग जोग परजाव पराये मानते ॥११॥ श्रर्थः— जेने विषे चेतन जाव हे, तेने चिदातमा श्रथवाचिडूप कि हे हे श्रेने ए चेतनाजावथी बीजो जाव जे धारे हे, तेतो कोई बीजो हे, एथी चेतना मंडित जे जाव हे तेतो छपादेय रूप जाणवो, श्रर्थात् पोतानो करी जाणवो, श्रने चेतना जावथी जे परजाव हे, तेस घ हो त्यागवा योग्य हे ने तेने पारको करी मानी होवो ॥ ११॥

हवे जे सम्यग् दृष्टि चेतना जपादेय राखीने मोक्त मार्गना साधक थया तेनी श्र वस्था कहें हे:- श्रथ सम्यग्दृष्टि मोह मारगको साधक कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जिन्हके सुमित जागी जोगसों जये विरागी, परसंग त्यागी जो पुरुष त्रिजुवनमें; रागादिक जावनिसों जिन्हकी रहिन न्यारी, कबहु मगन व्हे रहे

धाम धनमें; जे सदीव श्रापकों विचारे सरवंग सुद्ध, जिन्हके विकलता न व्यापे कब मनमें; तेई मोक्त मारगके साधक कहावे जीव, जावे रहो मंदिरमें जावे रहो बनमें,

श्रर्थः— जेना ह्इयामां सुबुद्धि जागी, श्रने विषय जोगथी जे वैरागी थया, श्रने जे रागद्धेषादिक परजाव हे, तेना सेवना संग के ज त्रण खोकनेविषे तेना त्यागी जे पुरुष हे, श्रने जे राग द्वेषादिक जाव पदार्थ हे ते थकी जेनी रेहेणी न्यारी हे, तेथी धाम के घर श्रने धन तेनेविषे मग्न थई न रहे, श्रने जे सदा निश्चय दृष्टिए देखीने श्रा तमाने सर्वांग शुद्ध विचारे हे, तेथी जेना मननेविषे विकलता नही व्यापे, एवी दशा खईने जे जीव रह्या हे, तेज जीव मोक्त मार्गना साधक केहेवाय, पही ते जावे तो मं दिरमां रहे, ने जावे तो वनमां रहे, पण तेनी दशा सर्व स्थानके एकज होय हे।।११॥ हवे मोक्तगामी जीव विचक्तण पुरुषनी दशा कहेहे:— श्रथ विचक्तणदशा वर्णनं:—

॥ सवैया तेईसाः ॥— चेतन मंडित श्रंग श्रखंडित शुद्ध पवित्र पदारथ मेरो; राग विरोध विमोह दशा समुके त्रम नाटिक पुग्गल केरो; जोग सँयोग वियोग व्यथा श्र विलोकि कहै यह कर्मज घेरो; है जिन्हकों श्रमुजी इहि जांति सदा तिन्हिकों परमारथ नेरो.॥ १३॥

अर्थ:— जे परमात्मानेविषे दृष्टि दैने विचार करे के, जे मारो पदार्थ हे, ते चेतन मंित हे, अने अखंडित हे, अहेच हे, अतेच हे, अने ग्रुक्त हे, पवित्र हे, अने एथी जुदी जे राग देपने मोहनी दशा थई रहीहे, तेने तो ज्ञमरूप मिध्याजाल पुद्गलनुं नाटक करी समके हे, अने पंचेंडियना जोगसंयोगने वियोग एवी बाह्यात्माने विषे व्यथा अवलोकीने एवं कहे के, एतो कर्मनो घरो हे, कर्मनो जदय हे, एवो अनुजव जेने नित्य रहे, तेने परमार्थरूप मोक्त ते सदा नेरो के नजीक हे ॥ १३॥

हवे जे मोक्तथी दूर ते चोर, ने मोक्तथी निकट ते साहुकार एवं कहे हे:-

श्रव चोर तथा साहुकार वर्णनं:-

॥ दोहराः ॥- जो पुमान परधन हरै, सो श्रपराधी श्रकः; जो श्रपनो धन विव हरै, सो धनपति धरमकः ॥ १४ ॥ परकी संगति जो रचै, बंध बनावे सोइः जो निज सत्तामें मगन, सहज मुक्त सो होइ. ॥ १५ ॥

श्रर्थः — जे पुमान के॰ पुरुष परधनने हरे, ते श्रपराधी जीव श्रक्त के॰ श्रजाण क हीये; ने जे पोतानाज धननो व्यवहार राखे, ते धनपति कहिये, धर्मक्त के॰ धर्मने जाणनार कहियें ॥ १४ ॥ तेम जे परवस्तुनी संगतीए राचे ते चोर केहेवाय, ने तेज पोताना बंधने वधारे, श्रनेजे पोतानी सत्तामां सदाकाल मग्न रहे तेज मुक्तरूप थाय. हवे वस्तु कोने किहये श्रने सत्ता कोने किहयें ते बतावेढे:-श्रयवस्तुसत्तावर्णनं:॥ दोहराः ॥- जपजे विनसे थिर रहे, यह तो वस्तु वखानः जो मरजादा वस्तुकी
सो सत्ता परवानः ॥ १६ ॥

श्रर्थः— जलितंत, विनाशवंत, स्थिरतावंत एतो वस्तुनुं वखाण हे, श्रने जे वस्तु नी मर्यादा जे परिमाण ते धर्मने सत्ता कहीये, ए श्रमुजव प्रमाण श्राह्म हे. ॥ १६॥ हवे केवा केवा इत्यनी केवी केवी सत्ता हे ते कहेहेः—

श्रथ सत्ता व्यवस्था वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— खोकाखोक मान एक सत्ता है आकाश दर्व, धर्म दर्व एक सत्ता खोक परिमिति है; खोक परवान एक सत्ता है अधर्म दर्व, काखके अणु असंख सत्ता अगनिति है; पुदगल शुद्ध परवानकी अनंत सत्ता, जीवकी अनंत सत्ता न्यारी न्यारी थिति है; को सत्ता काहुसों न मिले एकमेक होई, सबे असहाययों अनादि हीकी थिति है। ॥ १९॥

श्रयं:— श्रांकाश द्रव्यनी मर्यादा लोकालोक लगे एक हो, तेथी श्रांकाश द्रव्यनी एक सत्ता हे, श्रने धर्मास्तिकाय द्रव्य लोक प्रमाण रूप हो, तेथी धर्म द्रव्यनी एक सत्ता हो, श्रने श्रधमां स्तिकाय द्रव्य पण लोक प्रमाण एक रूप हे तेथी श्रधमें द्रव्य नी एक सत्ता हो, श्रने कालना द्रव्यना श्रण हो ते लोकाकाश प्रदेश परिमाणे श्रसं ख्यात हो, तेथी काल श्रणुनी श्रसंख्यात सत्ता हो, ए कहें हुं दिगंबर संप्रदायनुं हो, श्रने श्रने योग शास्त्रमां पण कह्युं हो, श्रने लोकिविषे पुजलरूपी शुद्ध परमाणुनी पण श्रनंत सत्ता हो, तेथी जीवनी पण श्रनंत सत्ता हो, तेथी जीवाजीवनी जुदी जुदी केत्रावगाहना हो, जे द्रव्यनी जे सत्ता होय ते बीजी कोई द्रव्यनी सत्ता साथे महो नही, जो एकमेक श्रइ जाय तो सर्व सत्ता श्रसहाय पणे वर्त्ते, माटे एकमेक न श्राय एवी श्रनादि कालनी स्थितिहे ॥ १९॥

हवे चेतन द्रव्यनी सत्तानुं वर्णन करेवे:- श्रथ चेतन सत्ता वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— एइ ठहो ड्रव्य इन्ह्हीको हे जगतजाल, तामें पांथ जम एक चेतन सुजान है; काहुकी अनंत सत्ता काहुसों न मिले कोई, एक एक सत्तामें अनंत ग्रण गान है; एक एक सत्तामें अनंत परजाय फिरे, एकमें अनेक इह जांति परवान है; यहे स्यादवाद यहै संतनिकी मरजाद, यहे सुख पोष यहे मोक्तको निदान है। ॥ १०॥

श्रर्थः— ए उए इव्ये करी एथीज जगत्जाख वर्तेंग्ने, ते वनेविषे पांच इव्य जड रूपी वे, ने एक चेतनरूपी इव्य वे ते जाणनार वे. श्रंही पुद्गखनी श्रनंत सत्ता कही, श्रने जीवनी श्रनंत सत्ता कही, एवा श्रनंतपणे करीने कोईनी सत्ता कोई साथे मखे नहीं, एटखे जुदी जुदी श्रनंत सत्ता हे, श्रने प्रत्येक सत्तामां श्रनंत गुणनुं ज्ञान हे, श्रने एक एक सत्तामां श्रनंत पर्याय श्रनंत श्रवस्था जेदिकरे तेथी जे पूर्वे एकमां श्रनेक कह्युं ते एरिते हे. स्याद्वाद मतमां ए वात प्रमाण हे, श्रने सत्पुरुषनां वचननी पण एज मर्यादा हे, तथा एज मत सुखनुं पोषण करनार हे, श्रने मोक्तनुं निदान एटखे मूख कारण हे. ॥ १०॥

हवे ए वचन थकी जे वस्तुनो धर्म ग्रह्यो जाय तेज सत्ताधर्म कहीये तेथी एक जीव ड्रव्यनी सत्ता कहें हेः - अथ एक जीव ड्रव्यसत्ता वर्णनंः -

॥ सवैया इकतीसाः ॥— साधि दिध मंथिन श्रराधि रसपंथिनमें, जहां तहां ग्रंथ निमें सत्ताहीको सोर है; ज्ञान जानु सत्तामें सुधा निधान सत्ताहीमें, सत्ताकी छरिन सांिक सत्तामुख जोर है; सत्ताको सरूप मोख सत्ता जूले यहै दोष, सत्ताके उलंधे धूंम धाम चिहू श्रोर है; सत्ताकी समािधमें विराजि रहे सोई साहु. सत्तातें निकिस श्रोर गहें सोई चोर है. ॥ १ए॥

श्रर्थः — जे वस्तुनेविषे वती देखाय, जेम दहीना मंथनमां घीनी सत्ता साधिये,जे श्रोषधमां मधुर रस वे, तो तेथी वस्तु नीपजे वे, माटे रस मार्गमां सत्ताविना सिद्ध नथी. जे वस्तुमां वतापणुंवे तेने सत्ताकिह्यें. शास्त्रमां ज्यां त्यां प्रंथोनेविषे सत्तानोज सोरके० शब्दवे झान रूपी जानुनो उदय जीवनी सत्तामां निपजे, वली सुधा के० श्रमृत ते पण सत्तामांज पामिये, निधान पण सत्तामांज पामिये जे सत्तानुं छरिन के० बुपाववुं ते संध्या रूपवे, श्रने जे सत्तानी मुख्यतावे तेज जोर के० प्रजात रूपवे जी वनी सत्तानुं जे खरूप वे तेज मोक्त वे, श्रने सत्ताने जुली जवुं एज दोषरूप वे सत्तानुं उलंघन करवाशी चीहोउर के० चारें तरफ धामधुम नीपजे, जे पोतानी सत्ता सङ्ग्तपणुंवे, तेमां विराजमान थई रहे तेने साहुकार कहिये, श्रने जेपोतानी सत्ताशी नीकलीने श्रन्थनी सत्ताने ग्रहे तेने चोर कहीये। ॥ १ए॥

हवे सत्तानी समाधिनुं वर्णन करें हे:- श्रथ समाधि वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जामें लोक वेद नांहि थापना छहेद नांहि पाप पुन्य खेद नांहि किया नाहि करनी; जामें राग दोष नांहि जामें बंध मोष नांहि, जामें प्रजु दास न श्राकास नाहि धरनी; जामें कुलरीत नांहि जामें हारजीत नांहि जामें गुरु शिख नांहि विष नांहि जरनी; श्राश्रम वरन नांहि काहुकी सरनि नांहि ऐसी सुद्ध सत्ताकी समाधि जूमि वरनी. ॥ २०॥

श्रर्थः- जेमां खौकिक वेदवुं नथी, श्रने जेमां स्थापनानो जहेद नथी, जेमा पाप

पुष्यनो खेद नथी, जेमां कोइ कियाकरणी नथी, जेमां राग देष नथी, जेमां बंध मोक्त नथी, जेमां प्रजुताने दासपणुं नथी, जेमां श्राकाश श्राने धरती नथी, जेमां कु लनी रीत नथी, जेमां हारने जीत नथी, जेमां गुरु श्राने शिष्य नथी, जेमां विष जर नी एटखे चालवुं हालवुं नथी, जेमां कोई श्राश्रम व्यवहार नथी, तथा वर्ण व्यवहार नथी, जे कोइनी शरण रूप नथी, एवी शुद्ध सत्तानी जूमि ते समाधिरूप वरणवी है. एटखे खरूपनी शुद्ध समाधिने विषेज शुद्ध सत्ता पामीये. ॥ १०॥

> हवे मिध्यादृष्टिने चोर स्राने स्रपराधी कही देखडावे हे:-स्राय मिथ्यादृष्टि स्रपराधि यह कथनं:-

॥ दोहराः ॥— जाके घट समता नही, ममता मगन सदीवः रमता राम न जान ही, सो श्रपराधी जीव ॥ ११ ॥ श्रपराधी मिथ्यामती, निरदे हिरदे श्रंधः परकों माने श्रातमा, करे करमको बंध ॥ ११ ॥ जूठी करनी श्राचरे, जूठे सुखकी श्रासः जूठी जगती हिय धरे, जूठो प्रजुको दास ॥ १३ ॥

श्रर्थः— जेने केवल जाणपणुं जे समता ने समाधि ते नथी, श्रने जे सदा परवस्तुनी ममताविषे मगन थई रहे, ने निज घट श्रथवा खरूपनेविषे रमी रह्या एवो जे श्रा रमराम तेने जेणे जाएयो नथी तेनेज श्रपराधी चोर जीव कहीये॥ ११॥ जे पर वस्तु लेय ते श्रपराधी ने तेज मिथ्यामित, तेज निर्दय ने तेज हैयानो श्रंध कहिये, एटले जे पररूप पुजलने श्रातमा माने ते कर्मनो बंध करेंग्ने॥ ११॥ ज्यां सुधी पोतानी वस्तुने न जाणे त्यां सुधी तो जे किया श्राचरे ते सर्व ज्रिंगी हे, श्रने तेने जे मोक्स सुखनी श्राशा हे, ते सर्व ज्रिंगी हो. पोताना प्रजु जाएया विनानी जे जिक्क हैयामां धरे हे, ते सर्व ज्रिंगी जाएवी, श्रने परमेश्वरने जेलल्याविना दासपणुं राखवुं ते पण सघलुं ज्रुहं हे॥ १३॥

हवे मृढ लोकना ज्वपणानी व्यवस्था कहे हे:- श्रथ मृढ व्यवस्था यथा:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—माटी जूमि सैलकी सु संपदा बलाने निज, कर्ममें श्रमृत जाने ज्ञानमें जहर है; श्रपनो न रूप गहे श्रोरहीसों श्रापु कहे, साता तो समाधि जाके श्रसाता कहर है; कोपको कृपान लिये मान मदपान किये, मायाकी मरोरि हिये लोजकी लहर है, याही जांति चेतन श्रचेतनकी संगतिसों, साचसों विमुख जयो जूठमें बहर है ॥ १४ ॥ तीन काल श्रतीत श्रनागत वरतमान, जगमें श्रखं जित प्रवाहको कहर है; तासों कहै यह मेरो दिन यह मेरी घरी, यह मेरोई परोई मेरोई पहर है; षेहको खजानो जोरे तासों कहे मेरो गेह, जहां वसे तासों

कहे मेरोई सहर है; याहि जांति चेतन अचेतनकी संगतिसों, साचसों विमुख जयो फूठमें बहर है ॥ १५ ॥

श्रर्थः – सात धातु जे वे पहामनी धरतीनी माटी जेबी वे, तेने संपत्ति करी वला णे वे. पोतानी श्रशुद्ध कियामां श्रमृत जाणे वे, श्रमे ज्ञानमां केर समजे वे; एटले किया थकी सिद्धि जाणे, ने ज्ञान थकी नही जाणे. जे पोतानुं चिदानंद खरूप वे, तेने प्रहे नही, पण शरीरादिक जे वे तेने श्रात्मारूप जाणे वे. श्रमे जे साता वेदनीय उपजे वे, तेने तो समाधि करी जाणे वे; श्रसाता वेदनीयने कहर केण उपज्ञव माने वे, कोपनुं क्रपान जे खडग ते खईने रहे वे; मान ने श्रहंकार रूप मद पीइने रहे वे; हैं यानेविषे मायानो मरोम राखे वे, लोजनी फेर खाया करे वे, एवी रीते श्रचेतननी संगती थकी एटले जम पुजलनी संगतीश्री साच थकी विमुख थयो वे, ने जुवमां ब हर है केण तत्पर थई रह्यो वे, ॥ १४ ॥ श्रर्थ स्पष्ट. ॥ १५ ॥

हवे सम्यग् दृष्टि साहुकार्नी व्यवस्था कहे हे:-श्रथ सम्यकदृष्टि व्यवस्थाकथनं:-

॥ दोहराः ॥– जिन्हके मिथ्या मित नही, ज्ञान कला घटमांहिः परचे आतम रामसों, ते अपराधी नांहि ॥ १६ ॥

श्रर्थः— जेनी मिथ्यामित नाश पामीने घटनेविषे ज्ञान कला प्रगटी हे, जेणे श्रा त्मारामने डीलख्यों हे, ते लोक श्रपराधी नथी, साहुकार हे ॥ १६॥

हवे ज्ञानीनी व्यवस्था कहे हे:- श्रथ ज्ञानी यथा:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जिन्हके धरम ध्यान पावक प्रगट जयो, संसे मोह वि ज्ञम विरष तीन्यो वहे हैं, जिन्हकी चितौनि आगे उदे खान जूसि जागे खागे, न क रमरज ज्ञान गज चहे हैं; जिन्हिकी समुिककी तरंग आंग आगममें, आगममें निपुन अध्यातममें कहे हैं; तेई परमारथी पुनित नर आठों जाम, राम रस गाह करे यहै पाठ पहे हैं ॥ १९॥ जिन्हकी चिहुंटी चिमटासी गुन चूनबेकों, कुकथाके सुनबेकों दोउ कान महे हैं; जिन्हको सरख चित कोमख वचन बोखे, सोम दृष्टि खिये कोखे मोम कैसे गहे हैं; जिन्हिके सगति जिग अखख अराधिबेकों, परम समाधि साधिबेगो मन बहे हैं; तेई परमारथी पुनित नर आठों जाम, राम रस गाह करे यहे पाठ पहे हैं ॥१०॥

श्रयं:— जेना हैयामां धर्म ध्यानरूप पावक के० श्रिप्त प्रगट थयो, तेथी संशय, मो ह श्रने वित्रम ए त्रणे वृक्तरूप हो, ते वहें के० ब्रह्मी गया हो, जेनी चितौनी के० ज्ञा नदृष्टि श्रागल उदयरूप कुतरो जसीने जागी जाय हो, श्रने जे ज्ञानरूपी गजराज उपर चढी रहेहे, तेथी जेने कर्मरूप रज लागती नथी, बीजानुं जे श्राम श्रंग हो, तेमां जेनी समजना तरंग उठी रह्या हे एवा श्रागम के० जैन वाणीमां जे निपुण थयो, श्रने श्र

ध्यात्म ज्ञानमां पूर्ण थयो हे, तेनेज सम्यग्दृष्टि किह्ये; परमार्थने पामनार पुनित के पित्र रूप थयो जाणवो आत्मारामना अनुनव रसमां आहे प्रहर गढे के संपूर्ण मग्न थई, एज पाह पढे हे, एटले जाणे हे, ॥ १९ ॥ वली जेम चीमटी के हाथनी चिमटी अथवा चिपीयो तेवडे कई नानी वस्तुने पकनी लइयें हृइये, तेम पारका गुण चुंटी लेवाने जेनी एवी चपटी हे, अने विकथा सांजलवाने जे बने कानने बंध करी राखे हे, जेनुं चित्त सरल ने निष्कपटी हे, जे निरहं कारीपणे कोमल वचन बोले हे, काम क्रोधादिक विकारिवना सौम्य दृष्टि जेराखे हे, वली जे मोम केसेगढेहें के मी णना घडाजेवुं हृदय कोमल राखे हे, अने पोताना अलल समाधि लहूपने साध वाने जेनी सुमित जागी हे, अयोगी अवस्थामां जेनी परम समाधि थइ हे, तेने साधवाने जेनुं मन वध्युं हे, तेज सम्यग् दृष्टि परमार्थना पामनार पुनित के पित्र रूप थई रह्या हे, ने तेज आत्मारामना अनुजव रसमां आहे पहोर दृढ मग्न थई एज पाह पढे हे ॥ १० ॥

हवे समाधिनुं खरूप कहे वे:- श्रथ समाधि वर्णनं:-

॥ दोहराः ॥- राम रिसक श्ररु रामरस, कहन सुननकों दोइ; जब समाधि परगट जर्इ, तब छुविधा निह कोइ. ॥ १ए॥ नंदन वंदन श्रुति करन, श्रवन चिंतवन जाप; पढन पढावन उपदिसन, बहुविध क्रिया कलाप. ॥ ३०॥ शुद्धातम श्रवुजी जहां, सु जाचार तिहि नांहि; करम करम मारगविशे, शिव मारग शिवमांहि. ॥ ३१॥

श्रर्थः— श्रात्माराम जे वे ते रिसक के रस जोक्ता वे, श्रने राम के रमवुं ते रस रूप वे, केहेवाने सांजलवाने रिसकने रस बे व वे, पण जेवारे एने विषे समाधि प्रगट याय वे लारे वे पणुं नथी रेहेतुं. त्यारे तो रिसक श्रने रस ए वे एकज वस्तु वे ॥१ए॥ राम के रिसक श्रवस्था धारतो एटली किया करे वे के, नंदन के श्रानंद पामे वे, वंदन के प्रणाम करे, श्रुती के जात जातना ग्रुणनी स्तुतिकरे वे, श्रने एवाज ग्रुण सांजली एनं ज चिंतवन करे, एनोज जाप जपे वे, जणे, जणावे, वपदेशे, एवी रीते र सिक श्रवस्थामां जात जातना किया कलाप वे ॥ ३०॥

पूर्वे कही जे किया तेने करतां करतां ज्यां शुद्ध श्रात्मानो श्रमुजव श्राय शुजा चार बुटीजाय, कृत-कृत्यपणे ते श्रयोगी दशामां हे, कर्म जे हे ते कर्म मार्ग मांज रहे, एटखे संसार मार्गनेविषेज रहे, शुज कर्म पण संसार मार्गमां हे श्रमे शिव मार्ग ते शिवमांहे एटखे शुद्ध श्रात्माने विषेज हे. ॥ ३१ ॥

॥ चोपाईः ॥– इहि विध वस्तु व्यवस्था जैसी, कही जिनिंद कही में तैसी; जे प्रमाद संयति मुनि राजा, तिन्दिको ग्रुजाचारसों काजा. ॥ ३१ ॥ जहां प्रमाद द

सा नहिं व्यापे; तहाँ श्रवलंब श्रापनो श्रापे, ता कारन प्रमाद जतपाती, प्रगट मोक्त मारगको घाती. ॥ ३३ ॥ जे प्रमाद संयुक्त गुसाई; ऊठिह गिरिहि गिडुककी नांई; जे प्रमाद तिज उद्धत होही, तिन्हिको मोष निकट हग सोही. ॥ ३४ ॥ घटमें है प्रमाद जबतांई, पराधीन प्रानी तबतांई; जब प्रमादकी प्रजुता नासे, तब प्रधान श्रमुजो परगासे. ॥ ३५ ॥

श्रर्थः ए रीते श्री जिनेंद्र देवे वस्तुनी व्यवस्था कही हे, ने तेवीज श्राङ्गा प्र माणथी में पण कही हे, श्रने जे मुनिराज प्रमाद दशामां हे, तेने तो शुजाचार ए टक्षे शुज कियानुं श्रालंबन लीधाथीज कार्य सिद्धि थाय ॥ ३१ ॥

श्रने जे मुनिराजने श्रात्माना श्रधिक वीर्यांशने खीधे प्रमाद दशा न व्यापे त्यां पोतानुं श्रालंबन पोते लिये, तेमाटे प्रमाद तो जत्पाती हे; श्रने प्रगट रीते मोक्त मार्गनो घात करनार हे, श्रने श्रंतरायनो करनार हे. ॥ ३३ ॥

गुसांई देशी जाषानो शब्द है, एनो छर्थ मुनिराज थाय है. जे मुनिराज प्रमाद संयुक्त है, ते तो गिष्ठक के॰ दमानी रीते उहे है, ने पड़े है, पण खस्थताने पामे न ही छने जे प्रमाद होडीने छप्रमादपणे उहीने उत्तारहे है, तेने पोतानी दृष्टि नजीक मोक्त है. ॥ ३४ ॥ ज्यां सुधी घटमां प्रमाद हे, त्यांसुधी ते पराधीन हे, छने ज्यारे छात्मानी शक्ति जागे हे, त्यारे प्रमादनी प्रजुता नाश पामे हे. त्यारे तो पोताना प्रधान छनुजवनो प्रकाश थाय हे. ॥ ३५ ॥

॥ दोहराः ॥—ता कारन जग पंथ इत, उत शिव मारग जोर; परमादी जगकों ढूंके, अपरमाद सिव श्रोर ॥३६॥ जे परमादी श्राखसी, जिनके विकलप त्रूरि, होहि सिथिल श्रनुजोविषे, तिन्हिको शिवपथ दूरि ॥३९॥ जे श्रविकलपी श्रनुजवी, शुद्ध चेतना युक्त; ते मुनिवर लघु कालमें, होहि करमसों मुक्त ॥३०॥ जे परमादी श्रालसी, ते श्रिनमानी जीव, जे श्रविकलपी श्रनुजवी, ते समरसी सदीव ॥३ए॥

श्रवः— तेमाटे जगत्नो मार्ग प्रमादीनी तरफ हे, श्रने श्रप्रमादीनी तरफ मोक्त मार्ग हे, केमके, जे प्रमादी होय ते जगत्ने जुए श्रने श्रप्रमादी मुक्ति तरफ जुए हे ॥ ३९ ॥ जे प्रमादी हे, ते श्रालसु हे. तेने जूरि के॰ घणा विकट्प छहे हे, श्रने पो ताना श्रनुजनमां तेने शिथिलपणुं रहे हे, श्रने तेने मुक्ति मार्गरूप खरूपाचरण दूर हे ॥ ३९ ॥ श्रने जे विकट्पविना श्रनुजनमां वसे हे, ने शुद्ध चेतना युक्त हे, ते मु नीश्रर थोमा कालमां कमिथी मुक्त थाय हे ॥ ३० ॥ जेप्रमादी श्रने श्रालसु हे, तेने श्रहंबुद्धिश्री श्रजिमानी कहिये. ने जे विकट्प रहित पोताना श्रनुजनमां हे तेने तो सदाय समरसी कहिये ॥ ३ए ॥

हवे अजिमानी तथा ज्ञानीनी अवस्था उपर दृष्टांत आपेठे:-अय अजिमानी तथा ज्ञानी व्यवस्था कथनं:-

॥कवित्त ढंदः॥—जैसे पुरुष खखे पहार श्रिढि, जूचर पुरुष तांहि खघु लग्गः जूचर पुरुषलखे ताकों खघु, जतर मिले छहुको ज्रम जग्ग, तैसे श्रिजमानी उन्नतगल, श्रीर जीवको खघुपद दग्गः श्रिजमानीको कहे तुन्च सब, ज्ञान जगे समतारसजग्ग॥ ४०॥

श्रर्थः—जेम कोई माणस पहाम उपर चड्यो होय तेने जूचर के० तलाटीपरना माणसो न्हानों एम जुए, श्रने तलाटी वाला माणसने पहाड उपर चडेलो न्हाना जुए, श्रने पढी पहाम उपर चडेलो हेठे उतरी तलाटी वालाने मले त्यारे बेउनो नाना पणानो श्रम दूर थाय, तेम श्रिजमानी पुरुष उंची गरदन राखनारो, श्रन्य, जीवने नाना जुए, तुठ जाणे, श्रने बीजा पुरुषो ते श्रिजमानी पुरुषने तुठ जाणे, एम श्ररस्परस विचारमां विषमता रहे हे, ते ज्यारे ज्ञान जागे लारे बेउना मनमां विषमता मटीने समपणुं श्रावी जाय ॥ ४०॥

इवे एकला श्रितमानीनी व्यवस्था कहे है:-श्रथ श्रितमानी यथा:-

॥संवैया इकतीसाः॥—करमके जारी समुके न गुनको मरम, परम श्रनीति श्रधरम रीति गहे है; होहि न नरम चितगरम घरमहुते, चरमकी दृष्टिसों जरम जूली रही है; श्रासन न खोखे मुख वचन न बोखे सिरधूनाएहू न डोखे मानो पायरके चहे है; दे खनके हाज जब पंथके वटाज ऐसे, मायाके खटाज श्रजिमानी जीव कहे हैं: ॥४१॥

श्रर्थः—जे करम बंधयी श्रित जारी हे. जे द्विन गुण जाणेहे, पण गुणनो मर्म जा णतो नथी; श्रने परम श्रन्याय तथा श्रधमेनी रीत यही राखेहे; जेना चित्तनेविषे नरमा श्र तथा दया परिणाम नथी; द्वेपनो श्रित धर्म ताप हे, तेथी जे गरम रहेहे, ज्ञान दृष्टि नथी श्रने चर्मरूप दृष्टिवमे स्त्रममां स्ट्रूट्यो फरे हे, कोई विकट श्रासन बांधे तेने खो खे नही, ने मोनेथी वचन बोखे नही, मौन ब्रती रहे, तेने ज्ञानी महा पुरुष जाणीने कोई माथुं नमावे, तो तेनो सत्कार ने श्रंग चेष्टा पण न करे, जाणिये पथर थवानीज इहा करतो होय; नेवली जेम बालकने डराववाने हान कहीये नश्ये तेम लोकोने डराववाने वेष धरी हान बनीने बेसे, श्रने जब स्त्रमणना मार्गमां वटाना सरखो चाखे; एरीते माया जालना खाटनारा श्रिजमानी जीवने नेलखीये॥ ४१॥

हवे ज्ञानी जीवनी व्यवस्था कहे हे:- अथ ज्ञानी यथा:-

॥ सवैया इकतीसाः॥-धीरके धरैया जवनीरके तरैया जयजीरके हरैया वर वीर ज्यों उमहे हैं; मारके मरैया सुवीचारके करैया सुख ढारके ढरेया गुनखोसों खह खहे हैं;

रूपके रीफैया सबनैके समुफैया सबहीके लघुजैया सबके कुबोल सहे हैं; वामके व मैया जुलदामके रमैया ऐसे रामके समया नर ज्ञानी जीव कहे हैं॥ ४१॥

श्रर्थः-धीरजने धरनार, संसार सागरने तरनार, जवजीडने हरनार, मोटा श्रूर वीरनी परे पोताने साह्य श्रापवाने उमंगी रह्यां के कंदर्पने मारनार, जला विचारना करनार, सुख समाधिना ढालामां ढलनार, श्रात्माना ग्रुणनो लव एटले श्रंश तेमां ल हलहि रह्या हे, श्रात्मरूपना रीजवनार, सर्व नयना सारनो रस समजनार, निरहं कारी पणे सर्वना नाना जाई जे थई रह्याहे; क्रमावंतपणे सर्वनां छुष्ट वचन जे सहेहे; वाम के खीने वमैया के होडनार, छः खनी परंपराना दमनार, एवा श्रात्मारामने विषे रमनारा मनुष्यने क्ञानी जीव कहीये॥ ४१॥

हवे शुद्धात्मना श्रनुजवनी प्रशंसा करेंढे:-श्रथ शुद्धात्म श्रनुजव प्रशंसा:-

॥चौपाई:॥—जे समिकती जीव समचेती; तिन्हिकी कथा कहों तुमसेती; जहां प्रमाद किया निह कोई; निर्विकल्प श्रमुजो पद सोई. ॥ ४३ ॥ परिव्रह त्याग जोग थिर तीनो; करम बंध निह होइ नवीनो; जहां न राग दोष रस मोहे; प्रगट मोषमारग मुख सोहें ॥ ४४ ॥ पूरव बंध उदे निह व्यापे, जहां न जेद पुन्न श्रक पापे; दरब जाव गुन निर्मेख धारा, बोधविधान विविध विस्तारा. ॥ ४५ ॥ जिन्हिके सहज श्र वस्था ऐसी; तिन्हिके हिरदे छविधा केसी; जे मुनिषिपक श्रेणिचढी धाये; ते केविद्य जगवान कहाये. ॥ ४६ ॥ दोहराः-इहिविधि जे पूरन जये, श्रष्ट करम वनदाहि; ति निहकी मिहमा जो लखे, नमे बनारिस ताहि. ॥ ४७ ॥

श्रर्थः— जे समिति जीव हे ते समचेती के० वीतरागणणे समतावंत हे श्रहो! जव्य प्राणी! तेनी कथा हुं तमने कहु हुं. ज्यां कोई प्रमादनी किया नथी, तेने नि विकार निर्विकहण श्रनुजव पद कही थे, एट ले श्रमुजवमां विकहण नथी। ॥ ४३ ॥ ज्यां परियहनो त्याग हे, श्रमे त्रणे जोग स्थिर हे, त्यां नवीन कर्मनो बंध नथी श्रतो; वली ज्यां जीवने राग देष रस मोह नथी, तेज प्रगटपणे मोक्त मार्गनुं मुख के० प्रारंज हे. ॥ ४४ ॥ वली ज्यां पूर्वे जे कर्मबंध हे, तेनो हदय नथी, श्रमे ज्यां पुण पापना जेदनो विचार नथी, श्रमे ज्यां साधुना सतावीस गुण प्रव्यपणे जाव पणे निर्मेल धाराये वही रह्या हे, वली ज्यां बोधविधान के० ज्ञानना प्रकार जात जातना विस्तारमां हे. ॥ ४५ ॥ जेनी एवी सहज श्रवस्था थई होय तेना हदयमां श्रात्म हेलखवानी छिवधा केम रहे? श्रमे एज श्रवस्थामां जे मुनिराज क्रपक श्रेणि चही कध्वे मुख धाये तेतो केवली जगवंत जाणवा ॥ ४६ ॥ ए रीते करी श्रष्ट कर्म रूप वनने वालीने पूर्ण श्रात्मारूपमां जे थायहे श्रमे जेना महिमाने जे सत् पुरुष

होय तेहिज जुएवे, एटखे सत्य पणे जाणेवे, तेने वारणसीदास नमस्कार करेवे ॥४९॥ हषे मोक्त पदार्थनी जत्पत्तिनोक्रम कहेवे:-अथ मोक्त जत्पत्ति वर्णनं:॥-

॥ उप्पय उंदः—जयो गुद्ध श्रंकूर, गयो मिथ्यात् मूर निशः; क्रमक्रम होत उदोत, सहज जिम गुक्कपक्त शिशः; केवल रूप प्रकािस, जािस सुल रािसधरम धुवः; किर पूर निश्चित श्रान्त, लािग गतजाव परम हुवः; इह विधि श्रानन्य प्रजाता धरत, प्रगटी बूंद सागर जयोः; श्रविचल श्रखंड श्रान्त्रय श्रख्य, जीव दरब जगमहि जयो. ॥ ४०॥

श्रर्थः-शुद्धतानो श्रंकुर प्रगट थतां मिथ्यात मूल्यी नाश पाम्युं, तेवारे जेम श्र जवालीया पखवामीयामां चंद्धमां क्रमे क्रमे उद्योतवंत थायठे, एरीते श्रात्मापण क्रमें क्रमे उद्योत थतां केवल ज्ञान रूपनो प्रकाश थाय, श्रने श्रात्मानो निश्चल ध्रुव धर्म सुख समुह ते जासे, ते पठी श्रायुष्य कर्मनी स्थिति पूर्ण करीने श्रने मनुष्य गतिनो जाव ठोडीने परमात्मारूपे थाय, एरीते श्रनन्य प्रजुता एटले सर्वथी श्रेष्टता धारण करे कोनी पेठे ? तो के जेम पाणीनी बुंद बुंद एकठी मली समुद्ध थायठे तेम श्रात्मा ग्र णना श्रंश क्रमे क्रमे प्रगट करतो पूर्ण थयो, ते पठी श्रविचल, श्रखंम, श्रजय ने श्र क्रय एवं जीव द्वव्य जगत्नेविषे सदा जयवंत थायठे. ॥ ४०॥

इवे श्रष्ट कर्मनो नाश थयेथी जे श्रात्मामां सहज श्राठ गुण प्रगट थायहे ते कहेहे:-श्रथ श्रष्ट कर्म नाशते श्रष्ट गुन प्रकाश वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥— क्वानावरनीके गये जानिये जु है सु सब, दंमनावरनके ग येते सब देखिये; वेदनी करमके गयेते निराबाध रस, मोहनीके गये शुद्ध चारित विसेखिये, श्राडकर्मगये श्रवगाइनश्रटख होइ, नामकरमगये ते श्रमूर्तिक पेखिये; श्रापुरुश्रखघुरूप होई गोत कर्म गये, श्रंतराय गयेते श्रनंत बख खेखिये.॥ ४ए॥

श्रर्थः— इानावरणीय कर्म नाश श्रता लोकालोकमां जे वस्तु हो, ते सर्व जणाय, एटले केवल झान प्रकाश श्रायः श्रने दर्शनावरणीय कर्मनो क्तय श्रवाशी लोकालो कना जावने सामान्यपणे जोईये, एटले केवल दर्शनग्रण प्रगट श्राय, श्रने वेदनीय कर्मना क्तयश्री निराबाध रस छपजे एटले श्रातमा बाधपणाश्री मुक्त श्राय, ते श्रबा धपणे श्रनंत सुखरूप ग्रण छपजे; वल्ली मोहनीय कर्मनो नाश श्रयेशी विशेषणपणे शुद्ध चारित्र प्रगट श्राय, एटले यशाख्यात चारित्र स्पष्ट ग्रण होयः श्रायु कर्मनाश श्रयेशी श्रवगाहनानी सादि श्रनंत स्थिति श्राय (श्रायुकर्मगते निश्रला स्थितिर्जवित); नाम कर्म नाश श्रयेशी श्रमूर्त्तिकपणुं जीवनुं शुद्ध स्वरूप छपजे; गोत्र कर्मनो क्रय श्रयेशी श्रयुरुखपु ग्रण छपजे, जेशी जीवमां लघुपणु तथा ग्ररुपणु न होयः श्रने श्रं

तराय कर्मनो नाश थयेथी श्रनंत बल उपजे, एटले श्रनंत वीर्यपणानो ग्रण उपजे हे. ए श्राठ ग्रण उपजे. ॥ ४ए ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक बालबोधरूप नवमो मोक्त द्वार समाप्तः॥ ॥दोहराः॥–इति श्रि नाटिक प्रथमें, कह्यो मोक्त श्रिवकार; श्रव बरनों संकेपसों, सरब विद्युद्धीद्वार.॥ ५०॥

श्रर्थः इति के॰ संपूर्ण नाटक समयसारिवषे मोक्त द्वारनो श्रर्थ कह्यो ने हवे दशमुं संकेपथी सर्व विद्युद्धि द्वारनुं वर्णन करुं हु॥ ५०॥

इवे श्रंही सर्वे जपाधि रहित शुद्ध श्रातम खरूपनुं वर्णन करे हे:-

॥ सवैया इकतीसाः॥-करमको करता है जोगनिको जोगता है, जाकी प्रजुतामें ऐ सो कथन श्रहित है; जामें एक इंडियादि पंचधा कथन नांहि, सदा निरदोष बंध मोक्तसों रहित है; ज्ञानको समूह ज्ञान गम्य है सुजान जाको, लोक व्यापी लोका तीत लोकमें महित है; ग्रुड वंस ग्रुड चेतनाके रस श्रंश जयों, ऐसो हंस परम पु नीतता सहित है ॥ ५१ ॥ दोहराः-जो निहचे निरमल सदा, श्रादि मध्य श्रुरु श्रंत; सो चिडूप बनारसी, जगतमांहि जयवंत ॥ ५१ ॥

श्रशं— कर्मनुं कर्तापणुं श्रने सुखडुः खनुं जोक्तापणु एवं जे लोक व्यवहारमां केहेवाय हे, ते जेनी प्रजुतामां ईश्वरताई हे, तेमां श्रहितकारी हे; वल्ली जेनी प्रजुता मां एकेंडिय प्रमुख पांच जेदनुं केहेवुं ते पण श्रहितकारी हे, सत्य नथी. केमके जेस दा निर्दोष हे, तेना निश्चय स्वजावमां बंध नथी, श्रने मोक्त पण नथी, एवो जे बंध मोक्त रहित हे. त्यारे ए डव्य शुं हे, एवो प्रश्न उहे तेनो खुलासो करे हे के, ए ज्ञा ननो समूह जे पुंज ते रूप हे. जेनो स्वजाव ज्ञान गम्य हे, ज्ञान वहें जाणवामां श्रावे एवो हे, लोकमां सहते के पूजनीक हपादेय हे, श्रनादि कालनो एवोज चाल्यो श्रावेहे ते खी जेनो शुद्ध श्रवतंश हे श्रने शुद्ध चेतनाना रस प्रदेशशी जरपूर हे, एवा जे हंस हे ते परम पुनीतता सहित एटले छत्कृष्ट शुद्धता सहित हे ॥५१॥ जे निश्चय खरूपमां सदा निर्मेल हे, श्रादि मध्यने श्रंत्य श्रवस्थाने विषे एक रूप हे, ने तेज चिद्धूप हे. तेनी वणारसी स्तुति करेहे के एवा जगवान जगत्मां जयवंत थाश्रो.॥ ५१॥

हवे जीवतुं श्रजोक्ता पणुने श्रकर्ता पणु ठरावे वे:- श्रथ जीव श्रकर्ता वर्णनं:-

॥ चोपाईः ॥— जीव करम करता निह ऐसो; रस जोगता सुजान न जैसो; मि थ्याम तिसों करता होई; गये छाज्ञान छाकरता सोई ॥ ५३॥

श्रर्थः-जेम जीवने कर्मनो कर्ता न कहिये तेम रसनो जोक्ता पण न कहिये; जीव

ज्यांसुधी मिथ्यामित वालो हे, त्यांसुधी तो कत्तीपणुं केहेवतमां साचो हे. पण ज्यारे ए स्रज्ञान जायहे, त्यारे जीव स्रकर्त्तापणे हे एवुं स्पष्ट जणाय हे. ॥ ५३ ॥

हवे आत्माना गुद्ध स्वजाव तथा विजावनुं वर्णनः— श्रथ स्वजाव विजाव वर्णनः— ॥संवैया इकतीसाः ॥— निहचे निहारत सुजाउ जाहि श्रातमाको, श्रातमीक धर म परम परगासनाः श्रतीत श्रनागत वरतमान काल जाको, केवल सरूप गुन लोका लोक जासनाः सोई जीव संसार श्रवस्थामांहि करमको, करतासो दीसे लिये जरम उपासनाः यहे महा मोहके पसार यहे मिथ्याचार, यहे जो विकार यहे ज्यव हार वासना ॥ ५४ ॥

श्रर्थः— निश्चय दृष्टिए जोतां जे श्रात्मानो श्रात्मिक धर्म परम प्रकाशरूप सदा खजाव हे. एट दो निश्चयनयथी श्रतीत, श्रनागत तथा वर्त्तमान कालमां लोकालोक जा सनानो करनार केवल स्वरूप गुण हे. तेज श्रात्मा संसार श्रवस्थानेविषे श्रम छपा सनावडे एट दे मिथ्यात्व-श्रङ्गाननी सेवाने लीधे कर्मना कर्त्तानी पेते देखाय हे, एम मिथ्यात्वनी सेवामां जे रेहे दुं ते मोहनो पसार हे, एज मिथ्याचार हे; जीवने जव श्रमणनो एज विकार हे. तथा एज व्यवहार वासना हे ॥ ५४॥

हवे जीवनी अजोक्ता अवस्थानुं वर्णन करेहे:- अथ जीव अजोक्ता वर्णनं:-

॥ चोपाईः ॥– तथा जीव करता न कहावै; तथा जोगता नाउ न पावै; हे जोगी मिथ्यामति मांही; मिथ्यामती गयेतें ते नाही. ॥ ५५ ॥

श्रर्थः— जेम जीव कर्त्ता नश्री तेम जोक्ता पण नश्री, मात्र मिथ्यात्वमां कर्त्ता जीव हे, ने जोक्ता पण जीव हे, पण मिथ्यात्व नाश श्राय त्यारे जीव कर्त्ता श्राने जोक्ता नाम धरावतो नश्री ॥ ५६ ॥

> हवे नय स्वरूपमां जोक्ता अजोक्ता पणानां बक्तण बतावेहे:-श्रथ जोगतापना अजोगतापनाको बक्तण:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— जगवासी श्रज्ञानी त्रिकाख परजाय बुद्धी, सोतो विषे जोग निको जोगता कहायो है; समिकती जीव जोग जोगसों उदासी तातें, सहज श्रजोगता गरंथिनमे गायो है; याही जाति वस्तुकी व्यवस्था श्रवधारे बुध, परजाउ त्यागि श्रपनो सुजाउ श्रायो है; निरविकखप निरुपाधि श्रातमा श्रराधि, साधि जोग जुगति समाधिमें समायो है। ॥ ५६॥

श्रर्थः- जगत्वासी जे श्रज्ञानी हे, त्रणे कालविषे पर्याय बुद्धि हे, एटले इव्यबुद्धि नथी, ने हुं सुली, हुं डुःली एवी पर्याय बुद्धि करेहे, पण निन्नपणे शुद्ध श्रात्म इ व्यने नहीं जाणे, एवो श्रज्ञानी जीव तो विषय जोगनो जोक्ता केहेवायहे, श्रने सम किती जीव मनवचन ने कायाना योगथी तथा विषय जोगथी उदासीपणे रहें छने शुद्ध आत्म द्रव्यना अनुजवमां मग्न हे, तेथी समिकतीने शास्त्रमां सहज अजोक्ता पणे गायलो हे, एरीते पंक्ति हे ते वस्तुनी व्यवस्था अवधारीने एटले वस्तुनो स्व जाव विचारीने परजावने त्यागीने पोताना सहज स्वजावमां आवे हे, तेथी सुली द्वां इत्यादि विकल्पविना, कर्म संयोगरूप उपाधिविना, एवा आत्माने आराधीने ज्ञान दर्शन चारित्ररूप जोगनी जुगति साधी समाधि एटले सहज स्वरूपमां समायहे.

इवे अत्रोक्ता जीवनी श्रवस्थानुं वर्णन करेहे:- श्रथ जीव अत्रोक्ता वर्णनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— चिनमुद्धा धारी ध्रुव धर्म श्रिधकारी ग्रुन, रतन जंडारि श्रिप हारी कर्म रोगको; प्यारो पंक्तिनिको हुस्यारो मोख मारगमें, न्यारो पुदगलसों उजियारो उपयोगको; जाने निजपर तत्त रहे जगमें विरत्त, गहे न ममत्त मन वच काय जोगको; ता कारन ज्ञानी ज्ञानावरनादि करमको, करता न होइ जोगता न होइ जोगको ॥ ५७॥ दोहराः॥— निरजिलाष करनी करे, जोग श्रक्रचि घट मांहि; तातें साधक सिद्ध सम करता ज्ञगता नांहि.॥ ५०॥

श्रर्थः — चेतना चिन्हनो धरनार, निश्चल स्वजाव झातापणुं तेनो श्रिषकारी, झा नादिक गुँणरूप रलना जंडारनो जंनारी हे, कर्मरूप रोगनो विनाश करनार, पंक्ति नो प्यारो एटले तत्त्व झानीने वल्लज, मोक्तमार्गमां हुशीयार के लावधान, पौजलिक धर्मश्री जुदो रेहेनार, मितश्रुत प्रमुख जपयोगनुं श्रजवालुं जेना हृदयमां श्रयुंहे, पोता नां श्रने पारकां सर्व तत्त्वनो जाणनार, जगतमां विरक्तपणे रेहेनार, एटले वैरागी, मन वचन ने कायाना योगनी ममता नही राखनार माटे झानी जीव झानावरणीय प्रमुख कर्मनो कर्जा पण नथी, श्रने छुःख सुखना जोगनो जोक्तापण नथी. ॥ ५७॥ इहा विना किया करवी, श्रने घटापंकमां जोगनी रुचि नही राखवी, तेथी मुक्तिनो सा धक पुरुष सिद्ध समान कह्यो, श्रने ते कर्जा तथा जोक्ता नथी।॥ ५०॥

हवे खहंबुिक यकी कर्त्तापणु थायने ते कहेने:- ख्रय खहंबुिक वर्णनं:-

॥ किवत्तंतंदः ॥— ज्यों हिय श्रंध विकल मिथ्यात धर मृषा सकल विकलप जपजा वतः गिह एकंत पठ श्रातमको, करता मानि श्रधोमुख धावतः त्यों जिनमती दरब चारित कर, करनी करि करतार कहावतः वंडित मुक्ति तथापि मूहमित, विनु सम कीत जवपार न पावतः ॥ ५ए॥ चोपाईः॥— चेतन श्रंक जीवलिल लीन्हा, पुजल क रम श्रचेतन चीन्हाः वासी एक खेतके दोकः यदिष तथापि मिले निह कोकः॥६०॥

॥ दोहराः॥– निजनिज जाज क्रिया सहित, व्यापक व्यापि न कोइ; करता पुष्ठ स करमङ्के जीव कहांसों होइ. ॥ ६१ ॥ श्रर्थः—जेम कोइ हृदय श्रंधपुरुष विकल मिथ्यात्वधारीने हैयामां विकल्प उपजावे, ते सर्व जुठा हे, ते कियावादीनो एकांत पक्त श्रहीने श्रात्माने कर्त्ता मानीने श्रधोमु ख के० नीची गतिने पकडी रह्योहे, एवो जे जिनमती हे ते जाव चारित्रविना श्रमे द्वायहे, ते मुक्तिने वांहे तोपण मूहमतिहे; जवनो पार समिकत विना पामतो नथी. ॥ ५७ ॥ श्रमे जीवनो श्रंक के० चिन्ह चेतना जाणवी; श्रमे पुजल तथा कर्म ए बे जने जम जाणवां. चेतन श्रमे श्रचेतन वेड एक क्षेत्रावगाहीहे एटले एक क्षेत्रवासी हे, तथापि कोई कोईश्री मले एवां नथी. ॥ ६० ॥ जे पदार्थ हे ते पोतपोताना जावनी किया सिहत रहे हे; जेमां व्यापी रहे ते वस्तुने व्याप्य कहीये श्रमे व्यापी रहे नार पदार्थने व्यापक कहीये तथी पुजल व्याप्यमां जीवनुं व्यापकपणुं नथी, माटे पौजलिक कर्मनो कर्जा जीव क्यांथी थाय श्रर्थात् न ज थाय. ॥ ६१ ॥

हवे व्यवहारमां जे रीते जीवनुं कर्जापणुं ठरेठे ते जणावेठे:—श्रथ कर्जा कथनं:—
॥ संवैया इकतीसाः— जीव श्ररु पुजल करम रहे एक खेत, जद्यपि तथापि सत्ता न्यारी न्यारी कही है; लठन सरूप गुन परजे प्रकृति जेद, छुहूमें श्रनादिहीकी छ विधा व्हेरही है; एते परि जिन्नता न जासे जीव करमकी, जौलों मिथ्या जाठ तोलों श्रोधी वाठ वही है; ज्ञानके ठदोत होत ऐसी सूधी दृष्टि जई, जीव कर्म पिंमको श्र करतार सही है। ॥ ६१ ॥ दोहराः॥— एक वस्तु जेसी जु है, तासों मिले न श्रान, जीव श्रकर्जा करमको, यह श्रनुजो परवान ॥ ६३ ॥

श्रर्थः— जेम श्राकाश प्रदेशमां पुद्गल कर्म श्रवगाहि रहे हे; तेज श्राकाश प्रदेशमां जीव प्रदेश पण श्रवगाहि रहे हे एम जीव श्रवे पुजल एक हेत्रना वासी हे, तथापि चेतननी सत्ता श्रवे जड़नी सत्ता ए वे जुदी हे श्रवादि कालनी लक्षण जे दबड़े, खरूप जेदबड़े, ग्रणपर्यायवड़े ने प्रकृति जेदबने ए वेहनेविषे द्विधिता चाली श्रावेहे, तेम हतां लक्षण प्रमुखनी जिन्नता मिण्यात्व जावने लीधे जीव श्रवे कर्मनी ज्यां सुधी जासे नहीं, त्यां सुधी हंधोवायु वहें हे एटले जीवने कर्त्ता मानीये हैये। श्रवे झाननो हिंदोत श्रवाधी सम्यत्त्वनी एवी श्रुद्धता थई के तेथी कर्म पिंडनो श्रवर्ता जीव सही थयो हे, एम जाएयुं ॥६१॥ जे वस्तु जेवीरीते हे ते साथे श्रानके बीजा खरूप वाली वस्तु मलती नथी; एकमेक थती नथी; एथी जीव कर्मनो श्रकर्ता हे.ए श्रव्य श्रवुजव प्रमाण्यी सम्राय हे ॥ ६३ ॥

हवे मूढ जीव कर्मनो कर्ता मानी क्षेय हे ते कहे हे:- अथ मूढकर्तायहकथनं:-।। चोपाई: ॥- जेड्रमती विकल अङ्गानी; जिन्हि सुरीति पररीति न जानी; मा

या मगन जरमके जरता; ते जिव जाव करमके करता ॥ ६४ ॥ दोहराः॥—जे मिथ्या मति तिमरसों, खखे न जीव श्रजीव; तेई जावित करमके, करता होइ सदीव।६।८॥ जे श्रग्रुद्ध परिनति धरे, करे श्रहंपरमान; ते श्रग्रुद्ध परिनाम के,करता होइश्रजान॥

श्रर्थः—जे जीव पुष्ट बुद्धिवहे विकल हे, श्रज्ञानी हे, जे पोतानी ने पारकी रीत जाएता नथी, माया जालमां मग्न हे, ज्ञमनाजरता के पणी हे, ते जीव जाव कर्मना करनारा हे ॥ ६४ ॥ जे जीव मिथ्यामित श्रंधकारथी जीव श्रजीवने जिन्न पणे जा एता नथी, ते जीव सदाकाल जावित कर्मना कर्ता हे, एटले पोतपोताना कर्मनो जे स्वजाव तेनेज जावित कर्म कहिये ॥ ६५ ॥ जे जीव श्रग्रुद्ध परिणतिने धरेहे, सर्व कियामां श्रहंकार बुद्धिश्री श्रहं कर्ता एवं प्रमाण करहे, ते जीव श्रजाण थका श्र ग्रुद्ध परिणामना कर्ता थायहे ॥ ६६ ॥

श्रय शिष्य प्रश्नः-

॥ दोहराः ॥— शिष्य कहें प्रज्ञ तुह्म कह्यो, छिवध करमको रूप; दर्व कर्म पुदगल मई, जाव कर्म चिद्ध्य ॥ ६७ ॥ करता दरबित करमको, जीव न होइ त्रिकाल; श्रब इह जावित करम तुम, कहो कौनकी चाल ॥ ६० ॥ करता याको कौन है, कौन करे फल जोग; के पुदगल के श्रातमा, के छहुको संयोग ॥ ६ए ॥

श्रशं- हवे शिष्य प्रश्न पुठे ठे के, हे प्रजा! तमे कह्युं ठे के,कर्मनुं खरूप वे प्रका रनुं ठे; एकतो पुद्गलमय ते पुद्गल पिंडरूप प्रव्य कर्म ठे, श्रने बीजुं जाव कर्म ठे ते चिद्भूप के विताविकार रूप ठेः ॥ ६७ ॥ वली स्वामी तमे एवुं कह्युं के प्रव्य कर्मनो करनार जीव त्रणे कालमां नथी, त्यारे जावित कर्म तमे कोनी चाल कहो ठो? ॥ ६० ॥ ए जावित कर्मनो कंर्ता कोण ठे, ने एना कर्म फलनो जोक्ता कोण ठे? पुद्गल कर्ता जोक्ताठे? के श्रातमा कर्ता, जोक्ता ठे? किंवा पुजल श्रने श्रातमा ए वे हुनो संयोग कर्ता जोक्ता ठे? ॥ ६ए ॥

हवे या प्रश्ननो गुरु जत्तर श्रापेठे:- श्रय गुरु जत्तर कथनं:-

॥ दोहराः ॥— क्रिया एक करता जुगल, यों न जिनागम मांहि; श्रयवा करनी श्रोरकी, श्रोर करे यों नाहि ॥ ५० ॥ करे श्रोर फल जोगवे, श्रोर बने निह एम; जो करतासो जोगता, यहे यथावत जेम ॥ ५१ ॥ जाव कर्म कर्त्तव्यता, स्वयं सिद्धन हि होइ; जो जगकी करनी करे, जग वासी जिय सोइ ॥ ५१ ॥ जिय करता जिय जोगता, जाव कर्म जिय चालि; पुदगल करे न जोगवे, छविधा मिथ्या जालि ॥ ५३ ॥ तातें जावित करमकों, करे मिथ्याती जीव; सुख छल श्रापद संपदा, जुंजे सहजसदीव ॥ ५४ ॥

श्रथं- किया करणी एक होय श्रने तेना करनारा जुगल के वे एवी वात जिनेश्वरना श्रागममां नथी कही, तेम पुर्गल श्रने जीव ए बें एक किया करे नहीं श्रथवा बीजानी किया हे श्रने करनार वली बीजोज हे, एवं पण हे नहीं, एटले पुर्गलनी किया जीव न करे श्रने जीवनी किया पुर्गल न करें।। ५०॥ ए रीते करें एक श्रने तेनुं फल जोगवनार बीजोज होय एवं बने नहीं, एवं जिनेश्वरना श्रागममां नथी कह्यं, एटले पुर्गलनी कियानुं फल जीव जोगवे नहीं, केमके जे कर्जा तेहिज जोक्ता; जे कर्म करे तेज फल जोगवे ए वात केहेवत प्रमाणे खरी हे.।।५१॥

जाव कर्मनी कर्त्तव्यता के किया तेतो स्वंयं सिद्ध न याय; एटले जाव कर्म पो तानी मेले सिद्ध नही याय. तेथी एवं ठरे ठे के जे जगत्नी किया करे ते जाव कर्मनो कर्ता ठे; एटले गमनागमन किया करे तेज जाव कर्मनो कर्ता जगत् वासी जीव ठे ॥ उर ॥ जीव ज कर्ता अने जीवज जोक्ता ठे, जीवनी चल विचलताथी जाव कर्म उपजे ठे, एथी जावित कर्म जीवनी चाल ठे ए जावित कर्मने पुजल करें नहीं, तेम जोगवे पण नहीं, एमां जे अद्वेत मतवाला दिधा राखे ठे; ते मिथ्या जाल ठे ॥ उर ॥ तेमाटे जे मिथ्यात्वी जीव ठे, ते जावित कर्मने करे ठे. तेणे करी सुख इःख आपदा संपदा सदा सहजे जोगवे ठे ॥ उ४ ॥

हवे एकांत वादिसांख्यमतना वचननुं वर्णन करे हे:-श्रथ एकांत वादी वर्णनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोई मूढ विकल एकंत पछ गहें कहें श्रातमा श्रकरतार पूरन परम है; तिन्हसो ज को जकहें जी ज करता है तासो, फेरी कहें करमकों करता करम है; ऐसे मिध्यामगन मिध्याती ब्रह्म घाती जीव, जिन्हें के हिये श्रना दि मोहको जरम है; तिन्हको मिध्यात दूरि करिबेको कहें गुरु स्यादवाद परवान श्रातम धरम है ॥ ७५ ॥

श्रर्थः— कोई मोह मूढ जीव ज्ञानवडे विकल एकांत पक्त यहीने एम कहें के, श्रात्मा श्रकत्तां हे, परम पूर्ण हे, ते एकांत वादीने कोई एवं कहे के, श्रात्मा कर्ता हे, तेने सांख्यमित प्रमुख एकांत वादी कहे हे के, कर्मनो कर्ता कर्मज हे. एवा मिथ्यात्वमां मग्न मिथ्यात्व जीव ब्रह्म घाती हे. तेमना हैयामां श्रनादि का लग्नी मोह कर्म लाग्युं रहे हे, ते मिथ्यात्वी जीवनुं मिथ्यात दूर करवाने स्याद्वाद रूप जे श्रात्म धर्म हे, ते धर्मज बधी रीत प्रमाण करी कहे हे॥ ७५॥

हवे जेम स्याद्वाद वस्तु खरूप हे तेम कहे हे:-श्रथ स्याद्वाद कथनं:-

॥ दोहाः ॥- येतन करता जोगता, मिथ्या मगन श्रजानः नहि करता नहि जो गता, निह्चे सम्यकवान ॥ ७६ ॥ संवैया इकतीसा॥:- जैसे सांख्यमति कहै श्रवख श्रकरता है सर्वथा प्रकार करता न होइ कब ही; तैसे जिनमति ग्रह मुख एक पक्त सुनि, याही जांति माने सो एकंत तजो श्रवही, जोखों छुरमति तौखो करमको कर ता है, सुमती सदा श्रकरतार कह्यो सब ही; जाके घट झायक सुजाउ जग्यो जब ही सो, सोतो जग जाखसो निराखो जयो तबही ॥ ७७॥

अर्थः- मिथ्यात्वमां मग्न अजाण थको चेतन कर्ता है अने जोगता पण है अने समिकति जीव निश्चयथी कर्ता पण नथी अने जोक्ता पण नथी ॥ ५६॥

जेम सांख्यमित पोताना मतमां एवी प्ररूपणा करें हे के, जे श्रवक्तरूप हे ते स विथा श्रक्ता हे, पण क्यारे कर्ता थतो नथी, श्रने सत्व रज तम गुण प्रकृति कर्ता हे, एरीते जे सांख्यमितवाला कहे हे, तेम कोई जिनमती पण कोई गुरुना मुख्यी निश्चय नयनो एक पक्त सांजलीने एमज माने, एटले जीवने श्रक्ता माने हे. पणश्री जिनेश्वरना मतमां स्याद्वाद पक्त हे. ते एवो हराव हे के ज्यां सुधी छुष्ट बुद्धि मि ध्यामती श्रहं बुद्धिमां हे, त्यां सुधी जीव कर्मनो कर्ता हे; श्रने सुमित श्रावेथी सदा श्रक्ता हे, जेवो हे तेवोज श्रक्ता कह्यो, जेना घटमां पोतानो ज्ञायक स्वजाव ज्यारे जाग्यो ते वखतथीज ते जगजालथी निरालो थइ, तेणे श्रधं पुजल पराव र्त्तमां संसार लावी मुक्यो॥ 55॥

हवे एकांत वादी बौधमतीनि बुद्धिनुं वर्षन करेंग्ने: स्थय बौध मित वर्षनं ॥ दोहरा ॥— बोध विनय वादी कहै, बिनु जंगुर तनुमांहि; प्रथम समे जो जीव है, जितय समे सो नांहि ॥ ७० ॥ ताते मेरे मतविषे, करे करमजो कोइ; सो न जोग वे सरवथा, ख्रीर जोगता होइ ॥ ७ए ॥

श्रर्थः—बौध क्ति वादी है, ते एवं कहे है के शरीरमां रेहेनारों जे पदार्थ है ते क्तिण्तंग्रर हे एटखे प्रथम समयमां जे जीव पदार्थ शरीरने विषे है, ते बीजा समयमां न पामिये, एथी सर्व क्तण्तंग्रर है॥ ७०॥ वही बौध कहे है के मारा मनमां एवी श्रद्धा हरी है, के जे कोई कर्म करेहे, ते तो कर्मना फखनों जोक्ता नथी. क्तण तंग्रर पणाने हीधे बीजोज जोक्ता थाय है॥ ७ए॥

हवे एकांत वादी बौधमतीना खंगननो उपदेश करेते:—श्रथ बौध मतखंगन उपदेश:—
॥ दोहरा ॥—यह एकंत मिथ्यात पप, दूरि करनके काज; चिद विद्यास श्रविचल कथा, जापे श्री जिनराज ॥ ए० ॥ बालायन काहू पुरुष देख्यो पुर कइ कोइ; तरुन जये फिरिके लख्यो, कहे नगर यह सोइ ॥ ए१ ॥ जो जुहु पनमे एक थो, तो तिन्हि सुमिरन कीय; श्रोर पुरुषको श्रनुजव्यो, श्रोर न जाने जीय ॥ए१॥ जवयह वचन प्रगट सुन्यो, सुन्यो जैनमत शुद्ध; तब इकांत वादी पुरुष, जैन जयो प्रति बुद्ध ॥ए३॥

श्रर्थः— ए जे एकांत क्षणजंग्ररपणुं ते मिध्यात्व पक्त हे, तेने घूर करवाने चिद्वि लास श्रविचल कथा के जीवना श्रचल पदनी वात सामान्य केवलीना राजा श्री जिनेश्वर देव कहेहे। ॥ ७० ॥ कोईक पुरुषे वाल्यावस्थामां एक नगर दीहुं होय ने ते पढ़ी ज्यारे जुवानीमां श्राट्यो त्यारे फरीथी तेज नगरने तेणे जोगुं लारे तेने रेहेतां रेहेतां स्मृति श्रावी के, श्रा नगर तो में वालपणामां जोगुं हतुं तेज हे। ॥७१॥ हवे श्रही जीवना श्रचलपणानो संजव देखाडेहेः—के, बेहु कालमां जो ते एकज हतो ते वारे ते पुरुषे वालपणामां ते नगर जोगुं हतुं लारे तेने जुवानीमां तेनुं समरण थयुं ए वात सल हे। एटले वने वलतमां नगर तेज लहं हो, तेम एक पुरुषनो श्रमुजव के जोगवेलुं कार्य तेने बीजो पुरुष जाणी शके नही। ॥ ६२ ॥ ज्यारे श्रा वात प्रगट सां जली श्रने जैनना शुद्ध मतनी वात सांजली लारे एकांतवादी पुरुषे प्रतिवोध पामीने जैनमत यहण कीधो श्रने बौधमतने होडी दीधो। ॥ ६३ ॥

हवे बौधमतीना क्रणजंग्ररपणामां सद्दहणा केम थई ते कहे हे:-श्रथ बौध मतीकी सद्दहना कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः॥— एक परजाय एक समैमे विनसि जाइ, दूजी परजाय दूजे समै जपजित है; ताकी उल पकरिके बोध कहें समै समै, नवो जीव उपजे पुरातनकी षति है; ताते माने करमको करता है ख्रीर जीव, जोगता है ख्रीर बाके हिय ऐसी मित है; परजे प्रवानको सरवथा दरब जाने, ऐसे हुरबुद्धिकों ख्रवस्य हुरगित है ॥ छ॥ ख्रशः— हरकोई इव्यनो एक समयमां जे एक पर्याय ठे, इव्य, केत्र, काल, जा

श्रर्थः— हरकोई ड्रव्यनो एक समयमां जे एक पर्याय हे, ड्रव्य, क्तेत्र, काल, जा वने लीधे श्रवस्था जेद हे, तेतो पर्याय ते समदमांज विनाश पामे हे, श्रने बीजा समयमां बीजो पर्याय छपजे हे, एवी जैननी वाणी हे. ते वातनेज बौध मतीवाला निश्चलपणे पकनी राखीने कहे हे के, समय समय नवो नवो जीव छपजे हे, श्रने पाहला जुना जीवनी हाणी शायहे; वली श्राम मानेहे के कर्मनो कर्ता कोई बीजो जीवहे श्रने कर्मनो जोक्ता कोई बीजोज जीव हे. एम बौधमित कहेहे; ड्रव्यना पर्यायतो समयमां फरे हे, तेने बौधमित पर्याय प्रमाणने सर्वथा प्रकारे ड्रव्यज जाणे हे. एवा डुर्बुद्धिने श्रवश्य डुर्गितज प्राप्त थाय हे. ॥ ७४ ॥

हवे डुर्बुद्धि श्रने डुर्गतिनु लक्षण कहे हे:-श्रथ डुर्गति स्थित लक्षण:॥ दोहराः ॥-डुर्बुद्धी मिथ्यामती, डुर्गति मिथ्या चालः, गिह एकंत डुर्बुद्धिसों,
मुगति न होइ त्रिकाल ॥ ७५ ॥ कहे श्रनातमकी कथा, चहे न श्रातम ग्रुद्धि, रहे
श्रध्यातमसों विमुल, डुराराधि डुर्बुद्धि ॥ ७६ ॥सवैया इकतीसाः ॥-कायासें विचारि

प्रीति मायाहिमे हारि जीति, ब्रिये हठरीति जैसे चरिलकी सकरी; चूंगुलके जोर जैसे गोह गहि रहे जूमि,त्योंहि पाई गाडेपेंन ठोडेटेक पकरी; मोहकी मरोरसों जरमको न ठार पावे, धावे चिहु और ज्यों बढावे जाल मकरी; ऐसी दुर्नुद्ध जूलि फुठके फरोखे जूली, फूली फिरे समता जंजीरिनसों जकरी। ॥ 59 ॥ बात सुनि चौक ठठे वातिहसों जौकी ठठे, बातसों नरम होइ बातहीं श्रकरी; निंदाकरे साधुकी प्रशंसा करे हिंसककी, साता माने प्रजुता श्रसाता माने फकरी; मोख न सुयाइ दोख देखे तहां पेठि जाई, कालसो डराई जैसे नाहरसों बकरी; एसी हुरबुद्धि जूलो जूठके फरोखे जूली, फुली फिरे ममता जंजीरिनसों जकरी ॥55॥

श्रर्थः— मिथ्यामितने छुर्बुिक किह्ये, श्रने मिथ्या चालने छुर्गित किह्ये, जे छुष्ट बुक्ति हे, ते एकांत मतीने प्रहणेकरी रहेहे, तेने त्रणे कालमां मुक्ति न थाये ॥ए॥ हवे छुर्बुिकनी व्यवस्था कहेहेः—जे श्रात्माथी जिन्न होय ते श्रनात्मा किहये. तेश्र नात्मानी कथा करे, श्रात्मानी शुक्तता न जाणे, श्रने जे श्रात्माने श्राश्रयी विचार हे तेने श्रध्यात्म किहये, ते तेनाथी छुराराध्य के छुखे समजायो जाय; तेनाथी छुर्बुक्ति जीव विमुख रहे हे ॥ ए६ ॥ छुर्बुिकनो विचार कहेहेः—कायासाथे प्रीति विचारे; हार जीत करी मायामां गही रहे; हठ पकडी रहे; जेम हारल पक्ती पोताना पगमां लाकडी पकनीज राखे होडे नहीं विद्या हवेली छपर चमावे हे, ते बंधना जोरथी गोह जुमीने पकडी राखे, ने त्यां पोताना पग घटी राखे, पण जे टेक पकडी ते मूके नहीं, तेम मोह कर्मनी मरोक लागी तेथी ज्ञजनो होर पामे नहीं, एटखे ज्ञम होने नहीं, जेम मककी जाल वधारती पसारती चारे तरफ दोने हे, तेम चारे तरफ दोडती फरे, ए रीते छुर्बुक्तिये जूली जुठने फरुले छुली रहेहे, ने ममतारूप छु र्बुक्तना जंजीरनी वेनीने जकडी रह्यो हे, ॥ ए७ ॥

बली एवाने कोई अध्यात्मनी वात कहे त्यारे चोंकी उठे, ने जों जों करी उठे,कदा यह करे अने पोताना मनने रुचती वातथी नरम थाय ने मनमानती वात न थाय तो प्रकृति अकारी करे, मोक्तमार्गना साधकनी निंदा करे, अने जे हिंसक अधर्म कहें हो, तेनी प्रशंसा करे, पोतानी मोटाईने साता सुख समजे असाताने फकीरी जाणे मोक्तनी वात सुहाय नही, ज्यां कोई दोष जुए त्यां चतुराईनुं अजिमान बतावे, अने मृत्युथी एवो डरे के, जेम नाहीरथी बकरी मरे, ए रीते मरतोरहे एम डुबुद्धि जीव स्रूट्यो फरेठे, ने जूठने फरुखे जुलतो ममतारूप बेमीमां बंधाई रह्यो ठे. ॥ उठ ॥

www.jainelibrary.org

हवे एकांत पद्मीना मतनी स्थापनाजपर श्रानेकांत स्याद्वादी मतनी प्रशंसा करेंगे:-श्रय श्रानेकांत श्लाघा कथन:-

॥ किवत्त ढंदः ॥— केई कहै जीव ढिन जंग्रर, केई कहै करम करतार; केई कर्म रहित नित जंपहि, नय अनंत नाना परकार; जे एकंत गहै ते मूरख, पंडित अने कांत पखधार; जैसे जिन्न जिन्न मुगतागन, गुंनसों गहत कहावे हार. ॥ ७७ ॥

॥ दोहराः ॥– जथा सूतसंग्रहविना, मुक्तमाल नहिं होइ; तथा स्याद्वादी विना, मोख न सघे कोई. ॥ ए० ॥

श्रर्थः— कोई बौध मती जेवा तो जीवने क्षणजंग्रर कहे हे; कोई मिमांसक सर खा कमेने कर्ता मानेहे; कोई सांख्यमती सरखा तो सदा जीवने कमेरहित कहे हे. एरीते श्रनंत नय नाना प्रकार कहे हे, एमांथी जे एकांत पक्षज यही रहेहे ते तो मूर्ख हे श्रने पंक्ति जन जे हे, ते श्रनेकांत पक्ष यहेहे, जेम एक मालामां मोतीनो समुदाय श्रापणी श्रापणी सत्तामां सह जुदा जुदा हे पण ते सुतरमां परोव्याथी सर्वेनुं एक हार नाम पडे हे, ॥ ७ए ॥ तेवो श्रनेकांत मत हे, केम के, सूतरना संगिव ना मोतीनी माला बने नही, तेम स्याद्यादमत धारण कीधा शिवाय मोक्षनो साधन हार श्राय नही. ॥ ए० ॥

हवे मत जेदनुं कारण पांच नय हे तेनुं वर्णन करेहे:— श्रय पंच नय वर्णनं:—
॥ दोहराः ॥— पद सुजाछ पूरवडदे, निह्चे उदिम काखः; पद्मपात मिथ्यात पथः,
सरवंगी सिव चाल. ॥ ए१ ॥

श्रर्थः— कोई पद वस्तु स्वजाव माने, कोई पूर्व कर्मनो उदय माने, कोई निश्चय माने, कोई उद्यम माने, श्रने कोई काल माने. एमां पद्मपात करी जे एकनेज माने ते मिथ्यात्व मार्ग कहेवाय. ॥ ए१ ॥

हवे जुदा जुदा मतनी व्यवस्था कहे हे:- अथ मतव्यवस्था कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— एक जीव वस्तुके श्रानेक रूप ग्रन नाम, निरजोग ग्रुद्ध पर जोगसों श्रग्रुद्ध है; वेद पाठी ब्रह्म कहै मीमांसक कर्म कहै सिवमित शिव कहै बौध कहे बुद्ध है; जैनी कहे जिन, न्याय वादी करतार कहै, उहां दरसनमें वचनको घि रुद्ध है; वस्तुको सरूप पहिचाने सोइ परवीन, वचनके जेद जेद माने सोई ग्रुद्ध है॥

श्रर्थः—जीव वस्तु एक श्रने तेना गुण श्रनेक हे, रूप श्रनेक हे, श्रने नाम श्रनेक हे, निरजोग हे एटखे परसंयोग विना पोताना खजावमां रह्यो शुद्ध हे, श्रने परना संयोगश्री श्रश्च हे, वक्षी वेद पाठी प्रजावे करी एने ब्रह्म कहेहे. मिमांसक जै मिनीय एने कर्म कहेहे; शिवमती एटखे वैशेषिक एने शिव कहेहे, बौधमती एने

बुद्ध कहें हो, श्रने जैनी एने जिन कहें हो, न्यायवादी नैयायकादिक एने कर्ता कहें हो, एरीते हुए दर्शनमां शुद्ध जीवने कहें वामां एकएकथी वचननो विरोध हे. ए हुए दर्शनमां जे वस्तुनुं खरूप डेलखे तेज प्रवीण कहें वाय, श्रने वचनना जेद प्रमाणे सम जिरूढ नयनिमित्ते वस्तुमां जेद प्रवीण माने तेज शुद्ध वात है ॥ ए१ ॥

हवे वए दर्शननामत स्थापन करे वे:- श्रथ मतस्थापना कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—वेदपाठी ब्रह्म माने निहचे स्वरूप गहै, भीमांसक कर्म मा ने जदेमें रहतु है; बौधमित बुद्ध माने सूठम सुजाउ साधे, शिवमती शिवरूप कालकी हरतु है; न्याय अंथके पढेया थापे करतार रूप, उद्दिम उदीरी उर आनंद लहतु है; पांचो दरसनी तेतो पोषे एकएक छंग, जैनी जिनपंथी सरबंगी ने गहतु है ॥ ए३॥

श्रर्थः—वेद पाठी के० वेदांती जीव वस्तुने ब्रह्म मानीने निश्चय स्वरूपने प्रहेते. ए ट्रेस एक श्रद्धेत मत धारेते. मिमांसक के० यक्तना करनार जीवने कर्मरूप मानेते, तेथी जदयरूप थया जे संस्कार तेनुं प्रहण करेते. बौधमती जीवने बुद्धमानीने क्रणजंग्रर पणाथी स्क्र्म खजाव साधेते, तेथी वस्तुना स्वजावनेज कर्त्ता मानेते. शिवमती जे वे शेषिक ते जीवने काबरूप मानेते, श्रद्ध शिवने कर्त्ता मानेते. न्याय प्रंथना जणनारा प्रमाणादिक सोख पदार्थने मानेते, श्रद्ध जीवनेज कर्त्ता मानीने जद्यमनी जदीरणामां चित्तने श्रानंद करी मग्न रहेते, एम ए पांचे दर्शन वस्तु स्वजावादिक पांच नयना एक एक श्रंग पोषेते, एटखे एकांत पक्त प्रहेते. श्रने जे जैन मार्ग केहेवाय ते, तेतो सर्वांगी सर्व नय प्रहण करेते ॥ ए३॥

हवे जे मत स्थापनामां जुदी जुदी बुद्धि कही ते सर्व एक वे, एवं जणावेवे:-श्रय मत स्थापना एकत्वी कथनं:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— निह्चे श्रजेद श्रंग उदे ग्रनकी तरंग, उद्यमकी रीति विये उद्धता सकति है; परजायरूपको प्रवान सूठम सुजाउ, कालकीसी ढाल परि नाम चक्र गित है; याही जांति श्रातम दरबके श्रनेक श्रंग, एक माने एककों न माने सो कुमति है; टेक डारि एकमे श्रनेक खोजे सो सुबुद्धि, खोजी जीवे वादी मरे साची कहवति है ॥ ए४ ॥

श्रर्थः—सर्व जीवमां बक्तण जेद नथी एवं निश्चय श्रंग ते साचो तरतम योगे गु णना तरंग उठी रह्या वे तेथी उदय श्रंग साचो वे, श्रने जीवनी उद्धत शक्ति वे. त्यां ते प्रवर्ते वे, तेथी उद्यम श्रंगवडे कर्त्ता एणं साचुं वे, श्रने पर्याय क्रण क्रणमां जुदा जुदा वे, तेनारूपनुं प्रमाण सूक्त वे. तेथी बौध सूक्त खजावने साधेवे, ते पण सांचु श्रने परिणामनी गति वे, ते फरता चक्रनी शक्ति वे, ते काख द्रव्यनी ढाख वे तेथी ईहां कालने कर्ता कहा। ते पण साचा हे, एरीते आत्मड्यमां अनेक अंग पामीये पण एमांथी एकज अंग माने अथवा एक अंग न माने तेनुं नाम कुमति हे, जे ए कांत पक्त होमीने एक वस्तुमां अनेक अंग खोजे तेनुं नाम सुबुद्धि कहीए जेम के खोजी जीवे ने वादी मरे ए केहेवत हे, ते साची है ॥ ए४ ॥

हवे स्याद्वादनुं रूप कहे हे:-श्रथ स्याद्वाद स्वरूप कथनः-

॥ सर्वेया इकतीसाः ॥– एकमें श्रनेक हैं श्रनेकहीमें एक है सु, एक न श्रनेक क बु कह्यों न परतु हैं; करता श्रकरता है जोगता श्रजोगता है उपजे न उपजिति मूए न मरतु हैं; बोखत विचारत न बोखें न विचारे कबु, जेषको न जाजन पे जेखसो धरतु हैं; ऐसो प्रजु चेतन श्रचेतनकी संगतीसो उखट पखट नट बाजीसी करतु है ॥ एए॥

श्रयः- एक इत्यमां श्रनेक पर्याय हे, श्रने श्रनेक पर्यायमां एक इत्य हे, ए यी हर कोई वस्तु एक हे, श्रयवा श्रनेकज हे, एम कांई केहेवातुं नथी. व्यवहार मां कर्ता हे, निश्चयमां श्रकर्ता हे, व्हवहारथी जोक्ता हे, निश्चयथी श्रजोक्ता हे, व्यवहारथी हपजे हे, निश्चयथी हरपत्ति नथी, व्यवहारथी मुह, ने निश्चयथी न श्री मुह, व्यवहारथी बोलेहे, विचारेहे, ने निश्चयनयथी कांइ बोले पण नहीं, ने विचारे पण नहीं, श्रविकहपी हे, निश्चयथी जेषनुं जाजन के स्थानक नथीं, व्यवहारथी जेलनो धरनार हे एवो चेतनवंत जे ईश्वर हे, ते पौजिलक श्रचेतनि संगतीथी हल पालट थई रह्योंहे, जाणे नटनी बाजीनो खेल करतो होय नी तेम खेल करेहे. ॥ एए ॥

श्रय श्रनुत्रव व्यवस्था कथनं:-

॥ दोहरा ॥- नट बाजी विकलप दसा, नाही श्रानुजी जोगः केवल श्रानुजी क रनको, निरविकलप उपयोगः॥ ए६॥

श्रर्थः— श्रमुत्रवमां श्रात्मद्भव्यनी जे श्रवस्था पामिये ते कहे हे. पूर्वे कही जे नट सरखी जीवनी जलट पालट बाजी हे ते तो विकल्प दशा हे. ए दशा श्रमुत्रवमां यो ग्य नथी, निःकेवल श्रमुत्रव करवाने निर्विकल्प जपयोग श्रापवो तेज सत्य हे.॥ ए६॥

हवे श्रनुजनमां निर्विक हप जपयोग श्रापनो तेनुं दृष्टांत कहे हे:-

श्रय श्रनुती दृष्टांत कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे काहु चतुर संवारी हे मुगतमाख, मालाकी कियामें नाना जांतिको विज्ञान है; कियाको विकलप न देखे पहिरन वालो, मोतीनकी शो जमें मगन सुखवान है; तेसे न करे न जुजे श्रथवा करे सु जुजे, डिर करे डिर जुजे सब नै प्रवान हैं; यद्यपि तथापि वीकलप विधि त्याग जोग, निरविकलप श्रनुजी श्रमृत पान है. ॥ ए७ ॥

श्रर्थः — जेम कोई चतुर पुरुषे मोतीनी माला संमारीने बनावी ने तेमां जात जातनुं विज्ञान हे, पण ते मालानो पहेरनारों तेनी कियानो विकल्प जोतो नश्री, पण मोतीनी शोजाश्री मगन ने सुखवान श्रई रहे हे. जेम मोतीनी मालामां श्र नेक विज्ञान हे, तेम श्रही पण श्रनेक विकल्प हे, श्रात्मा कर्जा नश्री, जोक्ता नश्री, श्रात्मा कर्जा हे, श्रात्मा कर्जा हे, श्रात्मा कर्जा हे, श्रात्मा कर्जा हे, श्रात्मा होना हे, श्रात्मा कर्जा हे, श्रात्मा होना हे, श्रात्मा होना हो, श्रां जो गवनारा बीजा हे; ए सर्व नय प्रमाण हे. यद्यपि ए सर्व नय प्रमाण हे, तथापि ए सर्व विकल्प विधि त्यागवा योग्य हे. केमके श्रानुज्ञव जे हे तेतो निर्विकल्प हे श्राने श्रामृतपान समान हे, हपादेय हे. ॥ ए९ ॥

हवे स्याद्वादी श्रात्माने कर्त्ता जे नयथी मानेवे ते कहेवेः-श्रथ कर्त्ताकथनः-॥ दोहराः ॥- दरव करम करता श्रवख, यहु विवहार कहाजः निहचे जोजे सो

दरब, तेसो ताको जान. ॥ ए० ॥

श्रर्थः-पुजल ड्रव्यरूप कर्मनो कर्ता श्रलख पुरुष श्रातमा हे, ए व्यवहारमां केहे वाई शके हे, निश्चय नयमां तो ए वात हे के जेवुं जे ड्रव्य होय तेवुं तेनुं जाव स्व-रूप होय, एथी पुजल ड्रव्यनी किया पुजलवडेज बनेहे. ॥ ए० ॥

हवे जेवुं विपरीतपणुं बुद्धिमां जासेवे, तेवुं कहेवे:-अथ विपरीत बुद्धिकयनं:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञानको सहज ज्ञेयाकाररूप परिनमे, यद्यपि तथापि ज्ञान ज्ञान रूप कह्यो है; ज्ञेयज्ञेय रूप यों श्रानादिहीकी मरजाद, काहु वस्तु का हुको सुजान निह गद्यो है; एते परि कोन मिथ्या मित कहे ज्ञेयाकार प्रति जास निसों ज्ञान श्रद्धाऊ व्हे रह्यो है; याहि छुरबुद्धिसों विकल जयो नोलत है, समुके न धरम यों जर्ममाहि वह्यो है ॥ एए ॥

श्रर्थ:—इाननो ए सहज स्वजाव हे के, घट पट प्रमुख इेय के जाणवाजोग जे पदार्थ हे, तेनो जे श्राकार हे, तेजरूपे श्रात्मानुं ज्ञान परिणमे, यद्यपि ए वात प्रमाण हे तो पण ज्ञान जे हे, ते ज्ञानरूपज कहेवाय पण झेयरूप न कहेवाय श्रने जे झेय पदार्थ हे ते ज्ञानमां परिणम्यो हे तोपण झेयरूपज कहेवाय, पण ज्ञानरूप न कहेवाय एवी श्रनादि कालनी मर्यादा हे, कोई वस्तु बीजी वस्तुनो स्वजाव ग्रहण करे नही, तेम जुदो जुदो स्वजावपण धारण करे नही, एवी मर्यादावंध वातहे, तेम हतां कोई वैशेषिक प्रमुख मिथ्यामित कहेहे, के झेय पदार्थना श्राकार प्रति जासे हे, तेथी ज्ञान पदार्थ श्रद्ध श्रद्ध रह्यो हे. ज्यारे ए श्रद्ध इत्पण्ण मटी जहो तारे मुक्तिथहो, एज इष्ट

बुद्धिथी मिथ्यात्व मोहनो विकल्प थयो, तेथी श्रंहि तहिं विकल थईने डोले हे, श्र ने धर्मके० वस्तुनो स्वजाव जाणतो नथी. तेथी ज्रममां वह्यो फिरे हे. ॥ एए ॥ हवे सर्व पदार्थ पोताना स्वजावमां व्यापीरह्याहे ते कहेहे:- अथव्यापकताकथनः-

॥ चोपाईः॥–सकल वस्तु जगमें श्रसहाई, वस्तु वस्तुसों मिले न काई; जीव वस्तु जाने जग जेती, सोऊ जिन्न रहे सबसेती ॥ ४००॥

श्रर्थः—जगत्नेविषे सर्व जाव श्रसहायपणे वर्ते हे. कोई कोईनो सहाय कारी नश्री, एज श्रर्थ प्रगट पणे कहे हे, के एक वस्तु बीजी विखक्तण वस्तु साथे मले नही. जगत्मां जेटली वस्तु हे, तेटलीने जीव जाणे हे. एटले सर्व क्रेय वस्तु जी वना क्वानमां परिणमे हे, तोपण जीव सर्व वस्तुश्री जुदोज रहे हे, एम पोतपोतानां जुदां लक्तण हे तेथी जुदां रहेहे ॥ ४००॥

हवे व्यवहारनी केहेवत देखाडे हे:-श्रय व्यवहार कथनं:-

॥ दोहराः ॥– करम[ं]करै फल[ं]जोगवै, जीव श्रज्ञानी कोइं; यह कथनी व्यवहार की वस्तु स्वरूप न होइ.॥ ४०१॥

श्रर्थः-कोई श्रक्तानी जीव हे,ते कर्मने करेहे श्रने तेनुं फल पण जोगवेहे, ए केहेव त व्यवहारमां हे. पण जेवुं वस्तुनुं स्वरूप हे, तेवी केहेवत नथी॥ ४०१॥

हवे व्यवहारने प्रमाण करे एवी विपरीत बुद्धिनुं वर्णन करे हे:-श्रथ विपरीत बुद्धि वर्ननं:-

॥ कवित्त ढंदः—॥ क्रेष्ठाकार क्ञानकी परिनति, पैं वह क्ञान क्रेय निह होइ; क्रेय रूप खट दरव जिन्न पद, क्ञानरूप श्रातम पदसोइ; जाने जेद जाज सुविचढन गुन ख ढन सम्यग् हग जोइ; मूरख कहे क्ञान मिह श्राकृति, प्रगट कखंक खखे निहकोइ॥१॥

श्रर्थः—जेवो क्षेय वस्तुनो श्राकार हे, तेवी ज्ञाननी परिणती हे. एटखे ज्ञान घट पटादिक क्षेयना श्राकार परिणाम हे, पण क्षान हे ते क्षेय रूप न श्राय. जगत्मां जे क्षेय वस्तु हे ते ह इत्य हे तेतो जिन्न पद के जूदा जूदा खनावधी केहेवा योग्य हे, श्रम जे श्रात्मापणुं किहे ये तेतो ज्ञानरूप हे एवो जावनो जेद हे, ते ग्रण बक्तण है खखीने जे जलो विचक्तण श्रध्यात्मनो वेत्ता सम्यग् दृष्टी होय तेज जाणे पण वैशे पिक मित जेवो मूर्ख होय ते ज्ञानमां श्राकार विकल्प जोईने कहे, श्रहो! श्रा ज्ञानमां श्राकार जासे हे तेतो प्रगट कलंक हे. तेने कोई केम लखे नहीं ? ॥ १ ॥

हवे मिथ्यामति जीव पोतानी मतिने दृढ करेके:-श्रथ मिथ्यामति कथन:-

॥ चोपाईः॥-निराकार जो ब्रह्म कहावे; सो साकारनाम क्यों पावे; क्षेयाका ज्ञान जबताई; पूरन ब्रह्म निह तबतांई ॥ ३ ॥ क्षेयाकार ब्रह्म मख माने; नास करनको उ दिम ठाने; वस्तु सुजान मिटे निह क्योंही; ताते षेद करे सठयोही ॥४॥ दोहराः॥
मूढ मरम जाने नही, गहे एकांत कुपक्त; स्याद्वाद सरवंगमें, माने दक्त प्रत्यक्त॥५॥

श्रयः-ब्रह्मतो निराकारज हे, ते साकार नाम केम धारण करे, जो ब्रह्मने श्राकार मानीये तो साकार केंद्र जोये, ते केम बने, ज्यांसुंधी क्षेयनो श्राकार कानमां प्रति जासे हे, त्यांसुंधी पूर्ण ब्रह्म न केहेवाय ॥३॥ इय वस्तुनो जे श्राकार के० प्रति जासहे ते ब्रह्मने मलरूप माने हे, ते मलनो नाश करवाने ज्यम करे, जे वस्तुनो जेवो ख जाव होय तेवोज रहे पण कदी मटे नहीं, तेथी मूर्वजे शह लोकहे ते श्रमधो जूहों देष करे हे॥ ४॥ जे मूर्व हे ते मर्मनी वातने न जेलखे ने एकांत पक्ष जे जे कुपक्ष हे तेनेयहे श्रम जे डाह्यो पुरुष हे, ते स्याद्वाद मतना श्राश्रयथी सर्वांगमय प्रत्यक्ष पणे माने, एटले निराकार साकार सर्व नय माने॥ ८॥

हवे स्याद्वादने ग्रहण करनार जेसम्यक्तवी हे तेनी स्तुति करे हे:-श्रथसम्यक्तव स्तुति:-

॥ दोहराः ॥–शुद्ध दरव अनुजी करे, शुद्ध दृष्टि घटमांहि; ताते सम्यग्बंत नर, सहज छठेदक नांहि ॥ ६ ॥

श्रर्थः-सम्यक्त्वीना हृदयमां जे श्रनुजन हे, तेज शुद्ध ड्रव्यने शुद्ध करे हे. केमके, हृदयमां वस्तु स्वजाव जाणवाथी शुद्ध दृष्टि हे, तेथी जे सम्यक्त्ववंत पुरुष हे, ते स हज खजावनो जहेदक थतो नथी, एटले सहज जावनो जहेद मानतो नथी॥६॥

इवे परवस्तुमां परइव्यनुं अव्यापक पणुं दृष्टांतवडे दृढ करेवे:-

श्रय श्रव्यापक ५व्य कथनः–

॥ संवेया इकतीसाः ॥ जैसे चंदकीरन प्रगटि ग्रुमि सेत करे, ग्रुमिसीत होति सदा जोतिसी रहती है; तैसे ज्ञान सकति प्रकासे हेय जपादेय, ज्ञेयाकार दीसे पे न ज्ञेयकों गहती है; ग्रुद्ध वस्तु ग्रुद्ध परजायरूप परिनमे, सत्ता परवान मांहि ढाहे न ढहती है; सोतो औररूप कबहो न होई सरब था, निहचे श्रनादि जिनवा नी यों कहती है ॥ ७ ॥

अर्थ:—जेम शरद्पुनमनी रात्री समें चंड्रना किरण प्रकाश वमें पृथ्विने श्वेत रूप करें हो, पण ते चंड्रमानी ज्योति कई पृथ्वी बनती नथी, सदा ज्योतिरूप रहें हे, तेम ज्ञान शक्ति एवी हे के जे हेय जपादेय वस्तुने प्रकाशे त्यारे ज्ञान, ज्ञेय वस्तुने आकारे देखायहे पण ज्ञेय वस्तुनुं स्वरूप प्रहण करें नहीं. केमके, जे शुद्ध वस्तु हे ते शुद्ध पर्यायरूप पणेज परिणमें अने जेनी पोतानी सत्ताहे ते जेटलामां वस्तुनुं सङ्घप पणुं हे, तेटला प्रमाण मांहे शुद्ध पर्यायनेज परिणमें हे, पण ए वस्तुनुं

खरूप ढांक्युं रहे नही, तेतो शुद्ध वस्तु कोईनी संगतीथी सर्व प्रकारे बीजे रूपे न याय ए वात निश्चयमां हे, एवी स्त्रनादि कालनी जिनवाणी कहेहे ॥ ७ ॥

हवे वस्तुनुं यथार्थ स्वरूप कहे हे:- अथ यथा खरूप कथन:-

॥ सवैया तेईसाः ॥— राग विरोध उदे तबलों जबलों यह जीव मृषा मग धावे; इान जग्यो जब चेतनको तब कर्म दशा पररूप कहावे; कर्म विले कि करे श्रनु जो तब मोह मिथ्यात प्रवेश न पावे; मोह गये उपजे सुख केवल सिद्ध जयो जगमांहि न श्रावे॥ ए॥

• श्रर्थः—ज्यांसुधी श्रा जीव मिथ्यात्व मार्गमां दोडे हे, त्यां सुधी राग द्वेषनो छद्य हे, श्रने तेथी सत्य मार्गने पामतो नथी. ज्यारे शुद्ध चेतन वस्तुनुं ज्ञान जाग्युं त्यारे तो कमें दशा जे हे ते पररूप जणाय, श्रने श्रात्मा तेथी जुदो जोवामां श्रावे ज्यां चेतननो श्रनुत्तव हे त्यां सत्यार्थ पणे जाणवुं होय ते कमेनुं विलक्तण पणुं करे. एटले जेद विज्ञानवमे जिल्ल लक्षण पणे जाणे, श्रने त्यां मोहरूप मिथ्यात्व प्रवेश करी शके नही. मोह गयाथी सुख समाधिमां केवल ज्ञान प्रगटे श्रने त्यारे जीव सिद्ध श्राय श्रने फरीथी जगत्ने विषे श्रावे नही ॥ ७ ॥

हवे जेम श्चनुक्रमे वस्तु स्वरूपने प्रगट पणे स्वजावने वधारे ते कहेंग्रे:-श्रथ श्चनुक्रम वस्तु स्वरूप वर्द्धमानता कथनं:-

॥ व्यय वंदः ॥—जीव करम संयोग, सहज मिथ्यात रूप घर; राग दोष परिनत, प्रजाव जाने न श्रापापर; तम मिथ्यात्व मिटिगयो, जयो समकित उदोन सिस; राग दोष कबु वस्तु, नाहि विनु माहि गये निस; श्रनुजी श्राज्यासि सुखराशी रिम, जयो नि पुन तारन तरन, पूरन प्रकाशनिहचिंद्व निरखी, बनारसी बंदत चरन ॥ ए॥

अर्थ:—श्रनादि कालनो जीवने कर्म साथे संयोग हे. तेथी सहज संबंधे मिथ्यात स्थिति रूप धारी जीव हे, श्रने क्यारेक जीव रागमां परिणम्यो रहेहे, श्रने क्यारेक द्वेषनी परिणतिना प्रजावथी पोताने तथा परने जाणतो नथी. एवामां क्यारेक मिथ्या त्वरूप श्रंधकार मटी गयो ने समिकतरूप चंद्रमानो प्रकाश थयो तेथी खबर पडीके रागद्वेष कहं वस्तु नथी, एटले जली वस्तु नथी, एम जाणी एना श्रनादरथी राग द्वेष क्षणमां नाश पाम्या श्रने ते पही पोताना श्रनुजवनो श्रज्यास कीधो, तेवारे तो सहज समाधिरूप सुखराशिमां रमी रह्यो. एरीते निपुण सर्व ज्ञानी, तरण तारण समर्थ प्रज थयो. हवे ए पूर्ण प्रकाश श्रनंत काल लगी निश्रय थयो तेना ध्यानने निर्द्धी बनारसीदास ते प्रजना चरणने नित्य प्रते वंदेहे. ॥ ए॥

रागद्देषना हेतुनुं शिष्य प्रश्न करते. यह उत्तर आपेते:—अय प्रश्नोत्तर कथनं:—
॥ सवैया इकतीसाः ॥— कोउ शिष्य कहे स्वामी राग दोष परिनाम ताको मूल प्रेरक कहहु तुम कोनहै; पुग्गल करमजोग किथो इंडिनिको जोग; किथो धन किथो परिजन किथों जोन है; यह कहे उहीं दर्व अपने अपनेरूप, सबनिको सदा असहाई परीनोन है; कोउ दर्व काहु को न प्रेरक कदाचिताते, राग दोष मोह मृषामदिरा अचोन है ॥ १०॥

श्रयं:—कोइ शिष्य श्राचार्यने विनय पुर्वक पुठवा लाग्यो के श्रहो स्वामी, श्रा तमाने राग हेष परिणाम उपजे हे. तेनो प्रेरक निश्चय पणे तमे कोने हरावो हे? ए टखे श्रात्माने पौजलिक कर्मनो योग हे, तेज इहां हेतु हे, के पंचें द्वियनो जोगहेतुहे के धन हेतु हे, के परिवार हेतु हे, श्रथवा मंदीर हेतु हे, ? इत्यादिकोमांथी राग हेष परिणामनो हेतु कोण हे, ते कहो. गुरु कहे हे, हे! शिष्य, ए पुजल संबंध हेतु नथी, तेम द्वाय इंद्रिय हे, तेतो पोतपोताने रूपे पोतपोतानी सत्तामां रहे हे, श्रने सर्व द्वायोनुं परिणमन सदा श्रमहाई हे, कोई कोईनुं सहाय करतुं नथी. तेथी कोई काले कोई द्वाय कोईनुं प्रेरक एटले हेतु नथी, माटे राग हेष परिणामनो हेतु तो मिथ्यात्व मोहकर्मरूप मदिरानी श्रचौन केण उद्धतपणुं हे॥ १०॥

हवे कोई मूर्व राग देष परिणामनुं प्रेरक पुजलनुं बल हे एम कहेहे, तेने गुरु स मजावे हे:– अथ शिष्य प्रश्न गुरु उत्तर कथनं:–

॥ दोहराः ॥— कोज मूरख यों कहें, राग दोष परिनामः पुजलकी जोरावरी, व रते श्रातम राम ॥ ११ ॥ ज्यों ज्यों पुग्गल बल करे, धिर धिर कर्मज जेषः राग दो षको परिनमन, त्यों त्यों होइ विशेष ॥ ११ ॥ इह विधि जो विपरीत पत्न, गहें स इहें कोईः सो नर राग विरोधसों, कबहू जिन्न न होइ ॥ १३ ॥ सुग्रुरु कहें जगमें रहे, पुग्गल संग सदीवः सहज गुद्ध परिनमनको, श्रीसर लहे न जीव ॥ १४ ॥ ताते वि द्वावनविषे, समरश्र चेतन राज, राग विरोध मिथ्यातमें, सम्यकमें सिव जाज ॥ १५ ॥

श्रण्यः—कोई मूर्ख लोक एम कहें हे के, श्रात्मारामिव जे राग द्रेष परिणाम हे, ते पुजलनी जोरावरीथी हे, एटले एज पुजलनुं जोर हे ॥ ११ ॥ जेम जेम कर्म जेल धारीने एटले कर्म वर्गनारूप धारीने पुजल इन्य श्रापणुं बल विस्तारे हे, तेम तेम रागद्रेष परिणाम विदोष रूपे थाय हे, एम श्रात्मने विषे देखाय हे, ए सांख्यमितनुं के हे हुं हे ॥ ११ ॥ ए रीते जे सांख्यमितवाला श्राद्धं विपरीत यहण करे हे, श्रने सर्द हे हे, ते पुरुष राग द्रेषथी एवी श्रद्धावमे पण कदी जुदो थाय नही ॥ १३ ॥ हवे स द्गुरु कहे हे, श्ररे! प्राणी! जगत्मां पुजलना संगमां जीव सदा रहे हे. श्रनादिथी ए पु

www.jainelibrary.org

ज्ञाने जीवतुं संश्लेषपणुं हे, तेथी सहज शुद्ध परिणामवालो जीव श्रवसर न पामे, एटले पोतानुं शुद्ध परिणाम ग्रहिशके नही ॥ १४ ॥ चेतनराय जे हे ते चिद्जावने विषे एटले ज्ञान जावविषे समर्थ हे, एटले जाणपणाना कार्यमां समर्थ हे, श्रने मिथ्यामित निमग्नताथी जाणपणामां राग द्वेष परिणाम देखाय हे, श्रने जीव सम्यग् जावमां रहेहे, त्यारे शिव जाव छपजेहे ॥ १५ ॥

हवे ज्ञान जावमां पुजलनो जाव व्यापी शकतो नथी तेथी परजावनुं अव्यापक पणु कहेनेः-अथ अव्यापकता कथनः-

॥ दोहराः॥—ज्यों दीपक रजनी समै, चिहु दिसि करे जदोत; प्रगटे घट पट रूप में, घट पट रूप न होत ॥ १६ ॥ त्यों सु ज्ञान जाने सकत, ज्ञेय वस्तुको मर्म; ज्ञे याकृति परिनमन पे, तजे न ष्ट्यातम धर्म ॥ १७ ॥ ज्ञान धर्म ष्ट्रविचल सदा, गहे विकार न कोइ; राग विरोध विमोह मय कबहु जूलि न होइ ॥ १० ॥ ऐसी महीमा ज्ञानकी, निहचे है घटमांहि; मूरख मिथ्या दृष्टिसों, सहज विलोके नांहि ॥ १० ॥

श्रर्थः— जेम दीवो रात्रे चारे दिशाने प्रकाशमान करें हे, श्रने तेथी घटपटा दिक पदार्थ प्रगटे हे, पण दीपकनो प्रकाश घटपटरूप थतो नथी। ॥१६॥ तेम सुङ्गान जे हे,ते सर्व इत्य वस्तुनो मर्म जाणे हे. तेना ङ्गानमां इत्य पदार्थनो श्राकार पण परिणमे हे तो पण ङ्गान जे हे ते श्रात्म धर्म श्रुद्ध पणु हां इतुं नथी ॥ १९॥ ङ्गान धर्मथी जाणपणुं ते सदा श्रविचस हे. ए जाणपणामां कोई विकार प्रवेश करे नहीं राग देषमोहमां जीव वहें हे खरों, तोपण जाणपणाने कही जूब तो नथी॥ १०॥ एवो ङ्गाननो महिमा निश्चें स्वरूपे घटमां हे. पण मूरख मिथ्या दृष्टि सहज स्वरूपने विखोकतो नथी॥ १ए॥

हवे श्रनादिकालेथी जीवनो मृढ स्वजाव हे ते कहेहे:-श्रथ मृढ स्वजाव कथनः-।।दोहराः॥- परसुजावमें मगन व्है, हाने राग विरोधः धरै परिग्रह धारना, करे न श्रातम सोध ॥ १०॥

श्रर्थः- शुद्ध चेतन स्वजावथी बीजा स्वजाव जे हे ते पर स्वजाव हे, तेमां मन्न थईने राग देषमां हेरी रह्योहे, श्रने एज राग देषथी परिग्रह्नी धारणा धरेहे पण श्रात्मद्भव्यनो सोध करे नही॥ २०॥

हवे मृद्ने कुबुद्धि श्रने पंडितने सुबुद्धि होय ते कहे हे:-श्रथ कुबुद्धि तथासुबुद्धिविवरनः-

॥चौपाईः॥— मूरखके घट फुरमित जासी; पंिमत हिए सुमित परगासी; फुरमित कुबजा करम कमावे; सुमित राधिका राम रमावे ॥ ११ ॥ दोहराः॥—कुब्जा कारी कू बरी, करे जगतमें खेद; श्रखख श्रराधे राधिका, जाने निज पर जेद ॥ ११ ॥

श्रवीं प्राणीना घटमां छुमित जासी रही है, श्रने पंडितना है यामां सुबुद्धि प्रकाश थई रही है. छुबुद्धि जे हे ते कंसराजानी दासी जे कुब्जा तेना सरखी है. ते कमेनी कमाई करे हैं; श्रने सुबुद्धि जे हे ते राधिका सरखी है. ते श्रात्माराम नाय कने रमामनारी है ॥ ११ ॥ कुब्जा दासी काखी श्रने कुब मी है, ते जगत्मां खेद प्रयास छपजावे एवा काम करनारी है, श्रने सुबुद्धि राधिका जे है, तेतो श्रवख ना यकनेज श्राराधे है. श्रने एज माहारो श्रेष्ट इष्ट नायक है, श्रने बीजा सर्व पर है; एवो जेद जाणे है ॥ ११ ॥

हवे कुबुिक स्रने कुब्जानुं एकसरखुं वर्णन करें हो: श्रिय कुबुिक यथा: ॥ ॥ सवैया इकतीसाः॥ — कुटिल कुरूप स्रंग लगी है पराए संग, स्रपनो प्रवान करि स्रापुहि विकाई है; गहे गित स्रंधकीसी सकती कमंधकीसी, बंधको बढाज करे धंध हीमें धाई है; रांडकीसी रीति लिए, मांच कीसी मतवारी, सांच ज्यों सुठंद डोले जांचकीसी जाई है; घरको न जाने जेद करे पराधिन खेद, याते छुबुिक दासी कुब जा कहाई है ॥ १३॥

श्रयं:— जे कुबुिक हे ने मायाथी कुटीब हे, तेज कुब्जा कुरूप श्रंग वाबीहे, श्रने कुबुिक पारका संगमां लागी रहेहे, तेम कुब्जा पण एवीहे. कुबुिक पोताना श्रमुक प्रमाण वहें पोतेज परवश श्रईहे, श्रने कुब्जा पण तेम वेचाईहे. कवंध एटले मस्तक विना लड़ाई करे तेनी शक्ति बेफाम होएहे, ते श्रांधलानी माफक गित लई डोलतो फिरेहे तेम कुबुिक ने कुब्जापण माथा विनानी फिरेहे श्रने डुबुिक हे ते कर्मना वंधने वधारेहे, ने धंध के राग देष विश्वहमां दोकेहे, तेम दासी पण पारका घर धंधामां दोड़ती फरेहे. कुबुिक पोताना नायकने श्रोलखती नशी, तेथी रांम जेवी रीती राखेहे, तेम दासीपण नायकविना रांडनी रीतेहे. वली सोहागननी रीते मतवारी श्रकी फरेहे. जेम सांड जनावर स्वहंदे मोलेहे, श्रने जांडनी होकरी लाज विनानी हो यहे, तेवी ए कुब्जा दासी हे. जेम कुबुिक पोताना घरनो जेद जे ज्ञानादिक वित्त हे ते जाणे नही, तेम दासी पण घरनो जेद जाणे नही, ने पराधीन श्रकी खेद कस्या करे माटे डुबुिकरूप दासी ते कुब्जा दासी सरखीहे ॥ १३॥

हवे सुबुद्धि श्रने राधिका ए बेनुं एक स्वरूप कही देखामें हो:-श्रथ सुबुद्धि यथा:॥सवैया इकतीसाः॥- रूपकी रसीखी ज्रम कुलफकी की छी सीखी, सुधाके समुद्ध
फीखी सीखी सुखदाई है; प्राची ज्ञान जानकी श्रजाची है निदानकी, सुराची नरवाची ठोर साची ठकुराई है; धामकी खबर दार, रामकी रमन हार, राधा रस पंथ निमें
प्रथनि मेगाई है; संतनिकी मानी निरवानी नूरकी निसानी याते सदबुद्धि रानी रा

धिका कहाई है. ॥ १४॥ दोहराः ॥ नवह कुत्रजा वह राधिका, दो गती मित मानः वह अधिकारिन करमकी, यह विवेककी खान ॥ १५॥ दरब करम पुजल दसा, जा व कर्म मित वक्तः जो सुङ्गानको परिनमन, सो विवेक ग्रनचक्र ॥ १६॥

श्रर्थः— सुबुद्धि श्रात्मरूपनी रसीली हे. श्रने राधा पण रूपनी रसीली हे, श्रने व्र मरूप तालाने खोलवानी कुंची हे. सुबुद्धि शील रूप सुधा समुद्धमां फली रहें हे श्रने राधा पण तेवी हे, एम ए बेह शिल प्रकृतीयेकरी महा सुखदायी हे, ज्ञानरूप जानुनों उदय करवाने प्राची के पूर्व दिशा जेवीहे, निदाननी जाचनारी नथी, एटले निस्ने हीपणे सुबुद्धि श्रने राधिका हे. निरवाची के वचन गोचर नथी, एवे हेकाणे राची रहेहे, जेनी साची ईश्वरता हे धाम के जे पोतानुं श्रात्म घर तेनी खबरदार हे, जेनी साथे रमी रहीहे ते राम एटले पोताना इप्टनी साथे रमनारी हे. राधा रस पंथ ए टले राधावह्मजीना मार्गना रसयंथमां राधानामे ईश्वरनी प्यारी हे, तेवीज सुबुद्धि पण हे. एवी संतजननी मानीती हे श्रने स्वस्थपणे रेहेनारी श्रने नूर के शोजानी नि शाणी हे एवी सुबुद्धि वर्त्तहे, माटे सुबुद्धिने राधिका राणी कहेवी ॥ १४॥ ए रीते कुबुद्धि कुब्जा थई श्रने सुबुद्धि राधिका थई, ए वे पोतपोतानी गति श्रने मित ली धी रहेहे. ते कुबुद्धि के कुब्जा तेतो कर्म बंधनी श्रिकारणी हे, श्रने सुबुद्धि राधिका तो विवेकनी खाण हे. ॥ १५॥ ज्ञानावरणीय श्रादिक इत्य कर्म हे ते पुद्गल रूप हे श्रने मितनी वक्तता हे ते जाव कर्म जाणीए, जे सुज्ञाननो परिणमन हाथ तेने विवेक ग्रणुनं चक्त कहीए॥ १६॥

हवे जाव कर्मना चक्रनी उपर दृष्टांत कहे छे:- श्रथ कर्म चक्र यथा:-

॥किवित्त ढंदः॥— जैसे नर खेखार चोपरको, खाज विचार करै चित चाछ; धरि स वारिसा बुद्धि बखसों, पासाको कुबु परे सुदाछ; तैसें जगत जीव स्वारथको करि छद्य म चिंतवे छपाछ; खिख्यो खखाट होइ सोई फख, कमें चक्रको यही सुजाछ ॥ २९॥

श्रर्थः— जेम कोई चोपटनो खेल करे, ते पुरुष चित्तमां लाज विचारी खेलवानो चाह राखे, एहले होस राखे, पोतानी बुद्धि बलने जुग प्रमुखनो यल राखीने त्रिक चोक प्रमुख दाव उपर सारी संजाल राखीने रमे, पण दाव तो पासाने श्राधीन है. तेम जगतनो जीव उद्यम करीने पोताना खारथनो उपाय चिंतवे, पण पोताना ल लाटमां लिख्युं होय तेज फल थाय,कर्म चक्र उदय माफक थाय एनो एज स्वजावहेश्ड

हवे विवेक चक्र उपर दृष्टांत कहे हे:- श्रथ विवेक चक्र यथा:-

॥कवित्त ढंदः॥— जैसे नर खेखार सतरंजको, समुके सब सतरंजकी घात; चखे चा ख निरखे दोड दख, मोह राग न विचारे मात, तैसे साधु निपुन शिव पथमे खक्तन खखे तजे जतपात; साधे पुन्य चिंतवे त्र्यजे पद, यह सुविवेक चक्रकी वात ॥ १० ॥ । ॥दोहराः॥ – सतरँज खेखे राधिका, कुबजा खेखे सारि; याके निसिदिन जीतवो, वाके निसिदिन हारि ॥ १ए ॥ दोहराः – जाके जर कुबजा बसे, सोई श्रखख श्रजान; जा के हिरदे राधिका, सो बुध सम्यक वान ॥ ३० ॥

श्रयी:—जेम कोईमाण्स सेतरंजनो रमनार सेतरंजना खेखनी सर्व धात के॰ युक्ति श्रमे दाव समजेंग्ने, पोताना पराया दख उदर नजर राखी चाल चाले, पोताना परका वजीर हाथी प्रमुख मोहोरा गण्तिमां राखी मनमां परने मांत करवानुं विचारेग्ने, तेम साधु खोक पंडित हे, ते मोक्त मार्गमां खेले; लक्क्णथी वस्तुने जोय; तेमां उत्पातरूप कार्य होय ते गंडी दे, श्रमे पोतानुं साधन करे, चित्तमां श्रमेद पद विचारे ए विवेक चक्रनी वात हे ॥२०॥ सुबुद्धि राधिका ते सेतरंज खेली रही हे, श्रमे कुमति कुब्जा पासा सरखो खेल खेलेग्ने. तेमां श्रा सुमति राधिका तेनुं विवेक चक्रमां रातदिन जित्रुं थायहे. श्रमे कुमति कुब्जा ते कर्म चक्रमां रातदिन हारेग्ने ॥१०॥ जेनां हैयामां कुमति कुब्जा वसे, तेतो श्रमख श्रातमां श्रमाण हे; श्रमे जेना हैयामां सुमति राधिका वसेग्ने, तेज समकितवंत बुद्ध कहेतां ज्ञाता कहिये॥ ३०॥ हवे ज्यां शुद्धज्ञान हे त्यां शुद्धिकया थाय ते कहेग्ने—श्रथ ज्ञानकिया सहकार कथनः—

॥संवैया इकतीसाः॥—जहां ग्रुद्ध ज्ञानकी कला ज्योत दीसे तहां, सुद्ध परवान ग्रुद्ध चारित्रको श्रंस है; ता कारन ज्ञानी सब जाने ज्ञेय वस्तु मर्म, वैराग विलास धर्म वाको सरवंस है; राग दोष मोहकी दसासों जिन्न रहे याते, सर्वथा त्रिकाल कर्मजालको विध्वंस है; निरुपाधि श्रातम समाधिमें विराजे ताते, कहिये प्रगट पूरन पर महंस है; ॥ ३१ ॥ दोहराः—ज्ञायक जाव जहां तहां, ग्रुद्ध बरनकी चाल; ताते ज्ञान विराग मल, सिव साधे सम काल. ॥ ३१ ॥

श्रर्थः—जे प्राणि विषे जे शुद्ध क्ञाननी कलानो जयोत देखायहे, ते प्राणि विषे तेज वलतमां श्रात्मानी शुद्धता प्रमाण करीने शुद्ध चारित्रनो पण श्रंस थाय ते कारणथी जे क्ञाता होय तेतो क्षेय के० हेय जपादेयरूप सर्व जाणवा योग्य वस्तुनो मर्म जाणे, त्यारे ते हेयने हांडे श्रने जपादेयरूप सर्व जाणवुं तेने प्रहे हे, एवो वैराग्यना विला सनो स्वजाव सर्व श्रंशे करी प्रगट थाय. श्रने वैराग्य श्राव्याश्री राग द्वेष मोहनी दशाश्री प्राणी जिन्न रहेहे, तेथी पूर्वकृत कर्मनी निर्जरा थायहे, श्रने वर्तमानकालमां कर्म न बांघे, जे प्रकृति हाटी गई ते श्रागामिक कालमां बांघे नही, एम सर्वथा प्रकारे कर्मजालनो विष्वंस थायः तेवारे राग द्वेषादिक जपाधि रहित श्रात्म समाधिमां बिराजे तेथी तेने पूरण परमहंस प्रगटपणे कहिये ॥ ३१ ॥ ज्यां क्षायक जाव

हे त्यां शुद्ध चारित्रनी चाल पामिये तेथी ज्ञान श्यने वैराग्य मलीने समकाले शिवमार्ग साधे हे ॥ ३१ ॥

ह्वे ज्ञानिकया उपर श्रंध पंगुनुं दृष्टांत देवे:- श्रथ ज्ञान क्रियाको दृष्टांत:-

॥दोहराः॥—यथा ख्रंधके कंध परि, चढै पंगु नर कोइ; वाके हम् वाके चरण, होहि पथिक मिलि दोइ, ॥३३॥ जहां झान किरिया मिले, तहां मोक्त मग सोइ; वह जाने पदको मरम, वह पथमें थिर होइ.॥ ३४॥

श्रर्थः—कोई पांगलो नर जैम कोई श्रांधलाना खना उपर चढवाथी, पांगलानी श्रांख श्रने ते श्रांधलाना पगथी चाले, त्यारे पंथ मार्ग होय तो बनेना मलवाथी गमन थाय, हालवुं चालवुं बने, तेम झान वैराग्य मलेथी मोक्तमार्गे चलाय ॥३३॥ ज्यां झा श्रने किया ए वे एकठा थई रहे त्यां मोक्तनो मार्ग थाय एटले झानथी वस्तुनो मर्म जाणे श्रने कियाथी पोताना वस्तुखनावमां स्थिर थाय ॥ ३४॥

हवे ज्ञान श्रने कियानुं जेवुं स्वरूप वे तेवुं कहे वे:— श्रश्र ज्ञानिक्रियाको स्वरूपः— ॥दोहराः॥— ज्ञान जीवकी सजगता, करम जीवकी जूखः; ज्ञान मोक्त श्रंकूर है, करम जगतको मूलः ॥ ३५ ॥ ज्ञान चेतनाके जगे, प्रगटे केवल रामः; कर्म चेतनामें वसे, कर्म बंध परिनाम. ॥ ३६ ॥

श्रर्थः— ज्ञान हे ते जीवनी सजगता हे एटखे जीवने जगावे हे; कर्म के किया कार्य करवो ते जीवनी जूख हे, त्यां ज्ञान हे ते मोक्तनो श्रंकूर हे, एटखे मोक्तनो हेतु हे, क्रिया कार्य करवो तेतो जवज्रमणनुं मूल हे ॥ ३५॥ चेतना वे प्रकारनी पूर्वे कही है. तेमां ज्ञानचेतनाना जागवाथी केवल राम प्रगटे ते शुद्ध परमात्मा प्रगटे हे, श्रने बीजी कर्मचेतना कहिए तेमां श्रात्मानो बंधपरिणाम छपजे हे. ॥ ३६॥

हवे ज्ञाननो प्रजाव श्रमे कियानो प्रजाव जिल्ल जिल्ल कही देखाडे हे:-श्रम ज्ञानिकयाको प्रजाव जिल्ल कथन:-

॥ चोपाईः॥—जबलग ज्ञान चेतना जारी; तब लगु जीव विकल संसारी, जब घट ज्ञान चेतना जागी, तब समिकती सहज वैरागी. ॥ ३७॥ सिद्ध समान रूप नि ज जाने; पर संजोग जव परमाने; ग्रुद्धातम श्रनुजो श्रज्यासे, त्रिविध करमकी ममता नासे. ॥ ३०॥

श्रर्थः-ज्यांखगी किया परिणामे करीने ज्ञान चेतना जारी श्रई एटखे चेतना कर्मरूप श्रई, त्यांखगी तो संसारी जीव विकलकूप श्रई रह्यों हे श्रने ज्यारे घटमां ज्ञानचेतना जाग्रतरूप श्रई, त्यारे ते समिकती कहेवाय हे; तेने सहज वैरागी कहिए ॥ ३७॥ श्रने ज्ञान चेतनाना जाणवाश्री पोताना रूपने निश्चय सिद्धसमान

जाणे, श्रने पर पुजलना संयोगधी जे जाव उपजे, तेने तो पररूप माने, शुद्धात्मना श्रवुजवनो श्रव्यास राखे; ड्रव्यकर्म, जावकर्म, नोकर्म एवी त्रण जातिनां कर्मनी ममता गमावे. ॥ ३०॥

हवे ज्ञाता थईने जे पूर्वकालविषे कर्म की धांठे तेनी आलोयणाखे, अने पोतानी विगत कहें ठे:—अथ ज्ञाता पूर्व कृतकर्म आलोचन कथनः—

॥ दोहराः ॥— क्ञानवंत अपनी कथा, कहे आपसों आपः में मिध्यात दसाविषे, कीने बहु विधि पापः ॥ ३ए ॥ सवैया इकतीसाः ॥—हिरदे हमारे महा मोहकी विक खताही, ताते हम करुना न कीनी जीव घातकीः आप पाप कीने ओरनकों उपदेश दीने, हूती अनुमोदना हमारे याही बातकीः मन वच कायमें मगन वहे कमाए कर्म, धाए ज्रम जालमें कहाए हम पातकीः क्ञानके उदे जए हमारी दशा एसी जई, जेसी जान जासत अवस्था होत प्रातकीः ॥ ४० ॥

श्रर्थः— इतन चेतना जागतां झानवंत पोतानी कथा पोतानी मेंसे करे के में पूर्व कालमां मिथ्यात्व दशामां बहु जातनां पाप कीधां हे. ॥ ३ए॥ हमारा हैयामां पूर्व कालविषे महामोहनी विकलता थई, तेथी श्रमें जीव घातनी करणा न कीधी, ने निर्दयदशा राखी, पोतानी कायाथी तो पोतेज पाप कीधां श्रने बीजाने वचने करी पापनो उपदेश दीधों; श्रथवा कोईने पाप करतो देखीने में तेनी श्रमुमोदना करी एवी रीते मन वचन कायाना श्रशुद्ध व्यवहारमां मग्न थईने कर्मनी कमाणी करी मिथ्या जालमां एवी रीते दोड्या, तेथी श्रमे पातकी केहेवाइए हैये; हवे झाननो उदयथतां हमारी दिशा एवी थई के जेम सूर्यना जासवाथी प्रजात कालनी श्रवस्था उद्योतवंत याय, तेम हमारी पण एवी श्रवस्था थई॥ ४०॥

हवे ज्ञाता ज्ञानना प्रजावश्री जेवी श्रापणी श्रवस्था जाणे तेवी कहेते. श्रथ ज्ञाता ज्ञान प्रजाव कथनः—

॥सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञान जान जासत प्रवान ज्ञानवान कहे, कहना निधान श्रमक्षान मेरो रूप है; कालसों श्रतीत कमें चालसों श्रजीत जोग, जालसों श्रजीत जाकी महिमा श्रनुप है; मोहको विलास यह जगतको वास मेंतो, जगतसों शुन्य पाप पुन्य श्रंध कूप है; पाप किन कियो कौन करे करिहै सु कोन, क्रियाको विचार सुपनेकी धोर धूप है ॥ ४१ ॥

श्चर्यः-ज्ञानरूप सूर्यनो प्रकाश होवाथी प्रमाण ज्ञानवान के॰ ज्ञाता पुरुष एम कहें हे के, मारुं स्वरूप करुणा निधान हे. तथा सर्वनुं पोताना जेवुं स्वरूप जाणी ने सर्वनो हित वत्सल हे. श्चने श्चम्लान कहेता निर्मल हे, कालने वश नथी एटले शाश्वत है कमें चालनों तेने जय नथी, एटलें कमें जेना स्वजावनों नाश करी शकें नहीं, मन वचन श्रने कायना योगनी जाल तेथी जे श्रजित है, श्रने श्रा जगत्नों वास है, तेतों मोहतोविलासहें, पण मारों विलास नथीं। जगत् किहें जवन्त्रमण तेथी हुं शून्य हुं, गित कमें जगत् करेहें, तेतों मारा स्वरूपमां पाप पुण्य श्रंधकूप समान हें, एथी पाप कोणें की धुं, हवे कोण करे हें, श्रागल कोण करशें; श्राजे कियानों विचार दिलामां श्रावेहें, तेतों स्वप्तानी दोरधाव समान मिथ्याव्यवहार हे ॥ ४१ ॥ हवे मिथ्या परिणामनुं वर्णन करेहें:—श्रथ मिथ्यात्व परिणाम वर्णनः—

॥ दोहराः ॥— मैं यों कीनों यों करों, श्रब यह मेरो काम, मन वच कायामें वसे, ए मिथ्यात परिनाम, ॥४१॥ मन वच काया करम फल, करम दशा जड श्रंगः; दरवित पुजल पिंडमें, जावित जरम तरंग ॥ ४३॥ तांते जावित धरमसो, करम सुजान श्रपूनः; कोंन करांवे को करे, कोसर लहे सब जून ॥ ४४॥

श्रर्थः— में श्रावुं की बुं, श्राम करंतु, हवे श्रा मारं काम ते, ते कहुतु, एरीते क्वान चेतना जाग्याविना मन वचन कायामां मिथ्या परिणाम वसेते, ॥ ४१ ॥ श्रा जे मन वचन कायाना जोग ते, ते कर्मनुं फल ते, श्रने कर्मनी दशा जहरूप श्रंग ते, ए जे मन वचन काया ते, ते पुजल द्रव्यनो पिंड ते, तेथी श्रा मिथ्या तरंग जाव उपजे ते. ॥४३॥ तेमाटे श्रात्मानो जावित धर्म एटले शुद्ध जाणपणुं तेथी मिथ्या तरंगरूप कर्म स्वजाव विपरीत ते तेने करावे कोण श्रने करे कोण १ श्रने सरल कोण ते एटले श्रनुमोदे कोण ए प्रपंच सर्व जुत्रोते, ॥ ४४ ॥

हवे श्रा जोगथी किया होय तेनी निंदा करेठे:- श्रथ कियाकी निंदा कथन:-

॥ दोहराः ॥—करनी हित हरनी सदा; मुकति वितरनी नांहि; गनी बंध पऊति विषे, सनी महा छुष मांहि, ॥ ४५ ॥ सबैया इकतीसाः॥— करनीकी धरनीमें माहा मोह राजा बसे, करनी श्रक्षानजाव राकसकी पुरीहै, करनी करम काया पुग्गलकी प्रती ठाया, करनी प्रगट माया मिसरीकी जुरी है, करनीके जालमें उरिक रह्यो चि दानंद, करनीकी उट क्वान जान छित छरी है; श्राचारज कहें करनीसों विवहारी जीव करनी सदीव निहचे सरूप जुरी है ॥ ४६ ॥

श्रर्थः करणी जे किया है ते सदा श्रहितनी करनारी है, मुक्तिने देवा वाली नश्री, श्रा कियाने श्राममां तो बंध पद्धतिमांज गणी है, तेथी किया महा डुख सहित है। ॥ ४५ ॥ कियानी जूमिमां महा मोह राजा वसेहे, श्रने किया है ते तो श्रक्तान जाव राक्तसनी नगरी है। एटखे कियामां श्रक्तान राक्तस रही शकेहे. श्रने ए किया है ते तो कर्मनो पमहायो है, श्रने काय योगनो पडहायो है. श्रने पुजलनो प

महायों है. किया है ते प्रगट माया जाल है, तथा ते साकरनी हरी है, मीठास आपी मारेहे. आ करणीनी जालमां चिदानंद परमातमा हरजी के मग्न थई रह्यों है, अने कियाना ओथे ज्ञानरूप सूर्यनी ज्योति हपी रही है. श्री आचार्य कहें है के किया करतो थको जीव व्यवहारीज किहए. पण निश्चय रूपे देखवाथी किया सदा सर्वदा हुरी है, एटले खोटी है. ॥ ४६॥

इवे पोतानी समज पामे तेने ज्ञाता कहेंगे:- श्रथ ज्ञाता कथन:-

॥चौपाईः॥— मृषा मोहकी परिनित फैली, तातें करम चेतना मैली; ज्ञान होत हम समुजी एती, जीव सदीव जिन्न परसेती ॥ ४४ ॥ दोहराः॥—जीव अनादि सरूप मम, करम रहित निरुपाधि; अविनाशी अशरन सदा, सुखमय सिद्ध समाधि ॥ ४० ॥

श्रर्थः— श्रमारामां पहेला मिथ्या मोहनी परिनित फेलाई हे, एटले मोहशी श्र श्रुद्ध थई, त्यारे फेलाणी. तेनो हदय गाढो थयो, तेथी चेतना श्रुद्ध हती पण श्रशु द्ध थई, कर्मसहित चेतना मलीन थई. हवे ज्ञान चेतना प्रगट थतां श्रमे एटली वात जाणी, के जे जीव हे ते निश्चये परजोगश्री न्यारो हे ॥४५॥ श्रमादि कालश्री जे जीव प्राणधारी कहेवायहे, ते मारुं स्वरूप हे. ते स्वरूप केवुं हे ते कहेहे कर्म रहित हे; श्रमे संयोगादिक छपाधि रहित हे; वली विनाश न पामे, सदा ईश्वर हे; कोईनुं शरण न राखे, श्रमे श्रा स्वरूप सिद्धसमाधिना सुखमय हे ॥ ४०॥

इवे ज्ञानस्वरूप कर्म जपाधिथी जिन्नहेते कहे हे:- श्रथ ज्ञान स्वरूपी कथन:-

॥चौपाईः॥- में त्रिकाल करणीसों न्यारा, चिदविलास पद जगत उज्यारा; राग वि रोध मोह मम नांही, मेरो श्रवलंबन मुफमांही ॥४ए॥ सवैया तेइसाः॥- सम्यकवंत कहे श्रपने ग्रनमें नित राग विरोधसुँ रीतो, में करतृति करों निरवंडक, मोह विषे रस लागत तीतो; सुद्ध सुचेतनको श्रवुजों करि, में जग मोह महा जड जीतो, मोष समीप जयो श्रव मो कहुं काल श्रमंत इही विधि वीतो ॥ ५०॥ दोहराः॥- कहें विचडन में सदा, रह्यो ज्ञान रस राचि, सुद्धातम श्रवुज्ञृति सों, खिलत न होइ क दाचि ॥ ५१॥ पूर्व करम विष तरु जए, उदे जोग फल फूल; में इन्हको निहं जो गता, सहज होहुं निरमूल ॥ ५१॥

श्रर्थः— हुं त्रणे कालमां किया करणीश्री न्यारो हुं. मारे कमेशी संग नश्री तो कि याश्री संगती केम थाय ? मारुं पद के० स्वरूप, चिद्विलास के० ज्ञानविलास हे, ते जगत्मां श्रजवाल हे. श्रने राग देष मोहजाव वर्ते हे, तेतो मारुं स्वरूप नथी. मारो श्रवलंब श्राधार मारा स्वरूपमां हे ॥ ४ए॥ समिकती जीव पोताना गुण कहेहे. हुं नित्य प्रत्ये राग देष मोहश्री, रीतो के० रिक्त एटसे रहित हुं. हुं जे कि या करंतुं ते राग देष विना वांतारहित करंतुं अने जे ए विषय रस हे ते, मोहती तो के मने तिक्त लागे एटले कमनो लागे हे. पोतानी ग्रुद्ध चेतनानो अनुजन क रीने में जगत्मां मोहरूप महासुजट जीत्यो. मारुं एवं स्वरूप पामीने हुं मोक्तने सन्मुख थयो, हवे मने एवी रीतथीज अनंत काल वीतो! एटले अनंत काल लगे ए वोज रहुं ए आशंसा हे ॥ ५०॥ विचक्तण ज्ञानी पुरुष आशंसा करीने कहे के हुं सदा ज्ञान रसमां राची रहुं अने हुं ग्रुद्ध आत्मना अनुजनशीको एण कालमां स्व लित न थाउं!॥ ५१॥ ए पूर्व कृत पुण्य पापरूप जे कमें हे, ते विष वृक्त जाणवा अने ते कमेना उदयनो जे जोग हे ते विष वृक्तनां फल फुल हे. हुं आ उदय जोगनो जोक्ता नथी. राग देषथी रहित हुं अनादिकालना साथे लागेला विषय जोग हे तेसहज निर्मुल थाय॥ ५१॥

इवे उदासीनताने वैराग्य कहिये तेनो महिमा कहेठे:- अथ वैराग्यमहिमाकथन:-

॥दोहराः॥–जो पूरव कृत कर्म फल, रुचिसों जुंजे नांहिः; मगन रहे श्राठो पहुर, ग्रुद्धातम पदमांहि ॥ ५३ ॥ सो बुध कर्मदसा रहित, पावे मोष तुरंतः; जुंजे परम स माधि सुख, श्रागम काल श्रनंत ॥ ५४ ॥

श्रर्थः- जे पूर्वकालमां कर्म कर्खुं, तेनुं फल उदय थयुं, ते फलथी रुचि लगामी जोगवे नही श्रने श्राठे प्रहर शुद्ध श्रात्मपदमां मग्न रहे ॥ ५३ ॥ तेज पंक्ति कर्म दशा रहित धईने तरत मोक्तपद पामे, ते पठी श्रागामिक कालमां श्रनंत काल लगी परम समाधिनुं सुख जोगवे ॥ ५४ ॥

हवे ज्ञानि पुरुषनो क्रमे क्रमे महिमा वधे ते कहें छे:- ज्ञानी पुरुष महिमा कथन:-

॥उप्पय ढंदः॥— जो पूरव कृतकर्म, विरष विष फल निह जुंजे; जोग जुगतिकारज करंत ममता न प्रजुंजे; राग विरोध निरोध संग विकलप सिव ढंडे, शुद्धातम श्रनुजो श्राप्यासि सिव नाटक मंडे; जो ज्ञानवंत इह मग चलत, पूरत ठहे केवल लहे; सो परम श्रतीं द्विय सुखविषे, मगन रूप संतत रहे ॥ ५५॥

श्रर्थः — जो ज्ञाता थईने पूर्व क्रुतकर्म रूप वृक्तना विष फखने जोगवे नही एटखे इष्ट फखथी रित न उपजे, श्रिनष्ट फखथी श्ररित न उपजे एवो ज्ञाता जे हे, ते मन वचन कायाना योगे करी युक्त हे, तेथी जोगनी गित के प्रवृत्तिये कार्य करेहे, पण कार्यविषे ममता प्रजुंजे नही, एरीते राग देषनो निरोध करीने योगना संगधी जे विकल्प उठेहे, ते सर्व हांडे, शुद्ध श्रात्माना श्रनुजवनो श्रज्यास करीने शिवनाटक के जे थकी जीवन्मुक्ति होय एवं नाटक मांडे. जो ज्ञानवंत पुरुष एहिज मार्गे चा

खे तो पूर्ण स्वजाव पामीने केवल ज्ञान पामे. पठी केवल ज्ञान पामीने जिल्हा अ तीं जिय सुखनेविषे निरंतर मग्न रहे. ॥ ५५ ॥

हवे शुद्ध श्रात्मा प्रव्य वे तेनुं वर्णन करेवे:-श्रथ शुद्ध श्रात्मदर्ववर्ननः-

॥ संवैया इकतीसाः॥— निरंते निराकूल निगम वेद निरंत्रेद, जाके परगासमें जगत माईयत हैं; रूप रस गंध फास पुदगलको विलास, तासों जदवंश जाको जश गा इयत हैं, वियहसों विरत परियहसें न्यारो सदा, जामें जोग नियहको चिन्ह पाइ यत हैं; सो हे झान परवान चेतन निधान ताहि, श्रविनाशी ईश मानी सीस नाइ यत हैं; ॥ ५६ ॥ जैसो नर जेदरूप निह्चें श्रतीत हुंतो, तेसी निरंत्रेद श्रव जेदको न गहेंगो; दोसे कर्म रहित सहित सुख समाधान, पायो निज थान फिरि बाहिर न वहेंगो; कबहु कदाचि श्रपनो सुजां व्याग किर, राग रस राचिके न परवस्तु गहेंगो; श्रमखान झान विद्यमान परगट जयो, याही जांति श्रागम श्रनंत काल र हेगो ॥ ५९ ॥ जबहितें चेतन विजां जसों जलटि श्रापु समों पाइ श्रपनो सुजां ग हि बीनो हैं; तबहीते जोजो खेन जोग सो से सब बीनो, जो जो त्याग जोग सो सो सब बांडि दीनो हैं; खेवेंकों न रही ठोर त्यागिवेंकों नांही श्रोर, बाकी कहा ज बस्तो ज कारज नवीनो है; संग त्यागि श्रंग त्यागि वचन तरंग त्यागि, मन त्यागि बुद्ध त्यागि श्रापा सुद्ध कीनो हैं ॥ ५०॥

श्रयं:—जे निर्जय केहेवाय हे, निराकुल केहेवाय हे, निगम के जिल्कृष्ट श्रर्थ केहे वाय हे, वेद के ज्ञानरूप केहेवाय हे, जेनो जेद नथी एवा प्रकाशवंत पदार्थ हे; जे मां सर्व जगत् शमाय हे; श्रने जे ए रूप रस गंध स्पर्श जे विनाशी पदार्थों हे, तेतो पुजलनो विलास हे, तेना उदवंस के तेथी रहित जे हे तेनो जसगाइए हे. वली जे विग्रह के शरीर तेथी विरत के रहित श्रने इत्यजावरूप परिग्रह तेथी जुदो हो, जेमां सदाय त्रणे योगथी रहित पणानुं चिन्ह के लक्षण पामीए हे, एवो पदार्थ तो ज्यां ज्ञान हे त्यां ते पदार्थ हे. तेथी ज्ञान प्रमाण हे. श्रने चेतनानो निधान हे. तेने श्रविनाशी ईश्वर मानीने मस्तक नमावीए हे ॥ ए६ ॥ हवे बीजुं पण श्रद्धात्म इत्य सिद्धनुं वर्णन करेहे:—श्रतीत कालमां पण श्रुद्धात्म इत्य निश्चय नयथी श्रजेद रूप हतुं श्रने व्यहारनये जेदरूप हतुं. हवे केवल रूप पामिने निर्जेद के जेद र हित जाणीए. हवे एवी दशामां कोण मूर्ल जेद हरावशे ? नैयायिक लोक जे पोता नी प्ररूपणामां समाधियोगश्रात्माने कर्म रहित थयो, सुल समाधान सहित थयो, पोतानुं स्थानक पाम्यो, ते पाहो बाह्य संकटमां केम पक्शे? जेम धरतीनो जार जता पोतानुं स्थानक पाम्यो, ते पाहो बाह्य संकटमां केम पक्शे? जेम धरतीनो जार जता

रवा ईश्वर श्रवतार खेइने छु:ख पामेठे प्रंडु मिथ्यादृष्टिनी केहेवतमांठे, पण जीव ग्रुक्ष थईने फरी राग रसमां राचिने कोई कालमां श्रापणो स्वजाव त्याग करीने पर वस्तु ने ग्रहे नही. केमके श्रम्लान ज्ञान के० जे फरी करमाय नही एवं ज्ञान वि यमान कालविषे प्रगट थयुं तेतो श्रागामिक कालमां श्रमंत काल लगी रहेरो॥५७॥ हवे फरीथी श्रवतार खेवाना कारणनो श्रजाव कहेठे:— श्रनादिकालथी चेतन मि थ्यात्व जावरूप विजावमां रिम रह्यो हतो ते समयप्रस्ताव पामीने, विजावथी उप रांठो थई पोतानो ग्रुक्ष स्वजाव हतो ते पोतेज लइ लीधो, तेथी ज्ञान दर्शनादिक जाव खेवा योग्य हतो ते लीधो, श्रमे राग देषादिक जाव त्यागवाजोग हतो ते सर्व त्यागी दीधो; ते खेवानुं बीजुं ठेकाणुं रह्युं नही, श्रमे त्यागवानुं पण बीजुं ठेकाणुं रह्युं नही. हवे इहां बाकी नवुं कार्य करवानुं ग्रुं रह्युं वेके जे कार्य करवाने फरी श्रवतार खेवो पने? जे उपाधिसंग हतो तेतो सर्व त्यजीने एटले श्रंग त्याग के० काय योग त्यागिने, वचन तरंग त्याग के० वचन योग त्यागीने तथा मनोयोग त्यागिने बुद्धि त्याग के० विकट्प त्यागीने श्रातमाने ग्रुक्ष करी लीधो ॥ ५०॥

हवे बाह्य प्रेष धरवो ते डव्यिंग किहए ते एकांतपणे मोक्तनुं कारण नथी ते के कहे हे:- श्रय एकांत डव्यिंगीकी निंदाः-

॥ दोहराः॥— शुद्ध ज्ञानके देह नहिं, मुद्धा जेष न कोइ; ताते कारन मोषको, द रविर्तिग निह होइ॥ ५ए॥ इत्य िंग न्यारो प्रगट, कला बचन विन्यान; श्रष्ट म-हारिधि श्रष्ट सिधि, एऊ होहि न ज्ञान॥ ६०॥

श्रर्थः— श्रात्मा तो शुद्ध ज्ञानमय हे. श्रने शुद्ध ज्ञानने देह नथी, श्रने ज्यारे देह नथी त्यारे ज्ञान ने मुद्धा जेष पण कोइ नथी. तेथी मोक्त कारण द्रव्य लिंग होय नहीं। एटले जेष लीधे मुक्ति नथी ॥५ए॥ ज्ञानशी द्रव्य लिंग तो प्रगट पणे जुड़ंज हे. क लाविज्ञान, वचन विज्ञान, ते ज्ञानथी न्यारां हे. तथा श्राचार, श्रुत, शरीर, वचन, वाचना, बुद्धि, लपयोग, संग्रह संलीनता, ए श्रष्ट महा रिद्धि हे. श्रने श्रिणमा, म हिमा, गरिमा, लिंघमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, इशित्व, विश्वत, ए श्रष्टमहा सिद्धि हे. ते पण ज्ञान नथी॥ ६०॥

हवे एटलां मिह्नमावंत स्थानक हे, तो पण ए ज्ञाननां स्थानक नथी ते कहेहे:श्रथ ज्ञान श्रजाव स्थानक कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः॥—जेषमें न ज्ञान निह ज्ञान ग्रह वर्त्तनमें, मंत्र जंत्र तंत्रमें न ज्ञानकी कहानी है; ग्रंथमें न ज्ञान निहं ज्ञान किव चातुरीमें वातिनमें, ज्ञान नहीं ज्ञान कहा वानी है; तातें जेष गुरुता किवत्त ग्रंथ मंत्र वात, इनतें श्रतीत ज्ञान चे तना निसानी है, ज्ञानहीमें ज्ञाननही ज्ञान उरठोर कहू, जाके घट ज्ञान सोइ ज्ञानको निदानी है ॥ ६१ ॥

श्रर्थः— वेषमां ज्ञान न पामीए श्रने गुरुवाई के० गर्वपणुं महोटाइ पणुं तेमां पण ज्ञाननुं स्थानक नथी श्रने मंत्र, तंत्र, यंत्रमां ज्ञाननी कहेणी नथी तथा यंथ शास्त्र प ढवाथी पण ज्ञान प्राप्त थतुं नथी; किवतामां, चातुर्यतामां ज्ञान नथी. वातनी चतुरा इमां ज्ञान नथी; श्रने जे वाणी हे ते ग्रुं ज्ञान हे? श्रर्थात् वाणी पण ज्ञान नथी। माटे जेख, गुरुताइ, किवताई, ग्रंथ, मंत्र, यंत्र, तंत्र, वात ए सर्वथी श्रतीत के० जुदीज ज्ञान वस्तु हे, ते चेतननी सिहनाणी हे। ज्ञानतो क्यारे जाणवुं, के जे श्रग्रुद्ध पणे होय तेतो ज्ञान न कहेवाय, माटे पूर्वे जे स्थानक कह्यां तथी जूदीज कोइ ज्ञान वस्तु हे, माटे जेना घटमा ज्ञान प्रगटयुं, तेज ज्ञाननुं मूलकारण हे॥ ६१॥

हवे जेपूर्वे वेष प्रमुखना धारक कहा तेनी मूढता किह देखाने हे:-श्रथ जेषादि धारक मूढ यह कथन:-

॥ संवेया इकतीसाः॥— जेष धरे लोगनिकों वंचे सो धरम ठग, ग्रह सो कहावे ग्रह वाई जाते चिह्नचें; मंत्र तंत्र साधक कहावे ग्रनी जाङ्गगर, पंमित कहावे पंश्व ताई जामें लिह्नचें; किवत्तकी कलामें प्रवीन सो कहावे किव, वात कही जाने सो प वारगीर किह्नचें; ए तो सब विषेके जिलारी मायाधारी जीव, इन्हकों विलोकिकें द याल रूप रिह्नचे ॥ ६१ ॥

श्रर्थः— वेष धरीने खोकोने ठगे, जरमावे ते धर्म ठग कहेवाय, एटखे तेने गुरुतानी चाहना होय ते गुरु केहेवाय.मंत्र,यंत्र,तंत्रादिक गुणनो जे साधक होय ते जा हूगर केहेवाय.श्रने जेमां पंक्तिर्घर रही ठे,ते पंडित केहेवाय कित चातुरिनी कखा मां जे प्रवीण होय तेतो किव केहेवाय वातो बनावी बनावीने कही जाणे ते पवारगर केहेवाय एटखी श्रवस्थाना धरनारा ठे ते सर्व इंडियविषयना याचक मायाधारी जीव ठे. तेने जोईने मनमां एवं विचारिये के श्रहो! इति श्राश्चर्य! ए बापना केम पोतानो खार्थ खोयठे, एवी रीते तेना उपर दयालकर थई रहेवं ॥६१॥

हवे जीवना श्रनुजवनी योग्य दशा कहे हे:- श्रय श्रनुजव जोगता कथन:-

॥ दोहराः॥— जो दयाखता जाव सो, प्रगट ज्ञानको र्थ्यंगः; पें तथापि श्रमुनो द शा, वरते विगत तरंग ॥ ६३ ॥ दरशन ज्ञान चरण दशा, करे एक जो कोइ, थिर व्हें साधे मोष मग, सुधी श्रमुजवी सोइ ॥ ६४ ॥

श्रर्थः - जे आत्माने शुद्ध दयाखता जाव प्रगटेहे, तेतो ज्ञाननुं श्रंग प्रगट थयुं एम जाणीए. पण श्रनुजव दशा जे हे,ते तो विगततरंग के विकल्प रहित वर्ते॥६३॥ वधी दर्शन ज्ञान चारित्रनी दशाने विकल्प रहित एकपणे आत्माने जुएते, एज रीते स्थिररूप थड्ने मोक्त मार्गने साघे ते तेनेज सुधी के पसुबुद्धिवंत अनुजववंत कहियें॥६४॥ हवे निःसंदेह शुद्ध स्वरूप पामवुं तेनो महिमा कहे तेः—श्रथ अनुजव महिमाकथनः—

॥ संवैया इकतीसाः॥— जोइ हम् इान चरणातममें ठिव ठोर, जयो निरदोर पर वस्तुकों न परसे; सुद्धता विचारे ध्यावे शुद्धतामें केखिकरे, सुद्धतामें थिर ठहे श्रमृत धारा वरसे; त्यागी तन कष्ट ठहे स्पष्ट श्रष्ट करमको, करे थान जष्ट नष्ट करे श्रोर करसे; सोई विकखप विजई श्रखप कालमांहि, त्यागि जो विधान निरवान पद दरसे ॥ ६५ ॥

श्रर्थः — जे कोई दर्शन ज्ञान चारित्ररूपी श्रात्मानेविषे ज्ञानने ठेकाणे ठेरावीने वाट बांधे, त्यां निरदोर के० संशय रहित थईने परवस्तुनो स्पर्श न करे, त्यां निश्रय नय यहण करीने शुद्धताज विचारे, शुद्धताज ध्यावे, श्रप्रमादि थईने शुद्धतामां केलि करे, शुक्क ध्यानना प्रथम पायामां प्रवेशकरी शुद्धतामां थिर थईने महा श्रानं दरूप श्रमृतनी धारा वरपावे. श्रांही श्रवयवरूप लक्कण ठे. तेथी शरीरना कष्टने त्या गेठे. लीनताथी शरीर कष्ट न जाणे त्यारे स्पष्ट थईने एटले वीर्य फोरवीने श्राठे क मेनां स्थानने जष्ट करे एटले कर्मोने सत्ता थकी चलायमान करे श्रमे नष्ट करे के० निर्जरा करे ऐसे श्रीरहुंकैसे के० ते जीव कर्मोने श्राकिंने निर्जरावे ते जीव विकल्प जालनो विजय करीने श्रव्य कालमांज जो विधान के० जवश्रेणिने त्यागी मोक्क पद देखे एटले पामे ॥ ६५ ॥

हवे शिष्य पुढे हे के ए अनुजब पामवो महा विषम हे ते उपर गुरु शिक्ता देहे:अथ अनुजव शिक्ता कथन:-

॥ चौपाईः ॥-ग्रन परजैमे दृष्टि म दीजे; निरविकलप श्रनुजो रस पीजे; श्राप स माइ श्रापमे लीजे; तनपा मेटि श्रपनपो कीजे ॥ ६६ ॥ दोहराः ॥-तिज विजाव हु इजे मगन, सुद्धातम पदमांहि; एक मोष मारग यहे, श्रीर इसरो नांहि ॥ ६९ ॥

अर्थः-आत्माना गुण पर्याय अनेक हे, पण तेमां दृष्टि न देवी. मात्र निर्विकहप प्रव्यनो अनुजन रस पीनो आत्मा आधारमां आत्मानो समास करी होनो एटहे लय लगामनी, एटहे आपणे शरीर धारी हीए, ते दशानुं काय योग पणुं हे ते मटावी आत्म खरूप करीए ॥ ६६ ॥ आत्माना मूल खजान विना बीजुं सर्व विजान पणु हे, तेहने लजीने शुद्ध आत्माना चिदानंद स्वजानमांज मग्न थह्ये, एक अद्वितीय मोक्तनो मार्ग एज हे. तेथी बीजो कोइ मोक्तनो मार्ग नथी॥ ६९॥

हवे ग्रुक्त श्रात्स्वरूपना श्रनुत्रविना महाव्रति पण द्रव्यक्षिंगी जाण्वा ते कहेते:श्रथ द्रव्यक्षिंगी व्यवस्था कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कइ मिध्या दृष्टि जीव धारे जिन मुद्रा जेष, कियामें म गन रहे कहे हम जती है; श्रतुख श्रखंम मखरिहत सदा जदोत, ऐसे ज्ञान जाव सों विमुख मृहमित है; श्रागम संजाखे दोष टाखे विवहार जाखे, पासे वृत्त यद्यपि तथापि श्रविरती हैं; श्रापुकों कहवे मोष मारगके श्रिधकारी मोषसों सदीव रुष्ट प्रष्टः जुरगति है. ॥ ६० ॥ दोहराः॥—जे विवहारी मृह नर, परजे बुद्धी जीव, तिनको बा हिज कीयको, हे श्रवलंब सदीवः ॥ ६ए ॥

श्रधः-कैक जीव मिथ्या दृष्टि वे श्रने श्राचार्य उपदेश रसथी जिन मुद्रानेषधारी वे श्रने साधुनी कियामां मग्न रहेवे, श्रने पोताना मनथी श्रथवा कोईना पूववाथी श्रमे जित वृद्ये एम कहेवे एटखे महावृत्ति वेये. श्रमे जेनी तुखना नथी एवं श्रखंड के० संपूर्ण विजाव मखरहित सदा प्रकाशवंत पोतानुं श्रमुजवरूप जे ज्ञान जाव वे तेथी विमुख वे माटे मूढमित वे. ते किया करेवे, श्रागम सिद्धांत संजारेवे, श्रमे श्राहारादिकना दोष टाखी व्यवहारमां दृष्टि राखेवे, एम यद्यपि महावृत्त पाखे वे, तोपण निश्चय नयथी ए श्रविरतीज कहीए. एवा जे जीववे ते पोते मोक्त मार्गना श्रिधकारी खोकमां कहेवायवे. मोक्तथी ए सदा रुवयाज रहेवे एटखे श्रमव्यने पण किया केवल नवमा यैवेयकसुधी गित कही वे; पाठो ए छुख छुर्गतिमां पडेवे.॥६०॥ जे कोइ मूर्ल मनुष्य व्यवहारमांज रहे श्रने जे जीव पर्याय बुद्धवंत वे ते शुज गितियो जीव होय तो जली एवी पर्याय बुद्धि धारेवे तेने तो बाह्य कियानुं श्रव लंबन सदाय कह्युंवे॥ ६ए॥

ह्वे व्यवहारे महामूढ हे तेनुं वर्णन करेहे:- श्रथ महामूढ बर्नन:-

॥ चोपाई:॥—जेसे मुगंध धान पहिचाने; तुष तंछलको जेद न जाने; तैसे मूहमती व्यवहारी; लखे न बंध मोष विधि न्यारी ॥७०॥ दोहरा:॥—क्रमति बाह्जि दिष्टिसो, बाह्जि क्रिया करत, माने मोष परंपरा, मनमें हरष धरंत ॥ ७१ ॥ शुद्धात्तम श्रनुजो कथा, कहे समिकती कोइ, सो सुनिके तासों कहे, यह सिवपंथ न होइ ॥ ७१ ॥

श्रर्थः—जेम कोइ मननो जोखो पुरुष हे ते धानने तो श्रोखखे पण तूस श्रने तंडुल मां जिन्नता हे ते न जाणे तेम, जे ट्यवहारी मूहमित हे तेतो बंधविधि श्रने मोक्त विधि जूरो जूरो खखी शके नही; केवल विधि जाणे ॥ ७०॥ जे कुमित होय ते पर्याय बुद्धिश्री शाता वेदनीय पणे समाधि सुख जाणीने बाह्य द्रष्टिश्री तेनी हेतुरूप बाह्यिकिया करे श्रने बाह्यिकियामां मग्न होय तो तेश्री तेने निर्जरा मानीने मोक्त

परंपरा माने श्रने मनमां श्रानंद पामे ॥ ७१ ॥ ते मूढने कोइ समिकती जीव शुक्त श्रात्मानी श्रनुत्रव दशाने मोक्तनुं कारण कहे तो तेनुं वचन सांजलीने तेने एवुं कहे के ए रीतेतो मोक्तमार्ग थाय नही ॥ ७२ ॥

हवे मृढ तथा ज्ञानीनुं खक्तण कहेते:-श्रथ मृढ तथा ज्ञानी खक्तण कथन:-

॥ किवतः॥— जिन्हके देह बुद्धि घट श्रांतर, मुनि मुद्रा धिर किया प्रवानिहः ते हिय श्रंध बंधके करता, परम तत्वको जेद न जानिहः जिन्हके हिये सुमितिकी कि निका, बाहिज क्रिया जेष परमानिहः ते समिकती मोष मारग मुष, किर प्रस्थान जव स्थिति जानिह ॥ ७३॥

श्रर्थः— जेना हीयामां देह बुद्धि रहेवे एटखे देहधारी ने पण जिन्नपणे जाणतो नथी श्रने मुनीश्वरनी मुद्रा धारिने क्रियानेज प्रमाण करेवे, तेतो हीयानो श्रंध वे श्रने बंधनो करनार वे श्रने परम तत्त्वकेण मोक्त तत्त्वना जेद ने जाणतो नथी श्रने जेना हैयामां सम्यग् दृष्टिने खीधे सुबुद्धिनी करणीका जागी तेतो बाह्य क्रियाने जेष रूप प्रमाण करेवे. तेनेतो समिकती कहीए;ते जीव मोक्त मार्ग ने सन्मुख प्रस्था न केण प्रयाण करीने जबस्थितिने निश्चयेजांजे वे ॥१३॥

हवे संदेतपथी निःकेवल जपादेयरूप मोक्त मार्गनो जपदेश देवे:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— श्राचारिज कहे जिन वचनको विसतार, श्रगम श्रपार है कहेंगे हम कितनो!, बहुत बोखवेसों न मकसूद चुप जली, बोलीए सुवचन प्रयोजन है जितनो; नानारूप जलपसों नाना विकल्प उठे, ताते जेतो कारिज कथन जलो तितनो; ग्रुद्ध परमातमको श्रमुजो श्रज्यास कीजे, यहे मोष पंथ परमारथ है इतनो ॥ ५४ ॥ दोहराः ॥— सुद्धातम श्रमुजोिक्रया, सुद्ध ज्ञान हग दौर, मुकति पंथ साधन वहे, वाग जाल सब श्रीर ॥ ५४ ॥

श्रर्थः—श्राचार्यजी शिष्यने कहे हे. श्रहो! शिष्य! जिनेश्वरनां वचननो विस्तार तो नय प्रमाण करीने श्रगम श्रपार हे. श्रमे केटलोक कहीए, श्राहीं बहु बोलवुं ते श्रमारी मकसुद नथी तथी चुप रहेवुं तेज ठीक हे, श्रने जेटलुं प्रयोजन हे तेटलुंज बोलवुं पण नाना प्रकारनु जल्प के० बोलवुं कहिये तो नाना प्रकारना विकल्प उठेहे, तथी जे एक कार्य हे तेपुरतुंज बोलवुं बस हे;ग्रुद्ध परमात्म द्रव्यना श्रवजन योगना श्रज्यास करीए एज मोक्त मार्ग जाणीए, बधी वातमां एटलोज परमार्थ हे ॥ ७४ ॥ जे कियाथी ग्रुद्ध श्रात्मानो श्रवजन थाय तेज कियाहे श्रने ग्रुद्ध ज्ञान दृष्टिनी दोर तेज मुक्ति पथनुं कारण हे. बीजु सर्व वचनाकंवरहे ॥ ७८ ॥

हवे शुद्ध जीव द्रव्यनुं वर्णनः- श्रथ शुद्ध जीव द्रव्य बर्ननः-

॥ दोहराः—॥ जगत चक्क श्रानंदमय, ज्ञान चेतना जास; निर्विकट्प शाश्वत सुथि र, कीजे श्रनुजो तासः ॥ ७६ ॥ श्रचल श्रखंकित ज्ञानमय, पूरन वीतममत्व, ज्ञान गम्य बाधा रहित, सो है श्रातम तत्त्वः ॥ ७७ ॥

श्रर्थः— जे पदार्थ जगत्मां चक्क जेवो हे श्रने श्रानंदमय हे, जेनी ज्योति ज्ञान श्रने चेतना हे, जेमां कोई विकल्प नथी, जेद नथी, श्रने शाश्रतो हे तथा स्थिर हे, जे पदार्थनो श्रनुचन करीए तो मुक्ति पामीए. ॥ ७६ ॥ जे कोईकाले पोताना खजावथी चलायमान थाय नही एवो श्रखंडित ज्ञानमयहे, संपूर्ण समाधिवंत श्रने ममत्व र हितहे, इंडिय प्राह्म नही तेथी ज्ञान गम्य हे श्रने श्रहेच श्रजेचपणाथी बाधा रहित हे, तेज श्रात्म तत्त्व कहीए. ॥ ९९ ॥

॥इति श्री समयसार नाटक ग्रंथनो दशम सर्व विशुद्धि नामा द्वार बालाबोधरूप संपूर्ण थयो।॥

॥ दोहराः ॥— सरव विसुद्धी द्वार यह, कद्युं प्रगट शिवपंथ; कुंद कुंद मुनिराज कृत, पूरन जयो गरंथ ॥ उठ ॥

श्रर्थः - जे द्वारमां श्रात्मानी सर्व विद्युद्धि पामिये तेज द्वार कह्यं, ते प्रगटप णे मोक्तनो मार्ग कह्यो हे. श्री सीमंधर स्वामीनी वाणी सांज्ञद्वीने श्री कुंदकुंदाचार्ये श्रायंथ कीधो एवी संप्रदाय वातहे, ते यंथ संपूर्ण थयो. ॥९०॥

हवे यंथ कर्तानुं नाम स्रने यंथनो महिमां कहे हे:-स्रथ यंथ व्यवस्था कथनः-

॥ चोपाईः ॥— कुंद कुंद मुनिराज प्रवीनाः तिन्ह यह यंथ इंहालों कीनाः गाथा वरू सु प्राकृत बखानीः गुरु परंपरा रीति बखानी. ॥७ए॥ जयो यंथ जगमें विख्याता, सुनत महा सुख पाविह ज्ञाताः जे नवरस जगमां हि बखानेः ते सब रसमें सार स मानेः ॥ ७० ॥ दोहराः—॥ प्रगट रूप संसारमें, नवरस नाटक होइः नवरस गर्जित ज्ञानमें, विरला जाने कोइ ॥ ७१ ॥

श्रधः — कुंद कुंद नामे मुनिराज ते श्रध्यात्ममां प्रवीण थया, ते श्राचार्ये श्रा सर्व विशुद्धिनामा द्वार लिग श्रा ग्रंथ कीधों ते ग्रंथ प्राकृत गाथाबद्ध जलीवाणी प्रका श्री श्रा वाणीने ग्रुरु संप्रदायथी श्रमृतचंद्र श्राचार्ये वलाणी ॥ ७ए ॥ श्रा ग्रंथनी टीका व्याख्यान करवाथी कुंद कुंदाचार्यनो करेलो ग्रंथ जगत्मां विख्यात थयो, तेने सांजली क्वाता होय ते महासुख पामे. जगत्मां जे नवरस वखाण्या हे, ते सर्व रस मां सार रस ते ए समयसार नाटकमां समाई रह्याहे ॥ ०० ॥ संसारमा ए वात प्र गट हे के जे नाटक होय ते नव रसमय होय, पण शांतरसमां जे क्वान हे, तेमां नवे

रस गर्जित हे. तेने तो कोई विरखाज जाणेहे.॥ इवे नव रसनुं वर्णन करतां नव रसनां नाम कहेहे:-श्रथ प्रथम नव रसके नामः-॥ कवित्त हंदः॥-प्रथम श्रृंगार वीर इजो रस, करुना तृतिय जगत सुखदायक; हास्य चतुर्थ रुद्ध रस पंचम, हिम सुरस विज्ञह विजायक; सत्तम जय श्रष्टम रस श्रदज्जत, नवमो शांत रसनिको नायक; ए नवरस एई नव नाटक, जो जहों मगन सोइ तहों खायक ॥ हर ॥

श्रर्थः प्रथम शृंगार रस,बीजो वीर रस,श्रने त्रीजो करुणा रस,ते जगत्मां सुखदा यक हे.चोथो हास्य रस,पांचमो रौड रस,श्रने हहो बिजत्स रस, ते विजायक कहेतां चित्तनो जंग करनार हे. सातमो जय रस,श्राहमो श्रद्जुत रस, श्रनेनवमो शांत रस ते सर्व रसनो नायक हे. ए नव रस कहिए. ते नव रस नाटक रूप होय. जे प्राणी जे रसमां मग्न थई रह्यो हे तेने ते रस लायक हे. ॥ ७१ ॥

हवे नव रसना स्थाई जाव कहें हे; - श्रथ रस श्रवस्था कथनः -

॥ संवैया इकतीसाः ॥—सोजामे सिंगार बसै वीर पुरुषारथमे, हियेमे कोमल क रुना रस बखानिये; श्रानंदमे हास्य रुंक मुंक्मे बिराजे रुड, बीजा तहां जहां गि लान मन श्रानिये; चिंतामे जयानक श्रथाहतामे श्रदज्जत, मायाको श्रहचि ता मे शांत रस मानिये; एई नब रस जबरूप एई जावरूप, इन्हको विलेबन सुदृष्टि जग जानिये। ॥ ०३॥

श्रर्थः—शोजामां शृंगार रसनो निवास हे. श्रर्य साधन रूप पुरुषार्थमां वीर रसनो वास हे. हृदयनी कोमलतामां करुणा रसनो वास हे. श्रानंदनी प्राप्तिमां हृास्य रसनो वास हे. रण संप्राममां रूंड मूंडपनेलां होय, त्यां रौद्ध रसनो वास हे. कोई सुगामणु स्थानक जोई मनमां ग्लानी श्रावे, त्यां विजत्स रसनो वास हे. चिंतामां जय रसनो वास हे. जे कोई श्रथाग श्रघटमान वस्तु जाणिए त्यां श्रष्ठुत रसनो वास हे. ज्यां मायानी श्ररुचि होय तहां शांत रसनो वास प्रमाण कहिए. ए नव रस हे ते जवरूप के मंसार रूप पण हे, श्रमे एहिज नव रस जाव के हित्या जाणीए ॥हि॥ हे ए नव रसनो विलेखन के विवेक जे हे ते तो जगत्मां सुदृष्टिश्री जाणीए ॥हि॥ हवे एज नव रस जावरूप श्राममां गर्जित हे ते एकज हेकाणे देखांडे हे:—

श्रय नव रस ज्ञान गर्जित एकीजूत कथनः-

॥ उपय ठंदः॥— गुन विचार सिंगार, वीर उिंदम उदार रुपः करुना सम रसरीति, हासहिरदे उठाइ सुखः श्रष्ट करम दल दलन, रुद्ध वरते तिहि थानकः तन विक्षेठ वीजठ, दुद दुखदसा जयानकः श्रद्धत श्रनंत बल चिंतवत, शांत सहज वैराग धुवः नव रस विलास परगास तब, जब सुबोध घट प्रगट हुव ॥ ७४ ॥ श्रयं हानादिक गुणेकरी श्रात्म विजूषित देखिये त्यांतो शृंगार रस उपज्यो दे, श्रमं श्रात्मानेविषे निर्जरा प्रमुखनो उद्यम देखिये त्यांतो उदार प्रधान वीर रस वे १, ज्यारे श्रात्माने उपराम रसनी रीते देखिये त्यारे करुणा रस जाणीए ३, ज्यारे एने श्रनुजवमां उत्साह श्रमं सुखउपजे वे ते तो हैयामां हास्य रस उपजे वे ४, महा बखवान श्राठ कर्मना श्रमंत प्रदेशी दख वे तेनो दखन करतां देखीए तो त्यां श्रात्मा रोद्ध रसमंयि थई रह्यो वे ५, ज्यारे पुजलनुं खरूप विचारीये वीए त्यारे विज तस रस वे ६, ज्यारे श्रात्मा पोतानुं खरूप न जाणे श्रमे छुंद छु:खदशामां पड्यो वे, त्यारे तो जय रसमां देखीए ७, श्रमंत वीर्यनुं ज्यारे चिंतवन करीए त्यारे तो श्रात्मा श्रद्जत रस पामे ७, ज्यारे राग द्वेष निवारीने सहज वैराग्यने धुव के० निश्चल धारे वे, त्यारे श्रात्मा शांत रसमय पामीए ए, ए नव प्रकारना जाव रसना विलास नो प्रकाशतो ज्यारे घटमां सुबुद्ध प्रगट थाय त्यारेज थाय.॥ ७४॥

हवे कुंदकुंदाचार्यकृत आ यंथ हे तेनी स्तुति करेहे:-अथ यंथ स्तुति:-

॥ चोपाईः ॥—जब सुबोध घटमें परगासे, तब रस बिरस विषमता नासे, नव रस खखे एक रसमांही, ताते विरस जाव मिटि जांही ॥ ७५॥ दोहरा ॥ सब रस गर्जित मूख रस, नाटक नाम गरंथ; जाके सुनत प्रवान जिय, समुके पंथ कुपंथ ॥ ७६॥

॥चोपाईः॥-वरते यंथ जगत हित काजा, प्रगटे श्रमृतचंद मुनि राजा; तब तिन्ह यंथ जानि श्रति नीका, रची बनाइ संसक्तत टीका ॥ ७९॥ दोहराः ॥-सर्व विद्युद्धि द्वारखों, श्राए करत बखान; तब श्राचारज जित्तसों, करे यंथ गुन झान ॥ ७०॥

॥ चोपाई: ॥—श्रद्युत ग्रंथ श्रध्यातम बांनी, समुके कोक विरला ज्ञांनी, यामे स्या दवाद श्रधिकारा, ताको जो कीजे विसतारा ॥ एए ॥ तो गरंथ श्रित शोजा पावे वह मंदिर यह कलस कहावे, तब चित श्रमृत वचन गढखोले, श्रमृतचंद श्राचारज बोले ॥ए०॥ दोहराः-॥ कुंदकुंद नाटकविषे, कह्यो दरव श्रधिकार, स्यादवादने साधि मे, कहों श्रवस्था द्वार ॥ ए१ ॥ कहों मुकति पदकी कथा, कहों मुक्तिको पंथ, जैसे घृत कारज जहां, तहों कारन दिधपंथ ॥ ए१ ॥ श्रर्थ स्पष्ट ॥

॥ चोपाई ॥—श्रमृतचंद बोखे मृडु बानी, स्यादवादकी सुनो कहानी, कोऊ कहें जीव जगमांहीं, कोऊ कहें जीव है नाही ॥ ए३ ॥ दोहराः ॥—एक रूप कोऊ कहें, कोऊ श्रमानित श्रंगः हिन जंग्रर कोऊ कहें, कोऊ कहें श्रजंग ॥ ए४ ॥ नय श्रमंत इह विधि कही, मिस्ने न काहू कोइ, जो सब नयसाधन करे, स्यादवाद हैं सोइ ॥ ए५ ॥ स्यादवाद श्रधिकार श्रब, कहों जैनको मृत्न, जाके जाने जगत जन, छहें जगत जलकूल ॥ ए६ ॥

श्रर्थः-हवे संगतनी वात कहें हेः-ज्यारे घटमां सुबोध प्रकाशे हे, त्यारे ए रसस हित हे अने ए विरस हे. एवो विषय ममता जाव हे, ते सर्व नाश पामेहे. एनो हेतु ए वे के जे नव रस वे तेने एक जाव रसमांज खखे के जुवे, तेथी विरस जाव मटीने एकज रसमां श्रात्मानुं रहेवुं थाय ॥ ७५ ॥ एम सर्व रसोमां गर्जित एक र समय थयलो एवो य्या समयसार नाटक नामे यंथ श्री कुंदकुंदाचार्यजीए कह्यो, जेना श्रर्थ जावने सांजलता प्रमाणिक जीव हे ते मार्ग कुमार्गनो विचार समजे. ॥ ए६ ॥ प्रथम जगत्वासी जीवोने हितकारी कार्यनो यंथ प्रवर्त्तमान थयो ते पठी अमृत चंद नामा श्राचार्य प्रगट्या तेणे श्रा यंथ श्रति श्रेष्ठ जाणीने श्रा यंथनी टीका ब नावी, गाथानुं रहस्य लइने काव्य बंध कह्यो ते कहीएढीए. ॥ ७७ ॥ श्री श्रमृतचं दजी एज यंथनुं व्याख्यान करता सर्वे विद्युद्धि द्वार सुधी श्राव्या श्रांही यंथ सं पूर्ण थयो जाणी श्री श्रमृतचंद्र श्राचार्य जित्तना वश्यी प्रंथनुं गुण ज्ञान करे हे. ॥ उठ ॥ श्रा ग्रंथ श्रध्यात्म वाणीमां श्रद्धत थयो, पण श्रा ग्रंथने कोई विरला ज्ञान वंत पुरुष समके. आ यंथमां स्याद्वादनों अधिकार हे, ते अहप बुद्धि स्यूखमितने समजवो मुशकेख हे. तेथी ते स्याद्वादनो जो विस्तार करीये तो सारु. ॥ उए ॥ जे थकी आ यंथ अति शोजा पामे एम विचारी आ यंथरूप मंदिर तेना उपर स्याद्वा दनो विस्तार करिये तो ते कलशरूप थाया त्यारे महारा चित्तमां अमृत जेवा वचन गढों के । धारण थइने खुले. एम दोष रहितनी परे श्री श्रमृतचंद श्राचार्य बोले हे के ॥ए०॥ श्री कुंदकुंदाचार्यना करेखा नाटक ग्रंथमां जीव श्रजीव डव्यनो श्रधिकार कह्यो. हवे हुं स्याद्वाद नयनी श्रवस्थानो द्वार कहुं हु, श्रने साध्य वस्तुनी श्रवस्था नो द्वार कहुं हुं. ॥ ए१ ॥ बाणुमां दोहरानो श्रर्थ सुक्षत्र हे ॥ ए१ ॥ श्रमृतचंद श्रा चार्य एवी कोमल वाणी बोल्या के घ्यहो ! शिष्य! स्याद्वादनी कथा हुं कहुं हुं ते सां जलो. कोई श्रस्तिवादि तो एम कहे हे के जगत्मां जीव वस्तु हे, श्रने कोई नास्ति वादी कहे हे के, जगत्मां जीव वस्तु नथी। ॥ ए३ ॥ कोई अद्वेत वादी ब्रह्मने एक रूप कहेते. कोई नैयायिक वैशेषिक जीवने अगणितपणे कहेते. कोई बौधमतीने सीधे जीवने क्षणतंग्रर कहें हे; कोई सांख्यमतीने सीधे जीवने अतंगज कहे हे. ॥ ए४ ॥ श्रर्थ समजवाना मार्गने नय कहिए, ते समजवाना मार्ग श्रनंत हे; तेने लीधे नय पण श्रनंत कहिये; तेमां कोई नय कोई नयने मसे नही, विरोधी हे. हवे श्रांही जे सर्व नयनुं साधन करे, एटले सर्व नयने साचा साधिने देखाडे, तेने स्याद्वादि जाणीए. ॥ ए५ ॥ ते स्याद्वादनो अधिकार हवे हुं सर्व कहुं हुं.

स्याद्वाद श्रागमनुं मूल हे. जे स्याद्वादना जाण प्रवीण जगत्वासी लोक हे ते सं सार जलिथनो कांहो पामेहे.॥ ए६॥

हवे नयजालथी शिष्यने संदेह उपज्यो त्यारे प्रश्न करेवे:-श्रथ शिष्यप्रश्न ग्रह उत्तर कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— शिष्य कहे स्वामी जीव स्वाधीन के पराधीन, जीव एक है किथों श्रानेक मानि लीजिये; जीव हे सदीव किथों नाहि है जगतमांहि ? जीव श्राविनस्वर के नस्वर कहीजिये; सतग्रह कहे जीव है सदीव निजाधीन, एक श्रावि नस्वर दरव दृष्टि दीजिये, जीव पराधीन विन जंगुर श्रानेकरूप, नांहि तहां जहां परजे प्रवान कीजीए. ॥ ए७ ॥

अर्थ:—प्रथम शिष्य पुढेंढे, खामी जीव स्वाधीन हे के पराधीन हे? जीव एक हे के गणितमां अनेक हे? ए केम मनमां जाण हुं. अने जीव कहेवाय हे तो जगत्मां सदाहे के नथी, ए अस्तिपणानो संदेहहे, अने जीव अस्ति के अविनाशी हे के विनाशी है. हवे आवी रीतना प्रश्न हपर सज़ुरु कहेंहे, के हे! शिष्य! जीव वस्तु ज गत्मां हे, पण नास्ति न कहीए, अने ते जीव आपणे खाधीन हे. अने एक हे यद्यपि गणितीये अनेक हे, तो पण लक्षणथी एक हे. अविनाशी प्रत्य प्रष्टि दीजे तो एम ज हे, अने जो पर्याय नय प्रमाण करीये तो जीव पराधीन हे, कर्माधीन हे. अने अविचार स्थापनानी अपेक्षाये नथी. अने जहां पर्याय प्रमाण हे तिहां एहे. ॥ ए९ ॥ ए९ ॥

हवे द्रव्य केत्र काल जावे करीने सर्व वस्तुनुं श्रस्तिनास्तिपणुं कहेवेः-श्रथ दरव केत्र काल जाव श्रस्तिनास्ति कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— सर्व खेत्र काल जाव चारो जेद वस्तुहीमे, श्रपने चतुष्क वस्तु श्रस्तरूप मानिये; परकेचतुष्क वस्तु नासित नियत श्रंग, ताको जेद दर्व परजाय मध्य जानिये; दरवतो वस्तु खेत्र सत्ता जूमिकाल चाल, सुजाव सहज मूल सकति बलानिये, याही जांती परविकलप बुद्धि कलपना, विवहार दृष्टि श्रंशजेद परवानि ये. ॥ ए० ॥ दोहराः ॥— हे नाही नाही सु है, है है नाही नाही; यह सरवंगी नय धनी, सबमाने सब मांहि. ॥ एए ॥

श्चरं:— इव्य, केत्र, कांख, जाव ए चारे जेद वस्तुमां विचारीए. श्चांही श्चापणे वस्तु हो, ते श्वस्तरूप मानीए. एटखे स्वइव्य, स्वकेत्र, स्वकाल, स्वजावश्री विचारीए त्या रे तो सर्व वस्तु श्वस्तरूपे हो, श्चने जो परवस्तुश्री ए चारने विचारिये तो वस्तुनुं ना स्तिस्वरूप नीपजे हो. एटखे परइव्य, परकेत्र, परकाल, परजावश्री सर्व वस्तु नास्तिरू

पे ठे. नियत छंग के० निश्चयनयथी छस्ति ठे तेनो जेद इव्य पर्यायथी जाणवो. ए चार जेदमां इव्यथी वस्तु कहीए; वस्तुनी सत्तानी जूमिने केत्र किहये; वस्तुनी परि णाम चालथी काल कहीए; सहजनी मूलशक्तिने स्वजाव कहीए. ए रीते बुद्धिनी कल्पना करीने परइव्य केत्रादिकना जो विकल्प यहण करिये. जेम के घट वस्तु यह ण करवाथी परइव्य, परकेत्र, परकाल, परजावनी कल्पनाथी नास्ति ठे. ए व्यवहार दृष्टिश्री वस्तुना छंश जेद प्रमाण थायः॥ ए०॥ छने ए नथी एवं कहेवामां स्वइ व्यादिकनुं छस्तिपणुं लईने परइव्यादिकथी नास्तिपणुं लईए तथा ते ठे निह एम कहेवामां प्रथम परइव्यादिकनुं छस्तिपणुं यहीए; ठे छने नथीज एम कहेवामां फ री परइव्यादिकनुं केवल नास्तिपणुंज यहण करिये ठिये; एथी सात जांगा जपजे ठे; छांही सर्वांग नयना धणी स्याद्वादी सर्व वस्तुमां सर्व जांगा माने ठे.॥ एए॥

हवें चौद नयना जेदथी एकेक जेदें एकांत पद्मीनी जेवी केहेणी हे तेवी कहेंहे:-श्रथ चतुर्दश नय जेद एकांत पद्म कथन नाम स्थापन:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥— ज्ञानको कारन ज्ञेय श्रातमा त्रिलोक मेय, ज्ञेयसों श्र नेक ज्ञान मेल ज्ञेय ढांढ़ी है; जोलों ज्ञेय तोलों ज्ञान, सर्व दर्वमे विज्ञान, विनाज्ञेय ढेत्र ज्ञान जीव वस्तु नांही है, देह नसे जीव नसे देह उपजत लसे, श्रातमा श्रचेतन है सत्ताश्रंसमांही है, जीव ढिन जंग्रर श्रज्ञायक सरूपी ज्ञान, ऐसी ऐसी एकंत श्र वस्था मृढ पाही है ॥ ५०० ॥

श्रर्थः—प्रथम चउद नयना नाम स्थापना कहें होः—जे होय वस्तुमां ज्ञान उपजेहे, तेथी ज्ञानतुं कारण होय हे ए नाम हे, र. त्रण लोक प्रमाणे श्रात्मा हे, तेथी त्रिलो कमय एवं नाम हे, र. जेम श्रनेक होय हे, तेम ज्ञान पण श्रनेक हे ते श्रनेक ज्ञान ए नामहे, र. ज्ञानमां होयनी हाया हे ते मेलवुं हे. तेथी मेलन होय ए नाम हे, ४. ज्यां सुधी होय हे त्यां सुधी ज्ञान हे. होय उपरांत ज्ञान नथी तेथी ज्यां लगी होय ए नामहे ए. सर्व इत्य मयी विज्ञान हे. तेतु तेज नामहे. ६. होय क्त्रेन प्रमाणेज ज्ञान हे, तेथी होय क्त्रेनमान ए नाम हे. ए. जीव वस्तु जगत्मां नथी. तेथीनास्ति जीव ए नाम हे, ए. देहनो नाज्ञ थवाथी जीवनो पण नाज्ञ, तेथी जीव नाज्ञ ए नामहे ए. देह उपजवाथी जीव विराजे हे, तेथी देह त्यां जीवोत्पाद ए नामहे १० श्रात्मा हे ते श्रवेतन पदार्थ हे तेथी श्रवेतन ज्ञाता ए नाम हे ११. सत्ताना श्रंश ते जीव कहिए हे, पण श्रात्मा श्रंश मात्रहे ए नाम हे ११. जीव हे, ते क्षाण्जंगुर हेतेथी एज नामहे १३. ज्ञान हे ते क्षायक खरूपमां नथी तेथी श्रज्ञायक ज्ञान ए नाम हे १४. एवी एवी एकांत श्रवस्था मूह लोको पामे हे ए नयना जेद जाणवा ॥ ५००॥

हवे ज्ञाननुं कारण ज्ञेय. एजे प्रथम नय कह्यो तेनो प्रपंच करी देखाडे हे:-श्रथ ज्ञानको कारन ज्ञेय प्रथम नय यहु कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोज मूढ कहै जैसे प्रथम समारि जीति, पीठे ताके ज पर सुचित्र ष्टाठो खेखिये; तैसे मूख कारन प्रगट घट पट जैसो, तैसो तहां ज्ञान रूप कारज विशेषिये; ज्ञानी कहे जैसी वस्तु तैसोई सुजाव ताको, ताको ज्ञान ज्ञेय जिन्न जिन्न पद पेषिये; कारन कारज दोज एकहीमे निहचे पे, तेरो मत साचो विव-हार दृष्टि देखीये॥ ५०१॥

श्रर्थः—कोई मूढ मीमांसक ते शिष्य लोकने एम समजावे हे के, जेम प्रथम जिं तने समारी होय तोपनी तेना उपर चित्र सारुं श्राय, श्रने नरसी उपर नरसुं चित्र श्राय; तेम ज्ञाननी उत्पत्तिनुं कारण मन हे, पण जेवो घटपट प्रमुख पदार्थ होय ते वुंज तिहां ज्ञानरूप कार्य विशेष थाय हे, जो घटपदार्थ जाणवा योग्य होय तो घट ज्ञान होय, श्रमे पट पदार्थमां पट ज्ञान होय, तेथी ज्ञाननुं कारण केय हे, हवे तेने स्याद्वाद ज्ञानी एम कहेहे के, श्रहो जाई! जे जेवी वस्तु हे तेनो स्वजाव पण तेवो ज हे; जे ज्ञानपदार्थ हे तेनो स्वजाव जाणवानोज हे, श्रमे जे क्रेयपदार्थ हे ते जा णवा योग्यज हे, श्रा श्रर्थ जेदथी ज्ञान श्रमे क्रेय ए बने जुदा पद जाणवा श्रहीं जे क्रेय कारणपण कह्युं तेज ज्ञान विकट्पे कह्युं, तेथी घटपटादि जगत् हे ते जड पदार्थ दूर रह्या, श्रमे ज्ञान हे तेज सामान्य पणे हे तेथी निश्चय नयथी तो ज्ञानमां क्रेय पामिये, पण व्यवहार दृष्टि श्रापतां तो तारुं मत पण साचुं हे॥ ५०१॥

हवे बीजा एकांत नय श्रात्मा त्रिलोकमय हे तेनो प्रपंच देखाडे हे:-श्रय छतिय नय श्रातमा त्रिलोक प्रमानयहु कथनं:-

॥ सवैया इकतीसाः॥—कोछ मिध्यामित लोकालोक व्यापि ज्ञान मानि, समुके त्रि लोक पिंम स्थातम दरव है; याहिते सुठंद जयो डोले मुप हु न बोले, कहे या जग तमे हमारोई खरब है; तासों ज्ञाता कहे जीव जगतसों जिन्न पे, जगतको विकासी तोहि याहीते गरव है; जो वस्तु सो वस्तु पररूपसों निराली सदा, निहचे प्रमान स्याद्वादमे सरव है; ॥ ५०१ ॥

श्रर्थः – कोई नैयायिक, वैद्योषिक मिध्याति हो. ते ज्ञानने लोकालोक व्यापी मा नीने एवं समजे हे के, जीवहे ते विज्ञाननो पिंम हो श्रमे विज्ञान हे ते लोकालोक व्यापी हो. तेथी श्रात्मद्भव्य त्रण लोक प्रमाण हो. तेथी पोताने सर्व व्यापी ईश्वर मा नीने स्वहंद थको डोले हो. श्रांतिमानमां चड्यो थको बीजाने मूर्व मानीने कोईनी साथे मुख्यी न बोले. जो बोले तो एम कहे के श्रा जगत्मां हमारीज खरब के सर्व रचना है हवे तेने स्याद्वाद ज्ञानी कहे हे के, श्रहो! जाई! जीव जे हे ते जगत्थी जिल्ल हे पण तेना ज्ञानमां जगत्नोविकास हे तेथी ईश्वरपणानो गर्व चढ्योहे पण जे वस्तु हे तेतो पोताना स्वरूपमांज रहे हे श्वने परस्वरूपथी सदा जुदी रहे हे तेथी जगत् श्रने श्वात्माने निश्चय नयना प्रमाणथी स्याद्वादमां सर्वथा विरोध पामिए ॥५०१॥ हवे त्रीजो एकांत नय ते क्षेयथी ज्ञाननो श्रनेक प्रपंच कहि देखानेहे:—

श्रय तृतीय झेयसो श्रनेक झान कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः॥-कोछ पशु ज्ञानकी श्रमंत विचित्राई देखे, ज्ञेयको श्रकार नाना रूप विसतयों है; ताहीकों विचारी कहे ज्ञानकी श्रमेक सत्ता, गहिके एकंत पद्म लोकनिसों लयों है; ताको ज्रम जंजवेकों ज्ञानवंत कहे ज्ञान, श्रगम श्रगाध निराबाध रस जयों है; ज्ञायक सुजाव परजाईसों श्रमेक जयो, जद्यपि तथापि एकतासों नहिं टर्यों है; ॥ ५०३॥

श्रर्थः कोई पशु के मूर्व झाननी श्रनंत विचित्रता देखेंगे. तेनो हेतु कहें के जगत्मां झेय वस्तु श्रनंत हे, तेना श्राकार श्रनंत हे. ते झानमां परिणमें हे तेथी झानपण नानाप्रकारथी विस्तारे हे, श्रने तेना नाना रूप विस्तारने विचारीने झाननी श्रनंत सत्ता माने हे. एवो एकांत पक्त बईने प्रतिवादी बोकथी बने हे. हवे स्यादादी झानवंत ते एकान्तपक्तीना भ्रम जांजवाने एम कहें हे के, श्रहो! जाई! तुं झानने झेयनो श्राकार परिणम्यो जाणीने केम जूबे हे? झान हे ते श्रगम्य वस्तु हे; निरावाध रसथी जर्युं हे. झाननो झायक स्वजाव हे, तेथी यद्यपि पर्याय शक्ति झान श्रनेकरूप थयुं हे. तथापि झायक स्वजावश्री झाननी एकताज हे. पण ते एक ताथी झान टलतुं नथी. ॥ ५०३॥

हवे चोया नयमां ज्ञाननेविषे क्षेयनी ठायानो प्रपंच देखाडे हे:-ष्यय चतुर्थ क्षेय ठाया यह कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-कोछ कुधी कहे ज्ञानमां हि ज्ञेयको श्राकार, प्रतिज्ञासि रह्यो हे कलंक ताहि धोइए; जब ध्यान जलसों पखारिके धवल कीजे, सब निरा कार ग्रुद्ध ज्ञानमई होइए; तासों स्याद्धादी कहे ज्ञानको सुजाछ यहे, ज्ञेयको श्रा कार वस्तु नांहि कहा खोइए; जैसे नाना रूप प्रतिबिंबकी जलक दीसे, जदि त यापि श्रारसी विमल जोइए. ॥ ५०४॥

श्रर्थः—कोई कुधी के॰ कुबुद्धि वैशेषिक मतवालो एम कहे वे के, जो जगत्वासी जीवना ज्ञानमांज क्रेयनो श्राकार प्रतिजासे वे, ते श्राकार तो निराकार ज्ञाननुं क लंक उपजेवे. तेने धोई नाखवुं जोइए, तेथी निराकारनुं ध्यान लगाडवुं तेतो जल थयुं, ते जखश्री प्रक्ताछीने ते ज्ञानने उज्वल करिये तेवारे निराकार ग्रुक्त ज्ञानमय थवाय हे, हवे श्रांही स्याद्वादी तेने कहे हे. श्ररे! जाई! ज्ञाननो एज स्वजाव हे, के ज्ञेयनो श्राकार वस्तुमां जासे तो श्रांही श्राकार गमावी नाखवानी शुं मतलब हे? जेम श्रारसीमां नाना रूप प्रतिबिंबनो जलकाट देखाय हे, तो पण श्रारसी नि मेल जोइए पण तेने प्रतिबिंबनुं कलंक कोई न कहे। ॥ ५०४॥ हवे पांचमो एकांतनय ते ज्यां लगे ज्ञेय त्यां लगे ज्ञान तेनो प्रपंच कही देखाडे हे, श्रय पंचम जोलों ज्ञेय तोलों ज्ञान यह कथनः—

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोज श्रज्ञ कहे क्षेयाकार क्षान परिनाम जोलों, विद्यमा न तौलों क्षान प्रगट है; क्षेयके विनाश होत क्षानको विनास होइ, ऐसी वाके हिरदे मिथ्यातकी श्रलट है; तासों समिकतवंत कहे श्रजुत्रों कहान, परजे प्रवान न क्षान नानाकार नट है; निरविकलप श्रविनस्वर दरव रूप, क्षानकेय वस्तुसों श्रव्यापक श्रघट है. ॥ ५०५ ॥

श्रर्थः—कोई श्रजाण पुरुष एवं कहें वे के जेवो के यनो श्राकार तेवं ज्ञाननं परि णाम थाय है, तेथी के य विद्यमान ज्यां लगी होय, त्यां लगी ज्ञान प्रगट रहे वे श्रने के यनो विनाश थये ज्ञाननो पण विनाश थाय है, एवी वात मिथ्यामतीना हृदयमां मिथ्यानी श्रलट लागी रहे है; हवे तेनाथी सम्यक्तवंत स्याद्वादी श्रनुजवनी कथा क हे हे. श्ररे! जाई! जेम कोई नट पुरुष हे ते नाना प्रकारना जेष धारीने नाना प्रकार नां नाम धरावे हे, तेम ज्ञान क्य नट नाना प्रकार धरीने पर्याय प्रमाणे बहु रूपी थाय हे पण जेवं नट इत्य एक हे तेवं ज्ञान वस्तु पण निर्विक दिप एक हे, इत्यपणे श्रविनस्वर हे. श्रने ज्ञान वस्तु ते केय वस्तु श्री श्रव्यापक हे एटले केयवस्तु ज्ञान वस्तुमां एक मेक न थाय तेथी ज्ञान केयनी एकता श्रवटती है। ए०ए।।

हवे वठा एकांतनय सर्व डव्यमयी आत्मानो प्रपंच कही देखाडे वे:अथ षष्टम सर्व दर्वमय आतमा यह कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः॥-कोछ मंद कहे धर्म श्रधम श्राकास काख, पुदगल जीव सब मेरो रूप जगमें; जाने न मरम निज माने श्रापा परवस्तु, बंधे दिढ करम धरम खोवे डगमें; समिकती जीव सुद्ध श्रमुजो श्रज्यासे ताते परको ममत्व त्याग करे पग पगमे; श्रपने सुजावमे मगून रहे श्राठों जाम, धारा वाही पंश्विक करावे मोषमगूमे॥५०६॥

श्चर्यः - कोई मूर्ख ब्रह्माँ देतवादी एवं कहे वे के जो कोईना मतमां धर्म, श्चधर्म, श्चाकाश, काल, जीव, पुद्गल ए वए इट्य कहेवाय वे ते सर्व ब्रह्म वे तेश्री मारुं पण रूप सर्व जगत्मां विस्तरि रह्युं वे. बीजो पदार्थ कोई नथी. श्चांही गुरु शिष्यने कहे हे. श्रहो! शिष्य! एतो ब्रह्माद्देतवादी मृह मती हे, ते पोतानो धर्म जाण तो नश्री; श्रने पर वस्तु हे तेने श्रात्मा जाणे हे. एवा मिथ्यात्वश्री ए दृढ कर्म बांधे हे. श्रने जगत्मां पोतानो धर्म खोवे हे. पोतानो स्वजाव गमावे हे. जे सम किती जीव होय तेतो "सोहं" बीजना ध्यानश्री ग्रुद्ध श्रनुजवनो श्रज्यास करे, तेश्री श्रात्मतत्त्व जुंडुज पामे. श्रने पगले पगले परवस्तुनो त्याग करे, श्रने पोताना ग्रुद्ध स्वजावमां श्राहे प्रहर मग्न रहे, तेथी ज्ञान धारामां वहेनारो मोक्त मार्गमां चालनारो कहेवाय हे ॥ ६॥

हवे सातमो एकांत नय जे झेय दोत्र प्रमाण झान तेनो प्रपंच किह देखाडेहे:-श्रथ सप्तम झेय देत्र प्रमाण झान यह कथन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—कोछ सठ कहे जेतो क्रेयरूप परवान, तेतो क्ञान ताते कहुं श्रिधक न श्रोर है; तिहूं काख पर छेत्र व्यापी परनयो माने, श्रापा न पि छाने ऐसी मिथ्या हग दौर है; जैन मती कहे जीव सत्ता परवान क्ञान, क्रेयसों श्र व्यापक जगत सिर मोर है; क्ञाछकी प्रजामे प्रतिबिंबित विविध क्रेय, जदपि तथापि थिति न्यारी न्यारी छोर है ॥ ॥ ॥

श्रर्थ— कोई मूर्ख एम कहें वे के जेट हुं केय वस्तुना श्राकाररूपनुं प्रमाण वे एट खे केय हुं एक नाहानुं मोहो हुं प्रमाण वे, तेट हुं क्षान हुं प्रमाण वे; तेथी कंई वधारे बी जुं प्रमाण नथी. एम क्षान ने त्रणे कालमां परकेत्र व्यापी श्रमे पर वस्तुथी परिणम्यो, एट खे केयथी एक मेक थयो क्षान माने वे. पण क्षान ने श्रा सारूप जाणे नहीं; एवी मिथ्या दृष्टिनी दोर वे. हवे तेने जैनमती स्याद्वादी कहे वे, श्रहो! जाई! जेट ला श्राकाश केत्रमां जीव सत्ता वे तेट लाज प्रमाण क्षान वे. श्रमे क्षान वे ते घट पटादिक केय पदार्थथी श्रव्यापक वे एज जगत्ना मस्तके मुगट समान वे. जो पण ए क्षाननी प्रजामां नाना प्रकारना केय पदार्थ प्रतिबिंबित यई रह्या वे, तोपण क्षाननी स्थित जूदीज वे. श्रमे केयनी स्थित पण जुदीज वे. श्रमे क्षान हुं वे तो पण जुदीज वे वे काणा वे ते पण जुदांज वे ॥ ॥ ॥

हवे आठमो नय नास्तिकवादी एम कहे ठे के वस्तु नथी एज एकांत नय ठे. तेनो प्रपंच कही देखाडे ठे:-श्रथ श्रष्टम नास्तिकवादी वस्तु नास्ति यह कथनः-

॥ सबैया इकतीसाः ॥—कोछ ग्रुन्यवादी कहे क्षेयके विनास होत, क्षानको विना श होइ कहो केसे जीजिये; ताते जीवितव्यताकी थिरता निमित्त श्रव, क्षेयाकार प रिनामनिको नास कीजिये; सत्यवादी कहे जैया हुंजे नांही षेदखिन, क्षेयसों विर चि ज्ञान जिन्न मानी लीजीये; ज्ञानकी शकती साधि श्रनुजो दशा श्रराधि, करमकों लागिके परम रस पीजिये ॥ छ॥

श्रर्थः—कोई बौध मितनो जेद शुंन्यवादी एम कहे हे के, इेय हते ज्ञान उपजे हे, श्रमे केयनो विनाश थए ज्ञाननो पण विनाश थाय हे. श्रहो! प्रतिवादी! तमेज कहो हो, के ज्ञान ते जीवनुं रूप हे. तो ज्ञाननो विनाश थएथी जीव पण विणमी जाय तो जीवनुं केम होय? तेनो उत्तर के जीवितव्यनी स्थिरताने कारण एटले शाश्वत जीव राखवा निमित्त ज्ञानमां जे झेयाकार परिणाम उपजे हे, तेनो नाश करिये तो जीवनी स्थिरता थाय, हवे ते उपर सत्यवादी जैनी कहे हे. श्रहो! जाई! एम खेदमां खिन्न के० श्राकुलव्याकुल न थवुं. केयथी विरचिने उदासीन थईने ज्ञान वस्तु जिन्नज मानी खद्ये. ए ज्ञाननी ज्ञायक शक्ति हो, ते शक्तिनुं साधन करीने श्रनुजव दशामां ए ज्ञायकने श्राराधिने कर्मने त्यागी परम रस पीजीए ॥ ए ॥

हवे नवमो एकांत नय देहनो नाश थातां जीवनो नाश तेनो प्रपंच कही देखाडे छे:-श्रथ नवम देहके नाश होते जीवको नाश यह कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—कोज क्रूर कहे काया जीव दोज एक पिंम, जब देह नसे गी तबहीं जीव मरेगो; ग्रायाको सो ग्रज्ज किथों मायाकोसो परपंच, कायामें समाइ फिरि कायाकों न धरेगो; सुधी कहे देहसों श्रव्यापक सदीव जीव, समोपाइ परको ममत्व परिहरेगो; श्रपने सुजाज श्राइ धारना धरामे धाइ, श्रापुमे मगन व्हेके श्रापा श्रुद्ध करेगो. ॥ ए ॥ दोहराः ॥— ज्यों तन कंचुकि त्यागसों, विनसे नांहि जुयंग; त्यों शरीरके नासते, श्रवख श्रखंकित श्रंग. ॥ १०॥

श्रयं:— कोई चार्वाक मती क्रूर एम कहे वे के, काया श्रने जीव बने एक पिंम वे, तेथी ज्यारे देह नाश पामशे त्यारे जीव पण नाश पामशे. जेम वृक्तनो विनाश यये तेनी वाया पण विनाश पामे वे, तेम काया श्रने जीवनी वायानो वल बनी रह्यों वे. श्रयवा इंडजालनी मायानो प्रपंच बनी रह्यों वे, तेथी ते कायामां समाइने एटले दीपकनी परे श्रोलवाइने पावो कायाने धरशे नही. हवे तेने सुधी के॰ पंक्ति स्याद्वादी कहें वे, श्रहो! जाई! जीव वे ते देहथी सदा श्रव्यापक वे. एटले जीव देह पणे परिणम्यो नथी. श्रा जीव पोतानो समय प्रस्ताव पामीने परनो ममत्व वोमशे. त्यारे पोताना शुद्ध स्वजावमां श्रावीने, धारनाधरामेधाइके एटले स्थिरता रूप जू मिमां रहीने श्राप स्वरूपमां श्रापज मग्न थईने श्रात्मानी शुद्धता करशे॥ ए॥ जेम सर्पना शरीर जपर कांचली श्रावे, ते कांचलीना तजवाथी श्रुजंग विणशे

www.jainelibrary.org

नहीं, तेमज शरीरनो त्याग थतां श्रखष जीव हे ते श्रखंकित श्रंगे रहेहे पण जी वनो विनाश थतो नथी। ॥१०॥

हवे दशमो एकांत नय देह जपजवाथी जीव जपजे तेनो प्रपंच कही देखामेछे:-श्रथ दशम देह जपजत जीव जपजे यह कथनः-

॥ संवेया इकतीसाः ॥—कोछ छुरबुद्धि कहे पहिल्लो न हूंतो जीव, देह जपजत छ पज्यो है श्रव श्राइके; जोलों देह तोलों देहधारी फिर देह नसे, रहेगो श्रवण ज्योति ज्योतिमे समाइके; सदबुद्धी कहे जीव श्रवादिको देह धारी, जब ज्ञान, होइगो कवहीं काल पाइके; तबही सो पर तजि श्रपनो सरूप जिज, पावेगो परम पद करम नसाइके ॥ ११ ॥

श्रयं:—कोई छुष्ट बुद्धि धरनार एक ममत्व वालो एम कहे हे के, पहेलो जीव ह तो नहीं. श्रने पृथ्वी, जल, तेज, वायु, ए चार जूतना मिलापथी देह जपज्यो तेमां इत्तान शक्तिरूप जीव श्रावी जपज्यो. हवे ज्यांसुधी देह वर्ते त्यांसुधी देहधारी नाम धरावे हे श्रने पाहो देहनो नाश थशे त्यारे श्रालख पुरुष ज्योति रूपी हे, ते ज्योति मां समाइ जाशे. हवे सद्बुद्धि स्याद्वादी कहे हे, श्रहो! जाई! जीव श्रानादि कालथी देह धारी मूर्त्तिक हे एटले नवो जपनो नथी. श्रने ए जीव कोई काले काललब्धि पामीने इत्तानी थशे, त्यारे देहादिक पर वस्तुने त्यागिने पोताना स्वरूपने जजशे. पही कमोंनो नाश करीने परम पदने पामशे. ॥ ११॥

हवे अग्यारमो एकांत नय आत्मा अचेतन तेनो प्रपंच विस्तारथी कहे हे:-अथ एकादशम आतमा अचेतन यह कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—कोछ पक्तपाती जीव कहे क्षेयके श्राकार, परिनयो क्षान ताते चेतना श्रसत हे; क्षेय के नसत चेतनाको नास ता कारन, श्रातमा श्रचेतन त्रिकाल मेरे मत है; पंग्ति कहत क्षान सहज श्रखंग्तित हे, क्षेयको श्राकार धरे क्षेयसों विरत हे; चेतनाके नाश होत सत्ताको विनाश होय, याते क्षान चेतना प्रवान जीव तत हे ॥ १२ ॥

श्रर्थः—कोई पक्तपाती हठवादी जीव कहें हो, ज्ञान हे ते ज्ञेयनो श्राकार परिण्म मयो होय, श्रने श्राकार परिण्म श्रसत् हो, तेथी चेतना पण श्रसत् हो, तेनो हे तु कहे हो; जुर्ड ज्ञेयनो नाश थाय त्यारे चेतनानो नाश थाय हो, जे सत् वस्तु होय तेनो तो विनाश क्यारे पण न थाय. ते कारणथी चेतना श्रसत् थई तेथी त्रणे कालमां श्रातमा श्रचेतन थयो एवो मारो मत हो, हवे पंडित स्याद्वादी कहे हो, श्रहो! जाई! ज्ञान वस्तु सहज स्वजावे श्रखंकित हो, श्रने ज्ञेयनो श्राकार धरेहे

तोपण क्रेयथी विरक्त हे. जेम आरसीमां आकार जासे तोपण ते आकाररूप आ रसी न थाय, तेम. जो चेतना खक्तणनोपण नाश मानीए तो जीवनी सत्तानो पण नाश थाय, त्यारे जीव वस्तु पण असत् थाय, तेथी जीव तत्त्व जे हे ते क्लान चेत नाना प्रमाणथीज मानीए ॥ ११ ॥

हवे बारमो एकांत नय अंशप्रमाण जीव सत्तानो प्रपंच कही बतावे हे:-अथ द्वादश अंस प्रमान यह कथन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥— को ज महा मूरष कहत एक पिंक्मांहि, जहां छों श्रचित चित्त श्रंग लहल है है; जोगरूप जोग रूप नानाकार क्षेय रूप, जेते जेद करम के तेते जीव कहे है; मितमान कहे एक पिंडमांहि एक जीव, ताही के श्रनंत जाव श्रंश फेली रहे है; पुग्गलसों जिन्न कर्म जोगसो श्रखिन्न सदा, जपजे विन से थिरता सुजाव गहे हैं। ॥ १३॥

श्रर्थः—कोई बौधमती महा मूर्ख एम कहें हे के, एक शरीरमां ज्यां खगी श्रिव त चित श्रंग के प्रयादिक श्रचेतन विकल्प श्रयवा नर श्रमर तिर्यंचादि चेतन श्रंग ते सचित विकल्प चकचकी रह्याहे, योगपरिणामधी योगरूप, जोगपरिणामधी जो गरूप, एम क्षेयनां नानाप्रकार रूप जेटलां कर्म के कियाना जेद थायहे, तेटलाने जीव संख्या कहें हे, एटले जीव सत्ता श्रंश प्रमाण थई हवे बुद्धिवंत स्याद्वादी एम कहें हे के, श्रहो! जाई! एक पिंडमां एक जीव हे श्रने ते जीवना ज्ञान परिणामे क रीने श्रनंत जाव जासनरूप श्रंश फेली रह्याहे. पण जीव हे, ते पुद्गलधी जिन्न हे, श्रमे श्रमं कर्मयोगधी श्रजिन्न के निराकुल हे, तेमां जाव श्रंश श्रनंत उपजेहे, श्रमे श्रमंत विणसे हे पण जीवतो स्थिरतारूपज श्रही रह्यों हे ॥ १३॥

हवे तेरमो एकांतनय क्तणजंग्रर जीवनो प्रपंच कही देखाडे हे:-श्रय त्रयोदश हिनजंग्रर जीव यह कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—कोछ एक विनवादी कहे एक पिंममांहि, एक जीव छपज त एक विनसतु है; जाही समें श्रंतर नवीन छतपति हुइ, ताही समें प्रथम पुरातन वसतु है; सरवंग वादी कहे जेसे जखवस्तु एक, सोइ जखविविध तरंगनि खसतु है, तेसे एक श्रातम दरव गुनपरजेसों श्रनेक जयो पे एक रूप दरसतु है ॥ १४॥

श्रर्थः - कोई एक क्रणवादी बौध एम कहे हे के एक पिंममां एक जीव छपजे है, एक जीव विणसे हे जे समें पिंडमां नवा जीवनी छत्पत्ति न थाय ते समें पे हलो पुराणो जीव हे ते वसे हे, पही ते विणसे हे एम शृंखलाबद्ध छपजे विणसे हे, तेने सर्वोगवादी जैनमती एम कहे हे के, श्रहो! जाई! जेम तक्षाव प्रमुख जलाश्रयमां

जल वस्तु एक हे तेज जल विविध तरंगे करी लिसत के जिन्न जिन्न देखाय है, तेम एक आत्मा डव्य हे ते गुण पर्यायथी अनेक रूप थयो हे तोपण डव्यार्थिक नये एक रूपेज देखीए हे. ॥ १४॥

हवे च उदमो एकांतनय ज्ञायक श्रज्ञायकनो प्रपंच कही बतावे हे:-श्रथ चतुर्दशम श्रज्ञायक ज्ञायक नय यह कथन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—कोज वाल बुद्धि कहे झायक सकित जोलों, तोलों झान श्रम्भुद्ध जगत मध्य जानिये; झायक सकित काल पाई मिटि जाई जब, तब श्रम्भ विरोध बोध विमल वलांनिये; परम प्रवीन कहे एसी तो न बने वाही, जैसे बिनुं परगास सूरज न मानिये; तेसे विनुं झायक सकित न कहावे झान, यहतो न पठ परतक परवानिये. ॥ १५ ॥

श्रर्थः-जेनी बालकना जेवी तुन्न बुद्ध हे, एवो कोई श्रून्यवादी तथागत कहें हे के, ज्यां लगी ज्ञानमां ज्ञायक शक्ति हे, त्यां लगी जगतमां ज्ञान श्रमुद्ध कहेवायहे, तेनो एज परमार्थ हे, के जे ज्ञायकपणुं हे ते विकल्परूप हे. श्रने विकल्पश्री ज्ञान श्रमुद्ध थाय हे, तेथी निर्विकल्प ज्ञान ग्रुद्ध हे ज्यारे जितत्व्यताने वश्रथी पोतानो समय प्रस्ताव पामीने ज्ञायक शक्ति हे ते मटी जाय, त्यारेज विकल्पना विरोधश्री रहित एवं बोध के ज्ञान ते विमल के ग्रुद्ध वलाणीए. हवे एने परम प्रवीण स्या द्वादी कहे हे:—श्ररे! जाई! जे तुं ज्ञायक एकतामां विकल्प मानीने शंका पामेहे, श्रने ज्ञायकपणुं श्रमुद्ध मानेहे, ए वात बने नहीं जेम प्रकाशविना सूर्य मान्यो न जाय श्रने प्रकाशश्रीज सूर्य मान्यो जाय, तेम ज्ञायक शक्तिविना ज्ञानपण कहेवाय नहीं, जो तमे श्रमुमानप्रमाण्यी तमारो एक साधन करता नथीं, तो प्रत्यक्त प्रमाण्यी पण तमारो एक प्रमाण् कीधो न जाय, तेथी तमारो पक्तहेते पक्ताजास हे ॥१५॥

हवे जेणे च उद एकांत नय हठावी दीधा एवो जे स्याद्धाद तेनी स्तुतिकरे छे:श्रथ स्यादवाद प्रशंसा कथनः-

॥ दोहराः ॥-इह विधि श्रातम ज्ञान हित, स्यादवाद परवान, जाके बचन बि चारसों, मूरख होइ सुजान ॥ १६ ॥ स्यादवाद श्रातम सदा, ता कारन बखवान, शिव साधक बाधा रहित, श्रषे श्रखंडित श्रान ॥ १७ ॥ स्यादवाद श्रिधकार यह, कह्यो श्रखप विसतार, श्रमृत चंद मुनिवर कहे, साधक साधि छुवार ॥ १० ॥

श्रर्थः-श्रावी रीते श्रात्माना ज्ञाननो हितकारी स्याद्वाद मत हे, तेज प्रमाण जा एवो. जे स्याद्वादनी वचन युक्तिमां पूर्वे मूर्व होय ते सुजाण थाय. ॥ १६ ॥ जे स्याद्वाद स्वरूप हे तेज श्रात्मानी दशा हे. ते कारणथी स्याद्वाद हे ते महा बलवान

है, मोक्तनो साधक हे, खने कोई मुक्तिश्री जांगे नही, तेथी ते बाधा रहित हे खक्त य हे. खने सर्व नयमां फेलि रह्यों हे तेथी खखंमित एनी खाण हे ॥ १९ ॥ श्री खा चार्य एम कहें हे के, खा कंईक स्याद्वादनो खिषकार खहपविस्तारथी कह्यो. हवे श्री खमृतचंद खाचार्य बारमो साध्य साधक द्वार कहे हे. ॥ १० ॥

इति श्री समयसारना नाटकमां स्याद्वादनामा इग्यारमां द्वारनो श्रिधिकार

बाबबोध सहित समाप्तः॥

हवे साध्य वस्तु श्रने साधक वस्तुनुं स्वरूप देखामे हेः-श्रथ श्री साध्य साधक स्वरूप कथनः-

॥सवैया इकतीसाः॥—जोइ जीव वस्तु श्रास्त प्रमेय श्रागुरु लघु, श्राजोगी श्रमूरितक प रदेशवंत है; उतपतिरूप नाशरूप श्राविचल रूप, रतनत्रयादि ग्रण जेदसों श्रानंत है; सोई जीव दरब प्रवान सदा एकरूप, ऐसो शुद्ध निहचे सुजाउ विरतंत हे; स्यादवाद मांहि साधि पद श्रिधिकार कहाो, श्राव श्रागे कहिवेकों साधक सिधांत है ॥ १ए ॥ ॥ दोहराः ॥—साधि शुद्ध केवल दशा, श्रायवा सिद्ध महंत; साधक श्राविरत श्रा

दिबुध, ढीन मोह परजंत. ॥ १०॥

श्रर्थः—जे कोई जीव वस्तु हे ते द्वाराधी श्रस्तिपणे, प्रमेयपणे, श्रगुरु खघु पणे, श्र जोगीपणे, श्रमूर्तिक पणे, प्रदेशवंत पणे, प्रवर्ते हे, तेमां जे नास्तिपणुं नहीं ते श्र स्तिपणुं जाणवुं, श्रने प्रमाण प्रहण करवा योग्य हे, तेथी प्रमेयपणुं हे. श्रपौद्गिलक पणाथी श्रगुरु खघुपणुं हे, इत्यादि धर्म हे. उत्पत्तिरूप पर्यायथी, विनाश रूप पर्या यथी, श्रविचलरूपथी, ज्ञान दर्शन चारित्र रत्नत्रय कहिए. इत्यादिक ग्रणोना जेदथी श्रमंत पणुं खीधो वर्ते हे. तेज जीवद्यव्य एकरूपज सदा प्रमाण हे. ते एकरूपने श्र स्तत्व प्रमेयत्वादिक धर्मे करी श्रागल कह्यो तेज ग्रुद्ध निश्रयनयथी एनो एवो ख जाव वृत्तांत हे. तेज साध्य पद कह्युं एटले साधवालायक वस्तु ते स्याद्धाद श्रिध कारमां कही. हवे श्रागल एने साधवानो सिद्धांत साधकहे॥ १ए॥ ग्रुद्ध केवलीनी दशाने साध्य वस्तु कहीए. श्रयवा महंत सिद्धपणुं ते साध्य वस्तु हे. श्रने चोथा श्रविरत ग्रणहाणाथी मांकीने वारमां द्यीणमोह ग्रणहाणा पर्यंत नव ग्रणहाणाना धणी जे बुध के० पंकित हे, ते सर्वेने साधक कहीए.॥ १०॥

हवे श्रविरत्यादि साधकनी व्यवस्था कहेते:-श्रथ साधक व्यवस्था कथन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥-जाको श्रधो श्रपूरव श्रनवर्त्ति करनको, जयो खाज जई ग्र रु वचनकी बोहनी; जाके श्रनंतानुबंध क्रोध मान माया खोज, श्रनादि मिथ्यात मि श्र समकित मोहनी; सातों परिकति खपी किंवा उपसमी जाके, जगी उरमांही स मिकत कला सोहनी; सोइ मोक्त साधक कहायो ताके सरवंग, प्रगटी शगतिग्रन थानक थ्यारोहनी ॥ ११ ॥ सोरठीः ॥—जाकी मुगति समीप, जई जव स्थिति घट गई; ताकी मनसा सीप, सुग्रुरु मेघ मुकता बचन ॥ ११ ॥

श्रयः-जे जीवने श्रधो के० यथाप्रवर्ति करणनो श्रने श्रपूर्व करणनो तथा श्रनि वृत्त करणनो लाज थयो, एटले ए सम्यक्त्व प्राप्तिनां त्रण करण हे तेनो लाज थयो, श्रने जेने ग्रह वचननी बोहनी थई एटले ग्रह उपदेशनो लाज थयो, तेथी श्रनंतानु वंधी क्रोध, मान, माया, श्रने लोज तथा श्रनादिकालनी मिध्यात्व मोहनीय, मिश्रमो हनीय श्रने सम्यक्त्व मोहनीय, ए सात प्रकृति जेनी क्त्य थई, श्रथवा उपश्मी श्रथवा सातेमां कंइ खपी कंइ उपश्मी, एवी जेना हैयामां सुहामणी समिकतनी कला जागी तेज जीव मोक्तनो साधनारो कहेवाय तेना सर्व श्रंगमां एटले बाह्य श्रन्यंतर श्रंगमां ग्रणस्थानक श्रारोहणी के० चढवानी शक्ति प्रगटी॥ ११॥ जेने जवस्थितिना परिपा कथी मुक्ति समीप थई श्रने संसारनी स्थिति घटी गई, ते पुरुषनी मनसा शीप समान थई, त्यां सद्गुरु ते मेघ समान थयो, ते सद्गुरुनां वचन तेनी मनसारूप सी पमां श्रमों लिक मोती जेवां थयां थकां रुचे हे॥ ११॥

हवे सद्युरुने मेघनी जपमा कहीने स्तवे हे:-श्रथ ग्रुरु प्रशंसा:-

॥ दोहराः ॥—ज्यों वरषे वरषा समे, मेघ श्रखंडित धारः त्यों सदग्रुरु बानी खिरे, जगत जीव हितकार ॥ १३ ॥

श्रर्थः-जेम वरसाद कालमां मेघ श्रवंडित धाराये वरसे, तेमज सद्ग्रह होय ते जगत्वासी जीवने हित कारक श्रमृत वाणी खेरे हे ॥ १३ ॥

हवे सद्गुरुना उपदेश आकेपणी धर्म कथा कहे हे:-अथ उपदेश कथन:-

॥ संवैया तेइसाः॥—चेतनजी तुमजागि विद्योकहुं खाग रहे कहों मायाकि तांई; श्राय कहीं सुं कही तुम जाउगे माया रहेगि जहां कि तहांई; माया तुह्यारि न जाति न पाति न वंसिक वेखी न श्रंसिक फांई; दासि किए बिनु खातिन मारत, एसि श्रनीति न कीजे ग्रसांई॥ १४॥ दोहराः॥—माया ठाया एक हे, घटे बढे ठि नमांहि; इन्हकी संगति जे खगे, तिनहिं कहुं सुख नांहि॥ १५॥ संवैया तेईसाः॥— खोगिनसों कन्न नांतोँ न तेरोँ न तोसोँ कन्न इह खोगकोँ नांतो; ए तो रहेरिम खारश्यकके रस, तू परमारश्यके रस मातो; ए तनसों तनमे तनसे जम, चेतन तुं त नसों नित हातो; होहि सुखी श्रपनो बख तोरिके राग विराग विरोधको तांतो।॥ १६॥ सोरठाः॥—जे छरबुद्धीजीव, ते छतंग पदवी चहे; जे समरसी सदीव, ति नहकों कन्न न चाहिए॥१९॥ संवैया इकतीसाः॥—हांसीमें विषाद बसे विद्यामे विवाद

बसे, कायामें मरन गुरुवर्त्तनमें हीनता; सुचिमें गिलान बसे प्रापितमें हानि वसे, जैमें हारि सुंदर दशामें ठिब ठीनता; रोग बसे जोगमें संयोगमें वियोग बसे, गुनमें गरव बसे सावमांहि दीनता; और जगरीति जेती गर्जित श्रसाता सेती, साताकी सहेती है श्रकेली जदासीनता ॥ २० ॥ दोहराः ॥—जिहि जतंग चि फिरि पतन, निह जतंग बहिकूप; जिहि सुख श्रंतर जयवसे, सो सुख है जुखरूप ॥ २ए ॥ जो विलसे सुष संपदा, गये ताहि जुख होइ; जो धरती बहु त्रिणवती, जरे श्रगनिसों सोई ॥ ३० ॥ इति गुरुजपदेस समाप्तः ॥ दोहराः ॥—सबदमांहि सतगुरु कहै, प्रगटरूप जिन धमी; सुनत विचक्रण सहहै, मूढन जानै मर्म ॥ ३१ ॥

अर्थः-अहो! जीव! चेतन! तमे मोह निद्रा तजोने जागो, अने सत्य खरूप देखीने मायारूप संपदाने शुं वलगी रह्याठो; पृथिवी प्रमुख श्रदार जारादीक जे ठे तेमां तमें क्यांथी आव्या हो? अने कही दशामां जोशो? अने जेनी साथे तमे राची रह्याहो, तेतो मायाजाल संपदा ज्यांनी त्यां रहेरो. ए मायाजाल तमारी जाती नथी, तथा पाती नथी श्रने माया तमारा वंशनी वेली नथी, श्रने तमारा श्रंश के॰ एक देशनी पण कांई नथी, तेथी तमारे श्रने मायाने संबंध तो कोई पण नथी. श्रने तमे पो तानी करीने जाणोठो. तेथी ए कहेवत साची करो ठो, के दासी कर्या वगर खात मारो हो, तेथी उत्पात थारो माटे हे ! महंत पुरुषो ! एवी श्रनीति न करवी ॥१४॥ माया श्रने ढाया एक सरखीज हे. क्रणमां वधे हे श्रने क्रणमां घटे हे. तेथी ए मायानी संगते जे लागी रहेहे, तेने क्यारे पण सुख थातुं नथी॥ १५॥ आ जे पुत्र कलत्रादिक तुं पोताना जाणे हे, तेतो पारका लोको जेवा हे, ए लोकोनी साथे तारों कांई नातों नथी. अने ए लोकोने पण ताहारी साथे कोई प्रकारनो नातो नथी. ए जे पुत्रकलत्रादि लोको हे तेतो पोताना खार्थना रसथी ताहारी साथे रमी रह्या हे, अने अरे! चेतन! तुं तो पोताना चेतनारूप परमार्थना रसमां राची रह्यों हुं. वसी ए जे लोकों हे ते तारा तनथी तनमय थई रह्या हे, एटसे तारा श रीरथी मोहित हे, खने ए शरीर तो जम हे अने तुं तो चेतन हे. तेथी ते जमथी तारी सदा जिन्नता हे. माटे राग ष्यने देष रूप मोह कर्मनो नातो तोमी पोतानुं बल फोरवीने सुखी था॥ १६॥ जे जीव राग देषथी छुष्ट बुद्धि थई रह्यो हे ते तो इंडादिकनी उंची पदवी चाहे हे, श्रने जे जीव सदाई समरसी जावमां रहे हे, ते ने कोई उंच पदवीनी चाहना यती नथी. ॥ २७ ॥ हांसीने सारी मानीए हे पण तेमां विषवाद वसे हे, विद्याने सारी जाणीए हीए पण तेमां विवाद जगडो वसे हे; का याने सारी जाणीए ठीए पण तेमां मरणदोष हे, गुरुताई के० वडाईने सारी जाणीए

वीए पण तेमां कोईकवारे हीणता वे; पवित्राई सारी जाणीए वीए, पण एने आदिके श्रंते छगंन्ना उपजे हे; प्राप्ति सारी जाणीए हीए, पण तेनी साथे हाणीलागी रहीहे; जीतवुं जबुं वे पण तेनी साथे हारवुं खाग्युंज वे; ज्ञानीनी सुंदर दशा जली वे पण अंते कांति कीण यई जाय है; जोगनुं सुख सारुं हे, पण तेमां रोगनी जलित है; इष्ट संयोग जलो हे पण तेनी साथे वियोगपण तैयार यई रहे हे; प्रीति जली हे पण तेनीसाथे अप्रीति पण उपजे हे; श्रीदार्यादिक गुणमां गर्व श्रहंकार वसे हे; राज सेवा सारी हे, पण तेमां दीनपणुं वसे हे; श्रने बीजी जेटली जगत्वासी जीवोनी रीत सारी जाणीए बिए, तेतो सर्वे अंतर्गर्जित अशाता सिहत है. तेथी एक सी **उदासीनताज शातानी साहे**ली हे. माटे समरस जावज श्रेष्ट हे ॥ १७ ॥ जे उंचे वेंकाणे चढीने पठी नीचे पडवुं थाय, ते उतंग वेकाणुं न कहेवाय; पण ते वेकाणुं कुवा जेवुं कहेवाय. तेम जे सुखना श्रंदर इःख वसे वे ते सुख पण इःखरूप कहे वाय है ॥ १ए ॥ केमके सुख संपदा विखसे हे पण पही तेना नाशथी डुःख थाय हे. जेम तृणोवाली धरती श्रमिथी बझी जायहे, पण तृणविनानी धरती कोई रीते बलती नथी, ए दृष्टांते जाणी लेवुं ॥ ३० ॥ एरीते गुरु उपदेश सूचिनकामात्र संपूर्ण थयोः, सद्गुरु जैनधर्मने प्रगट रूप शब्दमांज कहे वे, एटखे वचनमां व खाणे हे. ते जैन धर्मने सांजली विचक्तण पुरुष होय ते सर्द्ह हे, खने मूर्व होय ते तेनो मर्भ जाणे नही:- ॥ ३१ ॥

हवे कोईकने उपदेशनी रुचिछे, श्रने कोईकने नथी तेनुं खरूप कहे छे:-श्रथ उपदेश रुचि श्ररुचि कथनः-

॥ सवैया एकतिसाः॥—जेसे काहू नगरके वासी दे पुरुष जूखे, तामें एक नर सुष्ट एक छुष्ट जरको; दोज फिरे पुरके समीप परे कुवटमे, काहू जैर पंथिककों पूछे पंथ पुरको; सोतो कहे तुझारो नगर हे तुमारे ढिग, मारग दिखावे समुफावे खोजपुरको; एते पर सुष्ट पहिचाने पें न माने छुष्ट, हिरदे प्रवान तेसे जपदेश ग्रुरको ॥ ३१ ॥ ॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे काहू जंगखमे पावसकी समो पाई, अपने सुनाई महा मेघ बरवतु है; आमल कषाय कदु तीवन मधूर वार, तेसो रस वाढे जहां जेसो दरवतु है; तेसो झानवंत नर झानको बखान करे, रसको जमाहो हैं न काहू परवतु है; वहे धुनि सुनि कोज गहें कोज रहे सोई, काहूकों विवाद होई कोज इ रवतु है ॥ ३३ ॥ दोहराः ॥—ग्रुर जपदेश कहा करे, छराराधि संसार; वसे सदा जा के जदर, जीव पंच परकार ॥ ३४ ॥

अर्थः-जेम काई नगरना वासी वे पुरुष नगरमांथी निकलीने दिशा जूली गया.

ते वे पुरुषमां एक तो सुष्ट के॰ हैयाना सरख खजावनो इतो, अने एक हैयानो डुष्ट हतो. पठी ते बने पुरुष नगरनी समीपज फरवा लाग्या पठी कोई बीजा वाटमार्थने नगरनो मारग पूछवा लाग्या, त्यारे ते कहेवा लाग्यो जे तमारुं गाम तो तमारी स मीप हे, एम कही ते बनेने मारग देखाड़े, अने रुमी रीते पुर के॰ नगरने खोज करी समजावे, पण तेमां जे सरख हैयानो हे, तेतो साचुं माने, पण फुष्ट है यानो हे ते माने नहीं, तेम गुरुनो उपदेश हे तेपण पुरुषना हैया प्रमाणे हे ॥ ३१ ॥ जेम कोई श्वरएयमां वरसाद पोतानो समय पामीने खजावश्री महा मेघ वरषे हे. त्यारे य्यांबर्खी प्रमुख खाटा रसवाला तथा बावल प्रमुख कषाएल रसवाला, अने िंबिका प्रमुख्कडवा रसवाला, जाल प्रमुख नींबरसवाला, जेठीमध प्रमुख मधु**र** रसवाला, श्रने खुण प्रमुख काररस वालां काडोमां तेर्नना गुण रस वृद्धि थाय हे, तेम ज्ञानी श्राचार्य प्रमुख पोतानी वचन वर्गणा वचन योगे खिरे के॰ प्रकाशे हे, ते ज्ञाननुं वखाण करतां पोताना श्रनुजव रसमां जमग शर्इ रह्या हे, पण ते वखते कोई योग्य श्रयोग्य श्रोतानी परीक्षा करता नथी, पही ते श्रोता पुरुषोमां ते ज्ञाननी ध्वनि सांजलीने कोई तेनी वाणीने यहे हे, कोई सुई र हेवे, कोई निद्रा करे वे, कोई मिध्यादृष्टिने विषाद्पण थाय वे, अने कोई सम्यग् दृष्टि हर्ष पण पामे हे ॥३३॥ माटे ग्रुरुनो जपदेश द्युं करे? आ संसारी खोक छ राराध्य हे, समजाववा कहण हे, जे संसारना छदरमां पांच प्रकारनी श्रद्धावाला जीवो हे, ते सदा वसीज रह्या हे ॥ ३४ ॥

हवे पांच प्रकारना जीवनां नाम कहे हे:-श्रथ पंच प्रकार यथा:-

॥ दोहराः ॥–हूंघा प्रजु चुंघा चतुर, सूंघा रोचक सुद्ध, जंघा छुरबुद्धी विकक्ष चूंघा घोर श्रबुद्ध ॥ ३५ ॥

श्रर्थः—एक तो डुंघा तेतो प्रज स्वामी हे; बीजा चुंघा के० चतुर हे; त्रीजा सुं घा के० रुचिवंत हे; चोथो डंघाके० डुष्ट डुईिट्स हे, श्रने विकल हे; पाचमा घूंघा के० घोर कुबुट्सि हे ॥ ३५ ॥

हवे डूंघानुं बक्षण कहे ठे:-श्रथ डूंघा यथा:-

॥ दोहराः ॥-जाकी परम दशाविषेः; करम कलंक ने होइः ह्रंघा श्रगम श्रगाध पद, वचन श्रगोचर सोइ॥ ३६॥

श्रर्थः—जेनी उत्कृष्ट दशा वर्णवेसी हे, जेमां कोई कर्मरूप कलंक देखाय नही, एतुं जे श्रगम तथा श्रगाध पद हे, एटसे सिद्ध पद हे जे वचननो विषय थई शके नही तेने डूंघा किहेंगे. ॥ ३६ ॥ हवे चुंघानुं लक्तण कहे हे:-श्रय चुंघा यथा:-

॥ दोहराः ॥—जे उदास व्हे जगतसों, गहे परम रस पेम; सो चूंघा गुरुके बचन, चूंघे बालक जेम. ॥ ३९॥

श्रर्थः—जे जीव जगत्थी उदासी थई रहे हे, श्रने जे परम दशामां रही तेना प्रेम स्वादने यहे हे, एटसे उत्कृष्ट दशा जावे हे, तेतो गुरुनां वचनने बासकनी परे चुंघे हैं, श्रने पुष्ट थाय हे, ते चुंघा कहेवाय हे. ॥ ३७ ॥

हवे सुंघानुं लक्तण कहे हे:-श्रथ सुंघा यथा:-

॥ दोहराः ॥—जो सुवचन रुचिसों सुनै, हिए ड्रष्टता नांहि; परमारथ समुकै नही, सो सुंघा जगमांहि ॥ ३०॥

श्रर्थः—जे रुचिये करी श्रागमना श्रंग जे सुवचन तेने सांजसे हे, जेना हृदयमां डुप्टता नथी, पण जे सूदम तत्त्वने समके नही तेने जगत्मां सुंघा पुरुष कहीये ॥३०॥ हवे हंघानुं लक्षण कहेहेः—श्रथ हंघा यथाः—

॥ दोहराः ॥-जाकों विकथा हित लगे, छागम छंग छनिष्टः सो उंघा विषई वि

कल, जुष्ट रिष्ट पापिष्ट. ॥ ३ए ॥

श्रर्थः-जेने विकथानां वचन हितकारी लागे हे, श्रने श्रागम श्रंग श्रनिष्ट लागे हे, तेतो विकल विषयी जीव हंघा कहेवाय, दोषवंत रोषवंत पापकर्मी श्रई रहेहे. हवे घूंघानुं लक्षण कहेहे.-श्रथ घूंघा यथाः-

॥ दोहराः ॥—जाके श्रवन बचन नही, निह मन सुरित विरामः जमता सो जड वत् जयो, घूंघा ताको नाम, ॥ ४० ॥ चोपाईः ॥—हूंघा सिद्ध कहे सब कोऊः सुंघा जंघा मूरख दोठः घूंघा घोर विकल संसारीः चुंघा जीव मोष श्रधिकारीः ॥ ४१ ॥ ॥ दोहराः ॥—चूंघा साधक मोषको, करे दोष छःख नासः लहे पोष संतोष सों, व रनों लगन तास. ॥ ४१ ॥

श्रर्थ:—जेने वचन नथी एटले जे एकेंडिय हे श्रने जेने श्रवण नथी एटले जे बेरिंडिय तेरिंडिय, चौरिंडिय हे, श्रने जेने मननी सुरता नथी एटले जे श्रमंक्री हे, वली जेने विराम के विरति नथी, श्रक्षानरूप जमताथी जे जमरूप थई रह्या हे, तेने घुंघा क हीए. ॥ ४० ॥ गुंघा पुरुषने तो सहु कोई सिद्ध कहे हे; सुंघा श्रने छंघा ए बंने मूर्ख हे; श्रने घुंघा होय तेतो श्रघोर श्रंधारामां विकल संसारी जीव हे; श्रने चुंघा जीव हे तेतो मोक्षना श्रधिकारी होय, श्रने मोक्षना वांहक होय ॥ ४१ ॥ चूंघा हे तेतो मोक्षनो साधक हे, दोष श्रने छुःखनो नाश करे हे, श्रने संतोषथी पुष्टता पामे हे, तेनुं लक्षण वरणवुं हुं. ॥ ४२ ॥

हवे मोक्त साधकनुं उदाहरण कहे हे:- अथ साधक बक्त खः-

॥ दोहराः ॥-कृपा प्रसम संवेग दम, श्रक्ति जान वैरागः ए खब्न जाके हिये, सप्त व्यसनको त्यागः ॥ ४३ ॥

श्रर्थ:—क्रुपा जे द्या, तथा जे कषायना उदयनुं दबाववुं ते प्रशम श्रने संवेग ते मोक्तना श्रिजिलाषनुं पद के० स्थानक, तथा दम ते इंडियदमन, श्रास्ति एटसे जिनोक्त वचन उपर श्रद्धा, एहवो वैरागीजाव; एटलां लक्तण जेना हृदयमां रहे हे, श्रने सात व्यसननो जे त्याग करे तेज साधक होय।। ४३॥

हवे साते व्यसननां नाम कहे हे:-श्रथ सप्त व्यसन नाम:-

॥ चोपाईः ॥-जूवा श्रामिष मदिरा दारी; श्राषेटक चोरी परनारी; एई सात व्य सन छुख दाई; छुरित मूख छुर्गतिके जाई. ॥ ४४ ॥ दोहराः ॥-दर्वित ए सातों व्य सन, छुराचार छुख धाम; जावित श्रंतर कलपना, मृषा मोह परिनामः ॥ ४५ ॥

श्रयं:—जुगार १, मांस जक्षण १, मिदरापान ३, वेक्या गमन ४, श्राखेटक के० शिकार खेलवो ५, चोरी करवी ६, परस्री गमन ७, ए सात व्यसन कहेवाय हे, ते संसारमां छःखदाई हे. पापनां मूल हे श्राने छर्गतिना जाई हे. ॥ ४४ ॥ ए जे किया रूप साते व्यसन हे ते जव्यरूप हे. ए छष्ट श्राचाररूप छःख धाम के० छःखनुं घ रहे. श्राने जेना श्रंतरमां वृथा के० जूहा मोह परिणामनी कहपना के० विचारणा ध्यावन थाय, ते जावित व्यसन कहीए. ॥ ४५ ॥

हवे जावित सात व्यसननी व्यवस्था कहे हे:-श्रथ जावित व्यसन व्यवस्था कथन:-

॥ सवेंया इकतीसाः ॥—श्रद्धात्रमें हारि द्युत्र जीति यहे द्वृत कर्म, देहकी मगन ताई यहे मांस जिवनोः मोहकी गहलसों श्रजाने यहे सुरापान, कुमितकी रीति ग निकाको रस चालिनोः निरदे वहे प्राण घात करिनो यहे सिकार, परनारी संग प रबुद्धिको परिषनोः, प्यारसों पराई सोंज गहीनेकी चाह चोरी, एई सातों व्यसन विडारि ब्रह्म लिवनोः ॥ ४६॥

श्रर्थः—श्रशुज कर्मना उदयशी हार मानिये श्रने शुज कर्मना उदयशी जीत मा निये तेतो जुगार खेलवो हे. देह उपर मग्नता रहे तेतो मांस जक्कण जाणवुं. मोह कर्मश्री मूर्डित श्र रह्याश्री श्रजाण श्र रह्यो होय तेज सुरापान व्यसन हे. कुबुद्धिनी रीते चालवुं तेतो वेश्याना रसनुं चालवुं हे. निर्दय परिणाम राखीने प्राण्यात करवो, तेज शिकार खेलवो हे. पररूप जे पुजलादिक तेनी बुद्धिने परखवी तेतो परनारी सेवा व्यसन हे. पारकी सोंज सामग्री उपर प्रीत राखीने प्यार मेल

ववानो चाह राखे तेज चोरी हे. ए जावित सात व्यसनतुं विदारण करवार्थी ब्रह्म बिख्यो जाय हे. ॥ ४६॥

हवे मोक्तना साधकनी व्यवस्था कहे हे:-श्रथ साधक व्यवस्था:-

॥ दोहराः ॥–विसन जाव जामे नही, पौरुष श्रगम श्रपारः किये प्रगट घट सिं धुमिय, चौदह रतन उदारः ॥ ४७॥

श्रर्थः-जेना चित्तमां व्यसनजाव पामिए नही, श्रने श्रगम श्रपार पुरुषातन पां मिए, तेणे घटरूप समुद्र मंथन करीने उदार केण् श्रमुख्य चौदे रत्न प्रगट कीधां ॥४९॥ हवे जावित चौद रत्ननुं वर्णन करेके:-श्रथ जावित चौद रतनको बरननः-

॥ संवैया इकतीसाः-खन्नमी सुबुद्धि, श्रनूत्रूति कन्नस्तुत्रमनि, वैराग कलपवृक्त, संत सुवचन है; ऐरावत जियम प्रतीतिरंत्रा जदैविष, कामधेनु निर्फरा सुधा प्रमोद घन है; ध्यान चाप प्रेमरीति मदिरा विवेक वैद्य शुद्धत्राव चंद्रमा तुरंगरूप मन है; चौदह रतन ए प्रगट होइ जहां तहां ज्ञानके जदोत घट सिंधुको मथन है.॥ ४०॥

॥ दोहराः ॥-किए श्रवस्थामे प्रगट, चौदह रतन रसाख, कबुं त्यागे कबुं संप्रहै, विधि निषेधकी चाल ॥ ४ए ॥

श्रर्थः—सुबुद्धि उपनी तेतो ब्रह्मी उपनी १, श्रात्मानो श्रनुजन उपन्यो तेतो कोस्तु जमणि उपन्यो १, वैराग उपन्यो तेतो कृष्यकृत उग्युं ३, जाषा सिमित उपजी तेतो शंख उपन्यो ४, उद्यम उपन्यो तेतो ऐरानत हाथी उपन्यो ५, प्रतीत उपनी तेतो रंजा उपनी ६, कर्मनो उदय तेतो विष उपन्युं ७, कर्म निर्जरा थह तेतो कामधेनु उपनी ७, श्रानंद उपन्यो तेतो श्रमृतघन उपन्युं ए, ध्यान उपन्युं तेतो चाप के लारंग धनुष उपन्युं १०, प्रेमरीत के प्रेमनी खय उपनी तेतो मदीरा उपन्यो ११ विवेक उपन्यो तेतो धनवंतरि वैद्य उपन्यो ११, शुद्धजान उपन्यो तेतो चंद्रमा उपन्यो. १३, मन शुद्ध थयुं तेतो सात मुखो श्रश्च उपन्यो १४, ए चऊद रखतो ज्यां ज्ञाननो उद्य यवाथी पोताना ज्ञानरूप घट समुद्धनुं मंथन थाय हे, त्यां उपजे हे एम जाणवुं ॥ ४० ॥ साधनी श्रवस्थामां ए चौदे रख रसाख हतां ते प्रगट कीधां, ए चौद रखमां विधि निषेधनी चालमां एटखे हेय, उपादेयनी चालमां कंइक त्यांगे हे श्रने कंइक संग्रह करेहे ॥ ४ए ॥

हवे जावित चजद रत्न तेमां स्थाठ रत्न त्यागवा योग्यठे स्थने ठ रत्न यहण करवा योग्य ठे ते कहें हो:—स्थय स्थष्ट रत्न हेय षद् जपादेय कथनः—

॥ दोहराः ॥- रमा, संष विष धनु सुरा, वेद धेनु हय हैय, नित रंजा गज क

हपतरु, सुधा सोम त्रादेय ॥ ५० ॥ इह विधिजो परनाव विष, वमे रमे निजरूप, सो साधक शिवपंथको, चिदृविवेक चिट्टप, ॥ ५१ ॥

श्रर्थः—रमाके विक्ति तेतो सुबुद्धि १, सुवचनशंष १, उदय विष ३, ध्यान धनुष ४, प्रेम रीत मिदरा ५, विवेक वैद्य ६, निर्जरा काम धेनु ७, मनशुद्धते घोनो ७, ए श्रात श्रिय हे तेमाटे हांनवा योग्य हे श्रने श्रनुजन मिए १, प्रतीति रंजा १, उद्य म हाश्री ३, वैराग्य कल्पवृद्ध ४, श्रानंद सुधा ५, श्रुद्ध जान चंद्रमा ६, ए ह रत्त ए हण करवा योग्य हे. ॥५०॥ श्रा रीतिश्री पररूप जे कर्मादिक जान हे, तेज विष श्रयुं. तेनुं जे वमन करे हे, श्रने पोताना स्वरूपमां जे रमे हे तेज पुरुष मोद्ध मार्गनो सा धक जाणीये. जे ज्ञान जाननो जाणनार श्रने ज्ञान स्वरूपी तेज साधक कदीए॥५१॥

इवे मोक्तपदना साधकनी व्यवस्था कहे वे:-श्रथ साधक व्यवस्था कथन:-

॥किवित्त ढंदः॥—ज्ञानदृष्टि जिन्हके घट खंतर निरखे दरव सुगुन परजाइ, जिन्हके स हजरूप दिन दिन प्रति, स्यादवाद साधन श्रिधकाइ, जे केवल प्रतीत मारग सुषचिते च रन राषे ठहरांई, ते प्रविण करिढिन मोह मल श्रिवचल होइ परमपद पाइ॥ ५१॥

श्रर्थः—जेना घट श्रंतरमां ज्ञाननी दृष्टि जागी तथी प्रव्यने जे देखे जाणे, ते प्रव्य ना गुण जाणे; गुणना पर्याय जाणे; श्रने जेने सहज रूपेज एटखे जितव्यतानापरि पाकश्री दिन दिन प्रत्ये स्याद्वादनुं साधन श्रधिक थई रह्युं हे, श्रने जे केविलना कहें ला मारगने सन्मुख थई रहे, एज चित्त राखे श्रने एज मार्गवीषे चरण हरावी राखे, ते प्रवीण पुरुष मोहरूप मलने क्षीण करी परम पद पामी श्रविचल थायहे॥ पर ॥ हवे सम्यग् दृष्टिनी व्यवस्था श्रने मिथ्या दृष्टिनी व्यवस्था कहेहेः—

श्रय सम्यग्दृष्टि मिथ्यादृष्टि व्यस्याः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—चाकसो फिरत जाकों संसार निकट आयो, पायो जिनि सम्यग् मिथ्यात नाश करिके; निरष्डंद मनसा सुन्नूमि साधि लिनी जिनि, कीनी मोष कारन अवस्था ध्यान धरिके; सोई शुद्ध अनुने अन्यासी अविनाश नयो, गयो ताको करम जरम रोग गरिके; मिथ्यामित आपनो सरूप न पिठाने तामे, डोक्षे जग जालमे अनंत काल जरिके. ॥ ५३॥

श्रर्थ:—जेम रात्रिनेविषे चकवो फिरतो फरतो रहे हे, तेम संसारमां फिरतां फि रतां जेनो श्रंत निकट श्राव्यो, जे सम्यक्त्व पाम्यो, मिध्यात्वनो नाश करीने रागद्वेषा दिक रहित एवी मनसारूप जली जूमिका जेणे साधि लीधी, श्रने ध्यान धरिने पो तानी श्रवस्था मोक्तपदना कारणरूपी जेणे कीधी, तेज सम्यग् दृष्टि शुद्ध श्रवुजवनो श्रज्यासी थयो, एम कर्म रोगने गमावीने श्रविनाशी थयो, एटले एनांजन्म मर्ण ट्रह्मां. एसिक्त थयो, एवी सम्यग् दृष्टि पाम्याविना मिथ्यात्वी पोतानुं स्वरूप श्रोखखे नही. तेथी श्रनंतकाल जिस्के के० लगी जगत्नी जालमां मोले ॥ ५३॥

इवे जे श्रात्मानो श्रनुजव पाम्यो तेनो विलास कहे हे:-श्रथ श्रनुजव विलास:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जे जीव दरवरूप तथा परजायरूप, दोन नै प्रवान वस्तु सुद्धता गद्दत है; जे श्रद्धद्धजावनिके त्यागी जए सरवथा विषेसों विमुष व्हे वि रागता चहत है; जो ग्राहजजाव त्यागजाव छुहूं जावनिको, श्रनुजो श्रज्यास विषे एकता कहत है; तेई ज्ञान क्रियाके श्राराधक सहज मोष, मारगके साधक श्रवाधक मद्दत है. ॥ ५४॥

श्रर्थः—जे कोई जीव इत्यार्थिक श्रमे पर्यापार्थिक ए वे नय प्रमाण करीने व स्तुनी ग्रुक्षताने ग्रहेगे, जे जीव रागद्रेष मोह्यी श्रात्मामां जे श्रग्रुक्षणाव ने तेना सर्वया त्यागी यया ने, तेथी पांच इंडियोना विषयथी विमुख थईने वैरागतामां जे वर्त्तवा लागेने, श्रमे जे जावित चौदे रक्षमां न जाव रक्ष ग्रहण करवा योग्य ने, श्रमे श्रान जाव रक्ष त्यागवा योग्य ने, एटले श्रान हेयने न नपारेय ने, ते श्रमुजवना श्रम्यासविषे बंने जावनी एकता करेने, एटले जे इत्यमां दृष्टि रहे श्रमे पर्यायमां दृष्टि न रहे, तेने एकता कहेने. ते जीव झान किया जे मोक्स मार्गनुं कारण कह्यं ने तेना श्राराधक थया. श्रमे सहजरूपमां मोक्स मार्गना साधक थया; फरी तेने कर्म बाधा न होय, तेथी श्रवाधक थया महिमावंत थया, पूजिनक थया। ॥ ५४॥ हवे जे झान श्रमे कियाने जिन्नजावे माने ने तेने एनी एकता कही देखांडे ने— श्रथ झान किया एकता कथनः—

॥ दोहराः ॥–विनसि स्रनादि श्रग्जुद्धता, होइ ग्रुद्धता पोष; ता परनतिकों बुध कहे, ज्ञान क्रियासों मोष ॥ ५५ ॥

श्रर्थः—श्रनादि कालनी जे श्रशुक्रता हे तेनो ज्यां विनाश थायहे त्यां शुक्रतानुं पोषण थायहे, एवी जे श्रात्मानी परिणित थाय तेज ज्ञाननी क्रिया कहेवायहे तेने बुध के पंडित पुरुष एवं कहेहे के ए ज्ञान क्रियाथी मोक्त थाय, श्रांही ज्ञान तथा क्रियानी जे डिविधा लखेहे ते शब्दनयथी जाणवी ॥ ५५॥

हवे ज्ञाननी व्यवहार नयशी थापना देखाने वे:-श्रथ ज्ञान प्रव्य स्थापना:-

॥ दोहराः ॥—जगी ग्रुक्ष समिकत कला, वगी मोषमग जोइ; वहे करम चूरन करै, क्रम क्रम पूरन होइ॥ ५६॥ जाके घट एसी दशा, साधक ताको नाम; जेसे दीपक जो धरे, सो जिज्ञयारो धाम ॥ ५७॥

श्रर्थ:-जेणे शुद्ध समिकतनी कला जाणी श्रने जे कला मोक्तना मुखमां जावा

लागी ते पुरुष कर्मने चृरण करीने क्रमे क्रमे पूरण थाय ॥ ५६ ॥ जेना घटमां एवी दशा थई रही हे, ते पुरुष नुंसाधक नाम कहेवाय जेस दीवानुं अजवालुं थएथी घरमां पण अजवालुं थाय, तेम झानिकया तो मोक्त साधक हे, पण झानिकयाने धरतां पुरुष पण साधक थाय ॥ ५९ ॥

कहे ज्ञाननुं फल कहे हे: - अय ज्ञानफल वर्ननः -

॥ संवैया इकतीसाः ॥—जाके घट खंतर मिथ्यात खंधकार गयो, जयो परगास सु क्ष समकीत जानकी; जाकी मोह निद्ध घटी ममता पत्नक फीटी, जान्यो जिन मरम ख्रवाची जगवानको; जाको झान तेज वग्यो छिंदम छदार जग्यो, खग्यो सुष पोष समरस सुधा पानको, ताही सुविचक्षन को संसार निकट ख्रायो, पायो तिनि मारग सुगम निरवानको ॥ ५०॥ जाके हिरदेमे स्यादवाद साधना करत, ग्रुद्ध ख्रातमाको ख्रमुजी प्रगट जयो है; जाकों संकलप विकलपके विकार मिटि, सदा काल एकी जाव रस परिनयो है; जिनि बंध विधि परिहार मोष ख्रंगीकार, ऐसो सुविचार पछ सोछ छांमि दियो है; जाकी झानमिहमा छदोत दिनदिन प्रति, सोइ जवसागर छलंघि पार गयो है ॥ ५ए॥

श्रर्थः—जेना घटमां श्रनादिकालनो मिध्यात्व श्रंधकार हतो ते गयो, श्रने शुद्ध सम्यक्त्व रूप सूर्यनो प्रकाश थयो, राग द्वेष मोह निद्धा जेनी घटी गई, ममतारूप पलक लागी हती ते फिटि गई, तेथी जिन श्रवाची जगवाननो एटले सिद्ध स्वरूपनो मर्म पाम्यो, जेनुं झानतेज वध्युं एटले प्रकाश थयो, प्रधान ज्यम जाग्यो श्रने जपशम रस रूप श्रमृत पानना सुलनो जेने पोष थयो, ते सुविचक्षण पुरुषने संसार निकट श्राव्यो, ते तो सुगम वातमां मुक्तिनो मारग पाम्यो ॥ ५०॥

जेना हृदयमां स्याद्वाद स्वरूपनी साधनाथी ग्रुद्ध आत्मानो अनुजव प्रगट थयो अने जेने संकल्प विकल्पनो विकार बहु जातनो हतो ते मटीने सदा कालमां एक चेतना रस जे एकी जावपणुं हे ते पणे परिणम्यो, तेणे करीने बंध विधिनो परिहार जे संवरनुं धरवुं ते जेने थयुंहे, अने निस्पृह दशाथी मोक्तनो जे अंगीकार तेना विचा रनो पक्ष धार्यों हे ते पक्त हांडी दीधोहे, जेना ज्ञाननो महिमा दिन दिन प्रते ह चोत थयोहे. तेज जीव जव समुद्ध हतरीने पार पहोंच्यो एम जाणवुं. ॥ ५ए ॥ हवे अनुजवीनी व्यवस्था तेज हपादेय हे ते कहे हे:—अथ अनुजी व्यवस्था कथन:—

॥ सवैया इकतीसाः॥ -श्रस्तिरूप नासित श्रनेक एक थिररूप, श्रथिर इत्यादि नानारूप जीव किह्ये; दीसे एक नैकी प्रतिक्तनी श्रपर प्रजी नैकों नै दिषाइ वाद विवादमे रहिये; थिरता न होइ विकलपकी तरंगनिमे, चंचलता बढे श्रनु जो दशा न बहिये; तातें जीव श्रचल श्रवाधित श्रवंड एक, एसो पद साधिके समाधि सुख गहिये॥ ६०॥

श्रयं:—कोई नयथी श्रस्तिरूप हे, कोई नयथी नास्तिरूप हे. कोई नयथी श्रनेक, कोई नयथी एक, कोई नयथी स्थिररूप, कोई नयथी श्रम्थिररूप, इत्यदि नाना प्रकारना स्वरूपथी जीव कहीए. श्रहीं एक नय जे स्वरूप साधे हे, त्यां ते नयनो प्रति पक्षी के जलटी रीते बीजो नय देखाय हे, तेतो पेला नयथी विपरीतपणुं साधे हे, तेथी जो एकांतनयपणुंज श्रहीए श्रने ते जपर बीजो नय न देखामीये तो वादविवाद श्रई जाय. तेथी नय जेद करणीथी कुविकष्टपना तरंग उहेते तरंगथी चेतन स्थिर न श्राय, श्रने चंचलतापणुं वधे तेथी श्रनुजव दशाश्रहो न जाय. माटे नयपक्ष तजीने श्रनुजव श्रप्यासने कारणे जीव इत्य श्रचल हे, श्रवाधित हे, श्रखंम हे, एक हे, एवा खरूपन्न स्थानक साधिने सुख श्रहण करिये॥ ६०॥

हवे ड्रव्य, क्षेत्र, काल, जावे करीने ख्रात्मानुं छखं ितपणुं कहे हे:-ष्ठथ ड्रव्य, केत्र, काल, जाव कथनः-

॥सवैया इकतीसाः॥—जेसे एक पाकी आंबफल ताके चारि अंस, रसजाली गुग्ली गुलिक जब मानिये; यों तो न बने पे एसे बने जेसें दहे फल, रूप, रस, गंध, फास, अवंड प्रवानिये; तेसे एक जीवकों दरव, पेत्र, काल, जाव, अंस जेद करि जिल्ल जिल्ल न वणानि ये; दर्व रूप, पेतरूप, कालरूप, जावरूप, चारों रूप अलख अखंक सत्ता मानिये ॥६१॥

शर्थः-शिष्य कहें हे ! स्वामी! प्रत्य, क्षेत्र, काल, जावरूप वस्तुना चार श्रंश तमें कहो हो, त्यां एवं दृष्टांत श्रापवं के, एक श्रांवफल हे तेना रस, जाली एटले रेसो, गोटली श्रने हाल ए चार श्रंश हे, तेमज वस्तुना प्रत्य, क्षेत्र, काल, जाव ए श्रंश होय के न होय? हवे ग्रुरु कहें हे, हे! शिष्य! श्राहीं तुं श्रंशके लंग समज्यों तेथी ए दृष्टांत दीधुं. तेतो बने नहीं पण श्रांही श्रखंडपणामां चार श्रंश लाववा तेनुं दृष्टांत ए हे, के तेज श्रांव फल हे, तेमां रूप, रस, गंध ने स्पर्श ए चारे श्रखंडपणे प्रमाण किरए, ए चार रस हे, तेम एक जीवनुं प्रत्य, क्षेत्र, काल, जावरूप श्रंशजेदे करीने रस जाली गोठलीने हाल ए खंड खंड वखाणीये नहीं. श्रांही जे साध्यरूप श्रात्मा सत्ता हे, ते प्रत्यशी श्रखंडितपणे, श्रात्मा प्रत्यरूप हे, श्रुने क्षेत्रश्री श्रखंग्यक जावपणे वे; एम जीवना चार श्रंश श्रखंग्पणे मानीये॥ ६१॥

हवे साध्यपदमां ज्ञान ज्ञेयनुं विशेष पणुं स्राने स्रविशेष पणुं कहेते;— स्रथ ज्ञान ज्ञेय वीशेष कथनः—

॥ संवैया इकतीसाः ॥—कोछ ज्ञानवान कहे ज्ञान तो हमारो रूप, ज्ञेय षटदर्व सो हमारो रूप नांही है; एक नै प्रवान एसे प्रजी श्रव कहों जेसे, सरस्वती श्रक्तर श्रव्य एक ठांही है; तेसे ज्ञाता मेरो नाम ज्ञान चेतना विराम, ज्ञेयरूप सकति श्र नंतमुफ पाही है; ताकारण वचनके जेद जेद कहों कोछ, ज्ञाता ज्ञान ज्ञेयको वि खास सत्ता मांही हे ॥६१॥ चोपाईः ॥ स्वपर प्रकाशक सकति हमारी; ताथे बचन जेद ज्ञम जारी; ज्ञेय दसा दिविधा परगासी; निज रूपा पररूपा जासी, ॥ ६३॥ ॥ दोहराः॥—निजरूपा श्रातम सकति, पररूपा परवस्त, जिनि खिख खीनो पेच यह, तिनि खिख खियो समस्त ॥ ६४॥

श्रयः—कोई ज्ञानवंत प्राणी पोताना श्रमुजन प्रमाण्यी एम कहें हे, के जे ज्ञान हे तेतो श्रमाहं रूप हे. श्रमें जे पर प्रव्य ज्ञेय हे तेतो श्रमाहं रूप नथी, तेथी ज्ञान श्रमें ज्ञेय निशेषपणामां हे. एक कहे हे, एतो एकज नय प्रमाण हे. हवे बीजा नयथी जेम श्राविशेषपणुं थाय हे, तेम कहुं हु. जेम सरस्वती के विद्यारूप श्रय्य है. तेम श्राता ते तो माहाहं नाम थयुं. श्रमें जे ज्ञान हे तेतो चेतनानो विराम के प्रकार हे. श्रमें जे ज्ञान होय पणे परिणम्युं हे, ते तो ज्ञेयरूप शक्ति है. एवी श्रमंत शक्ति महारीज पासे हे. ते कारण्यी वचन ने द करीने ज्ञान श्रमें ज्ञेयनो विद्यास सत्तामांज हे. तेथी श्राविशेष पणुं हे. ॥ ६१ ॥ जेथी हमारी शक्ति एवी हे जे पोतानो प्रकाश करे श्रमें पण प्रकाश करे तेथी स्वपर प्रकाशक हे, तेथी ज्ञान श्रमें ज्ञेय ए वचन ने दे जे ने द हे, तेज जारी ज्ञम छपजा वेहे; पण वस्तु एक हे. ज्ञेय के जे जाणवा योग्य तेतो दशा वे प्रकार करीने कही। एक तो निजरूप की पर रूपा कही है ॥ ६३ ॥ श्राही जे निजरूप केय दशाक हीए तेतो स्वरूप प्रकाशक श्रात्म शक्ति हो, श्रमें जे वीजी पर रूप केय दशाक हीए तेतो स्वरूप प्रकाशक श्रात्म शक्ति हे, श्रमें जे वीजी पर रूप केय दशा ते पर वस्तु है. जेणे एवातनो पेच जाएयो तेणे तो समस्त जाएयं॥ ६४ ॥

हवे एज पेच स्याद्वादमां जोइए ते स्याद्वादरूप वस्तुनुं वर्णन करेहे:-श्रथ स्याद्वाद रूप वस्तु वर्णनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-करम श्रवस्थामे श्रग्जद्यसो विलोकियत, करम कलंकसों रहित ग्रुद्ध श्रंग है; उने नै प्रवान समकाल सुद्वासुद्धरूप, एसो परजाइ धारी जीव नाना रंग है; एकही समेमें त्रिधारूप पे तथापि याकी, श्रखंकित चेतना सकति स

वैंग है; यहे स्याद्वाद याको जेद स्यादादी जान, मूरष न माने जाकी हियो हग जंग है. ॥ ६५ ॥ निहचे दरव डिष्टि दीजे तब एकरूप, गुन परनित जेद जावसों बहुत हे, श्रसंष प्रदेश संयुगत सत्ता परवान, ज्ञानकी प्रजासों लोकालोकमां न जुत है, परजे तरंगिनके श्रंग िवन्तंग्रर हे, चेतना सकित सो श्रखंगीत श्रचुत है, सोहे जीव जगित विनायक जगत सार, जाकी मौज महिमा श्रपार श्रदचुत है. ॥ ६६ ॥ वि जाव सकित परिनितसों विकल दीसे, सुद्ध चेतना विचारते सहज संत हे; करम सं योग सो कहावे गितको निवासी, निहचे सरूप सदा मुकत महंतहे; ज्ञायक सुजाउ धरे लोकालोक परगासी, सत्ता परवान सत्ता परगास वंत हे; सोहे जीव जानत जहां न कौतुकी महान, जाके कीरित कहान श्रनादि श्रनंत हे. ॥ ६९ ॥

अर्थः-कार्मेण शरीर सहित आत्मानी कर्म अवस्थामां दृष्टि दईए, तो आत्माने शुद्ध देखीए ठीए. श्रने कर्म कलंक रहित केवल श्रात्मामांज दृष्टि दृइए तो तो शु द्ध अंग हे. अने ए बें जनय समकालेज प्रमाण करीए तो शुद्धशुद्धरूप कहां जाय. एमां पर्यायनी धाराये करीने जीवना विचित्र प्रकार हे. शुद्ध श्रशुद्ध श्रने शुद्धाशुद्ध ए त्रणरूप आत्माना एकज समय पामीए, यद्यपि एम हे तथापि त्रणेरूपमां आत्मानी श्रखंडित चेतना शक्ति सर्व श्रंगमां जिर रहि हे, तेज स्याद्वाद कहीए, तेनो जेद जे स्याद्यादी होय, तेज जाणे, पण जेनुं हइयुं हगजंग के नम्यग् दृष्टि रहित हे, ते मूर्व एनो जेद न जाणे ॥ ६५ ॥ निश्चयनयथी इव्य उपर दृष्टि स्थापिये तो स्थातम इट्य एकरूप हे छने ए छात्म इट्यना गुण परिणतिरूप नेद नावथी जोइये तो श्रात्मा बहुरूपे हे श्रने श्रात्मानी सत्ता श्रसंख्यात श्राकाश प्रदेश संयुक्त हे, श्रने ते सत्ताने प्रमाण खात्मा कह्यो जायहे. खने ज्ञाननी प्रजा विचारीएतो लोकालोक प्र माण क्षेत्रथी संयुक्त आत्मा कह्यो जायहे, तथा क्षणक्षणमां पर्याय रूप तरंगना अंग विचारीएतो जीव इत्याजंग्ररज कहेवाय हे, श्राने तेने चेतना शक्तिश्री विचारीए तो सदा सर्वदा ख्रखंमज कहेवाय, खने छच्युत कहेवाय हे. तेज जीव जगत्नो विना यक के पाणी अने जगत्मां सारजूत पदार्थ हे. जेना मोज अने महिमा अपार हे श्रने श्रद्भत हे ॥ ६६ ॥ हवे बीजुं पण स्याद्वाद कहेहे:-राग द्वेषादिक विजाव क्तिथी परिणम्यो देखीए तो आत्मा विकल देखाय है; अने तेनी शुद्ध चेतनाज वि चारीएतो सहज संतरूप दीसे हे; कर्म संयोग सहित आत्मा विचारीये तो चारे ग तिनो वासी अने चोराशी लाख योनिनी दासी कहेवाय हे; अने निश्चयनयथी एनं स्वरूप जो विचारीए तो सदा सर्वथा मुक्तिरूप महंत है; अने जो एने ज्ञायक स्व जाव धारी विचारीए तो लोकालोक प्रकाशक अमेय कहेवाय; अने जो ए आत्मानी प्रकाशवंत सत्ता विचारिये तो पोतानी सत्ता प्रमाण श्रात्मा होय; ते जीव वस्तु साध्य हे. जे जहांन के॰ जगतने जाणेहे, जे महोटो कौतुकी पुरुष हे, जेनी कीर्त्ति श्रने कथा श्रनादि श्रनंत काल लगी एवीज चालती श्रावेहे॥ ६९॥

हवे साध्यरूप केवल दशानुं वर्णन करे हे:- अथ केवल दशा वर्ननः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—पंच परकार ज्ञानावरनको नास करि, प्रगटी प्रसिद्ध ज गमांहि जगमगी है; ज्ञायक प्रजामे नाना क्रेयकी श्रवस्था धरि, श्रनेक जई पे ए कतामें रसपगी हें; याही जांति रहेगो श्रनंत, काल परजंत, श्रनंत शकति फोरि श्र नंत सों लगी है; नरदेह देवलमे केवलमे सरूप सुद्ध, ऐसी ज्ञान ज्योतिकी सिषा समाधि जागी है ॥ ६० ॥

श्रर्थः—मित ज्ञानावरणीय प्रमुख पांच प्रकारना ज्ञानावरणीय कर्मनो नाश करीने प्रसिद्ध के॰ प्रत्यक्षपणे प्रगटी एवी जे ज्ञान ज्योतिनी सिषा जगत्मां जगमगी रही हो. ते ज्ञान ज्योतिनि शिषा पोतानी ज्ञायकपणारूप प्रजामां नाना प्रकारना के यनी श्रवस्था धरीने श्रनेक रूप थई हे, तेपण ज्ञायक पणानी जे एकता हे तेना रसश्री मिली रही हो. तेज रीते श्रनंत काल पर्यंत रहेशे. श्रने श्रनंत वीर्य फोर वीने श्रनंत पदश्री लागी रहेशे. ज्यारे मनुष्यना देहरूप देवलमां शुद्ध केवल ज्ञान स्वरूपे एवी ज्ञान ज्योतिनी सिखा जेवी समाधि हो, ते जायत थई एटले सर्व विषमता जाव मिट गयो॥६०॥

हवे अमृतचंद श्राचार्य हे ते चंद्रमा हे. श्रने तेनी कलारूपि त्रण धारा हे, तेनं जुदा जुदा श्रर्थथी वर्णन करे हे:-श्रथ श्रमृत चंद्र कलाके तीन श्रर्थ कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—श्रक्तर श्ररथमे मगन रहे सदा काल, महा सुल देवा जै सी सेवा काम गविकी; श्रमल श्रवाधित श्रलप गुन गावना है, पावना परम शुद्ध नावना है निवकी, मिथ्यात तिमर श्रपहार वर्द्धमान धारा, जैसी उने जामलों कि रन दीपे रविकी; ऐसी है श्रमृत चंदकला त्रिधारूप धरे, श्रमुनो दशा गरंथ टीका बुद्धि कविकी ॥ ६ए ॥ दोहराः ॥—नाम साधि साधक कह्यो, द्वार द्वादशम ठीक, समय सार नाटक सकल, पूरन नयो सटीक ॥ ५० ॥

श्रर्थः श्रमृतचंद्रनी श्रनुजन दशारूप कला है, तेतो श्रक्तर श्रर्थमां के॰ मोक्त प दार्थमां सदाकाल मग्न रहे है, श्रने जेनी कामधेनुनी सेना सुखदायक श्राय तेनी सुखदायक है; श्रने श्रमृतचंद्रनीग्रंथ टीकारूप कला है तेज पाहला नर्णने करी यु कहे, श्रने श्रमृतचंद्र किनी बुद्धि है, तेतो श्रक्तर श्रर्थ के॰ शब्दार्थ तेमां मग्न रहे है. श्रागल बीजुं नर्णन पूर्वेक्षी रीते जेम श्रमृतचंद्रनी श्रनुजन दशानी कला श्रने अने गंथनी टीकानी कला अने किवकला ए त्रणे कला अमल हे, अवाधित हे, अ सख पुरुषनागुणनुं गायन करतीज रहे हे तेथी पावन हे, जन्यत्व पणानी परम शुद्ध जावना हे, अने ए त्रणेकला, मिथ्यात्वरूप अंधकारनी अपहरण करनार हे, अने च हते परिणामे हे; जेम चहता वे पोहोरो लगी सूर्यना किरण चहता चहता दीपे हे, तेम ए कलापण वधती वधती दीपे हे, एवी अमृतचंद्र आचार्यनी कला हे ते त्रण प्रकारनुं रूप धारण करे हे, एक तो अनुजनदशा, बीजी गंथनी टीका करी ते अने त्रीजी कान्य बंध करतां किवकला कीधी ॥ ६ए ॥ साध्य साधक सामे बा रमो द्वार ठीक कल्लो; अमृतचंद्र आचार्यनो करेलो कलशरूप समयसार नाटक गंथ टीका समेत संपूर्ण थयो ॥ ७० ॥

॥ इतिश्री समयसार नाटकनो साध्य साधकनामा बारमोद्वार बालावबोधरूप संपूर्ण ययो ॥ यंथायंथ ए००० श्लोक मान हे. ॥

हवे ग्रंथनी श्रंते श्रमृतचंद्र श्राचार्य किव श्राक्षोचनाकरेंगे:—श्रथ किवशाक्षोचनः—
॥ दोहराः ॥—श्रव किवजन पूरव दशा, कहें श्रापसों श्रापः सहज हरष मनमें धरे, करें न पढ़ातापः ॥ ११ ॥ सवैया इकितसाः ॥—जो में श्राप ढांिक दीनो पररूप गद्दी खीनो, कीनी न वसेरो तहां जहां मेरो थल हैं; जोगनिको जोगी रिह करमकों कर्ता जयो, हिरदे हमारे राग दोष मोह मल हैं; ऐसी विपरीति चाल जई जो श्र तीत काल, सो तो मेरी कियाकी ममता ताकों फल हैं; ज्ञान दृष्टि जासी जयो किया सों उदासी वह, मिथ्या मोह निद्रामें सुपनकों सो ठल हैं। ॥ ११ ॥ दोहरा॥:—श्रमृत चंदमुनिराज कृत, पूरन जयो गरंथ; समयसार नाटक प्रगट, पंचमगितकोपंथ ॥ १३ ॥ श्रथः—हवे कलसनो करनार किवढ़े, ते पोतानेज पोतानी पूर्वदशा कहें हें पोताना

श्रथः-हवे कलसनो करनार किवें, ते पोतानेज पोतानी पूर्वदशा कहें हे पोताना मर्म जाएणाथी सहज हर्ष उपज्यों हे, ते श्रालोचनामां धारे हे, पण पस्तावों करतों नथी. ॥ ११ ॥ श्रतीत काले जे महारो श्रात्मानो स्वजाव हतो ते में हांकि दीधो, श्रने पर जे कर्मादिक पररूप हतो ते में लई लीधो, श्रने ज्यां समाधिविषे मारो निवा सहतो, त्यां में वास न कीधो. पांच इंडियोना विषय जोगनो जोगी श्रईने कर्मनों कर्ता थयो, श्रमारा हैयामां राग देषरूप महा मोह मल हतो, एवी उलटी चाले चाल्यों तेतो श्रतीत कालमां वात वीती; एवं जे कार्य थयं, तेतो मारी कियामां म मता राखी तेनुं फल थयुं; हवे तो ज्ञान दृष्टि जासी तेशी कियाशी उदासी थयो, श्रने जे श्रतीत कालमां श्रवस्था थई तेतो मोह मिथ्यात्व निद्धामां स्वपना जेवो खेल थयो. ॥ ११ ॥ श्रमृतचंद श्राचार्यनो करेलो ग्रंथ संपूर्ण थयो; श्रा समयसार नाटक जे ग्रंथ हे ते प्रगट पणे पंचम गतिके मुक्तिनो पंथ हे ॥ १३ ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक यंथ श्रमृतचंद श्राचार्यकृत संपूर्णम् ॥ हवे बणारसीदास कहे हेः—

॥ दोहराः ॥-जाकी जगति प्रजावसों, कीनो यंथ निवाहिः, जिन प्रतिमा जिन सारषी, नमे बनारसी ताहिः ॥ ७४ ॥

श्रर्थः—जेनी प्रक्तिना प्रजावे करीने गहनार्थ ग्रंथहतो तेनो निर्वाहकीधो, एवी श्राकालमां जिन प्रतिमा जे श्रीजिनेश्वर सर्पी हे तेने बणारसीदास नमेहे. ॥ १४ ॥ हवे जेवा श्री जिनेश्वर देव महात्म्यवंत हे, तेवी जिन प्रतिमा पण महात्म्यवंत हे ते कहेहे:-श्रथ जिन प्रतिमा महात्म्य कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—जाके मुख दरससों जगतके नैननिकों, थिरताकी बानी चढी चंचलता विनसी; मुद्रा देखे केवलीकी मुद्रा यादि खावे जहां, जाके खागे इंद्रकी विजूति दिसे तिनसी; जाको जस जपत प्रकास जगे हिरदेमे, सोई सुद्ध म ती होइ हुती जो मिलनसी; कहत बनारसी सुमिहमा प्रगट जाकी, सोहे जि नकी सबी हे विद्यमान जिनसी॥ ७५॥

श्रयः-श्री जिन प्रतिमाना मुख दर्शन थवाथी जे तेना जक्तजन है तेना नयनने कंइ श्रागल सम्यग् दशा के॰ संवर दशा पामेली होय तेनी सिंथरतानी वाणी वधे श्रमे जे जावपदार्थमां चंचलता होय तेनो नाश थाय. श्रमे पद्मासन स्थित मुद्रा श्राकार ज्यां देखे, त्यां केवलीनी मुद्रा याद श्रावे हे; ते केवलीनी मुद्रा एम संजार वामां श्रावे हे के, जेनी श्रागल इंद्रनी संपदा है ते तृण समान देखायहे, एटले चो सह इंद्र मिहमाकरेहे, श्रमे ते दशा सांजलवामां श्रावे त्यारे त्यां जे केवलीना जश कहेवायहे, तेना ग्रणनो प्रकाश हैयामां जागेहे, श्रमे त्यां जे पहेली मित सम्यग् द शामां मेली जेवी हती ते शुद्ध थई, तेथी वणारसीदास कहेहे के, जिन प्रतिमानो एवो प्रगट महिमा है के ते विद्यमानजिनेश्वर समानज मानवी ॥ ७५॥

हवे जिन प्रतिमानो जेजिक वंत वे तेनुं वर्णन करेवे:—श्रथ प्रतिमा माने ताको वर्णनः—
॥ सवैया इकतीसाः ॥—जाके जर श्रंतर सुदृष्टिकी लहिर लसी, विनसी मिथ्यात
मोह निद्धाकी समारषी; सेली जिन सासनकी फली जाके घट जयो, गरवको त्यागी
षट दरवको पारषी; श्रागमके श्रक्तर परे है जाके श्रवनमे, हिरदे जंकारमे समा
नी बानी श्रारषी; कहत बनारसी श्रलप जवस्थिति जाकी, सोइ जिन प्रतिमा
प्रवाने जिन सारषी॥ ७६॥

श्रर्थः—जेना हैयामां सम्यग् दर्शननी खेहेर बिराजमान घई रही हे. श्रने मि ध्यात्व मोहनीय रूप निज्ञानी मूर्हा ते विनास पामी हे, तथा जेना घटमांथी जिन शा

www.jainelibrary.org

सननी शैली के० तत्त्व समजवामां श्रने तत्त्व समजणमां श्रहं बुद्धिरूप श्रितमाननो त्याग थयो है, श्रने जे ह ए इत्यने परखनारों हे, जेना श्रवणमां श्रागमना श्रहर पड़े हे, एटले जे सिद्धांत सांजले हे, वली "क्षेरियं श्रार्ष" श्रार्षित, क्षि संबंधी वाणी ते जिनवाणी कहिये, ते जेना हृदयरूप जंगरमां समाणी हे, एटले जरी हे, तेमज वणारसी दास कहे हे के जेनी जवस्थिति श्रहण श्रावी रही हे, तेज पुरुष जिन प्रतिमाने जिन सरिषी प्रमाण करेहे॥ १६॥

हवे वणारसी दास पोतानी कथनी कहे हे:-श्रय वणारसी कथन:-

॥ चोपाईः ॥—जिन प्रतिमा जन दोष निकंदे; सीस नमाइ वनारसिवंदे; फिरि म नमांहि विचारे ऐसा; नाटक यंथ परम पद जैसा ॥ ७७ ॥ परम तत्व परचे इस मांही; गुन थानककी रचना नांही; यामे गुनथानक रस ख्रावे; तो गरंथ ख्रिति शोजा पावे ॥ ७० ॥ दोहराः ॥—यह बिचारि संदोपसों, गुनथानक रस योज, वरनन करे बनारसी, कारन सिव पथ खोज ॥ ७७ ॥

श्रर्थः-जिन प्रतिमा हे तेज मनुष्यना राग द्वेष मिथ्यात्वनुं तिकंदन करनार हे, तेश्री वणारसीदास मस्तक नमावीने तेने वंदे हे. पही वनारसीदास मनमां एम वि चारे हे के, श्रा नाटक ग्रंथमां जेवुं परमपद हे तेवुं श्राहीं कहेहे॥ 99॥

श्रा ग्रंथनां उपादेयरूप परम तस्व, श्रात्म तस्वनो परिचय हे. पण ग्रणस्थान कनी रचना श्रा ग्रंथमां नथी हवे जो श्रा ग्रंथमां ग्रणस्थानकनो रस श्रावे तो श्रा ग्रंथ सारी शोजा पामे ॥ ७० ॥ ए प्रमाणे विचारीने संकेष मात्र ग्रण स्थान कना रसनी चीजनुं वणारसीदास वर्णन करे हे. ते वर्णन शिवपंथनुं कारण हे श्राने शिवपंथनी खोजना है ॥ ७७ ॥

हवे गुणस्थानकनुं खरूप हे तेवुं कहेहे:-श्रथ गुनथानक सरूप कथनः-॥ दोहराः ॥-नियत एक विवहारसों, जीव चतुर्दश जेद; रंग जोग बहु विधि जयो, ज्युं पट सहज सुपेदः ॥ ७० ॥

श्रर्थः-निश्चे जीव एकरूप हे. श्रने व्यवहारनयथी जीव चौद जेदे हैं. श्राहीं हे ष्टांत श्रापेहे, जेम वस्त्र सहज रंगमां सफेद हे. पण रंगना जोगथी विचित्र प्रकारना रंगनुं थाय, तेम गुणस्थानकथी जीवनो तेवो जेद हे. ॥ ए० ॥

हवे चौद गुण्स्यानकनां नाम कहे छे:-श्रय चतुर्दश गुनयानक कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः-प्रथम मिथ्यात इजो सासादन तीजो मिश्र, चतुरथो अवत पंचमो व्रतरंच है; ठठो परमत्त सातमो अपरमतनाम, आठमो अपूरव करन सुख संच है; नौमो अनिवर्त्तजाव दशमो सूठमलोज, एकादशमो सु उपसंत मोह वंच है; द्वादशमो बीन मोह तेरहों सजोगी जिन, चौदहों श्रजोगी जाकी थिति श्रंक पंच है. ॥ ७१ ॥ दोहराः ॥-वरने सब ग्रन थानके, नाम चतुर्दश सारः श्रब बरनों मिथ्यातके जेद पंच परकार. ॥ ७१ ॥

श्रर्थः—प्रथम मिथ्यात, बीजा सास्वादन, त्रीजोमिश्र, चोथो श्रविरत, पांचमो रंच मात्र त्रत एटखे देशवती, ठठो प्रमत्त, सातमो श्रप्रमत्त, एवां नाम ठे. श्राठमो श्रप्र्वकरण श्रयवा निवृत्ति बादर, ए बे नाम ठे. ते श्रांही सुखनो संचके मिलाप ठे. नवमो श्रनिवृत्ति बादर, दशमो सूहम लोज, श्रग्यारमो उपशांत मोह, श्रांही मोहनी वंचना ठे एटखे मोहथी ठुटवुं ठे. बारमो ह्वीण मोह कहीए, तेरमो सयोगी जिन, ते केवली थयो, चौदमो श्रजोगी जिन, जेनी स्थिति श्र इ ठ रु ए पांच न्हस्व श्रक्तर जेटली ठे. ॥ ७१ ॥ एम सर्व चजदे ग्रण स्थानना नामनुं सत्यार्थ वर्णन कीधुं ते शोजे ठे. हवे श्रनुक्रमे पहेला मिथ्यात्व ग्रणठाणाना पांच प्रकारशी पांच जेद ठे ते कहुंबुं. ॥ ७१ ॥

हवे पांच मिथ्यात्वनां नाम कहे हे:- श्रथ पंच मिथ्यावत्के नाम कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—प्रथम एकंत नाम मिध्यात श्रात्रग्रहीक, इजो विपरित श्रातिनेवेसिक गोत है; तीजो विने मिध्यात श्रानात्रग्रह नाम जाको, चोथो संसे जहां चित जोरकोसो पोत हे; पंचमो श्राह्मान श्रानाजोगिक गहलरूप, जाके उदे चेतन श्राचेतनसो होत है; ए पांचो मिध्यात ज्ञमावे जीवको जगतमें, इन्हके वि नास समिकतको उदोत है. ॥ ७३ ॥

श्रर्थः—पांच मिथ्यात्वमां पेहे हुं एकांत पक्ता प्राही श्रित्र प्रहिक नामे मिथ्या त्व हे. बीजुं मिथ्यात्व पेहे हा मिथ्यात्वथी विपरित हे. ते तुं श्रित्ति वेसिक एवं गोत के नाम हे, त्रीजुं विनय मिथ्यात्व, सर्वने पूज तुं ते हे, जे तुं नामा श्रनाजिप्रहिक हे, चोथुं संसयिक मिथ्यात्व ज्यां जमराना बचानी माफक, चित्त त्रमण करतुं रहे, पांच गुं श्रज्ञान मिथ्यात्व, ए श्रनाजोगीक पणाधी श्रज्ञाणपणे एकें द्रियादिकमां ग हसक्ष हि हे. निद्धानी हाक तुं स्वरूपी हे. जेना हदयथी चेतन हे ते श्रचेतन थई र ह्युंहे. जेना नाम लीधा ते एज पांचे मिथ्यात्व जीवने जगत्मां जमावेहे. ए पांचे मिथ्यात्वनो विनाश थएथी समिकतनो हि होत थायहे ॥ ६३॥

इवे एकांतवादी श्रजिग्रहीक मिथ्यात्वनुं लक्कण कहेगेः-श्रथ एकांत यथाः-

॥ दोहराः ॥-जो इकंत नय पक्त गहि, उके करावे दक्त, सो इकंत वादी पुरुष मृषावंत परतक्त. ॥ ७४ ॥

www.jainelibrary.org

श्रर्थः-साते नयमां हर कोई एक नयनो पक्त यहीने पोताना जाणपणामां उकी जायहे, श्रने दक्त केण तत्ववेत्ता कहेवाय, ते एकांत मतनो स्थापक मीमांसक नैया यक प्रमुख पुरुष हे ते प्रत्यक्तपणे श्रजियहीक मिथ्यात्वी हे॥ ७४॥

हवे जाणपणामां तो कांईक श्रनेकांतपणुं हे, पण हरायकी विपरीत कहेहे माटे तेनुं लक्षण कहेहेः-श्रथ विपरीत यथाः-

॥ दोहराः ॥-ग्रंथ उकति पथ उछपे, थापे कुमत मुकीय, सुजस हेत ग्रुता ग्रहे, सो विपरीती जीय ॥ ७५ ॥

श्चरं:-ग्रंथमां जे कह्यो एवो मार्ग तेने ज्यापीने निन्हवादिक पोतानी कुमित थापे, पोतानी प्रसिद्धि थवाने माटे गुरुता के॰ श्याचार्यपणुं ग्रहे हे, ते जीव श्चनेकांतताथी विपरीत थयो तेने श्वजिनिवेशिक मिथ्यामती कहीए ॥ ७५ ॥

हवे जेनुं विनय मिथ्यात्व हे एवा श्रनित्रमहिक मिथ्यात्वीनुं लक्कण कहेहे:-श्रथ विनय मिथ्यात्व यथा:-

॥ दोहराः ॥—देव कुदेव सुग्रुरु कुग्रुरु, गिने समान जु कोइ; नमें जगतिसों सब निकों, विनय मिथ्याती सोइ॥ ए६॥

श्रर्थः-सुदेवने श्रने कुदेवने सुगुरुने श्रने कुगुरुने जे कोइ समानज गणे हे, श्रने तामली तापसनीपरे परिणाम प्रवर्ज्या लेइने जित्तश्री सर्वने नमेहे, पण गुणदो षनी खबर न होय ते विनय मिथ्यात्व किहेये॥ ७६॥

हवे जेना जाणपणामां संदेह हो, ते संशय मिथ्यात्वी कहिये तेनुं लक्षण कहेहे:श्रथ संशय यथा:-

॥ दोहराः ॥-जो नाना विकलप गहे, रहे हिए हेरान; थिर व्हे तत्व न सद्दहे, सो जिय संसयवान ॥ ७७ ॥

श्रर्थः-जे श्रपार नय जाल देखिने जीवमां संशय राखे, नानाप्रकारना चित्त वि कट्प यहे श्रने हेरान यई रहेठे. स्थिरता राखीने तत्त्वने सर्दे नही तेज जीव संशय वंत मिथ्यात्वी कहीये॥ ७५॥

हवे पांचमा श्रज्ञान मिथ्यात्वीनुं सक्तण कहेने:-श्रथ श्रज्ञान यथा:-

॥ दोहराः ॥-जाको तन छष दहलसों, सुरति होति नहिं रंचः गहल रूप वरते सदा, सो श्रज्ञान तिरयंच ॥ उठ ॥ पंच जेद मिण्यातके, कहे जिनागम जोइः सादि श्रनादि सरूप श्रव, कहों श्रवस्था दोइ ॥ उए ॥

श्रर्थः-शरीरमां जुःखना दहेखथी जेने हेय जपादेयनी,रंचमात्र सुरता रेहेती नथी, मूर्जित रूपे जे सदा वर्चे हे, ते एकेंडियादिक तिर्यंच श्रज्ञान मिथ्यात्वी कहिये॥ उठ॥ श्री जिनेश्वरना श्रागम सिद्धांत जोईने मिथ्यात्वना पांच जेद कहे हे:-जेनी श्रादि पा — मीए तेतो श्रादि मिथ्यात्व कहीए, श्रमे जेनी श्रादि न पामीए तेतो श्रमादि मि ध्यात्व कहिये, एवी एवी मिथ्यात्वनी श्रवस्थानुं स्वरूप हवे कहे हे ॥ एए ॥

प्रथम सादि मिथ्यात्वनुं लक्षण कहेनेः-श्रथ सादि यथाः॥ दोहराः ॥-जो मिथ्या दल जपसमे, ग्रंथ जेद बुद्धि होइ,
फिरि श्रावे मिथ्यातमें, सादि मिथ्याती सोइ॥ ए०॥

श्रर्थः-जे मिथ्यात्व मोहनीयना दलने जपशमावीने मिथ्यात्व ग्रंथी जेदीने ज्ञाता समिकती थईने पाठा मिथ्यात्वमां श्रावे ते सादि मिथ्यात्व कहीए. एना मिथ्यात्वमां हवे श्रादि थई तेथी सादि मिथ्यात्वी कहिये॥ ए०॥

हवे बीजुं श्रनादि मिथ्यात्वनुं खक्तण कहेनेः-श्रय श्रनादि मिथ्यात्व कयनः॥ दोहराः ॥-जिनि गरंथि जेदी नही, ममता मगन सदीवः सो श्रनादि मिथ्या
मती, विकल बहिर्मुख जीव. ॥ ए१ ॥

श्रर्थः—जे जीवे मिथ्यात्व ग्रंथी जेदी नथी श्रने सदासर्वदा काख खगण, ममता मंज मग्न रहे, ते जीव श्रनादि मिथ्यात्वी कहीए; श्रने जे बहिर्मुख रहे, जेने पर मात्मा इव्यनी दृष्टि नथी, ते बहिर्मुख जीव कहीए. ॥ ५१ ॥

॥ इति श्री वणारसीदास कृत समयसार नाटकनेविषे प्रथम गुणस्थानकनो श्र धिकार संपूर्ण थयो.॥

॥ दोहराः ॥–कद्यो प्रथम ग्रुण थान यह, मिथ्या मत श्रजिधान; श्रखप रूप श्रब वरनवुं, सासादन ग्रन थान ॥ ए१ ॥

श्रर्थः-जेनुं मिध्यात्व एवुं नाम हे, ते पेहेब्धं ग्रणस्थानक सूचना मात्र कह्युं, हवे संदेेप मात्र साखादन ग्रणस्थाननुं खरूप कहुंबुं.॥ ए१॥

॥ सवैया इकतीसा; ॥—जैसे कों ज हुधित पुरुष खाइ खीर खांड, वोन करे पीछें के खगार स्वाद पावे हे; तैसे चिंढ चोथे पांचमें के ठठें गुनथान, काहु जपसमीकों कषाइ जदे श्रावे हे; ताहि समें तहां गिरे परधान दशा त्यागी, मिथ्यात श्रव स्थाकों श्रधोमुख ठहें धावे हे; बीच एक समे वा ठ श्राविधी प्रमान रहे, सोइ सा सादन गुनथानक कहावे हे. ॥ ए३ ॥

श्रर्थः—जेम कोइ क्युधावंत पुरुष हे ते खीरखांड खाय, पही तेने वमन करेहे. ते वमननी पही पण खीरखांमना जोजननो खगारेक स्वाद पामेहे. तेम कोइ जीव ह पश्म सम्यक्त पामीने चोथे श्रविरत गुणस्थाने रह्यो हे. श्रथवा छपशम सम्यक्त पामताज सरखो समान पांचमा गुणहाणें श्रथवा हहे गुणहाणे चढ्यो त्यां समिकतनी

उज्वलता न थई, श्रने श्रनंतानुबंधी उपशमि कषाय हतो ते उदय थयो ते सम यमां ते त्रणे गुणठाणाथकी ते उपशम सम्यक्त्वनी प्रधान दशा जे श्रेष्ट दशा तेने त्यागीने फरी मिथ्यात्व दशाने उंधे मुखे उल्लटो रहे छे, एटले मिथ्यात्व पामतामां श्रने सम्यक्त्व बूटतामां वचे एक समयकाल प्रमाणे श्रथवा उत्कृष्ट ठ श्राविका प्र माणे जे सम्यक्त्व श्रंश रहे छे तेने ज सास्वादन गुण स्थानक कहिए. ॥ ए३॥

॥ इति द्वितीय गुन थानक समाप्तः ॥

॥ दोहराः ॥-सासादन ग्रन थान यह, जयो समापत बीय; मिश्र नाम ग्रन थान श्रव, बरनन करों त्रितीय. ॥ ए४ ॥

श्रर्थः-श्रा बीजुं सास्वादन नामे ग्रणस्थान संपूर्ण थयुं. हवे त्रीजुं मिश्र गुनथा ननुं वर्णन करुंढुं. ॥ ए४ ॥

॥ सवैया इकतीसाः ॥—उपसमी समिकती केतो सादि मिध्यामती, छुहू निको मिश्रीत मिध्यात आइ गहे हे; अनंतानुवंधी चोकरीको उदे नांही जामे, मिध्यात समे प्रकृति मिध्यात न रहेहे; जहां सद्दन सत्यासत्यरूप समकाल, ज्ञान जाव मिध्या जाव मिश्र धारा वहे हें; जाकी थिति अंतर मुहूरत वा एक समे, एसो मिश्र गुन थान आचारज कहे हे. ॥ एए ॥

श्रयं:- उपराम सम्यक्ति मिथ्यात्व, मिश्र,श्रने सम्यक्ति रूप त्रण पुंज करीने ज्यारे मिश्र पुंजमां जीव वर्ते, श्रयवा सम्यक्त्वश्री पडीने फरी मिथ्यात्वमां श्रावी सादि मिथ्यात्वी शईने मिश्र पुंज उदय श्रयाश्री मिश्रमां वर्ते, ए बेउने मिश्र गुण स्थानक क हिये, केमके मिथ्यात्व सम्यक्त्व थको वर्ते हे. जेश्री संसार श्रनंतो वधे ते श्रनंतानुबंधीनी चोकडी कहिए, तेनो जेमां उदय नश्री श्रने मिथ्यापणुं रामे तथा उपरामेहे, त्यां मिथ्यात्वनी प्रकृतिनो उदय रहेतो नश्री. ज्यां समकासे सत्यासत्यरूप श्रद्धा हे, एटसे श्रद्धामां साचुं खोटुं बेउ हे, तिहां ज्ञान जाव हे, ते मिश्र धारामां वहेहे. श्रमे मिथ्यात्व जाव पण सम्यक्त्व धाराश्री मिश्रित धारा श्रकी वहेहे. जेनी उत्कृष्टि स्थित श्रंतर्मुहूर्त्त कालनी हे, श्रथवा जघन्य एक समयनी हे. एनुं नाम त्रीजुं मिश्र नामे गुणहाणुं श्राचार्यजी कहेहे. ॥ एए ॥ ॥ इति तृतीय ग्रनस्थान समाप्तः ॥

॥ दोहराः ॥-मिश्र दशा पूरन जर्इ, कही यथा मित जािषः; श्रव चतुर्थ गुनथान विधि, कहों जिनागम सािष, ॥ ए६ ॥

श्रर्थः-मिश्र गुणठाणानी जेवी दशा हे, ते जेवी पोतानी बुद्धि हे तेवी रीते जा षारूप कही ते संपूर्ण थई, हवे श्री जिनागमनी शाष खईने चोथा सम्यक्त्व गुण ठाणानो विधि कहुंहुं॥ ए६॥ इवे चोथा सम्यक्तव गुणठाणानुं वर्णन करेतेः-श्रथ सम्यक्तव वर्णनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—केई जीव समिकित पाइ अर्ध पुजल, परावर्त्त काल तांई चोखे होई चित्तके; कोई एक अंतर मुहूरतमें अंथि जेदि, मारग उलंघि सुख वेदे मोष वितके; ताते अंतरमुहूरतसों अर्क पुजलसों, जेते समे होही तेते जेद समिकतके; जाही समे जाको जब समिकत होई सोई, तबहीसों गुन गहे दोष दहे इतके ॥ए॥ ॥ दोहराः ॥—अय अपूर्व अनवर्त्ति त्रिक, करन करे जो कोइ; मिथ्या अंथि वि

दार ग्रन, प्रगटे समकित सोइ. ॥ एउ ॥

श्रर्थः—सम्यक्त पामीने चित्तनो चोलो थईने श्रर्क पुद्गल परावर्त्त काल लगण संसारमां रहे हे,श्रने कोईक जीव तो एकज श्रंतमुहूर्त्त कालमां मिथ्यात्व ग्रंथी जेदी समक्त्व पामीने चारे गितनो मार्ग जिल्लंघन करी मोक्तरूप वित्तना सुल वेदे, पण सं सारमां रहे नही, तेथी सम्यक्त्व पामीने जघन्य संसार स्थित एक श्रंतर् मुहूर्त्तनी हे श्रने जिल्ला संसार स्थिति श्रर्क पुद्गल परावर्त्तनी थायहे, हवे एटली संसार स्थिति वचमां एक एक समयनी वृद्धि करता जेटला ते स्थितना जेद थाय तेटला सम्यक्त्वना जेद पामीए. ए रीते सम्यक्त्वना घणा जेद पामिये; जे समये जेने सम्यक्त्व जदय होय ते समये ते जीव त्यारथी पोताना गुण श्रदेहे; श्रने इतके के ते संसार श्रवस्थाना दोषनुं दहन करेहे.॥ए९॥ श्रथ के प्रथाप्रवृत्ति करण, श्रपूर्व करण, श्रमिवृत्ति करण ते त्रणे करण जे कोई जव्यजीव करेहे त्यां कोईक वखते एक, श्रा युक्मिविना साते कर्मनी स्थिति श्रंत कोडा कोनी सागरोपम प्रमाण रहे, त्यारे य थाप्रवृत्ति करण थाय. पही मिथ्यात्व ग्रंथी जेदवाथी श्रपूर्वकरण थाय, श्रने सम्यक्त्व प्रगटवाथी श्रनिवृत्तिकरण थाय, जे कोई एत्रणे करणे करी मिथ्यात्व ग्रंथी विदारीने सम्यक्त्व स्वरूप पामे तेज सम्यक्त्व कहिये ॥ ए० ॥

हवे अष्ट प्रकारथी सम्यक्त्व विवरण करे ठे:-श्रथ अष्टरूप कथन:-

॥ दोइराः ॥–समकित जतपति चिन्ह ग्रन, त्रूषण दोष विनास; श्रतीचार जुत श्रष्ट विधि, बरनों विवरन तास ॥ एए ॥

श्रर्थः-सम्यक्त्वनुं सरूप, रसम्यक्त्वनी जत्पत्ति, शसम्यक्त्वनुं चिन्ह, ३सम्यक्त्वनो गुण, ४ सम्यक्त्वनुं जूषण, ए सम्यक्त्वना दोष, ६ सम्यक्त्वनो विनाश, ९ सम्यक्त्वना श्रतिचार, ए ए सर्वे श्राठ प्रकार थया, तेनो विवरो कहंतुं ॥ एए॥

हवे प्रथम सम्यक्तवनुं सरूप कहेते:-श्रथ सम्यक्तव यथा:-

॥ चोपाईः ॥-सत्य प्रतीति अवस्था जाकी; दिन दिन रीति गहे समताकी; विन विन करे सत्यको साको; समिकत नाज कहावे ताको ॥ ६०० ॥

अर्थः-सत्यमां जेनी प्रतीत हे, जे साचानेज सर्दहेहे, एवी जेनी अवस्थाहे अने दिवसे दिवसे वधती वधती क्रमा निर्लोजता प्रमुख समतानी रीत जे यहण करेहे. एवं सत्य कार्य पहेलां कदी न कर्युं, तेथी हवे क्षण क्षणमां सत्यनी साको के महा कार्य जे करेहे, ते जावनुं नाम सम्यक्त्व कहीए॥६००॥

हवे सम्यक्तवनी उत्पत्ति कहे हे:- अथ उत्पत्ति यथा:-

॥ दोहराः ॥-केतो सहज सुजानको, जपदेशे गुरु कोइ; चिहुँ गतिसेती जीवकों, सम्यक दरशन होइ, ॥ १ ॥

श्रर्थः—नदीने किनारे जन्ना पाणीना कब्बोब श्रावता जाताना न्यायथी एटखे सिरिड्रपब घोबना न्यायथी कोइने सहज स्वनावमांज समिकत जपजे, कोईने ग्रुरुना जपदेश थकी सम्यक्त्व जपजे. जे जीव चारे गितमां शयन निद्धा करी रह्यो हतो तेने जे सम्यक्त्व जपजे हे, ते एवा एवा प्रकारथी जपजेहे ॥ १॥

हवे जेथी सम्यक्त उपज्युं जाणीए ते सम्यक्तवनां लक्तण कहे हे:-श्रय लहन यथा:-

॥ दोहराः ॥-श्रापा पर परचेविषे, उपजे नहिं संदेहः सहज प्रपंच रहित दशा, समिकत बक्तण एह ॥ १॥

अर्थः-आतमा अने आतमाथी बीजां जे कर्मादिकना पुजल हे, एटले बीजा पांचे इच्य तेना परिचय प्रतीतिमां, संदेह उपजे नही अने सहज खजावमां आत्मदशा ते मायाप्रपंच रहितथाय ए सम्यक्त्वनां खक्तण कहिये ॥ १ ॥

हवे सम्यक्तवना गुण कहे हे:-श्रथ गुन यथा:-

॥ दोहराः ॥–करुना वब्रख सुजनता, श्रातमनिंदा पाठ; समता जगित विरागता, धरम राग ग्रन श्राठ ॥ ३ ॥

श्रर्थः-दया तथा सर्वनुं हित वांडक पणु, सर्व साथे मैत्री जाव राखवो, श्रात्मिनं दानुं पठन करवुं, इष्ट श्रनिष्ट जपर समजावे रहेवुं, देव गुरुनी जिक्त, वैरागरसमांज जिज्या थका रहेवुं, धर्मश्री राग राखवो. ए सम्यक्त्वना श्राठ गुण हे॥ ३॥

हवे सम्यक्तवनां पांच त्रूषण कहै हे:- स्रथ पंच त्रूषण यथा:-

॥ दोहराः ॥–चित प्रजावना जावजुत, हेय उपादेयवानिः धीरज हरष प्रवीनता जूषन पंच बखानि ॥ ४॥

श्रर्थः-चित के॰ ज्ञान एटखे जिन शासननो जेवी रीते प्रजाव वधे तेवा जावमां रहेवुं, हेय जपादेयना ज्ञानवंत थई धैर्यमां रहेवुं, सम्यक्त्वपामीने हर्ष राखवो,तत्त्वि चारमां प्रवीणता राखवी, ए पांच सम्यक्त्वनां जूषण वखाणिए ॥ ४॥

हवे सम्यक्तवना पचीस दोष कहे छे:-श्रथ पंचवीस दोष यथा:-॥ दोहराः ॥-श्रष्ट महामद श्रष्ट मल, षट् श्रायतन विशेष; तीन मूहता संजुगत, दोष पचीसी एषः ॥ ५ ॥

अर्थ:-अष्ट महामद हे, अने आह मल हे, ह आयतन विशेष हे, अने त्रण मू हता हे; ए सर्व एकहा करीए तो पचीस दोष याय. ॥ ५ ॥

हवे आठ जातना मद कहें हे:- अथ अष्ट मद यथा:-

॥ दोहराः ॥-जाति लाज कुल रूप तप, बल विद्या श्रिधकारः इन्हको गरव जु कीजिये, यह मद श्रष्ट प्रकारः ॥ ६ ॥

श्रर्थः—जातिमद, लाजमद, कुलमद, रूपमद, तपमद, बलमद, विद्यामद, तथा श्रिष्ठ कार के० ऐश्वर्यमद ए श्राठ वस्तुनो जे गर्व करवो तेज श्राठ प्रकारना मद कह्यांहे. ॥६ ॥

हवे श्राठ प्रकारना मल कहे हे:-श्रथ श्रष्ट मल कथन:--

॥ चोपाईः ॥-श्रासंका श्रस्थिरता वांठाः ममता दृष्टि दशा पुरगंठाः वत्सल रहित दोष परनाषेः चित्त प्रनावना मांहि न राषे.॥ ७॥

श्रर्थः-धर्म जपर श्रने जिनशासन वचन जपर शंका राखे, धर्ममां स्थिरता नहीं. खर्गादिकनी वांठाधरे, कुटुंबादिकविषे ममत्व जाव राखे, ए धर्म मलीन हे एवी छु गंठा करे, स्वामी वत्सल न करे, पारका दोष प्रकाशे, ज्ञान प्रमुख विविध प्रकारनी प्रजावनामां चित्त न राखे. ए श्राठ मल जाणवा ॥ ७॥

हवे ठ श्रायतन दोष कहे हे ते ठ स्थान मिथ्यात्वनां कहे हे:-श्रय षडायतनयथा:॥ दोहरा:॥ -कुगुरु कुदेव कुधर्म धर, कुगुरु कुदेव कुधर्म; इनकी करे सराहना,
यह षडायतन कर्म.॥ ७॥

श्रर्थः-कुगुने माननार, कुदेवने सेवनार,कुधर्मने माननार, कुगुरु प्रशंसा, कुदेव प्र शंसा, कुधर्म प्रशंसा, ए ठएनी प्रशंसा करे ते श्रायतन कर्म दोष हे. ॥ ए ॥

हवे त्रण मूढता दोष कहे हे:- अथ मूढत्रय यथा कथन:-

॥ दोहराः ॥—देव मूढ गुरु मूढता, धर्म मूढता पोषः श्राठ श्राठ षट तीनि मिलि, ए पचीस सब दोषः ॥ ए॥

श्रर्थः-सुदेव समके नही ए पेली देव मृहता,सुगुरुने समजे नही ए बीजी गुरु मृहता, सुधर्मने समके नही ए त्रीजी धर्म मृहता. ए श्रविद्यानो पोषक हे. एरीते श्राह मद, श्राह मल, ह श्रायतन, त्रण मृहता, सर्व मली पचीस दोष थया. ॥ ए ॥

हवे पांच प्रकार सम्यक्त्वनो नाश करे ते कहे छे:-श्रथ नाश पंचक यथा:॥ दोहराः ॥-ज्ञान गर्व मितमंदता, नितुर वचन छदगारः रुद्धताव श्राखस दसा,
नास पंच परकार. ॥ १०॥

श्रर्थः-ज्ञानना गर्वथी, बुद्धिनी मंदताथी, कठण वचनना उदगार के० कहेवावी, रौद्ध जाव धरवाथी, श्रावसु पणाथी,एवी रीते पांच प्रकारे सम्यक्तवनो नाश थायहेः इवे दिगंबर संप्रदायथी सम्यक्त्वना पांच श्रतिचार कहेहेः-श्रथ श्रतिचार पंचकयथाः-

॥ दोहराः ॥-लोग हास जय जोग रुचि, श्रयसोच थिति चेवः मिथ्या श्रागमकी जगित, मूषा दरसनी सेवा ॥११॥ चोपाईः ॥-श्रतीचार ए पंच प्रकाराः समल करिह समिकतकी धाराः प्रूषन जूषन गित श्रवसरनीः दसा श्राठ समिकतकी बरनी॥११॥

श्रर्थः—सम्यक्त्वनी क्रियांश्री मने लोक इसरो एवो मनमां जय राखे,पांच इंडियना विषयजोगनी रुचि राखे,श्रागल महारुं शुं थारो एवी पोतानी स्थितिनुं चिंतन करतो रहे, मिथ्यात्व दर्शनना जे श्रागम सिद्धांत हे तेनी जिक्त करे,पांचमुं मिथ्या दर्शननी सेवा करे ॥११॥ ए पांच प्रकारना श्रतिचार ते सम्यक्त्वनी छज्वल धाराने मल स हित करेहे, एवी प्रषण गतिनी पाहल लागी श्रने जूषण गतिने पाहल लागी रहे ए समिकतनी श्राह दशाने वरणी॥ ११॥

हवे जे सात प्रकृतिना क्तय श्रयवा जपशमधी सम्यक्तव जपजे ते कहे हे:-श्रय सप्त प्रकृति यथा:-

॥ दोहराः ॥—प्रकृति सात श्रव मोहकी, कहों जिनागम जोइ; जिन्हको उदै नि वारिके, सम्यक दरशन होइ ॥ १३ ॥ सवैया इकतीसाः ॥—चारित मोहकी चारि मि श्यातकी तीनि तामें,प्रथम प्रकृतिश्चनंतानुवंधी कोहनी;बीजी महामान रस जीजी माया जई तीजी, चोथी महालोज दसा परिगह पोहनी; पांचइ मिध्यात मति वठी मिश्र परनित, सातई समे प्रकृति समकित मोहनी; एई षट बिंगवनितासी एक कुतियासी, सातो मोहप्रकृति कहावे सत्ता रोहनी ॥ १४ ॥

श्रर्थः—हवे मोहनीयनी सात प्रकृति श्री जिनेश्वरनुं श्रागम जोई कहुं तुं. जे सात प्रकृतिनो उदय निवारवाथी सम्यक्त दर्शन प्रगट थाय है।। १३॥ मोहनीय कर्मना वे तेद हे:—एकतो चारित्र मोहनीय, बीजी मिथ्याद्शन मोहनीय, तेमां चारित्र मोहनीयनी चार प्रकृति, श्रने मिथ्या दर्शन मोहनीयनी त्रण प्रकृति मली सात प्रकृति हे; तेमां प्रथम प्रकृति श्रनंतानुं बंधी कोहनी के कोधनी, बीजी प्रकृति महा श्रजिमानना रसमां जीनो थको रहे ते श्रनंतानुं बंधी मान, श्रने त्रीजी प्रकृति महामायामय ते श्रनंतानुं बंधी माया, चोशी प्रकृति महालोज दशामां परिप्रहृनी पोषण करनार ए श्र

नंतानुबंधी लोज, पांचमी प्रकृति मिथ्यात्व मोह्नीय, ठठी प्रकृति मिश्र परिणाम एटले मिश्र मोह्नीय, सातमी प्रकृति जे ठे ते पहेली ठए प्रकृतिनुं सम थयुं एटले दबाई गई ते सातमी सम्यक्त मोह्नीय जाण्वी, एमां धुरली ठ प्रकृतितो विंग वनितासी के० वाघणी जेवी ठे एनी गैल लागी तो कांइ तूटती नथी, श्रमे एक सातमी प्रकृति कुतियासी के०कुजार्या जेवी ठे. तेनोपण जरोसो नथी. ए साते मोह् नीयनी प्रकृति ते जीवनासद्जावनी रोकनार ठे. ॥ १४॥

हवे साते प्रकृतिथी सम्यक्त्वना जेद उपजे ते कहे हे:—श्रथ सम्यक्त्व जेद कथनः— ॥ उप्पय हंदः ॥—सात प्रकृति उपसमिह, जासु सो उपसम मंिमतः सात प्रकृति ह्य करन, हार हायकी श्रखंडितः सातमांहि कहु विपिहि, कहुक उपसम करि रकेः सो हय उपसमवंत, मिश्र समिकत रस चखेः षट प्रकृति उपशमद्वा विपदः, श्रथ वा हय उपशम करेः सातई प्रकृति जाके उदय, सो वेदक समिकत धरे ॥ १५ ॥

श्रर्थः—जेने ए सात प्रकृति जपसमी जाय तेतो जपसमी, पंक्ति के॰ झाता होय तेनुं नाम जपशम सम्यक्त कहीए;श्रने जे ए साते प्रकृतिनो क्तय करनार होय तेने कायकी कहीए, ते श्रखंकित क्षायक सम्यक्त होय, वल्ली ए साते प्रकृतिमां कंई खपावे, कंई जपशमावी राखे,तेतो जपशम खक्षण सिहत,तेमां मिश्ररूप सम्यक्त रसने चाखे, ए साते प्रकृतिमां उ प्रकृति जपशमे श्रने सातमी सम्यक्त मोहनीय तो प्रकृति कदय श्रावी वेदे हें श्रथवा उ प्रकृति क्षय श्रईहे श्रने सातमी वेदे हें श्रथवा ह प्रकृतिमां कोई प्रकृतिनो क्षय श्रयो हे, श्रने कोइनो जपशम श्रयोहे, श्रने सातमी प्रकृति वेदे हे ते वेदक सम्यक्त धारी कहीए॥ १५॥

हवे सर्वे सम्यक्तना नव नेद कहे है:-श्रथ नवविधि सम्यक्त वर्ननं:-

॥ दोहराः ॥-वय जपसम बरते त्रिविध, वेदक चार प्रकारः व्ययक जपशम जुग खयुत, नौधा समकित धार ॥ १६॥

श्रर्थः—क्तयोपरामसमिकत त्रण प्रकारनुं वर्ते हे. वेदक सम्यक्त्वना चार प्रकारे हे, क्रायक सम्यक्त्वनो एक प्रकार हे श्रने उपराम सम्यक्त्वनो एक प्रकार, ए क्रायकने उपराम बेहुना मलवाथी सर्व मली नव प्रकारनो सम्यक्त्वधारी थाय ॥१६॥

हवे क्योपशम सम्यक्तना त्रण प्रकार कहेते:-श्रथ क्योपशम त्रिय यथा:-

॥ दोहराः ॥--चारि षिपहि त्रय उपसमहि, पण षय उपसम दोइ; षे षट उपसम एक यों, पय उपसम त्रिक होइ॥ १७॥

अर्थः-साते प्रकृतिमां अनंतानुवंधीनी चोकनी खपी गइते, अने त्रण दर्शन मोहनी जपसमी ते, तेने क्योपशम सम्यक्त कहिए. अथवा चार अनंतानुवंधी अने मि

च्थात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति क्तय गईहे, श्रने बे उपशमी हे, तेने पण क्रयोपशम सम्यक्त कहीए; श्रथवा मिश्र मोहनीय लगण ह प्रकृति क्तय गई, श्रने सातमी उपशमावी हे, तोपण क्रयोपशम सम्यक्त कहीए; ए त्रण प्रकारे क्रयोपशम सम्यक्त थाय. हवे क्रयोपशम सहित सम्यत्क्व मोहनीय वेदवाशी जे क्रयोपशम वेदक नीपजे हे, तेना वे प्रकार हे:—श्रथ क्रयोपशम वेदक प्रथा कथनः—

॥ दोहराः ॥—जहां चारि प्रकारती षिपहिं, दे उपसम इक वेदः षय उपसम वेद क दशा, तासु प्रथम यह जेदः ॥ १० ॥ पंच षिपे इक उपसमे, इक वेदे जिहि ठौर, सो षयउपसम वेदकी, दशा छतिय यह उर ॥ १ए ॥

श्रयं:—उयां श्रनंतानुबंधी चार प्रकृति क्य याय हे; श्रने मिथ्यात्व श्रने मिश्र ए बेड प्रकृति उपशमेहे, श्रने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदेहे, श्रावी दशामां जे क्यों पश्म सहित वेदक समिकत थयुंहे, तेनो श्रा प्रथम जेद हे. ॥ १७ ॥ वही ज्यां चार श्रनंतानुबंधी श्रने मिथ्यात्व मोहनीय ए पांच प्रकृति खपीहे, श्रने एक मिश्र मोहनीय उपशमी हे, श्रने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे हे, त्यारे क्योपशम सहित वेदक समिकतनी श्रा बीजी दशा थई. ॥ १ए ॥

हवे जे क्वायिक सहित वेदकवे, श्रने उपरामसिहत वेदक वे, तेनो प्रकार कहे वे:-श्रय क्वायक वेदक उपराम वेदक यथा कथन:-

॥ दोहरा ॥—षय षट वेदे एक जो, ष्यायक वेदक सोइ, षट उपसम इक प्रक्र ति विद, उपसम वेदक होइ. ॥ २०॥ खायक उपसमकी दशा, पूरव षट पदमांहि, कही प्रगट श्रव पुनरुकति, कारन बरनी नांहि. ॥ ११॥

श्रर्थः—ज्यां चारे श्रनंतानुबंधि श्रने मिथ्यात मोहनीय श्रने मिश्रमोहनीय ए व प्रकृति खपी वे, श्रने एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे वे, त्यारे क्वायिक वेदक सम्यक्त्व किहे ये; श्रमे ए जे पूर्वे व प्रकृति कही ते जेणे जपरामावी वे, श्रमे एक सम्यक्त्व मोहनीय वेदे वे, त्यारे जपराम वेदक सम्यक्त्व किहे ये. ॥ १० ॥ क्योपराम नामे जे सम्यक्त्व कहीए, तेनी दशा तो पावला षट्पद के० वपय वंदमा कही वे, तेमां ए सातमां कं ईक जपराम करी राखे, एवं प्रगट कहे बुं वे. तेश्री श्रांहि फरी कहे वायाश्री पुनकृत्ति दोष लागे ते कारणश्री फरी वरणवी नश्री. ॥ ११ ॥

हवे सम्यत्वना मूल जेद चार श्वने उत्तर जेद नव हे ते कहेहे:-श्रथ जेद विवरन:॥ दोहराः ॥-षय उपसम वेदक षिपक, उपसम समकित च्यारि; तीन च्यारि
इक इक मिलत, सब नव जेद विसारि.॥ ११॥

श्रर्थः - इयोपराम सम्यक्तव, वेदक सम्यक्तव, इरायक सम्यक्तव, उपराम सम्यक्तव,

एवा मूल चार जेद समिकतना थया वली क्योपशमना त्रण जेद, वेदकना चार जेद श्रने कायकनो एक जेद, उपशमनो एक जेद, ए सर्व मली समिकतना नव उत्तर जेद थाय ॥ ११ ॥

हवे निश्चयादिक सम्यक्त्वनी व्यवस्था कहे हे:-श्रय निश्चे व्यवहार सामान्यविशेष:-

॥ सोरठा ॥-श्रव निहचे विवहार, श्रह सामान्य विशेष विधि; कहों च्यारि परका रि, रचना समिकत स्नूमिकी। ॥ १३ ॥ सवैया इकतीसाः ॥-मिथ्या मित गंठि नेद जगी निरमल ज्योति, जोगसों श्रतीत सोहे निहचे प्रवानिये; वहे छुंद दसासों क हावे जोग मुद्रा धरे, मित श्रुति ज्ञान नेद विवहार मानिये; चेतना चिहन पिह चान श्रापपर वेदे, पौरुष श्रवण ताते समान बखानिये; करे नेदानेदकी विचार विस ताररूप हेय गेय जपादेयसों विशेष जानिये. ॥ १४ ॥ सोरठाः ॥-श्रित सागर तेती स, श्रंतर मुहुरत एक वा; श्रविरति समिकति रीस, यह चतुर्थ गुन थान इति॥१५॥

श्रयं:-हवे निश्रयथी श्रने व्यवहारथी सामान्य विशेषपणो कहें हे सम्यक्तनी स्नू मिनी चार प्रकारनी रचना हे ते कहें हे. ॥ १३ ॥ प्रथम मिध्यात्व ग्रंथी जेदिने जे श्रा तमानी निर्मेल ज्योति जागी हे श्रने जे ज्योति मन, वचन, कायाना जोगथी श्र तीत हे तेतो सम्यक्त्व निश्रयनयथी प्रमाण करीए. वीजुं ते सम्यक्त्व द्वंद्व दशाधी व र्तमान थाय हे, एटले वहु विकल्पथी धामधुम दशाथी वर्त्ते हे. त्यारे तो एवं कहें वाय हे के ए जोग मुद्रा धारी हे, श्रा मतिज्ञानी हे, श्रा श्रुत ज्ञानी हे. एवा जेद व्यवहारनयथी मानिये हे. त्रीजुं ए श्रात्माना चेतनारूप चिन्ह के विक्षण जाणीने श्रात्म द्वव्य श्रने परद्वयने वेदे हे. परंतु श्रंतरायना छदयथी पुरुष पराक्रमश्रल्य हे, एटले श्रविरति हे. तेथी ए सामान्यपणे सम्यक्त्व कहीए. चोशुंगुण श्रने गुणिनो जेदाजेद विचार विस्ताररूप करे जेम श्रात्मा गुणिहे; ज्ञानादिक गुण हे. तेना जेदाजेदनो विचार करवो, एवा हेय, ज्ञेय, उपादेयनो विचार राखवो. विशेषपणे सम्यक्त्व जाणिए. ॥ १४ ॥ श्रविरति सम्यक्त्वनी उत्कृष्टि तेत्रीस सागरोपम स्थिति श्रयवा ज घन्यश्री एक श्रंतर मुहूर्त्तनी स्थिति होय. श्रविरति सम्यक्त्वनी रहस्य मर्यादा ए वे प्रकारे होय, ए चोशुं गुणस्थानक समाप्त थयुं. ॥ १५ ॥

हवे पांचमां गुणस्थानकना विवरणनो आरंज करेतेः-श्रथ पंचमगुनथानक आरंज ॥ दोह्राः ॥--श्रव बरनो इकवीस गुन, श्ररु बावीस श्रज्ञष्यः जिन्हके संग्रह त्या गसों, सोहे श्रावक पष्यः ॥ १६॥

श्रर्थः-तेमां प्रथम पांचमा गुणस्थानक लायक श्रावकना एकवीस गुण कहुं हुं.

स्थाने बावीस श्वजक्त हे ते कहुं हुं. जे गुणने संग्रह करवाथी श्वने जे श्वजक्तने त्याग वाथी श्रावकनो पक्त गुणसंग्रहीत शोजायमान थाय ते कहुं हुं. ॥ १६ ॥

हवे श्रावकना एकवीस गुणनां नाम कहे हे:- अथ श्रावक इकवीसगुन कथन:-

॥ संवैया इकतीसाः ॥—खज्ञावंत दयावंत प्रसंत प्रतीतवंत, परदोषकों ढकेया पर जपकारी है; सोम दृष्टि गुन प्राही गरिष्ट सबकों इष्ट, सीष्ट पक्ती मिष्टवादी दीरग विचारी है; विशेषक्ष रसक्ष कृतक्ष तक्ष धरमक्ष, नदीन न श्रजिमानी मध्य विवदारी है; स हजे विनीत पाप कियासों श्रतीत एसो, श्रावक पुनीत इकवीस गुन धारी है ॥ १९॥

श्रथः—खज्जावंत १, दयावंत १, शांतमूर्ति ३, प्रतीतवंत ४, परदोषनो ढांकनार ५, परजपकारी ६, सोमदृष्ट ७, गुण्याहक ७, गुरुवाई ए, सर्वनो वृह्चच १०, शिष्टाचारनो पक्ती ११, मिष्टवचन बोलनार ११, जंडो विचार विचार १३, विशेष ज्ञाननो जाणनार १४, शास्त्ररस जाणनार १५, करेला जपकारने जाणे १६, ते जपकारने जाणे १७, ध मेने जाणनार १७, श्रदीनपणुं ग्रहे श्रितमानी रहे नही १ए, एवा मध्यम व्यवहारमां रहे, के जेथी सहज स्वजावे विनयवंत होय १०, श्राने पापिकयाथी रहित होय ११, एवा पवित्र श्रावक एकवीश गुणना धारनार थाय. ॥ १९॥

हवे जघन्य श्रावकने वावीस वस्तु श्रजक हे:-श्रथ बावीसश्रजक वर्ननः-

॥ कवित्त ठंदः-र्रुरा घोरवरा निसन्नोजन, बहु बीजा वेगन संधान; पींपर वर उंबरि कठूंबरी, पाकर जोफल होइ श्रजान; कंद मूल माटी विष श्रामिष, मधु माषन श्रह मदिरापान; फल श्रति तुन्च तुसार चिलत रस, जिनमत ए बावीस श्रषान ॥ २०॥

श्रर्थः—गमोरा हेमा करहा १, काचा घोखनां वमा १, रात्री जोजन ३, बहु बीज फल ते दामम प्रमुख ४, वेगण ५, श्रथाणुं पाणीमांहेलुं ६, पीपलनी पीपी ७, वम वृक्तनां फल ७, घोलरनां फल ए, कलुंबरनां फल १०, पाकरीनां फल ११, श्रजाएयां फल ११, कंदमूलनी जाति सर्व १३, माटीनीजाति १४, श्रफीमप्रमुख १५, मांस १६, मधु १७, मांखण १०, मदिरापान १ए, बहु तुन्न फल काचुं फल १०, हीम ११, जेनो वर्ण, रस, गंध, स्पर्श फरी गयो होय ते चितत रस ११, ए बावीस वस्तु श्री जिने श्ररना मत धारीने श्रजक हे. ते खावी नही ॥ १० ॥

॥ दोहराः ॥-श्रब पंचम ग्रन थानकी, रचना बरनो श्रब्पः जामे एकादश दशा, प्रतिमा नाम विकट्पः ॥ १ए ॥

श्रर्थः-हवे देशविरतीनामे पांचमा ग्रनथाननी रचना श्रहपमात्र वर्णवुं हुं. संक्रेपमात्र करीने ते ग्रणथानमां श्रग्यार प्रतिमा धारी हे. प्रतिमा एवुं नाम चारित्र विकहपनुंहे ॥१ए॥ हवे श्रगीश्रार प्रतिमानां यथार्थनाम कहेहेः-श्रथ एकादश प्रतिमा नामकथनः- ॥ सवैया इकतीसाः ॥—दंसन विद्युद्धकारी बारह विरतधारी, सामायक चारी पर्व पोसह विधि वहें; सचित्तको परिहारी दिवा श्रफरस नारी, श्राठो जाम ब्रह्मचारी निरारंत्री व्हें रहें; पाप परिग्रह ठंडे पापकी न शिक्षा मंमे, कोछ याके निमित्त करे सो वस्त न गहें; एते देस व्रतके धरैया समकिती जीव, ग्यारह प्रतिमा तिन्हें जगवंतजी कहें ॥ ३०॥

श्रर्थः—दर्शन विद्युद्धिनी करनारी दर्शन प्रतिमा १, बारे व्रतनी धारनारी वि रित प्रतिमा १, ज्यां सामायिकनो ज्ञार हे ते सामायिक प्रतिमा ३, ज्यां पर्वे श्राह्याश्री पोसह करवो ते पोसहप्रतिमा ४, ज्यां सचित्त वस्तुनो परिहार करिये ते सचित्त परिहार प्रतिमा ८, ज्यां दिवसे स्त्री स्पर्श न करवो ते दिवस श्रस्पर्श प्रतिमा ६, श्राहे प्रहर ब्रह्मचर्यमां रहेवुं ते ब्रह्मचर्य प्रतिमा ७, सर्वे श्रारंजनो ज्यां त्याग करवो ते निरारंजी प्रतिमा ७, परिप्रहने त्यागवो ते परिप्रह त्याग प्रतिमा ए, ज्यां पापोपदेश न देवो ते पापोपदेश त्याग प्रतिमा १०, कोई श्रापणा निमित्त श्राहारादिक वस्तु करे ते खे नही ते जहेशिक त्याग प्रतिमा ११, ए श्रामीयार प्रकारे करीने देश विरत धारी सम्यवित्व जीव कह्याहे. तेनी श्रा इग्यार प्रतिमारूप प्रतिक्षा जगवंतजी कहे हे ॥ ३०॥

हवे ए प्रतिमानो अर्थ कहे हे:-अय प्रतिमा कथनः

॥ दोहरा ॥ संयम श्रंस जग्यो जहां, जोग श्रुरुचि परिनामः उदे प्रतिज्ञाको जयो प्रतिमा ताको नामः ॥ ३१ ॥

श्रर्थः-जहां संयम चारित्रनो श्रंस जाग्यो श्रने जोग श्ररूचिना परिणाम श्रया, त्यां कोई प्रतिक्ञानो उदय थयो तेनुं नाम प्रतिमा कहीए. ॥ ३१ ॥

हवे प्रथम दर्शन प्रतिमानुं विवरण करेके:-- अथ प्रथम प्रतिमा यथा:-

॥ दोहराः ॥— श्राठ मूखगुण संयहे, कुवसन क्रिया न कोइ; दर्शन गुन निर्मल करे; दर्शन प्रतिमा सोइ॥ ३१॥

श्रर्थः-श्राहीं पेदेखा कह्या हे करुणा वत्सल, सुजनता इत्यादिक सम्यक्तवना श्राह मूल ग्रण हे तेनो संग्रह करे, ज्यां साते व्यसननी क्रिया नश्री एवा सम्यक्त्व दर्शनना ग्रण निर्मल करे, तेज दर्शन प्रतिमा कही. इहां व्रत नश्री एनो काल एक मासनो हे ॥३१॥

हवे बीजी प्रतिमानो विवरो कहे छे:-श्रथ द्वितीय प्रतिमा यथा:-

॥ दोहराः ॥-पंच श्रनुव्रत श्रादरे, तीन गुण व्रत पालः सिक्ता व्रत च्यारों धरे, यह व्रत प्रतिमा चाल. ॥ ३३ ॥ श्रर्थः-पांच श्रण्वत, त्रण गुणवत श्रने सामायिक धारे १, पोसह धारे १, देशा वकासिक करे ३, श्रतिथि संविजाग करे ए चार शिक्तावत धारे, ते वत प्रतिमा, जाणवी. तेनो काख बे महीनानो हे. ॥ ३३ ॥

हवे त्रीजी सामायिक प्रतिमानो विवरो कहे हे:- अथ तृतीय प्रतिमा यथा:-

॥ दोहराः ॥-दर्वजाव विधि संजुगत, हिये प्रतिक्वा टेकः; तिज ममता समता गहे, ऋंतर मुहुरत एक, ॥ ३४ ॥ चोपाईः॥-जो श्रिरिमित्र समान विचारे, श्रारत रूड कु ध्यान निवारेः; संजमसहित जावना जावेः; सो सामायकवंत कहावे ॥ ३५ ॥

श्रर्थः—दश दोष वचनना टालवा, बार दोष कायाना टालवा, ए ड्रव्यविधि श्रने दश दोष मनना टालवा ते जाविधि जाणवोः तेणे करीने संयुक्तः श्रने हैयामां एक शो श्राठ पंचपरमेष्टी मंत्रनुं स्मरण लागी रहे, एम बीजी पण कोई प्रतिक्ञानी टेक राखीने, ममता तजीने, समता प्रहण करवी, एम एक श्रंतर्मुहूर्त्त काल पर्यंत सामा थिक चारित्र थाय ॥ ३४ ॥ जे कोई शत्रु मित्रने समान विचारे, श्रार्त्तध्यान रोडध्या ननुं निवारण करे, पंच संवर सहित थाय, बार जावना जावे, तेज सामायिकधारी श्रावक कहिए; ए त्रीजी प्रतिमा त्रण मासनी होय ॥ ३५ ॥

हवे चोथी पोसह प्रतिमानो विवरो कहें छे:-श्रथ चतुर्थ प्रतिमा यथा:-

॥ दोहराः ॥-सामायक कीसी दसा, चार पहर खों होइ;

श्रयवां श्राठ पहर रहे, पोसह प्रतिमा सोइ. ॥ ३६ ॥

श्रर्थः-जे पूर्वे सामायिकनी दशा कही है तेवी दशा चार प्रहर लगी होय, श्र यवा तेवी दशा श्राठ प्रहर लगी रहे, तेज पोसह प्रतिमा धारी श्रावक कहीए. ए चार मासनी प्रतिमा जाणवी इहां श्राठम, चडदश, श्रमास, पूनमने दहां तथा प वैदिन श्रावेथी पोसह करे॥ ३६॥

हवे पांचमी सचित्त परिहार प्रतिमानो विवरो कहे हे:-श्रथ पंचमी प्रतिमायथा:-

॥ दोहराः ॥-जो सचित्त जोजन तजे, पीवे प्रासुक नीर;

सो सचित्त त्यागी पुरुष, पंच प्रतिज्ञागीर ॥ ३७ ॥

श्रर्थः—जे सचित्त जोजननो त्यांग करे श्रने फासु जल पीए, ए रीते जे पुरुष स चित्त वस्तुनो त्यांग करे, ए पेहेबी प्रतिमाधी एटखी वधती, क्रिया करे तेतो पांचमी प्रतिमानो धरनार जाणवो. ए प्रतिमा पांच मास सुधी रहे. ॥ ३७ ॥

हवे वठी ब्रह्मचर्यप्रतिमानो विवरो कहे वे:-श्रय षष्टि प्रतिमा यथा:-॥ चोपाई: ॥-जो दिन ब्रह्मचर्यव्रत पासे; तिथि श्राए निसि चौस संजासे; गहि नौवामी करें व्रत रक्षा; सो षट प्रतिमा साधक श्रक्षा ॥ ३०॥ श्रर्थः-सचित्तनो परिहारि तो प्रथमनीज रीते हे. श्रने दिवसे ब्रह्मचर्य वधारे पाले श्रने पंचमी श्रादिपर्व श्रावे दिवसरात्रिमां एटले श्राठ प्रहर ब्रह्मचर्य पाले त्यां नववाडे करीने ब्रह्मचर्यवृत्तनी रक्ता करे, ते पुरुष हही प्रतिमानो साधनहार होय ते हमास लगणनी जाणवी ॥ ३०॥

इवे सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमानो विवरो कहे हे:-श्रथ सप्तमी प्रतिमा यथा:-

॥ चोपाई ॥-जो नववाि सहित विधि साधे; निशिदिन ब्रह्मचर्य श्राराधे; सो स सम प्रतिमाधर ज्ञाता; शीख शिरोमनि जगत विख्याता ॥ ३ए ॥

श्रर्थः—जे श्रावक नववाड सहित जे ब्रह्मचर्यवृत्तनो विधि हे, ते विधिये रात दिवस ब्रह्मचर्यने श्राराधतो रहे, श्रने जे श्रागल ह प्रतिमानी क्रिया कही हे तेने तो लीधो रह्या हे. एवो जे श्रावक हे, तेतो सातमी ब्रह्मचर्य प्रतिमानो धरनार ज्ञानी पुरुषशील शिरोमणि जगत्मां प्रख्याति पामेलो जाणवो ॥ ३७ ॥

हवे आंही प्रसंगधी नव वाडनो विवरो कहे हे:-अथनौवाडि यथा:-

॥ कविंत्तहंदः ॥—तियथलवास प्रेमरुचि निरषन, देपरीह जावन मधुवेन; पूरवजो गकेलि रसचिंतन, गुरु श्राहार क्षेत चितचेन; करि सुचि तन सिंगर बनावत, तियप रजंक मध्यसुखसेन;मनमथ कथा हदि जरि जरि जोजन,ए नववाडि जान मतजेन॥४०॥

श्रथः-ज्या स्त्री वसे त्यां वास न करवो, प्रेमरुचि राखीने स्त्रीना श्रंगोपांग देख वां नहीं, दृष्टिदोषनुं निवारण करीने, श्राडो पमदो श्रापीने स्त्रीना मधुर वचन सां जखे नहीं, पूर्व कालमां जे जोग क्रीडा करी होय तेनो रस चिंतवे नहीं, चित्तना चेनने श्र्ये पृतादिक सिहत गरिष्ट श्राहार खेहीं, स्नान मज्जनश्री शरीरने पवित्र करीने श्रंगार शोजा सजे नहीं, स्त्रीने सुवाना पढ़ंगमां सुखसेन करे नहीं, मन्मथ जे कंदर्प तेनी कथा कहे नहीं, पेट जरीने जोजन न करे, ए नव वानो जैन मतमां जाणवी. ए बहुज श्रानंद कारी है॥ ४०॥

हवे श्रावमी निरारंत्र प्रतिमानो विवरो कहे वे:-श्रथ श्रष्टमी प्रतिमा यथा:॥ दोहराः ॥-जो विवेक विधि श्रादरे, करे न पापारंत्रः सो श्रष्टम प्रतिमा धनी,
कुगति विजे रन यंत्र ॥ ४१ ॥

अर्थ:—जे कोई श्रावक पावली सर्व किया करतो थको विवेक सहित विधि वि होष श्रादरे, श्रने पापनो श्रारंत्र पोताना हाथे न करें तेतो श्रावमी निरारंत्र प्रति मानो धरनार श्रावक कुगतिना विजयनो रण्यंत्र रूप थई रह्यो वे ४१॥ इवे नवमी परिग्रह प्रतिमानो विवरो कहे हे:-श्रथ नवमी प्रतिमा यथा:-

॥ चोपाईः ॥-जो दसधा परियहको त्यागी; सुख संतोष सहज वैरागी; समरस चिंतित किंचित ग्राही; सो श्रावक नौ प्रतिमा वाही ॥ ४१ ॥

श्रर्थः—नविध परिग्रहनो त्यागी होय, सुख संतोष सहित वैरागी होय, उपशम रसधी जींज्यो रहेतो होय, किंचित् ग्राही कहेतां कंईएक श्रशन वशननुं ग्रहण कर नारो होय श्रने बीजी किया सर्वे श्राठमी प्रतिमानी परे होय, ते श्रावक नवमी प्रतिमानो धरनार होय. ए प्रतिमा नवमास खगी रहे॥ ४२॥

हवे दसमी पापोपदेश त्याग प्रतिमा कहे हे:-श्रथ दसमी प्रतिमा यथा:॥ दोहराः ॥-परकों पापारंजको, जो न देश उपदेश; सो दशमी प्रतिमासहित,
श्रावक विगत कलेश.॥ ४३॥

श्रर्थः—नवमी प्रतिमा लगण यह कुटुंब परिवारने कदाच् पापनो उपदेशश्रापे, पण श्राहीं पापारंजनो उपदेश त्यागे ते श्रावकने दशमी प्रतिमासहित जाणिये. तेज श्रा वक क्षेश रहित थयो एम जाणवुं. ॥ ४३ ॥

हवे अग्यारमी उचित्तवाही प्रतिमानो विवरो कहे हे:-श्रथ अग्यारमी प्रतिमा यथा:-॥ चोपाई: ॥-जो सुहंद वरते तजि नेरा, महमंनपमहिं करे वसेरा; उचित आहार

जदंम विहारी; सो एकादश प्रतिमा धारी. ॥ ४४ ॥

श्रर्थः—जे श्रापणां घर बार मेरा ठांडीने खठंदे वर्त्ते, श्रने मठ मंमपमां वास करे, श्राधाकर्मि श्राहार त्यागे, योग्य श्राहार क्षे श्रने ठडुंम व्यवहारी श्रह साधु जेवो श्राय, ते श्रगीश्रारमी प्रतिमानो धरनार श्रायः ए श्रावकनी करणी हे. ॥ ४४॥

हवे ख्रग्यारमी प्रतिमानी व्यवस्था कहे हे:-ख्रथ एकादश प्रतिमा यथा:-

॥ दोहराः ॥-एकादश प्रतिमा दशा, कही देशव्रत मांहिः; वही अनुक्रममूलसों, गही सु बूटी नांहि ॥ ४५ ॥

अर्थ:-ए अगीआर प्रतिमानी दशा पांचमा देशविरति गुणस्थानकमां हे कही. हवे प्रथमधी जे आगलनी प्रतिमार्च यहण करेली हे तेतो अनुक्रमे यहीज रह्यो हे, पण तेथी हुटो नधी अने चढति चढति किया करतो रहेहे॥ ४५॥

हवे श्रग्यार प्रतिमाधारीमां जघन्य, मध्यम, जल्कृष्ट, दशा कहेवे:-श्रथ जघन्य, मध्यम, जल्कृष्ट दशा कथनः-

॥ दोहराः ॥–षट प्रतिमा ताई जघन, मध्यम नव परजंत; जत्तम दशमी ग्यारमी, इति प्रतिमा विरतंत ॥ ४६॥ श्रर्थः - वर्ग दिवस ब्रह्मचर्य प्रतिमा लगण जघन्य श्रावक होय, श्रने नवमी परि प्रह त्याग प्रतिमा लगण मध्यम श्रावक थाय, दशमी श्रगीश्रारमी प्रतिमानो धणी उत्तम श्रावक होय. एटले प्रतिमानुं वृत्तांतक ह्यां ॥४५॥ इतिप्रतिमा श्रिधकार समाप्त॥ हवे पांचमा ग्रणस्थाननी स्थिति कहे हेः - श्रथ पंचम ग्रनस्थानक स्थितिः -

॥ चोपाईः ॥—एक कोटि पूरव गनिलीजे; तामें खाठ वरष घट कीजे; यह ठाकृष्ट काल थिति जाकी, खंतरमुहुर्त्त जघन्य दसाकी ॥ ४७॥

अर्थः-एक कोटि पूर्ववर्षनी संख्या कीजे, तेमां आठ वर्ष घटाडीए. पठी जे वर्ष रहे ते देश व्रति गुणस्थानकनी जिल्हा कालस्थित जाणवी, अने आदेशव्रत्ति गुणस्थाननी जघन्यदशानी स्थिति एक अंतर्मुहूर्त्त कालमान होय ॥ ४७॥

हवे एक पूर्वकालनी वर्षसंख्या कहे हे:- ख्रथ पूर्वसंख्या कथन:-

॥ दोहराः ॥—सत्तरि खाख करोम मिति, ठप्पन सहस करोडिः एते वरष मिखाइ करि, पूरव संख्या जोमि. ॥ ४० ॥

श्रर्थः सितेरलाख कोटि वर्ष एटली मिती के प्रमाणता उपर उपन इजार कोटि वर्ष मेलवीये त्यारे पूर्वकालनी जोमिनी वर्ष संख्या थाय, तेना उ०५६०००००००० एटला श्रंक थाय लोक व्यवहारमां सात पद्म पांच खर्व साठ श्रद्ध कहिए. ॥ ४०॥ हवे श्रंतमुंहू र्त्त कालनुं जघन्य उत्कृष्ट प्रमाण कहुं हुं: -श्रथ श्रंतमुहुरतप्रमान

॥ दोहराः॥—श्रंतर मुहुरत है घनी, कबुक घाटि उतकृष्टः एक समे कलाउली, श्रंत मुंहर्त्त कनिष्टः ॥ ४ए ॥ यह पंचम गुनथानकी, रचना कही विचित्रः श्रब ठठम गुन थानकी, दसा कहुं सुनु मित्र ॥ ५० ॥

श्रर्थः-वेघमीमां एक समय उंडो थाय, त्यारेतो उत्प्रक्त श्रंतमुहूर्त्त थाय श्रमे एक श्राविने एक समय ते किनष्ट के॰ जघन्य श्रंतमुहूर्त्त काल होय. ए दिगंबर संप्रदा यथी हे ॥ ४ए ॥ एम देशव्रति पांचमा ग्रणस्थाननी विचित्र रचना कहीहे. हवे हे ! मित्र ! हवा ग्रणस्थाननी दशा कहुं ते सांजलो ॥ ५० ॥

॥ दोहराः ॥-पंच प्रमाद दशा धरे, श्रठाइस ग्रनवानः श्रविर कटप जिन कटप जुत, हे प्रमत्त ग्रनथानः ॥ ५१ ॥

हवे प्रमत्तनामे ववा गुणवाणानी श्रवस्था कहुं बुं-श्रथ प्रमत्तगुनस्थानकः-

श्रर्थः-धर्मरागादी पांच प्रमादनी दशा धारेते. श्रने साधुना श्रत्यावीस गुणो धारे ते. श्रांही श्रत्यावीस गुण कह्या ते दिगंबर संप्रदायथी. थिवर कल्पथी थिवरनो श्राचार श्रने श्रने जिनकल्पथी जिननो श्राचार तेणेकरी युक्त ते. एम प्रमत्त गुण स्थान होय

www.jainelibrary.org

हवे पांच प्रमादनां नामनी गणत्री करेतेः—श्रथ पंच प्रमाद यथाः— ॥ दोहराः ॥-धरमराग विकथा वचन, निद्धाविषय कषाइः पंच प्रमाद दसासिह त, परमादी मुनि राइः ॥ ५१॥

श्रर्थः-धर्मज्पर राग राखे, विकथा वचन बोखे, निद्धासेवे, रस ते इंद्धियप्रमुखना विषय सेवे, कषाय सेवे, ए दशासहितजे मुनिराज होय ते प्रमादी कहीए। ॥ ५१ ॥ हवे श्री मुनिराजना श्रठावीस मूल ग्रण कहेंग्रे-श्रथ श्रठाइस मूलगुन कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-पंच महावत पाखे पंच समिती संजाखे, पंच इंद्रिजीति जयो जोगी चित चेनको; षट श्रावशक किया दर्वित जावित साधे, प्रामुक धरा में एक श्रासन है सेनको; मंजन न करे केस खुंचे तन वस्त्र मुंचे, त्यागे दंतधावन पं मुगंध खास चेनको; ठाढो करषे श्राहार, खघु जुंजी एकवार, श्राह्म मूख गुन धारो जती जैनको ॥ ५३॥

श्रर्थः—"सवाज पाणाइ वायाजवेरमणं" इत्यादिक पंच महाव्रत पाते; इर्यासमिति प्र
मुख पांच समिति संजां तोने करे श्रने पांच इिंद्रयोगों जीतनार एटखें जेने इंद्रियोगा
विषय सेवतां चित्तमां चेन न जपजे, तेथी विषयोगों त्यागी थाय. सामायिक प्रमुख
छ श्रावश्यकिया हो, ते द्रव्यथी पण साधे श्रने जावथी पण साधे, ए ११ गुण थया.
फासू पृथ्वी प्रमुख शय्यामां प्रमाणोपेत एक शयन श्रासन राखे, ए ११ गुन थया.
स्नान न करे, केश लोच करे, शरीरविषे वस्त्रगों त्याग करे, दांतण नकरे, श्रासवदननों
सुगंध मूखलुण प्रमुख नखे, जजो जजो श्राहारकरे लघुता के श्रंतप्रांत श्राहार जुंजे,
तेपण एक टंक खाय. ए श्रह्मावीस मृख गुणनो धरनार जैन दर्शनी जती होय ॥ ५३ ॥
ए दिगंबर संप्रदायथी गुण कह्या हो.

हवे पांच महात्रत कहें हे:-श्रथ पंचत्रत यथा:-

॥ दोहराः॥ –हिंसा मृषा श्रदत्त धन, मैथुन परिग्रह साज; किंचित त्यागी श्रनुत्रती, सवि त्यागी मुनिराज.॥ ५४॥

श्रर्थः-जीवघात, श्रसत्य, चोरी, मैथुन, परिग्रहसामग्री ए पांचे श्राश्रवने किंचित् त्यागे, ते श्रणुव्रती श्रावक कहिए श्रने सर्वथा त्यागे ते मुनिराज कहिए ॥ ५४ ॥ हवे पांच प्रकारनी समिति एटखे सावधानपणुं कहेंग्ने:-श्रथ पंच समिति यथाः-

॥ दोहराः ॥–चक्षे निरिष जाषे उचित, जर्षे श्रदोष श्राहारः क्षेट्र निरिष्व डारे निरिष्व, सिमिति पंच परकार ॥ ५५ ॥ श्रर्थः–जोईने चाक्षे ते दर्या सिमितिः योग्य वचन बोक्षे ते जाषा सिमितिः द्वषणर हित आहार खीए ते एषणा समिति; वस्त्र पात्र निरषीने खे ते आदानसमिति; मखमू त्रादिक जोइने परठवे ते पारीठावणीया समिति. ए पांच प्रकारे समिति ॥ ५५॥ इवे जे अवश्य करीए ते आवश्यक कहीए तेनां नाम कहे हे,—अथषडावश्यकयथाः—॥ दोहराः॥—समता वंदन श्रुति करन, पडिकमणुं सङ्घान, कान्नसग्ग मुद्धाधरन

ए षमावसिक जान ॥ ए६ ॥

श्रर्थः-सामायिक धरवुं १, गुरुवंदना करवी २, चोवीश्वजिनेश्वरनी स्तुति करवी ३, श्रातिचारश्री निवर्त्तवुं ते पिककमणुं ४, खाध्याय करवो ५, काजसग्गमुद्रा धरवी. हे! जाइ! ए ठ श्रावस्थक कहीए.॥ ५६॥

हवे थिवर कल्प श्रने जिनकल्पनो जेद कहें हो: श्रथ स्थिविर कल्पी जिनकल्पी: ॥ सवैया इकतीसाः ॥ श्वीर कल्पी जिनकल्पी छिविध मुनि, दो ह वनवासी दो ह नगन रहत है; दो ह श्राहिस मूल गुन के धरैया दो ह सरव तियागी वह विरागता गह त है; थिवर कल्पिते जिन्हके सिष्य साषा होई, बेठके सजामे धर्म देसना कहत है; ए काकी सहज जिन कल्पी तपस्वी घोर, हदेंकी मरोरसुं परिसह सहत है। ॥ ५९॥

श्रर्थः—िथवर कहिंपी श्रने जिन कहिंपी ए वे प्रकारना मुनीश्वर होय. ए वे वनवा समां रहे. श्रने बेहु नागारहे; ए वे श्रवावीस मूल गुणना धारनार ए वे सर्वस्व के कि परिग्रहना त्यागी थईने वैरागजाव धरे. एवा कह्या पण ते बेमां स्थिवरकहिंपी ते कहीए जेने शिष्य शाषा होय, श्रने सजामां बेसिने धर्म देशना करे श्रने जे जिन कहिंपी होय ते एकाकी होय, घोरतपस्वी होय. श्रने कर्म जदयनी मरोरशी जे परिषह जपजे वे ते सहन करे, ए दिगंबर संप्रदायिक वचनो वे. ॥ ५७॥

हवे प्रसंगर्थी बावीस परिषह साधुने सवहा योग्य तेनां नाम कहें हे:-श्रथ बावीस परीषह यथा कथनः-

॥ संवैया इकतीसाः ॥-यीषममे धुप थिति सीतमे खंक पचीत, त्रूषेधरेधीर प्यासे नी र न चहतु है; मंस मसकादिसों न मरे त्रूमि सैन करे, वध बंध विथामे खडोख व्हेर हतु है; चर्या छुख जरे तिन फाससों न थरहरे, मख छुरगंधकी गिलान न गहतु है; रोनगको न करे इखाज एसो मुनिराज, वेदनीके जदे ए परिसह सहतु है। ॥ ५०॥

श्रर्थः—उष्ण कालमां तमकामां श्राताप सहे, शीत कालमां शीत सहेवाथी वि त्रमां कंपे नही, जुख्यो ठतां धीरज राखे, श्रनेषणी श्रहे नही, प्यासवंत थको सदोष पाणीनी चाहना करे नही, नागा शरीरने मांस मसकादि करडे तोपण मरे नही, धर तिये शय्या करे, मरणांत कष्ट श्रावे जातजातना वध बंधनादिक कष्ट तेथी श्रमोल रहे, पण चलायमान न थाय, चर्या के० विहारनुं छुःख जरे, तदरीते विहारमां तथा सय नासनमां कठोर त्रण स्पर्शथी थरहरे नहीं, मेखनी डुर्गंघ हे, तेनी डुगंछा न करे, रोगनी वेदना सहे पण तेनो इखाज न करे, एवा मुनिराज होय ते वेदनीय कर्मना हदयथी ए इग्यार परिषह हपजे हे तेने सहे हे.॥ ५०॥

॥ कुंमलीयाः ॥—एते संकट मुनि सहे, चारित मोह जदोत; खज्जा संकुच प्रःष घरे, नगन दिगंबर होत; नगन दिगंबर होत, श्रोत रित स्वाद न सेवेः त्रियसनमुख हग रोकि, मान श्रपमान न बेवेः थिर व्हें निर्जय रहे सहे कुवचन जग चेतेः जिक्क पद संग्रहे, लहे मुनि संकट एते ॥ ५ए॥ दोहराः ॥—श्रद्धप ज्ञान लघुता लखे, मित जतकरष विलोइ, ज्ञानाबरन जदोत मुनिः सहे परीसह दोइ॥ ६०॥ सहे श्रदरसन प्ररस्त, दरसन मोह जदोतः रोकेजमंग श्रद्धाजकी, श्रंतरायके होत.॥ ६१॥

श्रधः—हवे चारित्र मोहनीयना उदय थवाथी मुनिराज संकट सहेठे ते संकटनी गणतरी कहेठे नगन दिगंबर थई जे बक्जाथी संकोच छः ब उपजे ठे तेने घरे एट बे संकटथी न जागे १, वही नगन दिगंबर थइ श्रोत के० इंद्रीयना रित स्वादने न सेवे, १, स्त्रीना हाव जावथी चुके नही ३, कोइ सत्कार करे कोइ सत्कार न करे ते उपर विषम जाव बावे नही ४, कोइ जयथी जागे नही स्थिर रहे निर्जय रहे ५, जगतमां जे कंइ कुवचन ठे, श्राकोशनां वचन ठे ते सर्व सहन करे ६, जिक्का प्रहणथी जिक्क पद संग्रहे पण ते संकटथी जाजे नही, ए सात संकट चारित्र मोहनीयना उदयथी मुनि बहेठे ते सहन करे ठे॥ ५ए॥ हवे जएयाविना श्रव्हपणुं जोइने गुरुता सहे १, एम झानावरणीय कर्मनो उदय थातां श्रङ्कान परिषह श्रने प्रज्ञापरिषह एवे परिषह उपजे ठे ते सहन करे। ६०॥ दर्शन मोहनीयना उदय थवाथी सम्यग् दर्शननी मिलनता उपजे, तेनी छुष्ट दशा सम्यग् दर्शनथी न जागे, श्रंतराय कर्मनो उदय थवाथी जे बाजनो उमंग रोकी रहे तेथी श्रवाजने सहन करे. ए वा वीस परिसह कहा। ६१॥

हवे जे कमिथी जे परिसह उपजे ते कहे हे. श्रथ बावीस परिषह विवरनन:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—एकादश वेदनीकी चारित मोहकी सात, ज्ञानावरनीकी दोइ एक छंतरायकी; दंसन मोहकी एक द्वाविंसति बाधा सब, केई मनसाकी केइ बाकी केई कायकी; काहुकों छल्लप काहूसों बहोत उनी साता, एकहीं समेमें उदे छावे छसहायकी; चर्याचित सज्जामांहि एक सीत उस्त्रमांहि, एक दोइहोहि तीनि नांही समुदायकी ॥ ६२ ॥ ॥ दोहराः ॥—नानाविध संकटदशा, सिहसाधे शिवपंथ, िष्यविरकट्प जिन कटपधर, दोऊ सम निगरंथ ॥ ६३ ॥

श्रयः— श्रायार संकट तो वेदनीय कर्मना उदयशी उपजे हे. चारित्र मोहनीय कर्मथी सात बाधा उपजे हे. ज्ञानावरणनी करेही वे बाधा उपजे हे. श्रांतरायनी की धी एक बाधा उपजेहे. दर्शन मोहनीयनी करेही एक बाधा उपजे हे. सर्व माही बा वीस बाधा श्रद्ध. ते बावीसने परिषद्ध कहीए. बाधामां कोई मननी हे, कोइ वचननी हे, कोइ कायानी हे; श्रा बावीस बाधामां हेही कोइने श्रद्धए एक वे उपजे; कोइने बहु उपजे, तो एकज समे श्रोगणीस बाधानो उदय श्राय तेमां श्रसहायनी के जे बाधा बाधासाथेज बोहोहे पण साथे बने नही त्यारे तेमां एकज बाधा एक समे श्रई ते श्रसहायनी कहीए. जेम चर्यापरिषद्ध चाहावाशी उपजे हे; निषेद्या परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे; श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे; श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे; श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे; श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी उपजेहे; श्रद्धा परिषद्ध रहेवाशी अप पांच परिषद्धमां एक श्रद्धा हो श्रद्धा श्रद्धा समयमां एकज बाधा उपजे तेथी श्रा पांच परिषद्धमां एक श्रद्धा हो परिसद्ध श्रद्धा समास श्रद्धो ॥

श्रर्थः-एवां नाना प्रकारना संकट हे तेनी दशा सहन करीने मुक्तिमार्ग साधे, तेथी थिविर कल्पना धरनार श्रने जिन कल्पना धरनार ए बेहु निग्रंथ समान है॥६३॥ हवे थिवर कल्पमां श्रने जिनकल्पमां कंइ तफावत हे ते कहेहेः-

श्रथ स्थिविरकख्प जिनकख्प तारतम्य कथनः-

॥ दोहराः ॥- जो मुनि संगतिमें रहे, यविरकदृप सो जानिः एकाकी जाकी दसा सो जिनकदृप बषानि ॥ ६४ ॥ ॥ चोपाईः ॥- यविर कलप मुनि कतुक सरागीः जिन कलपी महांत विरागीः इति प्रमत्त गुनयानक धरनीः पूर्न जई जयारय वरनी ॥६८॥

श्रर्थः— जे मुनीश्वर गन्नना गणनी संगतमां रहे हे, तेतो थिवर कहवी जाणीए जेने गणनी निश्रा नथी, जेनी एकाकी दशा हे तेतो जिनकहवी कहिए ॥ ६४ ॥ ए बेन निश्रंथमां थिवरकहवनो धरनार कहक सराग दशामां हे, श्रने जे जिनकहवी हे ते महावैरागी हे. एट से प्रमत्त गुणहाणानी जे जूमिका बांधी श्रने यथार्थ साचवणे वरणी ते पूर्ण थई ॥ ६५ ॥

ह्वे सातमा ग्रणस्याननु वर्णन करेहे:- श्रय सप्तम ग्रणयानक वर्ननं:-

॥ चोपाई:-॥ श्रव बरनो सत्तम विसरामा;श्रप्रमत्त गुनथानक नामा; जहां प्रमाद किया विधि नासे; धर्मध्यान थिरता परगाषे ॥ ६६ ॥ दोहरा:-प्रथम करनचारित्रको जासु श्रंत पद होइ, जहां श्राहार विहार निह, श्रप्रमत्त हे सोइ ॥ ६७ ॥

श्रर्थः – मुक्तिरूप मंदिरमां चढतां ते सातमो विसामो हे, श्रने श्रप्रमत्त गुणस्था नक जेनुं नाम हे ते हवे वखाणे हे जे गुणस्थानमां धर्मरागादिकेकरी प्रमादनो विधि नासे हे, जे पूर्वे खा गुणस्थानकमां धर्मध्यान चंचल हतुं, ते खांही स्थिरपणे प्र काश करे हे ॥ ६६ ॥ प्रथम गुणस्थानना खंतपदमां एट खे हे खा समयमां चारित्रमोह नीय कर्मने जेदवानो यथा प्रवृत्तिनामे प्रथम करण थयुं. खांही धर्मध्याननी स्थि रता एवी हे के ज्यां खाहार विहार किया नथी. ते खप्रमत्त गुणस्थानक होय. ए व चन दिगंबर संप्रदायनुं हे ॥ ६७ ॥

हवे आठमा गुणस्थानकनुं वर्णन कहे हे:-अथ अष्टम गुणस्थानक वर्ननं:-

॥ चोपाई:॥— श्रव बरनो श्रष्टम गुनशाना, नाम श्रपूरव करन बखाना, कहुक मोह उपसम करि राखे, श्रथवा किंचित क्रयकरि नाखे ॥ ६० ॥ जो परिनाम ज ये निह कबहीं, तिन्हको उदो देखिये जबहीं, तब श्रष्टम गुनशानक होई, चारित करन दूसरो सोई ॥ ६ए ॥

श्रर्थः जेनुं नाम श्रपूर्व करण वखाणीए ठीए, हवे श्रांही श्रेणि चढवामां जे ठ पश्मीक थको चढे ठे तेतो श्रांही कंइक मोहने उपशमावी राखे छे, श्रथवा जे क्रपक थको चढे ठे तेतो श्रांही चारित्र मोहनो कंइक क्रय करि नांखे छे ॥ ६ए ॥ एवं जे परिणाम पेहे खां कोइ काखमां थयुं नथी ते परिणाम नुं ज्यारे प्रगट पणुं दे खिये ठीए, त्यारेतो श्राठमुं गुणस्थानक होय तेने ठेखे समये चारित्र मोहनीय कर्म जेदवाने श्रपूर्व करण नामे बी जुं करण होय तेनुं नाम निवृत्ति पण हे ॥ ६ए ॥

हवे नवमा गुणस्थाननुं वर्णन करेंग्रे:- श्रथ नवम गुणस्थानक वर्णनं:-

॥चोपाईः॥— ख्रब श्रनवर्त्ति करन सुंनुं जाई, जहां जाव थिरता श्रधिकाई; पूरव जाव चलाचल जेते, सहज श्रमोल जए सब तेते ॥ ७० ॥ जहां न जाव जलटि श्रध श्रावे; सो नवमो ग्रनथान कहावे; चारित मोह जहां बहु ठीजा; सो हे चरण करण पद तीजा ॥ ७१ ॥

श्रर्थः— प्रथम श्रनिवृत्ति करण गुणस्थाननो व्यवहार कहुं हुं ते सांजलो. जे गुण स्थाननेविषे स्थिरता जावनी श्रधिकाई हे. श्रने पूर्वजाव कषायना छदयथी जेटला चलाचल जाव होय तेवा सर्व श्रांही सहज श्रमोल थया हे॥ ५०॥ ज्यां जावधी चढीने फरी तिहांथी पडी नीचेना गुणस्थानकें न श्रांवे. एवो श्रनिवृत्ति कहेवाय, ज्यां चारित्र मोहनीय कर्म घणुंज हुटी गयुं हे तेज ए चारित्र मोहनीय कर्म जेद वानुं त्रीजुं श्रनिवृत्ति करण थयुं॥ ५१॥

हवे दशमु गुन स्थानक कहु हुं:- श्रथ दशम गुनथानक वर्ननं:॥चोपाई:॥-कहों दशम गुन थान इसाखा; जहां सूत्रम शिवकी श्रजिखाषा; सूत्रम खोज दसा जहां लहिए; सूत्रम संपराय सो कहिए॥ ७२॥

श्रर्थः ज्यां जपशमिक श्रने क्तपक एवी वे शाखा वर्ते हे, जे गुण स्थानमां सूक्ष्म शिव पदवीनी श्रजिखाषा हे एवी ज्यां सूक्ष्म खोज दशा पामियें, ते सूक्ष्म संपराय कहीए संपराय एवं कषायनुं नाम हे ॥ ११ ॥

हवे अग्यारमुं उपशांत मोह नामे गुणथान कहुं हुं:- अने तेनी प्रजुतानुं प्रमाण कहुं हुं: अथ एकादशम गुनथान वर्ननः-

॥चोपाई: श्रव उपसंतमोह गुनथाना; कहों तासु प्रजुता परवाना; जहां मोह उ पसमे न जासे; जथाख्यात चारित परगासे ॥ ७३ ॥ दोहरा: -जाहि फरसके जीव गि रि, परे करे गुन रह; सो एकादसमी दसा, उपसमकी सरहह ॥ ७४ ॥

श्रर्थः— जे गुणस्थानमां मोहनीय कर्म सर्वे जपशमी जाय, पण जदयमां जासे नही श्रने यथाख्यात चारित्रनो प्रकाश धर्इने जेवुं निसंग श्रात्मानु सहज रूप वे तेवुं प्रगटेवे ॥ पर ॥ जे जपशम श्रेणि चिंदने जे गुणस्थानने फरसीने श्रवश्य जीव तिहांथी पढे श्रने जे गुण प्रगटे ते सर्व रद करे, ए श्रगीयारमी दशा धर्इ, एटक्षे जपशांत मोह गुणस्थानक थयुं. एटक्षे जपशमनी मर्यादा धर्इ ॥ प्रश्र ॥

हवे बारमां क्तीणमोह गुनस्थाननुं वर्णन करुं हुं:--श्रथ द्वादश गुनथानक वर्ननं:--॥चोपाई:॥-- ज्ञान निकट जहां श्रावे; तहां जीव सब मोह षिपावे; प्रगटे यथा ख्यात परधाना; सोद्वादशम ठीन गुन थाना ॥ ७५ ॥

श्रर्थः—जे गुणस्थानने केवल ज्ञान निकट श्रावे हे, श्रने त्यां जीव सर्व मोहनीय कर्म खपावीने बीजा पण घाती कर्म सर्व खपावे, श्रने ज्यां प्रधान छत्कृष्ट यथा ख्यात चारित्र प्रगटे एवा प्रकारथी जे हे ते बारमुं कीण मोह गुणस्थानक कहीए ॥ १६॥

हवे छांही लगण पाठला ठठाथी मांनी सात गुणस्थानमां जपशम श्रेणिनी छपेकाये जेकाल स्थिति वे ते कहे वे:-श्रय षष्ट गुनथानक स्थितिकथन जपशम श्रेणिक छपेकाये

॥ दोहराः ॥-षट सत्तम श्रवम नवमः दश एकादश बार, श्रंतर मुहुरत एक वा, एक समे श्रिति धारः ॥ ७६ ॥ वीन मोह पूरन जयो, किर चूरन चित चालः श्रब सजोग गुण शानकी, बरनों दसा रसाल. ॥ ७७ ॥

श्रर्थः छुं, सातमुं, श्रावमुं, नवमुं, दशमुं, श्रग्यारमुं, बारमुं, ए सात जे गुणस्थान हे, तेनी स्थिति एक श्रंतर मुहूर्त्तनी हे. श्रथवा सात गुनस्थाननी जघन्य एक समयनी स्थिति धारोः ॥७६॥ मोहमय जे चित्तनी चाल हती तेनुं चूर्ण करीने क्तीण मोह गुण स्थानक पूरण थयुं. हवे सजोगी गुन थानकनी रसाल दशानुं वर्णन करुं ॥ ७७॥

हवे तेरमा गुणयाननुं वर्णन करुतुः-श्रथ त्रयोदश गुन स्थानक वर्ननः-॥ सवैया इकतीसाः ॥-जाकी दुःख दाता घाती चोकरी विनसगई, चोकरी श्रघा ती जरी जेवरी समान है; प्रगट जयो श्चनंत दंसन श्चनंत ज्ञान, वीरज श्चनंत सुख सत्ता समाधान है; जामे श्चाछ नाम गोत वेदनी प्रकृति ऐसी एक्यासी चोरासी वा पंचासी परवान है; सो है जिन केवली जगत वासी जगवान, ताकी जो श्ववस्था सो सजोगी गुन थान है. ॥ ७० ॥

श्रर्थः—श्रात्माना ग्रणना घातना करनार एवा क्तानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोह नीय, श्रंतराय, ए घाती कर्मनी चोकडी छुःख दाता हती ते जेनी विनाश धई गई, श्रने जे श्रात्माना ग्रणनो घात न करे एवा वेदनीय, श्रायु, नाम,श्रने गोत्र, ए चार श्र घाति कर्मनी चोकनी रही ते बखेली दोरी समान रही हे. दर्शनावरणीय कर्मक्रय थयाथी ज्यां श्रनंत केवल दर्शन प्रगट थयुं, श्रने क्ञानावरणीय क्त्य थयाथी ज्या केवल क्ञान प्रगट्युं, श्रंतराय कर्म क्रय थयाथी श्रनंत वीर्य प्रगट्युं, मोहनीय कर्म क्रय थयाथी श्रनंत सुखसत्ता श्रने समाधि प्रगट्या श्रने जेमां श्रायु कर्म, ना मकर्म, गोत्रकर्म, वेदनीयकर्म, एचारनी सर्व (७५) प्रकृति रही हे तेमां कोईने श्रा हारिक शरीर, श्राहारक श्रंगोपांग, श्राहारक संघातन, श्राहारक बंधन, तथा जि ननामविना, (७०) प्रकृती रही हे श्रने कोईने जिननाम सहित हे, तेथी (७१) रही हे तथा काईने श्राहारक चतुष्कहे श्रने जिननाम सहित हे, तेथी (७१) रही हे तथा काईने श्राहारक चतुष्कहे श्रने जिननाम सहित हे, तेथी (७१) रही हे तथा काईने श्राहारक चतुष्कहे श्रने जिननाम सहित है। हो तथा को हेने जिननाम सहित (७५) प्रकृतिनुं प्रमाण हे. एवी दशानो धरनार जे हे ते जिन होय केवली होय, जगतनो जगवान् होय, तेनी जे श्रवस्था हे तेनेज सयोगी ग्रणस्थानक कहीए. ॥ ५०॥

हवे सजोगी गुणस्थानकवालानी मुद्रा देखामेहे:-

॥ संवैया इकतीसाः॥—जो श्रमोल परजंक मुद्रा धारी सरवथा श्रथवा सुकान्तरमम् मुद्रा थिरपाल हे; खेत सपरस कमें प्रकृतिके जदे श्राए, बिना डग जरे श्रंतरिक्त जाकी वाल हे; जाकी थिति पूरव करोडि श्रान्वर्ष घाट, श्रंतरमुहुरति जघन्य जग जाल हे; सो हे देव श्रान्द इषन रहित ताकों बनारसी कहे मेरी वंदना त्रिकाल हे ॥७ए॥ श्रर्थः—जे श्रडोलपणे सर्वथा प्रकारे पर्यंक मुद्रा धारी होय एटले पद्मासनवालीने सदा सर्वदा बेसेने, श्रथवा कान्नसगमुद्रा स्थिरपणे पाले ए वचन दिगंबर संप्रदायनुं ने, श्रने केत्र स्पर्श रूप जे कर्म प्रकृति ने तेनो न्नद्य थयाथी केवली विहार करेने पण बीजापुरुषनीपने चाले नहिं पण केवली डगलुं जस्माविनाज श्राकाशमां श्रथर चाले चाले. ए परुपणा दिगंबर संप्रदायनी ने. जे सयोगी ग्रण स्थाननी स्थिति श्रान्न वर्षे न्यून पूर्वकोटी वर्षनी थाय केमके जन्मथी श्रान्न वर्षलगी केवलज्ञान न्यजनुं नथी, श्रने श्रा गुनशानानी जघन्यस्थिति एक श्रंतरमुहूर्त्तनी थाय. जगत्जालमां ए

टक्षंज रहेवुं होय. श्रांही जे एवी श्रवस्थानो धरनार होय तेतो श्रदार दूषण रहित देवाधिदेव थाय. वनारसीदास कहेवे के तेने मारी त्रिकाल वंदनावे॥ ७ए॥ हवे श्रदार दूषणनां नाम कहेवेः-श्रथ श्रवारस दोष कथनः-

॥ कुंमलीयाः ॥-इषन श्रठारह रहित, सो केविल संजोग; जनम मरण जाके नहीं, निहां जय रोग; निहंं निहां जय रोग, सोग विस्मय न मोहमितः; जरा खेद परखेद, नाहिं मद वैर विषे रितः; चिंता नांही सनेह, नाहिं जह प्यास न जूषनः; थिर समाधि सुख सहित श्रठारह दूबन-॥ ७०॥ –वानी जहां निरक्तरी, सप्तधातु मल नांहिः; केस रोम नख निहं बढें, परम जदारिक मांहिः; परम जदारिक मांहिः, जांहि इंडिय विकार निसं, जथाख्यात चारित प्रधान थिर सुकल ध्यान सिसः; लोकालोक प्रकास, करन केवल रजधानीः; सो तेरम गुनथानः; जहां श्र तिशयमय वानी.॥ ७१॥ दोहराः॥–यह सजोग गुनथानकी, रचना कही श्रनूपः श्रव श्रयोग केवल कथा, कहों यथारथ रूप॥ ७२॥

अर्थ:-जे अढार प्रपण्यी रहित ते सजोगी केवली कहिए १,जेने जन्म नथी, म रण नथीश,निद्रा नथीश,जय नथीश,रोग नथीथ, शोक नथी ६, विस्मय नथी ७, मोहमति नथी. जरानो खेद नथीए, परसेवो नथी १०, मद नथी११,वैर नथी १२, विषय उपररित नथी १३, चिंता नथी ११, स्नेह नथी १५, जेने तरस लागे नही १६, जूष लागे नही १७, श्रस्थरपणुं नथी १०, तेथी समाधिसुख सहित स्थिररूप थायहे, एवा श्रहार हू षण रहित हे. ए श्रहार दोष दिगंबर संप्रदायशी हे. सिद्धांत संप्रदायमां १० दूषण जुदां कह्यां हे. ॥ ए० ॥ श्रा ग्रुणस्थाननी श्रवस्थामां निरक्तरी बाणी होय ने मस्त कमां ॐकार ध्वनिरूप होयहे; श्रने शरीरमां सात धातु श्रने सात धातुना थता नथी. ए दिगंबर संप्रदायथी कहे हुं हे. श्रने जेना शरीरमां केश, रोम, नखनी वृद्धि थती नथी, एतो उदारीक शरीरमां पण एटला दोष नथी, तेथी देवाधिदेव प रम जदारीक शरीरमांज कहिए; ज्यां इंडियविकार नासी गयाहे, ने ज्यां प्रधा न जिल्हृष्ट यथाख्यात चारित्र प्रगट थयुं हे, ज्यां शुक्क ध्यानरूप चंद्रमा स्थिररूप थ योहे, श्रने ज्यां लोकालोकना प्रकाशनी करनारी केवल ज्ञानरूप राजधानी विराजी रही हे; ते तेरमुं सजोगी गुणस्थानक कहिए, ज्यां पांतरीश स्रतिशयमय वाणी हे ॥ 0१ ॥ ए सयोगी गुण्याननी सर्वथी श्रधिक श्रनूप रचना कही है. हवे श्रयोगी के वसीनी दशा यथार्थरूप के० जेवीरीते बनीछे तेवी रीतनी कहुं छुं. ॥ ७२ ॥

हवे चौदमा श्रयोगी ग्रणस्थाननुं कर्णन कहुं बु.—श्रथ चतुर्दश ग्रनस्थानक वर्ननं.— ॥ संवैया इकतीसाः ॥—जहां काहू जीवकों श्रसाता उदे साता नांहि, काहू कों श्र

www.jainelibrary.org

साता नांहि साता उदे पाइये; मन वच कायसों अतीत जयो जहां जीव जाको जस गीत जग जीत रूप गाइये; जामे कर्म प्रकृतिकी सत्ता जागी जिनकीसी, अंतकाल देसमेमें सकल खिपाइये; जाकी थिति पंच खघु अक्तर प्रवान सोइ, चौदहो अयोगी गुन थाना ठहराइये. ॥ उ३ ॥

श्रर्थः—जे गुणस्थानमां कोई जीवने श्रशाता वेदनीयनो उदय वे श्रमे शाता वेद नीयनो उदय नथी, एटले शाता वेदनीय सत्तारूप वे, श्रमे कोइने शातावेदनीयनो उदय वे, श्रमे श्रशाता छः खरूप उदयमां नथी, एटले सत्तामां वे श्रमे ज्यां शेलेसी करण करीने मनोयोग, वचनयोग, काया योगश्री जीव श्रतीत एटले रहित थयो. जेना जशनु वर्णन जगत्ने जीतवा रूप गाइए वीए एटलुं वे श्रमे जेमां जोगी जन केसी के० सजोगी केवलीनी रीते कमें प्रकृतिनी सत्ता रहिवे ते श्रंतकालमां श्रमंत वे समयमां समस्त खपावेवे. श्रमे जे गुणस्थानकनी स्थित पंच लघु श्रक्तर श्र, इ, व, क रु ए श्रक्तर कहेतां जेटलो काल प्रमाण होय एटलो काल प्रमाण स्थिति वे तेज चौदमुं श्रयोगी वेरावीए. ॥ ७३ ॥

॥ इति श्री चतुर्दश गुणस्थानक श्रिधकार बालाबोधरूप समाप्तः॥

॥ दोहरा ॥-चौदहगुनथानक दशा, जगवासी जियन्नूख; श्राश्रव संवर नाव हे, वंध मोक्तके मूल. ॥ ७४ ॥

श्रर्थः-जगत्वासी जीव श्रग्जुद्ध थको जूलमां पड्यो वे तेनी ए चौद गुणस्थानकथी चौद दशा थाय वे. श्रांही तत्त्व दृष्टिमां जोतां जे श्राश्रव संवर जाव वे तेज बंध मो क्तना मूल वे; एटखे श्राश्रव बंधनुं मूल वे श्रने संवर मोक्तनुं मूलवे हवे श्राश्रव सं वरनी जुदी जुदी श्रवस्था कहेवे. श्रथ श्राश्रव संवर व्यवस्था कथन ॥ ०४॥

॥ चोपाईः ॥-श्राश्रव संवर परनति जोलों; जगत निवासि चेतना तोलों; श्राश्रव संवर विधि विवहारा; दोऊ जवपथ शिवपथ धाराः ॥ ७५ ॥ श्राश्रव रूप बंध उतपाता, संवर ज्ञान मोष पद दाता; जा संवरसों श्राश्रव ठीजे, ताकों नमस्कार श्रव कीजेः ॥ ७६ ॥

श्रर्थः – ज्यां सुधी श्राश्रव संवरतुं परिणाम परिणमे हे, त्यांसुधी चेतन रूप ईश्वर जगत् निवासी थई रह्योहे. श्रांही श्राश्रवनो विधि हे ते व्यवहारमां हे. श्रने संवरनो विधि हे ते पण व्यहारमां हे. ए उनों के वे व्यवहार पंथ ते संसार मार्गनी धारा श्रमे मोक्त मार्गनी धारा पण हे. ॥ ७५ ॥ संसारमां जे बंधरूप उत्पात हे, ते तो श्रा श्रवरूप हे. श्रमे जे मोक्तपदनो दाता ज्ञान हे ते संवर रूप हे. जे संवरश्री श्राश्रव ज्ञय थयो होय तेने हवे नमस्कार करीए हीए. ॥ ७६ ॥

हवे ग्रंथनी ख्रंते मंगलाचरण रूप संवर रूपी ज्ञानने नमस्कार करेवे:-

॥ सर्वेया इकतीसाः ॥-जगतके प्रानी जीवव्हैरह्यो ग्रमानी एसो, श्राश्रव श्रसुर दुःख दानी महा जीम है; ताको परताप खंभिवेको परगट जयो, धर्मको धरैया कर्म रोगको हकीम है; जाके परजाव आगे जागे परजाव सब, नागर नवल सुख सागरकी सीमहे; संवरको रूप धरे साधे शिवराइ एसो, ज्ञानी पातसाइ ताकों मेरी तसमीख है. ॥ ए९॥

श्रर्थः-जगत्ना वासी जेटला प्राणी हे, ते सर्वेने जीतीने जे गुमानी थई रह्यो, एवो श्राश्रवरूप जे श्रमुर हे, ते महा दुःखदायक हे. तेनो प्रताप खंमवाने जे ज्ञान रूप बादशाह प्रगट थयो ठे ते केवो ठे के धर्मनो धारण करनारो हे. अने कर्मरूप रोग गमाववानो हकीम हे.जे ज्ञान बादशाहना प्रजाव श्रागल काम क्रोधादिक राग द्वेषरूप पुजलना जाव हे ते सर्व नासी जाय है; अने नागर के० चतुर हे, जे पेहेलां कोइ वारे न पामेखो एवो जे नवो सुख समुद्र ते खगण जेनी सीम हे. संवररूपनो धरनार श्रने मुक्तिमार्गनो साधनार एवो जे ज्ञानरूपी बादशाह है, तेने महारी स साम हे. एटसे नाटक करीने ज्ञान बादशाहने मुजरो की घो हे. ॥ 59 ॥

॥ इति श्री समयसार नाटक बालावबोधरूप अर्थ सहीत समाप्त थयो ॥

॥ चोपईः ॥-जयो यंथ संपूरन जाषा, वरनी गुनथानककी साषा; वरनन श्रोर कहां हों कि हिये, जथा सकति कही चुप व्हे रबीये ॥ उठ ॥ बिहए पार न ग्रंथ उ दधिका; ज्यों ज्यों कहिये त्यों त्यों अधिका; ताते नाटक अगम अपारा; अलप कवीसुरकी मतिधारा ॥ ७ए ॥

॥ दोहराः ॥-समयसार नाटक श्रकथ, कविकी मति खघु होइ; ताते कहत ब नारसी, पूरन कथे न कोइ ॥ ए० ॥

॥ संवैया इकतीसाः ॥-जेसे कोज एकाकी सुजट पराक्रम करि, जीते केही जां तिचक्री कटक सों लरनो; जेसे कोछ परविन हारू जुज जारु नर, तरे केसे खयंत्रू रमन सिंधु तरनो; जेसें काछ छिहमी छछाह मनमांहि धरे, करे केसे कारज वि धाताको सो करनो; तेसे तुछ मती मोरी तामें कविकखा थोरी, नाटक अपारमे क हांबों याहि बरनो ? ॥ ए ।॥

श्रथ जीव महीमा कथनः— ॥सवैया इकतीसाक्तः॥—जेसे वटवृक्त एक तामें फल हे श्रनेक, फल फल बहू बीज बीज बीज वट है, वटमांहि फल फलमांहि बीज तामे वट, कीजे जो विचार तो स्र नंतता श्रघट है; तेसे एक सत्तामें श्रनंत गुण परजाय;प्रजामें श्रनंत नृत्य नृत्यमें श्रनंत वट है; वटमे अनंत कला कलामें अनत रूप, रूपमें अनंत सत्ता एसो जीव नट है।।एश।

॥ दोहराः ॥-ब्रह्म ज्ञान श्राकाशमें, उने समित षग होइ; जथा सकित उदिम धरे, पार न पावे कोइ. ॥ ए३ ॥

॥ चोपाई॥ नहा ज्ञान नज अंत न पावे; सुमति परोठ कहालों धावै; जिहि विधि समयसार जिनी कीनो; तिन्हके नाम धरे अब तीनो.॥ ए४॥

श्रय कवि त्रयी कथन नामः-

॥ सवैया इकतीसा: ॥—कुंदकुंदाचारज प्रथम गाथा बद्ध करे, सामेसार नाटक विचारी नाम दयो है; ताहीके परंपरा श्रमृतचंद जये तिन्ह, संसकृत कलस समारि सुख लयो है; प्रगटचो बनारसी गृहस्थ सिरीमाल श्रबकिये हे कवित्त हिए बोध वीज वयो है; शबद श्रनादि तामें श्ररथ श्रनादि जीव, नाटक श्रनादियों श्रनादि हिको जयो है. ॥ एए ॥

श्रय कविव्यवस्था कथनः-

॥ चोपाई ॥-श्रथ कतु कहुं यथारथ वानी; सुकिव कुकिवकी कथा कहानी; प्रथम सुकिवी कहावे सोई; परमारथ रस बरने जोई. ॥ ए६ ॥ कलित बात हीए निहं छाने; गुरु परंपरा रीति बलाने; सत्यारथ सैली निहं ठंडे; मृषा वादसों प्रीति न मंमे.॥ए॥॥॥ दोहराः ॥-ठंद सबद श्रक्तर श्ररथ, कहे सिद्धांत प्रवान; जो इहि विधि रचना

रचे सो हे सुकवि सुजान ॥ ए० ॥

॥ चोपाईः ॥—श्रव सुनु कुकिव कहुं है जेसा; श्रपराधी हिय श्रंध श्रनेसा; मृषा जाव रस वरने हितसों; नई उकित निह उपजे चितसों. ॥ एए ॥ ष्याति खाज पूजा मन श्राने; परमारथ पथ जेद न जाने; वानी जीव एक किर बूजे; जाको चित जड ग्रंथि न सुके. ॥ ७०० ॥ वानी खीन जयो जग मोसे, वानी ममता त्यागि न बोसे; हे श्रनादि वानी जगमांही; कुकिव वात यह समुके नांही. ॥ ७०१ ॥

श्रय वानी टयवस्था कथनः-

॥ सवैया इकतीसाः ॥—जेसे काहू देसमें सिखलधार कारंजकी, नदीसों निकसि-फिरि नदीमें समानी है; नगरमें ठौर ठौर फेली रही चहू जैर, जाके ढिग वहे सोई कहे मेरो पानी हे; त्योंही घट सदन सदनमे अनादि ब्रह्म, वदन वदनमें अन्न नादिहींकी बानी है; करम कलोलसों जसासकी वयारि वाजे, तासों कहे मेरी धुनि एसो मूढ प्रानी है. ॥ ७०२ ॥

॥ दोहराः ॥—एसे मूढ कुकवि कुधी, गहे मृषा पथ दोर; रहे मगन श्रितमा नमें, कहे र्टरकी र्टरः ॥ ७०३ ॥ वस्तु सरूप लखे नही, बाह्रिज दृष्टि प्रमान; मृषा विलास विलोकके, करे मृषा, गुन गानः ॥ ७०४ ॥

प्रकरणरत्नाकर जाग पहेलो.

श्रथ मृषा गुन गान यथा:-

॥ सवैया इकतीसाः ॥-मांसको गरंथि कुच कंचन कलस कहे, कहे मुख चंद जो सलेखमाको घर हे; हाडके दशन आहि हीरा मोती कहे ताहि, मांसके आ धर ठंठ कहे विंव फरु है; हाड दंड जुजा कहे कौलनाल काम जुधा, हाडहीके यंजा जंघा कहे रंजा तरु हे; योंही फूठी जुगति बनावे औ कहावे कवि, एते पर कहे हम सारदाको वरु है.॥ ७०५॥

॥ चोपाईः ॥-मिथ्यावंत कुकवि जे प्रानी, मिथ्या तिनकी जाषित बानी, मिथ्या वंत सुकवि जो होई, वचन प्रवान करे सब कोई. ॥ ७०६ ॥

॥ दोहराः॥ वचन प्रवान करे सुकवि, पुरुष हूवे परवान, दोऊ श्रंग प्रवान जो, सोहे सहज सुजान ॥ ७०७ ॥

॥ श्रथ समयसार नाटकव्यवस्था कथनः-॥

॥ चोयाई: ॥—श्रव यह वात कहों हे जैसे; नाटक जाषा जयो सुएसे, छुंद छुंद मुनि मूल उधरता, श्रमृतचंद टीकाके करता. ॥ उ०० ॥ समेसार नाटक सुख दानी, टीका सहित संसकृतवानी, पंडित पढे दृढमती बुके, श्रलपमतीकों श्ररथ न सूके ॥ उ०ए ॥ पांडे राजमञ्ज जिनधर्मी, समयसार नाटकके कर्मी, तिन्ह ग रंथकी टीका कीनी, बालाबोध सुगम करि दीनी. ॥ ७१०॥ इहि विधि बोधवचिनका फेली, समोपाइ श्रध्यातमंशेली; प्रकटी जगतमांहि जिनबानी, घर घर नाटक कथा बषानी ॥ ७११ ॥ नगर श्रागरामांहि विख्याता, कारन पाइ जए बहुङ्गाता, पंच पुरुष श्रवि निपुन प्रवीने, निसिदन ङ्गानकथा रस जीने ॥ ७११ ॥

॥ दोहराः ॥—रूपचंद पंडित प्रथम, इतिय चतुर्जुज नाम, तृतिय जगौती दास नर, कौरपाल गुनधाम. ११३॥ धर्मदास ए पंच जव, मिलि बेसे इक ठोर; परमा रथ चरचा करे,इन्हके कथा न और.॥ ११४॥ नाटक रस सुने, कबहूं र्रुर सिद्धांत, कबहूं विंग वनाइके, कहे बोध विरतंत.॥ ११८॥

श्रय विंगयथाः-

॥ दोहराः ॥-चित चकोर वरु धरम धरु, सुमित जगौती दास, चतुर जाव थि रता जए, रूपचंद परगास. ॥ ७१६ ॥ इहि विधि ज्ञान प्रगट जयो, नगर आगरे मांहि, देसदेस महि विस्तार्थो, मृषा देशमहि नांहि. ॥ ७१७ ॥

॥ चोपाईः ॥-जहां तहां जिनवानी फेली, लघे न सो जाकी मित मेली, जाके सहज बोध उतपाता, सो ततकाल लखे यह बाता. ॥ ७१० ॥

॥ दोहराः ॥–घटघट श्रंतर जिन वसे, घटघट श्रंतर जैन, मत मदिराके पान सां मतवाला समुके नः ॥ ७१ए ॥

॥ चोपाईः ॥—बहुत वढाउ कहालो कीजे, कारजरूप वात किह लीजे, नगर आगरा माहे विष्याता, वनारसी नामे लघु ज्ञाताः ॥ ७१० ॥ तामे किवत कल्ला चतु राई, कपा करे ए पंचो जाई, ए परंच रहित हिय लोले, ते बनारसीसों हिस बोले ॥ ७११ ॥ नाटक समेसार हित जीका, सुगमरूप राजमली टीका, किवत वद्ध रचना जो होई, जाषा ग्रंथ पढे सब कोईः ॥ ७११ ॥ तब बनारसी मनमहि श्रानी, कीजे तो प्रगटे जिनवानी, पंच पुरुषकी श्राङ्मा लीनी, किवत बंधकी रचना कीनीः ॥७१३॥ सोरहसे तिरानवे (१६०३) विते, श्रासुमास सित पद्म वितीते, तिथि तेरिस रिववार प्रवीना ता दीन ग्रंथ समापत कीनाः ॥ ७१४ ॥ दोहरा ॥ सुख निधान सकबंध नर, साहि बसाहि किरान, सहस साहि सिर मुकुटमिन, साह जहां सुलतानः ॥७१५॥ जाके राज सुचेनसों, कीनों श्रागमसार, इति जीती व्यापी नहीं, यह उनको उपकारः ॥ ७१६॥ ॥ श्रव सबका ठीक कथनः—॥

॥ सवैया इकतीसा ॥— तीनसे दसोत्तर सोरठा दोहा ठंद दोछ,जुगलसे तेतालीस इकतीसा खाने हैं; ठासी सु चोपईये सेंतीस तेइ सेसवैये, वीस ठणे खठारह क वित्त बषाने हैं; सात फुनिही ख्रिक्षेत्र चारि कुंडलिये मिल्ले, सकल सातसें सत्ताई स ठीकठाने हैं; बत्तीस खक्तरके सलोक कीने ताके यंथ संख्या सत्रहसे सातख्रिध काने है. ॥ ७२७ ॥ दोहरा:—॥समयसार खातम दरव, नाटक जाव खनंत; सोहे खा गम नाममें, परमारथ विरतंत. ॥ ७२० ॥



जाहेरखबर.

श्रमारा तरफथी हालमां नीचेनां पुस्तको ठपायांठे; तथा ठपाय ठे.	
	रू. आ. प
प्रकरण रत्नाकर जाग. १ (बीजी श्रावृत्ति)	ξ − υ− υ
(जेमां सामात्रणसोगाथानुं स्तवन, श्रागमसार, श्रानंदघनचो	_
विशी, नयचक्रसार, द्रव्यगुणपर्यायनोरास, योगदृष्टि समुचय, श्र	
ध्यात्मसार, समाधिशतक, समताशतक, दिक्पटचोराशीबोल, चिं	_
तामणिस्तोत्र, तथा समयसार ए श्रद्जुत ग्रंथोनो समावशे कर्यों हे)
प्रकरणरत्नाकर जाग १ लानो प्रथम कटको.	
(जेमां सामात्रणसोगानुं स्तवन तथा श्रागमसारहे).	2− 0−0
" बीजो "	
(जेमां नयचक्रसार, तथा श्रानंदघन चोविशीवे)	হ— ৪ —০
" त्रीजो "	
(जेमां योगदृष्टि सद्याय, श्रध्यात्मसार वगरेबे)	2− □−□
" चोथो "	
(जेमां समयसार वे)	₹— ¤ — ¤
श्री वैराग्य कल्पलता (श्री यशोविजयजी कृत)	⋨ — □—□
श्री जड्रबाहु संहिता (श्रपूर्वज्योतिषयंय-श्री जड्रबाहु स्वामी कृत)	< α-α
श्री प्रतिमाशतक (श्री यशाविजयजी कृत)	0-42-0
श्री मागधीनाषानुंव्याकरण-ढुंढिकानांनाषांतरसाथे उत्तरार्ध	₹ - ʊ-□
श्री उपदेशप्रासाद (प्रास्ताविक श्लोक साथे) प्रथम खंम.	á− a−a
श्री उपदेश तरंगिणी-श्रनेक कथार्च साथे (श्रीरत्नमंदिरगणिकृत)	<- A-a
श्री श्रईन्नीति-(जैनन्यायलोकव्यवद्दार श्री हेमचंडाचार्य कृत)	<- A-a
श्री वैराग्यशतक-(श्रनेक कथार्च साथे) जापांतर	₹— 8− 0
श्री योगशास्त्र (मूल-टीका बालावबोधसाये श्री हेम्चंडाचार्य कृत)	
श्री धर्मसर्वस्वाधिकार (श्रद्जुतग्रंथ श्रीजयशेखर स्रिकृत)	a- ú-a
श्री चंदराजानो रास. ऋर्थसाथे (१५०) रंगीन चित्रोसाथे (वपाय वे)	
मुंबइ-मांमवी-शाकगली	
शा० त्रीमसिंह मा	णक.